राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत अखिल भारतीय तथा विशेपत राजस्थान-प्रदेशीय पुरातनकालीन
सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषा-निवद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

प्रवन्ध सम्पादक

जितेन्द्रकुमार जैन, एम ए

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थांक १२२

राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची
भाग ३

प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

मुद्रक : कलमघर प्रिण्टर्स एव जितेन्द्र प्रिण्टर्स, जोधपुर

वि स २०३१ भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८९६

प्रकाशकीय

प्रतिष्ठान मे सुरक्षित हिन्दी और राजस्थानी की कोई तीन हजार कृतियो का यह सूचीपत्र प्रकाशित किया गया है। इसका संकलन विभाग के वरिष्ठ शोध सहायक श्री ओकारलाल मेनारिया ने किया है। अपने सम्पादकीय कथन मे इन्होंने इस सूचीपत्र की विशेषताओ पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। जिज्ञासु पाठको के लिए परिशिष्ट भाग मे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थो के उद्धरण भी दिए गये हैं। श्री मेनारिया ने बड़े परिश्रम के साथ यह सूचीपत्र तैयार किया है। आगे भी इन सूचीपत्रो को प्राथमिकता देते हुए प्रतिष्ठान की इस विपुल ग्रन्थ-सम्पदा को बाहर लाने का हमारा प्रयत्न जारी रहेगा। शोधार्थी इन सूचीपत्रो से लाभान्वित होगे—इसमे दो राय नही।

जितेन्द्रकुमार जैन
निदेशक

अनुक्रम

नोट.— कृपया परिशिष्ट १ के पत्र सख्या १४७ की पाद टिप्पणी को निम्न प्रकार पढ़ें—
रूपनगर के राजा जीवराज सोलंकी के साथ ठिकाणा धरियावद की सिशोदणी राणी कुशालकँवर के संवत् १७४८ में भादवा सुद १२ को, सती होने पर, उक्त मरसिये रूपाम (रूपावास) के बारठ एजनजी द्वारा रचे गए हैं ।

सम्पादकीय निवेदन

प्रस्तुत सूचीपत्र मे मुख्यालय मे सगृहीत ग्रन्थाङ्क ७८५६ से १२६१२ तक के राजस्थानी-हिन्दी भाषा के हस्तलिखित ग्रन्थो मे संकलित ३०२० कृतियो के विवरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं। यह सूचीपत्र मुख्यत सूचनात्मक उद्देश्य की ही पूर्त्ति करता है, क्योकि सभी ग्रन्थो के सूचीपत्र शीघ्र प्रकाशित करने के उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए वर्त्तमान पद्धति को अपनाया गया तथा विवरणात्मक सूचीपत्र की प्रक्रिया को नही अपनाया जा सका; फिर भी ग्रन्थो के सम्वन्ध मे अधिक से अधिक ज्ञातव्य प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है।

सूचीपत्र निर्माण का कार्य प्रतिष्ठान के सस्थापक एव सम्मान्य सचालक पद्मश्री मुनि जिनविजयजी के निर्देशन मे सन् १९६५ मे प्रारम्भ किया गया था। उस समय भाषा-ग्रन्थो मे गुटको की वहुलता को देखते हुए जिल्दवार व्यौरो का आकलन किया गया तथा उसी रूप मे मुद्रणार्थ प्रेस को भी दे दिया गया। किन्तु, वाद मे अन्यान्य कारणो से उक्त प्रकाशन-कार्य प्रारम्भ नही हो सका। अन्त मे सभी कृतियो को अकाराद्यनुक्रम से प्रकाशित करने को ही अधिक उपयोगी समझकर वर्त्तमान प्रारूप के अनुरूप पुन प्रेसकापी बनाई गई तथा मुद्रण प्रारम्भ करवाया गया। यह हर्ष का विषय है कि सूचीपत्र का प्रकाशन-कार्य पूर्ण होकर विद्वानो के अवलोकनार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है।

राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग २ मे ग्रन्थाङ्क १०६८८ तक के हस्तलिखित ग्रन्थो का विवरण प्रकाशित किया जा चुका है। उक्त सूचीपत्र मे राजस्थानी के अतिरिक्त व्रजभाषा तथा अन्य भाषा ग्रन्थो को छोड दिया गया था। उन सभी अवशिष्ट ग्रन्थो के विवरण भी प्रस्तुत सूचीपत्र मे पृ० ३७७ से ४९६ में समाहित किये गये हैं।

संकलित ग्रन्थो मे भाषा की दृष्टि से प्राचीन राजस्थानी (जिसमे अपभ्रंश एवं गुर्जर-भाषा के शव्दो का भी जमकर प्रयोग किया जाता था) तथा व्रजभाषा के ग्रन्थो की प्रधानता है। प्रतिष्ठान के सग्रह मे व्रजभाषा-साहित्य का भी अपूर्व सग्रह है। वस्तुत. प्रत्येक भाषा का अपना समय रहा है और इसी कारण समग्र उत्तरी

भारत में एक समय साहित्यिक भाषा के रूप में ब्रज को अपनाया गया था। बाद में जैनाचार्यों के प्रयास से यह स्थान राजस्थान में राजस्थानी भाषा को प्राप्त हुआ तथा इस भाषा में प्राचीन ग्रन्थों के अनेक अनुवाद-कार्य प्रस्तुत किये गये। भाषा की प्रारम्भिक अवस्था में अनुवाद ही उस भाषा को अपना साहित्यिक स्थान बनाने में सहायता देते हैं। यही कारण है कि राजस्थानी के हस्तलिखित ग्रन्थों में रामायण, महाभारत, भागवत, गीता, हितोपदेश-पंचाख्यान, रीति-ग्रन्थ, काव्य-ग्रन्थ तथा ज्योतिष और आयुर्वेद के ग्रन्थों के अनुवादों के साथ ही साथ भारतीय ज्ञानराशि के अक्षय-भण्डार-रूपी पुराण साहित्य के अनेक अनुवाद हमें उपलब्ध होते हैं। इन अनुवाद कार्यों से भाषा का रूप जब स्थिर हो गया तो सभी विषयों की मौलिक कृतियों का प्रणयन भी आरम्भ हुआ और मौलिक एवं छाया-ग्रन्थों के रूप में राजस्थानी भाषा के साहित्य की अभिवृद्धि होती रही। संकलन में नरहरिदास बारहठ, भागीदास, सांडु देवसी, लालदास, भगवानदास निरंजनी, मथुरादास, देवकवि, दामोदर, आनन्दराम नागर, किशोर अलि, आदि अनेक कवि, अनुवादक के रूप में हमारे सामने आते हैं।

संकलन में अनुवाद कार्यों के अतिरिक्त अनेक अल्पज्ञात कवियों के नाम तथा उनकी कृतियां भी देखने को मिलेंगी। जैन कवियों के अनेक स्तुति-मण्डन चौपई-काव्य तो रचनाकालीन उपलब्ध हुए हैं। सभी ऐसी कृतियों का उल्लेख आठवें वेष्टन में कर दिया गया है। कुछ-एक संग्रह जो कवि-वंशजों के घरानों से प्रतिष्ठान को प्राप्त हुए थे, उनमें उन कवियों की स्वलिखित पाण्डुलिपियां सुरक्षित हैं। ऐसे कवियों में कवि भोलानाथ तथा अमृतराम राव का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। कवि भोलानाथ ने जाट नरेश नवलसिंह के दरबार में रहते हुए अनेक मौलिक एवं अनुवाद-कार्य सम्पन्न किये। इस संकलन में उनकी १८ कृतियों का विवरण सम्मिलित है, जो संवत् १८२० से १८४० तक रची गई हैं। इसी प्रकार के दूसरे कवि अमृतराम राव हैं, जिनकी अमृत-रत्न-मुक्तावली नामक वृहद्काव्य पद-रचना के अतिरिक्त अन्य अनेक अनूदित एवं मौलिक कृतियों के रूप में १५ कृतियां संकलन में उपलब्ध हैं। इनका रचनाकाल संवत् १८८० से १८९९ के बीच का है। अनेक कृतियों के अन्त में संवत् १८९९ दिया गया है, जिसे रचनाकाल मान लिया गया है, क्योंकि संग्रह ग्रन्थकर्त्ता के वंशजों से ही प्राप्त हुआ है।

सकलन मे कुछ अप्रसिद्ध एव अल्प-ज्ञात कवियो के नाम भी ज्ञात हुए हैं। जिनमे कवि चैन, कवि दौलत, कवि चन्द (जवाहरचन्द), कवि मल्ह (मथुरादास), कवि केसो, कालूराम वोहरा, चम्पालाल दीवान, जीवनलाल नागर, देवकृष्ण दर्जी, नन्दराम पचोली, नीलकठ पचोली, पन्नालाल जोशी, रामलाल जोशी, शम्भुदत्त जोशी, भगतराम पचोली, शोभाराम तिवाडी, सुख सारण आदि प्रमुख हैं।

प्राप्त सग्रह मे कुछ-एक गुटके अपना विशिष्ट महत्व रखते है, जैसे ग्रन्थाङ्क १२५८५। इस गुटके मे भक्त-कवियों तथा कवियित्रियो के पर्ची-साहित्य का सुन्दर संकलन किया गया है। पर्ची-साहित्यकार के रूप मे अनन्तदास का नाम तो प्रसिद्ध ही है। इनके अतिरिक्त सुखसारण नामक एक नये कवि का नाम हमारे सम्मुख आता है, जिन्होने ७ महिला भक्त-कवियित्रियो की पर्चियो का प्रणयन किया है। इसी प्रकार से दूसरा गुटका ग्रन्थाङ्क ११६४८ का है, जिसमे नाथ एव सिद्ध-साहित्य का सुन्दर सग्रह किया गया है। साथ ही साथ जनतुरसी की समस्त कृतियो का भी संकलन इस गुटके मे उपलब्ध है, इस प्रकार से अनेक गुटको की, विषय की दृष्टि से, लेखन कला की दृष्टि से, लिपि-समय की दीर्घ-परम्परा के कारण तथा बीच-बीच मे लिखी गई याददाश्तो, टिप्पणियो, स्फुट-नुस्खो आदि की दृष्टि से विशिष्ट उपादेयता है।

गुटको की कृतियो को देखने से गुटके के स्वामी की साहित्यिक अभिरुचियो का स्पष्ट परिचय मिलता है। किसी मे मात्र काव्य-ग्रन्थो का सकलन है, तो किसी मे संत-साहित्य का और किसी मे ज्योतिष, आयुर्वेद, स्तुति, स्तोत्र, आदि विषय हैं। ये गुटके वस्तुत सग्रहकर्त्ता की साहित्यिक डायरी के रूप मे लिखे जाते थे, अथवा लिखवाये जाते थे। कतिपय गुटको का लेखन काल तो १००-१५० वर्षों तक निरन्तर रहने का भी पता चलता है। इन गुटको मे सकलित साहित्य से हमे तत्कालीन साहित्यिक अभिरुचि तथा विद्वानो और रसिको का ध्यान आकृष्ट करने वाली बहुचर्चित कृतियो एव विषयो का भी परिचय मिलता है, जो तत्कालीन सामाजिक-इतिहास-लेखन मे बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। गुटको की तथा हस्तलिखित-ग्रन्थो के अन्त की पुष्पिकाओ का भी अपना विशिष्ट महत्व है क्योकि उनमे कही-कही पूर्व प्रति का उल्लेख, तो कही गुरु-परम्परा, लिपि-कर्त्ता एव लिपि-स्थान आदि का पूर्ण व्यौरा उपलब्ध होता है।

लिपिकाल की दृष्टि से सकलन मे १६ वी शताब्दी मे लिखी गई प्रतियो की सख्या अधिक है। लिपिकाल की दृष्टि से रचनाकाल के समीपतम होती गई प्रतियो का महत्व अपेक्षाकृत अधिक होता है, फिर भी इसे सार्वभौम सिद्धान्त के रूप मे नही स्वीकारा जा सकता है तथा इसी के आधार पर किसी भी कृति के सम्बन्ध मे यह धारणा नही बना लेनी चाहिए कि अमुक प्रति रचनाकाल से काफी बाद की होने से महत्वहीन है। क्योकि हो सकता है, उक्त प्रति की प्रतिलिपि जिस प्रति से की गई है, वह अति प्राचीन प्रति रही हो और उसका पाठ कवि-कृत-पाठ के समीपतम रहा हो। अत. जब तक पाठालोचन की क्लिष्ट प्रक्रिया द्वारा प्रत्येक प्रति का वशवृक्ष तैयार कर प्रतियो का परिवार निश्चित् नही कर लिया जाता, उक्त प्रति के महत्व के सम्बन्ध मे निर्णय नही दिया जा सकता। अत सकलन मे आई सभी प्रतियो का अपना निजी वैशिष्ट्य है। उपर्युक्त सिद्धान्त की पुष्टि अनेक प्रतियो की पुष्पिकाओ से भी होती है, जिसमे पूर्व प्रति का सम्वत् तथा ग्रन्थ-स्वामी आदि का ब्यौरा दिया गया है। आशा है, विद्वानो द्वारा सकलित कृतियो की प्रतियो का इसी रूप मे अध्ययन किया जायगा।

ग्रन्थाङ्क वाले कोष्ठक मे ग्रन्थाङ्क के साथ ही साथ ब्रेकिट मे उसी गुटके मे उपलब्ध कृति सख्या का सकेत किया गया है। ब्रेकिट के बाद मे जो सख्या दी गई है वह समान शीर्षक लघु कृतियो के कर्त्ता की सख्या की द्योतक है। उदाहरणार्थ - १२२१०(२८)१ अक्षय तृतीया के पद कृष्णदास– का तात्पर्य है कि ग्रन्थाङ्क १२२१० पर २८ वी कृति के रूप मे पद-सग्रह प्रारम्भ किया गया है, जिसमे प्रथम कर्त्ता का नाम कृष्णदास है। सूचीपत्र मे सकलित ग्रन्थो में प्राय सभी विपयो के ग्रन्थ हैं। प्रत्येक कृति का विपयवार वर्गीकरण नही किया गया है क्योकि अधिकाश कृतियो के नाम से ही विषय स्वयम् स्पष्ट हो जाता है।

आठवें कोष्ठक में लिपिकर्त्ता, लिपिस्थान, रचनाकाल, रचना-स्थान, ग्रन्थ की दशा तथा अप्राप्त पत्र सख्या का उल्लेख किया गया है। ग्रन्थ के सम्बन्ध मे अन्य विशेष ज्ञातव्य, जैसा कि प्रारम्भिक कुछ पत्रो मे दिया गया है, स्थानाभाव के कारण छोड देना पडा है।

राजस्थानी एव प्राचीन हिन्दी की भाषा कृतियो के साथ ही साथ ग्रन्थो मे सस्कृत, प्राकृत एव अपभ्रंश तथा मराठी भाषा की कृतिया भी उपलब्ध हुई है, ऐसी कृतियो के बारे मे आठवें कोष्ठक मे उल्लेख कर दिया गया है।

सभी कृतियो को यद्यपि अकाराद्यनुक्रम से व्यवस्थित कर प्रकाशित किया गया है, फिर भी कुछ कृतियो का कल्पित नामकरण कर उन्हे एक स्थान पर करने का प्रयत्न किया गया है जैसे – कवित्त-सग्रह, गीत-सग्रह, पद-सग्रह, दोहा-संग्रह आदि। कृतियो के तथा कवियो के नाम उसी प्रकार दिए गए है जैसे कि ग्रन्थ मे उपलब्ध हुए हैं, अत एक ही कृति की वर्तनी मे थोडा अन्तर होने के कारण पाठको को वे नाम ऊपर नीचे उपलब्ध होंगे। गुटको में उपलब्ध स्फुट पदो, दोहो आदि को स्फुट-पद-सग्रह, स्फुट-कवित्त-सग्रह, आदि के अन्तर्गत रखा गया है।

प्रस्तुत सकलन मे सत-साहित्य तथा जैन-साहित्य की कृतियाँ प्रचुर मात्रा में हैं। वस्तुत निर्गुण ब्रह्म के उपासक सतो तथा सगुण ब्रह्म के लीलामय रूप का भक्त कवियो ने जो गुणगान किया है, वह भूगोल और काल के बन्धन को तोड़कर निर्बाध रूप से समस्त भारत मे ज्ञान और भक्ति का प्रसार करने वाला सिद्ध हुआ है। सतो की वाणियो तथा भक्त कवियो की रचनाओ से जिस भक्ति-रस-धारा का अटूट प्रवाह जन-जीवन मे हुआ है, उससे समस्त भारतीय जन-मानस एक सूत्र मे बधा-सा नजर आता है। अन ये महात्मा तथा इनके औपदेशिक ग्रन्थ हमारी सांस्कृतिक एकता के प्रतीक हैं।

सतो की वाणियाँ उनके श्रीमुख से उच्चरित होती रही और शिष्य प्रशिष्यो के मस्तिष्क रूपी प्राकृतिक टेप-रिकार्ड में सगृहीत होती रही। कभी-कभी किसी योग्य शिष्य द्वारा उस स्मृति को लिपिबद्ध कर अपने गुरू के प्रति श्रद्धा-प्रसून चढाए गए। सभी सतो की वाणियो के वचनामृतो को किस-किस जिज्ञासु शिष्य द्वारा लिपिवद्ध कर उन्हे व्यवस्थित रूप प्रदान किया गया, यह प्रश्न आज भी प्रचुर अन्वेषण का वना हुआ है। हस्तलिखित ग्रन्थो के आलोडन से रामस्नेही सम्प्रदाय के सतो की वाणियो के सकलनकर्त्ताओ के कुछ उल्लेख हमें उपलब्ध होते हैं। ऐसी वाणियो के आद्यन्त परिशिष्ट १ में दिए गये हैं। इन संकलनकर्त्ताओ मे प्रमुख रामजन, नवलराम, कासीराम एव हरीराम हैं। ये सभी सत भीलवाडा अथवा शाहपुरा रामद्वारा से सबधित है।

परिशिष्ट १ मे सत-वाणी के सकलनकर्त्ताओ के उल्लेखो के साथ ही साथ ऐसे महत्वपूर्ण ग्रन्थो के आद्यन्त भी दिए गए है, जिनमें कवि-परिचय, कवि-वश-परिचय, आश्रयदाता का वशवर्णन तथा रचना में सहायक आधार ग्रन्थो के

उल्लेख उपलब्ध हुए है। ऐसे ग्रन्थो मे भारत-भाषा-सार-चन्द्रिका, भारत भाषा, अलकारनिधि, अलकार-रत्नाकर, छद-सुधाधर, जगत-विनोद, सग्राम-सार, सभा-विनोद, सुन्दर-शृङ्गार, कोकशास्त्र, रामविनोद, आदि ग्रन्थ हैं।

परिशिष्ट १ मे कुछ ऐसी कृतियो के उद्धरण भी दिए गए है, जिनसे मध्यकालीन ऐतिहासिक घटनाओ पर कुछ प्रकाश पडता है। ऐसी ऐतिह्य कृतियो मे महाराजा अभयसिंहजी रा कवित्त, दवावेत महाराजा अजीतसिंहजी री, सभरि युद्ध तथा स्फुट रूप से प्राप्त कवित्त, छन्द आदि हैं। इनके अतिरिक्त सग्रह मे उपलब्ध ग्रन्थो में प्राचीनता तथा प्रतिष्ठान में प्राप्त प्राचीन प्रतियो की दृष्टि से महत्वपूर्ण ग्रन्थो के आद्यन्त भी दिये गये हैं।

प्रतिष्ठान में सगृहीत सभी ग्रन्थ प्राय राजस्थान एव गुजरात मे बिखरी हुई ग्रन्थ-सम्पदा के रूप मे क्रय करके एकत्र किये गये हैं। इनमें जैन-साहित्य का, सख्या की दृष्टि से अपना विशिष्ट स्थान है। जैन-साहित्य की सबसे बडी विशेषता यह रही है कि जैनाचार्यों ने लोक व्यवहृत भाषा में अपनी कृतियो को प्रस्तुत किया है। सस्कृत के बाद प्राकृत मे तथा प्राकृत के बाद अपभ्रश मे और फिर जन-भाषाओ मे अपनी औपदेशिक कृतियो का प्रणयन करते रहना ही इनका प्रमुख उद्देश्य रहा है। प्रतिष्ठान में जैन-साहित्य के रूप में प्राय सभी गच्छो के ग्रन्थ उपलब्ध हैं। पदो और ढालो को राग-रागनियो तथा देशी तर्जों में बाधा जाता रहा है। जन-मानस को उन्ही की भाषा और उन्ही के लोक-सगीत में निबद्ध कर उपदेश देने में जिस मनोवैज्ञानिक सूझ-बूझ का परिचय जैनाचार्यों ने दिया है, वह वस्तुत उनकी सामाजिक अन्तर्दृष्टि का परिचायक है। केवल एक ग्रन्थ में संगृहीत ढालो की प्रथम पक्ति तथा देशी तर्ज का उल्लेख करते हुए बानगी रूप मे परिशिष्ट १ में विवरण दिया गया है। वैसे-तो सभी सतो की वाणियो के साथ तथा वल्लभकुलीय भक्तो के पद भी राग-रागनियो मे निबद्ध हैं, किन्तु ये सभी परम्परागत रूप से निश्चित शास्त्रीय रागो तक ही सीमित हैं। लोक-गीतो की तर्जो का इनमें अभाव है। सभी पदो के साथ-साथ स्थानाभाव के कारण रागो का उल्लेख नही किया जा सका है।

परिशिष्ट १ मे उपर्युक्त ग्रन्थो के साथ ही साथ कुछ लघु-कृतियो को भी अविकल रूप से प्रकाशित कर दिया गया है। ऐसी लघु-कृतियो मे मनोरजनात्मक तथा मनोरम कल्पनाओ से युक्त कृतियो को चुना गया है।

पनघट रो झगडो, प्रत्युत्तरा, तिलशतक, जलवय-शहनशाह-इश्क आदि ऐसी ही कृतियां हैं।

आशा है, परिशिष्ट १ के रूप मे जिन ग्रन्थो के आद्यन्त प्रस्तुत किये गये है, वे जिज्ञासु शोधार्थियो के लिये उपयोगी सिद्ध होगे। यदि इस परिशिष्ट के आधार पर अनुसन्धित्सुओ का ध्यान हस्तलिखित ग्रन्थो के रूप मे उपलब्ध प्राचीन वाङ्मय की ओर आकृष्ट हो सका तो मैं अपना श्रम सफल समझूंगा।

परिशिष्ट २ के रूप मे सग्रह मे उपलब्ध कृतियो के रचनाकारो की नामावली, कर्त्तानुक्रमणिका के रूप में दी गई है, जिससे कि कर्त्ता-विशेष की विभिन्न कृतियो को सकलन में आसानी से ढूंढा जा सके।

जैसा कि प्रारम्भ में ही निवेदन किया जा चुका है कि प्रस्तुत कार्य प्रतिष्ठान के सस्थापक एव भूतपूर्व सम्मान्य संचालक पद्मश्री मुनि जिनविजयजी द्वारा मुझे सौपा गया था। उन्ही के चरणो मे बैठकर हस्तलिखित ग्रन्थो का प्रथम दर्शन तथा पठन-पाठन का कार्य मैंने प्रारम्भ किया और जिनके आशीर्वाद से उक्त कार्य सम्पन्न हुआ, उन्हे, तथा प्रतिष्ठान के भूतपूर्व उप-निदेशक आदरणीय श्री गोपालनारायणजी बहुरा, जिनका मुझे इस कार्य मे सतत निर्देशन और प्रोत्साहन ही नही मिला, अपितु जिन्होने सूचीपत्र को आद्यन्त पढकर शुद्ध करने का भी अनुग्रह किया, इन दोनो ही महानुभावो के प्रति औपचारिक रूप से धन्यवाद अथवा आभार प्रकट करना मेरे लिए बहुत बडी धृष्टता होगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस कार्य को प्रकाशित रूप मे देखकर दोनो ही सज्जनो को हार्दिक आत्मीय प्रसन्नता होगी और उनकी यह प्रसन्नता ही मेरे लिए सबसे बड़ा आत्मतोष का विषय होगा।

सूचीपत्र के प्रकाशन को महत्व देते हुए इस अवरुद्ध कार्य को डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, उप-निदेशक ने मुद्रणार्थ प्रेस मे दिया, उसके लिये मैं उनका आभारी हूँ।

जैन साहित्यकारो और कृतियो के सम्बन्ध में मेरे सहयोगी विद्वान् श्री विनयसागर का यथास्थल सहयोग प्राप्त, हुआ उसके लिए मैं उनका कृतज्ञ हूँ। प्रकाशन-अनुभाग के कुशल कार्यकर्त्ता श्री गिरधरवल्लभ दाधीच, प्रतिलिपिकर्त्ता का भी इसके प्रकाशन मे निरन्तर सक्रिय सहयोग मिलता रहा, उसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं।

मुद्रण कार्य यद्यपि "कलमघर प्रेस" में प्रारम्भ करवाया गया था, किन्तु वहाँ यह कार्य पूर्ण नही हो सका और शेप कार्य "जितेन्द्र-प्रिण्टर्स" को सौपा गया। "जितेन्द्र-प्रिण्टर्स" द्वारा इस कार्य को जिस तत्परतापूर्वक सम्पन्न किया गया, उसके लिये वे बधाई के पात्र है। प्रूफ-रीडिंग में यद्यपि पूर्ण सावधानी बरती गई है, फिर भी दृष्टि-दोष के कारण अथवा प्रेस मे छपने के दौरान हुई सभी त्रुटियो के लिये मैं पाठको का, क्षमा-प्रार्थी हूँ।

आशा है, सूचीपत्र मे रही कमियो की ओर ध्यान आकर्षित कर विद्वान् पाठक मुझे उपकृत करेंगे, जिससे उनका प्रतीकार अगले सूचीपत्र मे किया जा सके क्योकि सूचीपत्र के चौथे भाग का कार्य भी पूर्ण कर लिया गया है और आशा है वह भी विद्वानो को अगले वर्ष तक अवश्य उपलब्ध हो सकेगा।

निवेदक

ओंकारलाल मेनारिया

२३ अगस्त, १९७४

वरिष्ठ - शोध - सहायक,

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

शुद्धि-पत्र

(विवरण-तालिका)

क्रमाङ्क	पृ० सं०	कोष्ठक सं०	अशुद्ध	शुद्ध
७	२	५	१९९९	१८८८
४२	६	४	शातिहर्ष	शातिहर्ष शिष्य
१३०	१६	३	आलवण	आलोयणा
१५४	१९	४	फरीदजी	फरीद
१७३	२२	२	१२२९३(५)(५)	१२२९३(५)
४४०	५३	३	गसाईं	गुसाईं
५२२	६२	८	–	अपूर्ण
५२२	६२	४	–	हस कवि (रसिक कविराय)
५२३	६२	२	११५८५(८)५५	११५८५(८)
६००	७१	३	वणन	वर्णन
६६०	७९	२	११२८३(१)	११२८३(२)
७०३	८४	३	ज्ञात	ज्ञान
७४१	८९	४	कुशलहेम	कुशलहेम
८२२	९९	४	आणद	आणद (आनन्द)
९०३	१०८	३	सवाद	संवाद
९०८	१०९	३	मेहतान	मेहतानी
१०१७	१२२	४	हषकुशल	हर्षकुशल
१३७२	१८९	४	भय्या रत्नपाल	भय्या रत्नपालहित (देवीदास)
१३७४	१९०	७	५७५४-७५	५७४-५७५
१४४२	२०२	८	र का मूल १७६९	र. का. टीका १७६९

क्रमाङ्क	पृ० स०	कोष्ठक स०	अशुद्ध	शुद्ध
१४५२	२०४	४	लालदास शिष्य द्वारकादास शिष्य प्रपन्नगैसानन्द	प्रपन्न गैसानन्द
१४७६	२०८	४	टी , सतदास	टी०; संतदास
१४८८	२१०	४	जरणादास (चरणदास) (नाथपथी)	जरणादास (नाथपंथी)
१५१९	२१६	३	भागवत दशमस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	भागवत भाषा पद्यानुवाद
१५१९	२१६	७	१-२९	१-२९, १-२४
१५९२	२२९	१	१५९२	* १५९२
१७०६	२४८	७	१-२५	१-७२७
१९५१	२९४	४	मतिसार शिष्य जिनसिंह सूरि	जिनराज शिष्य जिनसिंह सूरि
१९७४	२९८	३	शेषसिहजी	शेरसिंहजी
२०५२	३१५	७	—	१-६०
२१५४	३३५	३	सुमतिनथ	सुमतिनाथ
२३०५	३६६	३	हा।चद	हरचन्द
२४०२	३८७	७	२९९-३००	२९९ वां
२४०६	३८८	४	कविचन्द	कविचन्द (जवाहरचन्द)
२४२२	३९१	१	*२४२२	*२४२३
२४५०	३९६	३	गुरुचार	गुराचार
२४८९	४०३	४	रसराशि	अज्ञात
२६५६	४३२	२	९०८७ (१) (१) (१) १-७	९०८७ (१) १-७
२७५९	४५१	४	पद्म ाकंज	पद्मपकज
२९२२	४७९	१	६२२२	२९२२
२९२२	४७९	२	८७५९	७८५९
२९५४	४८५	२,८	(२)	(२) "रामसहस्रनाम" (आठवें कोष्ठक के साथ)

(परिशिष्ट १)

पृष्ठ सं०	पंक्ति सं०	अशुद्ध	शुद्ध
४७	१५	जिसमे	जिससे
७६	११	चंद छंद ।।३।।	कुंद कुंदं ।।३।।
९६	८	२५०७	१२५०७
११२	फुटनोट ३	मानमा	मानना
११४	७	ग्रहसयुक्ति	युक्तिसग्रह
१३९	६	टाकाकार	टीकाकार
१४७	फुटनोट १	प्रथस्ति-परक	प्रशस्ति-परक
१९५	६	रासक रत्नावली	रसिक-रत्नावली
१९८	११	राधाधिराज	राजाधिराज

संकेत-तालिका

(१)	र० का०	रचना काल
(२)	र० स्था०	रचना स्थान
(३)	टी०	टीकाकार; टीका
(४)	स० क०	सकलन कर्त्ता
(५)	स० का०	सकलन काल
(६)	लि० क०	लिपिकर्त्ता
(७)	लि० स्था०	लिपि स्थान
(८)	गु०	गुटका
(९)	मू०	मूल ग्रन्थ
(१०)	* (फूल)	चिह्नित ग्रन्थ के आद्यन्त परिशिष्ट-१ में दिए गए हैं।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१	१०९५४(१)	अखर (अक्षर) बत्तीसी	गुण विजय	१९वी श	२४x१६ ५	४ था	प्रारम्भ के ३ पत्र अप्राप्त, कृति २६ वे दोहे से प्रारम्भ है। पीछे की ओर मेहता जी फतैचन्दजी के पुत्र का जन्मलग्न वि स १८६७ का है। पत्र ५ से ८ तक ५ चित्र बने हुए है (१) ऋषभ देवजी (२) पारसनाथजी (३) महावीरजी (४) सतनाथजी (५) नेमीनाथ जी। पत्र ९ से २३ के प्रारम्भ मे दादूजी का दोहा है व आगे २० तक के पहाडे है। पत्र २४ से ३८ मे 'लघु-चाणक्य राजनीति' सस्कृत मे है तथा राजस्थानी मे टिप्पण दिये गये है।
२	१२३८० (२४)	अग्रदास के पद	अग्रदास	१८वी श	२०x१४	२७८-२८९	गुटका सवत् १८७४, लि क रणजीत लि स्था पाली अत मे स्फुट पद है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सेमी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४	१२४२० (१२)	अद्भुत प्रकाम	मोतीराम शिष्य रामदास		१६x१४	३०८-३१२	
१५	१०८७४	अद्वैतानुभव प्रकाश	हरिसिह सविक-साधु	२० वी	२८x१५	१-६६	सप्तम प्रकाशान्त
१६	१०९९८	अदोप निरूपरग (वृहत् कविवल्लभ गत)	हरिचरणदास		२९x१३ ५	१-२१	अपूर्ण 'व्यजन' विचारशीर्षक देकर अत मे छोड़ दिया है।
१७	१०६३८ (८)	अध्यातम प्रकास	सुखदेव मिश्र	१८८५	१६ ५x८ ५	५२४-५६१	र का १७५५ सवत् सत्रह सै वरष,पचपन-अश्वन मास। एकादस बुधिकौ भयौ, पूरन यह प्रकास ।।३६।।
१८	१०८४८ (६)	अध्यात्म प्रकाश	सुखदेव मिश्र	१९वी श	१५.५x८	५८१-६०७	र.का. १७५५
१९	१२२०५ (१०)	अध्यात्म फाग		१७५५	१७x११	८-११	लि क विद्याप्रमोद, लि स्था रूपनगर
२०	१२३७७	अध्यात्म रामायण भाषा पद्यानुवाद	माधोदास शिष्य दामोदर	१८७०	१०x१६ ५	९३१	कीटविद्ध है।
२१	११६३०	अध्यात्म रामायण भाषा पद्यानुवाद	माधोदास शिष्य दामोदर	१९००	३० ५x१५	२३८	र का १६८१
२२	१०९५० (१)	अन-पारणी री वारता		१९२२	१४ ५x८	१-१०	अत मे 'अन पुराण' शीर्षक है।
२३	१२२२० (२०)	अन्नकूट के पद	सूरदास	१९वी श	१९x१६.५	७९-८१	लि स्था जोधपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
३३	१२३२० (४४)	अभैनन्दन स्तवन		गु १८२७	२१ ५x१४.५	५० वा	
३४	१२४२२ (३)३	अभै मात्रा	गोरखनाथ	१८३१	१५x१०.५	२११ वा	लि.क. ऊगमदास लि स्था डीडवाणा
३५	१२५६१ (६)	अमृतधारा	भगवानदास निरजनी	१८५५	२३ ५x१७	३०८-३३०	लि क. नंदराम लि स्था.ककोड ग्राम पत्र जीर्ण
३६	१०८६७ (६)	अमृतधुनिछद		१९वी.श	१८x११	८६-८७	र का.(१७२८, र स्था मऊ मे
३७	१०८४९ (७)	अमर वोध	रामदास	१९३१	१७x११	१४-१७	गुटका सजिल्द लि क साधु छूछमराम
३८	१०८६६ (४)	अमरबोध	रामदास	१९१०	७ ५x७ ५	७७-९७	८९ वा पत्ररिक्त
३९	१०९७३ (१)	अमरसेरा री चौपई	कुसालचन्द	१९१४	२५ ५x११ ८	१-७	र का १८९८ र.स्था महापुरा।
४०	१०९०७ (१)	अयवतीनो चोढालियो	जैमल	१९ वी श	२५ ५x१२	१-३	र का १८५०,र स्था नागोर
४१	१२५६८ (२)	अयवती सुकमालरी चउपई	जिनहर्ष	१९वी श	१८ ५x१२ ५	१९-२९	पत्राक १ से १२ अप्राप्त, १३ से १८ "लघुचाणक्य राजनीति" र का. १७४१ र स्था राजनगर लि स्था. ग्राममाडावास

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि सं मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
५२	११५८४ (३२)	अरहनारिषि चउढालियो	हर्षउदय वाचक शिष्य सोम	१८वी श.	१९.५x१६	२२४-२२५	र का १७२६ लि क प केशवदास शिष्य हरषउदयगणि
५३	१०९०२ (१)	अरिल (अरिल्ल)	वाजीद	१८०९	१५ ५x१२ ५	१-५	पत्र बडकने हैं । लि क भीखनदास
५४	१२५६१ (१६)	अरिल (अरिल्ल)	वाजीद	१८५५	२३ ५x१७	३६८-३६९	लि क नदराम लि स्था ककोड ग्राम
५५	१२५५१ (२२)	अरिहत-गुण वर्णन		१७वी श	१३x११	१४८-१४९	
५६	❀१२३०३	अवतार चरित्र भाषा सचित्र	नरहरिदास बारहठ	१९१७	३०x२८ ५	१-३२८	चित्र स ३३, र का १७३३ लि क वशीधर लि स्था इयारीआ गाव
५७	१०९६२	अश्वमेध भाषा पद्यानुवाद (महाभारतगत)	भगवानदास निरजनी	१९१४	२५x१२ ५	१-७६	६६ अध्यायो तक । र का १७५५ लि क बुधराम, लि स्था पीपरा । "ग्रथ समापति यह भयौ, मास एक कृत सार ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेप ज्ञातव्य
६०	१२५७५ (६)	प्रसज्भाय सज्भाय	गुणसागर का शिष्य	१९वौ श	१३ ५x१४	१३-१५	
६१	१२५७० (४२) १	अष्टप्रकारी पूजा		१८६९	१६x११ ५	१०१-१०७	पत्राक १०१ त्रुटित
६२	१२३७० (२)	अष्टप्रकागी पूजा	देवचन्द्र शिष्य ज्ञानमागर	१९वी श	१६x११ ५	९-११	र का १७४३ गुण युग अचल इदु
६३	१२५६५ (२)	अष्टप्रकारी पूजा		१९३७	१६x१२	८-९	लि क दीपसागर, लि स्था फलोदी
६४	१२३७० (१७)५	अष्टमीस्तुति		१९वी श	१६x११ ५	१४५-१४६	
६५	१२४२२ (३)९	अष्टमुद्रा	गोरखनाथ	१८३१	१५x१० ५	२१५-२१६	लि क ऊगमदास, लि स्था. डीडवाणा
६६	१२५६४ (२)	अष्टावक्र भाषा		१९वी श	१४ ५x१० ५	१५-५०	अत मे स्फुट श्लोक व सवैया है।
६७	१०९४६ (१)	अष्टाक्षरनिरूपण भाषा टीका सह	टी० विट्ठलेश्वर	१९वी श	१४ ५x७ ५	१-१९	
६८	१२५४८ (३)	अहिल्या-सत	नरहर	१८९०	१६x१२.५	३४-३७	
६९	१२२१० (२८) १	अक्षयतृतीया के पद	कृष्णदास	१९वी श.	१८x१३ ५	१६९-१७०	
७०	१२२१० (२८)२	अक्षयतृतीया के पद	चत्रभुज	१९वी श	१८x१३ ५	१६९-७०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
८१	१२२१० (२७)५	आचार्यजी की बधाई के पद	मानिकचन्द्र	१९वी श.	१३x१३.५	१६६-१६७	
८२	१२२१० (२७)६	आचार्यजी की बधाई के पद	विष्णुदास	१९वी श.	१८x१३ ५	१६७वा	
८३	१२२१० (२७)७	आचार्यजी की बधाई के पद	सगुनदास	१९वो श.	१८x१३ ५	१६८-१६९	
८४	१२४१२ (१)	आचार्यजी की वार्त्ता (वल्लभकुली)		१९वी श.	२१x१६ ५	१-१५	प्रारम्भ के पत्र अप्राप्त
८५	१२४१२ (४)	आचार्यजी की सेवको की वार्त्ता (वल्लभकुली)		१९वी श	२१x१६ ५	१-१४७	अत मे सभी सेवको की सूची दी हुई है। इसमे १६ सेवको की बाते है।
८६	१२२१८ (५७)	आणदसधि	श्रीसार शिष्य रत्नहर्ष वाचक	१७६६	२५ x१०	६९-८०	लि स्था. डीडवाणा र.का १६८४
८७	१२१८०	आणद सधि	श्रीसार शिष्य रत्नहर्ष वाचक	१९३३	२५ ५x११ ५	१-१०	र का १६८४ लि क. सवाईसागर शिष्य विजयसागर लि स्था. पोहकरण
८८	११०२७	आतमप्रकाश (वैद्यक)	आतमाराम शिष्य दोलतराम	१९७०	१८x९	१-१२५	पत्र १-८६ तक पुराना कागज है व बाद मे नया कागज है। साथ मे एक खरडे पर 'निघण्ट' भैषज्य-

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स में)	माप (सेमी में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
							भाषा भी है। विषयनामानुक्रमणिका सहित। लि क रामचतुर शिष्य दीर्घराम, लि स्था जोधपुर।
८९	११०८१	आत्मप्रकाश (वैद्यक)	आत्माराम शिष्य दोलतराम	१९०१	१७x१२	३ ७४	प्रारम्भ के दो पत्र अप्राप्त।
९०	१२०९२	आत्मप्रकाश (वैद्यक)	आत्माराम शिष्य दोलतराम	१९०३	३२x१४	१-१९६	प्रारम्भ का पत्र जलग्रस्त लि क राजमल मोहतो लि स्था नागोर
९१	१२२०९	आत्मप्रतिबोध		१८वी श	२५x१८ ५	७०-७१	
९२	१२२१८ (५५)	आत्मसज्झाय	हर्षकुशल	१८वी श	२६ ५x१२	६७-६८	
९३	१२३७२ (३)	आत्मा अचल अष्टक (सुन्दराष्टक)	सुन्दरदास	१९वी श	२४x१६ ५	८०-८७	
९४	१२५९२ (६) ४	आत्मा अचल अष्टक	सुन्दरदास	१९वी श	१४x१० ५	१५९-१६१	
९५	१२५७५ (७)	आतमशिक्षा सज्झाय	पार्श्वचंद	१९वी श	१३ ५x१४	१५-१७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
९६	१२२१८ (८२)	आतम सज्भाय	सहजसुदर	१८वी श	२६ ५x१०	१३०वा	
९७	१२३२० (२७)	आतम सज्भाय		१८वी श	२१ ५x१४ ५	३३वा	
९८	१२५५१ (१८)	आदिजिन आलोयणा स्तवन	समयसुन्दर	१७वी श	१३x११	१३१-१३४	
९९	११५८५ (८)२१	आदि जिनस्तवन		१९०३	१९ ५x११ ५	१५४वा	
१००	१२०६८ (११)	आदिजिनस्तवन	समयसुन्दर	१८८८	२३ ५x५१	५३-५४	लि क जती वीर वैताल लि स्था कलकत्ता
१०१	१२२१८ (५०)	आदिजिनस्तवन	धर्मसुन्दरगणि	१८वी श	२६ ५x१२	६५-६६	
१०२	१२५७५ (११)	आदिजिनस्तवन		१९वी श	१३ ५x१४	२९वा	
१०३	११५८४ (२७)	आदिनाथस्तवन	सहजसुदर	१८वी श	१९ ५x१६	२१३-२१४	लि क प तेजसी
१०४	११ ५८५ (८)१५	आदिनाथस्तवन	हर्षचद	१९०३	१९ ५x११ ५	१४८वा	लि क लीखमीचद कोचर लि स्था वालाहेडा
१०५	११५८५ (८)२९	आदिनाथ स्तवन	जसविजय	१९०३	१९ ५x११ ५	१६४ वा	
१०६	१२२१४ (५)	आदिवोध	ध्यानदास	१९वी श	२१ ५x१३	६९-७१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि सं मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१०७	१२२१८ (५८)	आर्द्रकुमार सज्झाय	मानसागर शिष्य जीतसागर	१८वी श	२६.५x१०	८०-८१	
१०८	१२०६८ (१)	आनन्दघन चोबीसी	आनन्दघन	१८८८	२३ ५x१५	१-१०	लि क वीर वैताल लि स्था कलकत्ता
१०९	१२३७० (७)	आनन्दघन चौबीसी	आनन्दघन	१९वी श	१६x११ ५	५६-७२	
११०	१०७९१	आनन्दघन चोवीसी सटबार्थ	आनन्दघन, टब्बा-ज्ञानविमल	१९०३	२७ ५x१३	१-४१	लि क हमीर विजय लि स्था हरिदुर्ग
१११	१२३६७ (५)	आनदरीसधि रो गीत		१९वी श	२५ ५x१६ ५	७६ वा	
११२	१२५७५ (१६)	आलोयणागीत	मतिशेखर वाचक	१९वी श.	१३ ५x१४	५६-५७	
११३	१२२१८ (१०६)	आलोयणा छतीमी	समयसुदर	१८वी.श	२६ ५x१०	१२०-१२१	
११४	१०९०० (९)	आरती	सेवगराम	२०वी श	१२x८ ५	७७-७९	
११५	११५८५ (८)४९	आरती		१९वी श.	१९ ५x११ ५	१८८वा	
११६	१२२१८ (२०)	आरती	मीराँ	१८वी श.	२६ ५x१०	३५ वा	
११७	१२२२० (२०)	आरती	नामदेव	१९वी श	९.५x६ ५	३९-४०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
११८	१२५७४ (२)४	आरती	रामचरण	२०वी श	१७x१० ५	८१ वा	लि क. बक्षीराम
११९	१२५७४ (७) १	आरती	सतदास	२०वी श.	१७x१० ५	१६७ वा	
१२०	१२५७४ (७)२	आरती	रामचरण	२०वी श	१७x१० ५	१६८,१७० १७१वे	
१२१	१२५७४ (७) ३	आरती	रामजन	२०वी.श	१७x१०.५	१६८वा	
१२२	१२५७४ (७)४	आरती	दुलहराम	२०वी श	१७x१० ५	१६८वा	
१२३	१२५७४ (७)५	आरती	चत्रदास	२०वी श	१७x१० ५	१६९वा	
१२४	१२५७४ (७)६	आरती	नारायणदास	२०वी श	१७x१० ५	१६९वा	
१२५	१२५७४ (७)७	आरती	हरदास	२०वी श	१७x१० ५	१६९वा	
१२६	१२५७४ (७)८	आरती	कबीरदास	२०वी श.	१७x१० ५	१७०,१७१, १७२ वे	
१२७	१२५७४ (७)९	आरती	नामदेव	२०वी श.	१७x१० ५	१७० वा	
१२८	१२६१२	आरती		१८३६	२५ x१५	४४ वा	लि.क. सिघवी हिमतराम लि.स्था. दिल्ली मे यमुनातीरे

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्रसख्या	विशेष ज्ञातव्य
१२९	१२३२० (४०)	आलोयणा मज्भाय		१८वी श	२१.५x१४ ५	४८वा	
१३०	१२२१८ (६०)	आलवणा मज्भाय	ज्ञानउदोत शिष्य जिनहर्ष	१८वी श	२६ ५x१०	८२-८३	
१३१	१२४४६ (३)	आपाढभूत चउढालियो	ऋषि रायचद	१६वी श	२५x११	५-७	र का १८२६, र स्था. पाली
१३२	१२२१८ (११३)	आपाढभूत धमाल	कनकसोम	१८वी श	२६ ५x१०	१२४-१२६	र का १६३८
१३३	१२२०८ (३)	आहार-अणाहार विचार		१८वी श	२५x१८ ५	६६वा	
१३४	११३१४ (२)	इकलाकमहसनीन (हिन्दुगी जवान मे)			१७ ५x१४	२७-१४६, १-३६	अनेक किस्सो का सग्रह है। अपूर्ण । जलाभिषिक्त होने से पत्र चिपके हुए है ।
१३५	१२०७३	इतिहाससार समुच्चय	लालदास पुत्र उधौदास	१८८७	३० ५x१५ ५	१-४३	लि क जैतराम, लि स्था मूडवा (नागोर)
१३६	१२५२५	इतिहाससार समुच्चय	लालदास पुत्र उधौदास	१८५७	३३ ५x१६	१-१९	लि क के नाम-स्थान पर स्याई फेरी हुई है । आद्य-अन्तिम पत्र शोभन ।
१३७	*१२३५५	इतिहाससार समुच्चय भाषा	मुकददास निरजनी	१९०३	३१ ५x१५.५	१-७२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३८	१२२०९	इनजुलपुरान वेदशास्त्र	हकीम फरामिसुत	१९३३	२१.५x१६ ५	१-१०८	चमडे की जिल्दबन्धी । यूनानी दवाइयो के नुस्के व रोग निदान । लि क. पुजारी रामप्रसाद लि स्था रूपनगर
१३९	१२५८१ (११)	इला-पुत्र सज्झाय	लब्धिविजय	१९वी श	१६x१० ५	७५-७६	
१४०	१२२१० (१७) १	इद्र को पद	कृष्णदास	१९वी श	१८x१३ ५	९५ वा	
१४१	१२२१० (१७) २	इद्र को पद	परमानन्द	१९वी श	१८x१३ ५	९५-९७	
१४२	१२२१० (१७) ३	इद्र को पद	चत्रभुज	१९वी श	१८x१३ ५	९६ वा	
१४३	१२२१० (१७) ४	इद्र को पद	गोविद	१९वी श.	१८x१३.५	९६वा	
१४४	१२२१० (१७) ५	इद्र को पद	सूरदास	१९वी श	१८x१३ ५	९७वा	
१४५	१२२१० (१७) ६	इद्र को पद	कुभनदास	१९वी.श	१८x१३ ५	९८ वा	
१४६	१२२२० (२१)	इद्रकोप के पद	कृष्णदास	१९वी श	१६ ५x१९	८१ वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्रसख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४७	१२२०५ (१२)	इद्रजाल		१७५५	१७x११	१२-१३	लि क विद्याप्रमोद, लि स्था रूपनगर
१४८	१०८४५ (३)	इम्रतधारा (अमृतधारा)	भगवानदास निरजनी	१८८६	१५ ५x१० ५	७६२-८२०	ग्रन्थ १४ प्रभावो मे विभक्त है। र का १७२८, र स्था क्षेत्रवास लि क जेरामनारायण, लि स्था पोकरण
१४९	१२३२० (४८)	उत्पत्ति सज्झाय	श्रीसार शिष्य रत्नहर्षवाचक	१८१९	२१ ५x१४ ५	७-१०	लि क खेमचन्द्र
१५०	११५७७	उत्तम चरित सानुवाद	मू चारुचन्द्र शिष्य भक्तिलाभ टी०चारित्र्यसागरगणि	१८४९	२६x११	१-३६	लि स्था वगडी नगर
१५१	१२५८५ (७)	(१) उदैगिरिजी किस्तुरा बाई री परची	सुखसागर शिष्य दरियाव	१९२७	१९ ५x१५	२४४-२५३	बीकानेर के आगासर गाव की। लि क आरतराम शिष्य सुलभराम, लि स्था वदनोर
१५२	१२००२	उपदेशबत्तीसी (बालचन्द-बत्तीसी)	बालचद शिष्य गगदास	१९वी श	२५ ५x१२	१-३	र का १६८५, र स्था अहमदाबाद

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे	माप (से मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
* १५३	१०९८३	उपदेशी ढाल सग्रह	अनेक कर्तृक	१९३७	२५x१२	१-१३१	विभिन्न जैन कवियो के पद व ढाले सगृहीत है। विवरणात्मक सूची परिशिष्ट मे देखे।
१५४	१०८४९ (१५)	उपदेस दिढावणि	फरीदजी	१९३१	१७x१०	८७-८९	
१५५	१०९३७ (२)	उपदेस बावनी	किसनदास वाचक	१९२२	१४ ५x७ ५	१-४० ६	र का १७०८ लि क रामलाल, लि स्था बदनोर-रामद्वारा श्री ये सग राज लोक गज सिरताज गुरु, तिनकी क्रिपा जू कबताई पाई पावनी । समत सतरैसत आठै विजैदसमी कौ, ग्रथ की समापति भई है मनभावनी ।। साधवी सुग्यान मा की जाई श्री रतनबाई, तज्यौ देह ताते ऐह रची परिचावनी ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (स मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
							मतै कौन मत लीन तत्त्व ही पैं रुचि दीनी, वाचक किसन कीनी उपदेस बावनी ।।
१५६	११००८ (२)	उपमा-सग्रह	हीराचद कानजी	२०वी श	२६×१३	१४-२२	र का १९२२ प्रति समाकालीन प्रतीत होती है । पत्र-१५-१६ पर उपमाओ के वर्गीकरण की सारणी है ।
१५७	१२०६८ (८)	उल्लासकम्		१८८८	२३ ५×१५	४८-४९	लि क जती वीर वैताल, लि स्था कलकत्ता १४ कवित्त है ।
१५८	१०८४२ (१)	ऊमादे भटियाणीरा कवित्त	आशा बारठ	१९००	२४ ५×७ ५	१-२	
१५९	११४७७ (१)	ऊषाहरण	परमानन्द भट्ट		२३ ५×१७	१-५१	
१६०	१२६१२ (१६)	ऋषभकुमार गीत		१९वी श.	२५×१५	५७-५८	लि क सिघवी हिम्मतराम लि स्था जैपुर
१६१	१२३२० (१६)	ऋषभगीत		१८वी श	२१ ५×१४ ५	२५वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६२	१२३७० (६)अ	ऋषभगीत	जसविजय वाचकशिष्य नयविजय	१६वी.श	१६×११ ५	६८वा	
१६३	१२४४०	ऋषभ-चरित्र	ऋषि रायचन्द	१८४५	२६×११ ५	१-१६	१८वा पत्र अप्राप्त। र का. १८४०, र स्था. पीपाड लि स्था. गागराणा
१६४	१२३६७ (३)	ऋषभजिन-गीत	विनीतविमल	१६वी श	२५ ५×१६ ५	६७वा	
१६५	१२३७० (६) ३	ऋषभजिन-स्तवन	क्षमाकल्याण शिष्य अमृतधर्म	१६वी श	१६×११ ५	५१-५४	र.का. १८६८, र स्था मडोवर
१६६	१२३७० (१७) १	(१) ऋषभजिन-स्तुति (२) द्वितीया स्तुति		१६वी श.	१६×११ ५	१४०-१४१	
१६७	१२५५१ (१)	ऋषभदेव धवल		गु०१६३२ -१६८०	१३×११	५८-७७	पत्र १ से ५७ तक अप्राप्त। कीटविद्ध। पत्र चिपके हुए।
१६८	११५८५ (८)१७	ऋषभदेव-पचस्तवन		गु०१६०२	१६.५×११ ५	१४६वा	लि क लिखमीचद कोचर लि स्था. बालाहेड़ा
१६९	१२३२० (४१)	ऋषभदेव-स्तवन		गु०१७६७	२१.५×१४.५	४६वा	
१७०	११५८५ (८)३७	ऋषभदेव-स्तवन	देवचन्द्र	गु०१६०२	१६ ५×११.५	१७१वा	लि.क. लिखमीचद लि स्था बालाहेडा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि म मे)	माप (से मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७१	१२२०५ (२९)२	ऋषभनाथ स्तवन	जिनराजसूरि	गु०१७५०	१७x१२	१०८-१०९	लि क विद्याप्रमोद लि स्था रूपनगर
१७२	१२५७७	एकताबोध	सतदास	१९वी श	२१x१५ ५	७८-७९	लि क विट्ठलदाम, लि स्था जोधपुर
१७३	१२२९३ (५) (५)	एक सिलोकी(श्लोकी)भागवत श्रीकिसन-लीला भाषा-टीका		१९वी श	२२ ५x१६	१०-१४	
१७४	१२२२५ (५)	एक सिलोकी भागवत श्री किसन लीला भाषा		१९वी श	२४ ५x१६ ५	१७१-२७४	
१७५	१२२२५ (४)	एक सिलोकी रामायण भाषा-टीका		१९वी श	२४ ५x१६ ५	१६६-१७०	
१७६	१२२९३ (४)	एक सिलोकी रामायण भाषा-टीका		१९वी श	२२ ५x१६	६-१०	लि क विट्ठलदास, लि स्था जोधपुर
१७७	११६४८ (१)	एक सिलोकी रामायण		१८वी श	२७x१६ ५	१-४	जीर्ण-शीर्ण
१७८	१२०१९ (१)	एकादशी कथा माहात्म्य-भाषा	नागरदास	१९०४	३१x१४	१-३२	
१७९	१२४७६	एकादशी कथा माहात्म्य-भाषा	ध्यानदास	१८१९	२९ ५x१४	३०	जीर्ण-शीर्ण एव जलाभिषिक्त। लि क सुखराम, लि स्था नागपुर।
१८०	१२४८३	एकादशी कथा माहात्म्य-भाषा	ध्यानदास	१८९९	३१x१४ ५	१-४५	लि क वैष्णव पोकरदास

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से. मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८१	११५७४	एकादशी माहात्म्य (बृह्माण्ड पुराणगत)		१८६२	२८ ५x१५	१-२१	७ वा पत्र खण्डित । पत्र जलाभिषिक्त । लि क.नरसिंघदास सुन्दरदास लि स्था नागोर ।
१८२	१२५६९ (१)	एकादशी-व्रत-कथा-माहात्म्य		१९वी श	१६.५x११	१-११	प्रारम्भ के पत्र अप्राप्त । पत्राक १०, ११, १२ पर गो० तुलसीदास कृत तथा अन्य स्फुट कवित्त
१८३	१२३८० (२)	एकादसलीला (कृष्ण-उद्धव सवाद)		१८वी श	२०x१४	१०६-१०९	
१८४	१०९३८ (२)	एकादस (स्कन्ध भागवत) भाषा	चतुरदास शिष्य सतदास	१८८५	१६.५x८ ५	३-४६०	र.का १६९२ जेठ शुल्ला ९ मगलवार ।
१८५	१०९३१ (१)	एकादस (स्कन्ध भागवत) भाषा	चतुरदास शिष्य सतदास	१९वी श	१४x१० ५	१-३०७	चौपाई २३९४, दुहा ४४ र का. १६९२
१८६	१२२१८ (१४६)	एकादसी स्तवन	जिनलब्धिसूरि	१८वी श	२६ ५x१२	१६१ वा	
१८७	१०८६२ (५)३०	ओखद आँख्या दूखे जीके देवाकी		१८९८	१७x१४	३५ वा	लि स्था जोधपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स में)	माप (सेमी में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८८	१०८६२ (५)२४	ओखद नजला की		१८६८	१७x१४		गुटकान्तर्गत- लि स्था जोधपुर
१८९	१०८६२ (५) २५	ओखद बाल बधवा की		१८६८	१७x१४	२४-२५	गुटकान्तर्गत- लि स्था जोधपुर
१९०	१२०६६ (६)	अक प्रश्न विचार		१९६६	१५ ५x१४	११० वा	
१९१	१०८८०	अजना-चरित्र		१९वी श	२५ ५x११ ५	१८	
१९२	१२३०४	अजनारास सचित्र		१९वी श	२४x११	१-३१	चित्र स ४६। पत्र स २,१२,१३,१६ व २८ वे अप्राप्त।
१९३	१२४२१ (१५)	अजना वाइक्य (वाक्य)		१९वी श	१७x१२	२४३वा	
१९४	१०८०२	अजनासती को रास		१९३९	२७x१२ ५	१-१२	लि क. रामकृष्ण महेशदास का शिष्य, लि स्था जगरामनगर
१९५	१२१४७	अजनासुदरी रास (हनुमत्चरित)	भुवनकीर्ति शिष्य ज्ञाननदी	१९वी श	२५ ५x१३ ५	१-३८	र का १७०६, महाराणा जगतसिहजी के राज्यकाल मे र स्था उदयपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१९६	१२२१८ (१४५)	अतरीक पार्श्वनाथ-स्तवन	सुमतिहस	१७६६	२६ ५x९ ५	१५९-१६१	
१९७	१२३७० (४२) १२	अतरीक पार्श्वनाथ स्तवन	रगहीर	१९वी श.	१६x११ ५	१२९-१३०	कर्ता खरतरगच्छीय र का. १८५५
१९८	१२२०५ (६)	अतरीक पार्श्वनाथ स्तवन (२) कापडहेडा पार्श्वनाथ-स्तवन आदि	कीर्तिवर्द्धन	१७५५	१७x११	१-४	लि क विद्याप्रमोद लि स्था रूपनगर -
१९९	१२२०५ (१९)५	अतरीक पार्श्वनाथ स्तवन		१७५५	१७x११	४८वा	लि क विद्याप्रमोद लि स्था. रूपनगर
२००	१२३११ (४)	कक्का-बत्तीसो	सदाराम	१९४०	१७ ५x८ ५	११९-१२८	लि क साधु गगाराम लि स्था कोटा-रामद्वारा
२०१	१०८६२ (१)	कक्का-बारखडी	सुदामा	१८९८	१७x१४	१-१०	गुटका सजिल्द । लि स्था जोधपुर
२०२	१२४२२ (१२)	करणेरी पावजी को पद	करणेरीपाव	गु १८३१	१५x१० ५	२४९-२५०	लि क ऊगमदास लि स्था डीडवाना
२०३	१२३७० (३५)	कपाट बावनी	रतनचन्द	१९ वी श	१६x११ ५	३३-४४	र का १८६०, र स्था पीपाड (जोधपुर)
२०४	११६४८ (९)	कबीरदास-जन्मबोध पत्रिका की रमेणी	कबीरदास	१८५३	२७x१६.५	३४७-३५२	लि क गोपालदास लि स्था कोलिया
२०५	१२४२६ (७)	कबीरदास-जन्मबोधपत्रिका की रमेणी	कबीरदास	२० वी श	१६ ५x१३	१४-४३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स में)	माप (से मी में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०६	१२४२२ (२२)	कबीरजी अरु रैदासजी को सवाद		गु १८३१	१५x१० ५	४४३-४४८	लि क ऊगमदास लि स्था डीडवाना
२०७	१२४२१ (६)	कबीरजी का रेखता	कबीरदास	गु १८६३	१७x१२	११६-१२७	लि क बालदास लि स्था जोधपुर
२०८	१२२२६ (६)	कबीरजी की परचई	अनन्तदास	१९वी श	१४x१२ ५	३७-५६	लि क बीरमदास निरजनी लि स्था कैरू (जोधपुर)
२०९	११५८३ (१०)	कबीरजी की परचई	अनन्तदास	१६६३	१८x१५	६६-११५	लि क उधवदास
२१०	११०६२ (२)	कबीरजी की परचई	अनन्तदास	१८३६	१८x१० ५	६७-१४६	लि क सेवादास शिष्य आत्माराम लि स्था बुलुदा
२११	१२४२२ (१६)	कबीरजी की परचई	अनन्तदास	गु १८३१	१५x१० ५	४१२-४२६	लि क ऊगमदास लि स्था डीडवाना
२१२	१२४२० (१६)	कबीरजी की परची	अनन्तदास	गु १९३२	१६x१४	४०८-४३०	लि क जमनादास लि. स्था रतनगढ-भरथिया की धर्मशाला
२१३	१२५८५ (२)	कबीरजी की परची	अनन्तदास	१९२७	१६ ५x१५	११६-१५०	लि क आरतराम लि स्था बदनोर
२१४	१२३८० (३)	कबीरजी की रमेणी	कबीरदास	गु. १७२४	२०x१४	११० वा	
२१५	१२३७४ (२)	कबीरजी की वाणी	कबीरदास	१९वी.श	११x१६ ५	१८७-१९५	अपूर्ण। आगे केपत्र रिक्त है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१६	१०८९८ (६)	कबीरजी की साखी	कबीरदास	१९२६	१३x८ ५	९५-१७७	अ ग ११, साखी २९३
२१७	११९८९ (३)	कबीरजी की साखी	कबीरदास	१९०६	२३ ५x१६	७-९	स १८९९ वाली प्रति से प्रतिलिपिकृत । लि क वसतीराम पूरविया ब्राह्मण लि स्था. जोधपुर
२१८	१२४२० (१८)	कबीरजी की साखी	कबीरदास	गु १९३२	१६x१४	३८१-४०७	लि क जमनादास लि स्था रतनगढ-भरथिया की धर्मशाला
२१९	१२५९१ (२७)	कबीरजी की स्फुट वाणी	कबीरदास	२०वी श	१५ ५x१०	१७४-१८३	
२२०	११५८३ (२१)	कबीरजी के पद	कबीरदास	१९९३	१८x१५	१६६-१७१	लि क अमरदास
२२१	१२५६१ (२)	कबीरजी को कृत (वाणी सग्रह)	कबीरदास	गु १८५५	२३ ५x१७	१२२-१४७	अँग ४९, साखी ८४५ लि क नदराम लि स्था ककोड ग्राम
२२२	१२३६९ (२)	कबीरजी को कृत (वाँणी सग्रह)	कबीरदास	गु १७८६	२४x१७ ५	१६६-१८९	लि स्था नारनोल
२२३	११०८८ (१)	कबीरदासजी की वाणी	कबीरदास	१९वी श	१५ ५x१३	१२७३	प्रारम्भ के १७ पत्रो मे गुरूवावली या 'दया' लिखित है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स में)	माप (से मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२४	११६४८ (५)	कबीरदासजी की वाणी	कबीरदास	१८५३	२७x१६ ५	७८-१६६	लि क गोपालदास लि स्था कोलिया
२२५	१०६०२ (५)	कबीरदासजी की वाणी	कबीरदास	१८०६	१५ ५x१२ ५	२४-३३	
२२६	१२५७७ (२)	कबीरदासजी की साखियाँ (अगबद्ध)	कबीरदास	१९वी.श	१४ ५x१० ५	३०-७२	लि क साधुराम नागर लि स्था उज्जैन
२२७	१२५८४ (१)	कबीरदासजी की साखिया (अगबद्ध)	कबीरदास	१७२०	१६.५x१४ ५	१-१८०	प्रथम पत्र त्रुटित। जल ग्रस्त एव स्याही फैली हुई है। कबीरदासजी की वाणी के प्राप्त गुटको मे से प्राचीनतम गुटका है।
२२८	१०८६६ (१८) ७	कबीर साहब का स्फुट अग	कबीरदास	१६२७	८ ५x७	६८६-७०३	लि क केवलराम लि स्था रावजी का बाग, जयपुर
२२९	१२४२२ (१)	कबीर साहब को कृत	कबीरदास	१८३१	१५x१० ५	१-११०	गुटके की सिलाई टूट कर पत्र पृथक हो गये हैं व किनारे खण्डित है। लि क ऊगमदास लि स्था. डीडवाना
२३०	१२२६ (१७)	कबीर साहिबजी की स्फुट वाणी एव पद सग्रह	कबीरदास	१९वी श	१४x१२.५	४७४-५९७	लि. क बीरमदास निरजनी लि स्था. कैरू (जोधपुर)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि सं मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३१	११५८४ (२६)	कमल वध कवित्त	पं० नैणसी	१८वी.श	१६ ५×१६	२१२वा	
२३२	११६४८ (७)२	कमालजी का पद	कमाल	१८५३	२७×१६ ५	३२७-३२८	लि क गोपालदास लि. स्था कोलिया
२३३	११०५८	कयवन्ना नी चौपई	जयरग जैतसी शिष्य पुण्य कलश	१७८१	२५ ५×१७	१-२१	र. का. १७२१ र स्था बीकानेर लि क उदयकुशल गणि लि स्था. डूगला
२३४	११५८५ (८)३६	करणी-स्तुति		१९वी.श.	१९ ५×११ ५	१७०वा	
२३५	११५८४ (४)	करम उदिम (कर्म-उद्यम) सवाद रास	हेमराज ऋषि शिष्य मुनि सग्राम	१७००	१९ ५×१६	२५-२८	र का १६७७ र स्था. गढ वैराठ-वधनौर लि क. चेला नरसिघ लि स्था चीतामा ग्राम
२३६	१२५८५ (११)	करमाबाई री परची	सुखसारण	१९२७	१९ ५×१५	२९२-२९८	लि क आरतराम लि स्था. बदनोर नगर खडेलो देस ढूँढाड (जयपुर) पुरोहित जिनको परिवार।
२३७	१२५८५ (१०)	करमेतीबाई री परची	सुखसारण	१९२७	१९ ५×१५	२८२-२९२	लि क. आरतराम लि स्था बदनोर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स में)	माप (से मी में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३८	१०८६६ (१६)	करुणा छत्तीसी	पूरणदास शिष्य दयालदास	१९२७	८ ५x७	५५८-५७१	लि क केवलराम लि स्था रावजी का बाग, जयपुर
२३९	१२३७१ (११)	करुणा छत्तीसी	माधोराम	१८३६	१८ ५x१६ ५	३२१-३२६	अन्त मे 'जीभडी' पर कवित्त है। लि क भीखनदास गौड लि स्था नागपुर (नागोर)
२४०	१२५९१ (३६)	करुणा-बावनी	मलूकदास	२०वी श	१५ ५x१०	२२६-२३९	
२४१	१०८९७ (३)	करुणा सागर	दयालदास	२०वी श	१२x११	११९-१५१	
२४२	१०९०० (३)	करुणा सागर	दयालदास	२०वी श	१२x८ ५	४-२५	बीच के पत्र जले हुए है, अक्षर खण्डित है।
२४३	१२४२० (२१)	करुणा सागर	दयालदास	गु १९३४	१६x१४	४३८-४४८	लि क साधु उदोतराम लि स्था बीदासर-रामद्वारा
२४४	१२२१८ (९१)	कर्म ग्रन्थ स्तवन		१७९२	२६ ५x१०	१०९-११२	लि क गुणरूप विजय लि स्था ईडवा पत्तन
२४५	१२२१८ (११८)	कर्म छत्तीसी	राजसमुद्र (जिनराज सूरी)	१८वी श	२६ ५x१०	१३१-१३२	
२४६	१०८४३ (९)	कर्म प्रकृति विधान	बनारसीदास	१९वी श	२५ ५x२०	२८-३९	लि क मुनि गगराज लि स्था रतनपुरी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सं.मी. मे)	पत्रसख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४७	१२१८५ (४)	कर्म वत्तीसी		१८६७	२१x११ ५	६-८	लि क रगसागर लि. स्था जैतारण
२४८	१०८४६ (१२)	कर्म विपाक गीता		१६३१	१७x११	११-१४	गुटका सजिल्द लि क मनोरथराम
२४६	१०८६१ (४)	कर्म विपाक गीता		२०वी श	१६x१२	७७-८१	गुटका सजिल्द
२५०	११५८५ (८)२३	कर्म सज्झाय		१६वी श	१६ ५x११ ५	१५५वा	अपूर्ण
२५१	१२५६१ (७)	कलजुग का कवित्त		२०वी श	१५ ५x१०	१६-१८	
२५२	१२२२६ (७)४	कलजुगी मित्र का कवित्त	कवि व्यास	गु १८७६	१४x१२ ५	४३-४४	
२५३	१०८४३ (२)	कल्याणमदिर-भाषा	बनारसीदास	१८६५	२५ ५x२०	१-३०	अपूर्ण। सुवाच्य लिपि। महाराज बलवतसिहजी के समय मे लिपिकृत। लि. क मुनि गगराज लि. स्था. रतनपुरी
२५४	१२२१८ (५)	कल्याणमन्दिर-भाषा	बनारसीदास	गु १७५५-६७	२६.५x१०	२७-२६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२५५	१२३५४	कवितावली	गोस्वामी तुलसीदास	१९१९	३१ ५x१४ ५	१-३९	लि क. वैष्णव लालदास लि स्था बीकानेर, बगीची श्री-गगाजी की ।
२५६	१२३५७	कवितावली	गोस्वामी तुलसीदास	१८७७	३१ ५x१४ ५	२-२९	प्रथम पत्र अप्राप्त । लि क उधीदास
२५७	१२२१७ (४)११	कवित्त-गगाजी का	कवि गग	१९वी श	२१ ५x१२	८१-८२	
२५८	१२२१७ (४)२	कवित्त-गगाजू (जी) के	रामकृष्ण	१९वीश	२१ ५x१२	७२-७३	
२५९	११५८४ (२१)	कवित्त-डूगरसी निवाज का		१८वी	१९ ५x१६	१३७वा	
२६०	१२३७१ (१४) ३	कवित्त-नवग्रहा रो	कल्याण	१८३९	१८ ५x१६,५	१५वा	लि क भीखनदास लि स्था नागोर
२६१	१२३७१ (१४)५	कवित्त-भवानीजी रो	कल्याण	१८३९	१८ ५x१६ ५	१५वा	लि क भीखनदास लि स्था नागोर
२६२	११५८४ (२८)	कवित्त-मदिरा का		१८वी	१९ ५x१६	२१६वा	
२६३	१२२१७ (४)१०	कवित्त-महादेवजी रा	कवि गग	१९वी श	२१ ५x१२	१८वा	
२६४	१२३७१ (१४)२	कवित्त-महादेवजी रो	जगदीश	१८३९	१८ ५x१६.५	१५वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (स मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६५	१२३७१ (१४)६	कवित्त-वर्पा ऋतुरो	कल्याण	१८३९	१८ ५x१६ ५	१५वा	लि क भीखनदास लि. स्था नागोर
२६६	१२३७१ (१४)४	कृवित्त-शनिश्चरजीरो	कल्याण	१८३९	१८ ५x१६ ५	१५वा	लि. क. भीखनदाम लि- स्था नागोर
२६७	११०८५ (११) -	कवित्त-व्रजाधीश का		१९वी श	१६ ५x१३ ५	६९-७१	
२६८	१०८६९ (६१)६	कवित्त सवैयादि	जगन्नाथ	१९२७	८ ५x७		लि क. केवलराम लि स्था रावजी का वाग, जयपुर
२६९	१०९०७ (७)	कानड कठियारा नी चौपई	मानसागर	१९वी श	२५ ५x१२	१३-७१	अपूर्ण।
२७०	१२२१८ (६५)	कापरहेडा पार्श्वनाथ सज्भाय	ग्यानउदोत	गु १७५५से १७६७	२६ ५x१०	८७-८८	
२७१	१२२०५ (१)	कापरहेडा-पार्श्वनाथ-स्तवन	जिनहर्ष	गु १७४८से १७५५	१७x११	१ला	पत्र २ पर सस्कृत-प्राकृत मे स्तुति है। लि क विद्याप्रमोद लि स्था रूपनगर
२७२	१२२०५ (१९) ६	कापरहेडा पार्श्वनाथ-स्तवन	कीर्तिवर्द्धन शिष्य दयारत्न	गु १७४८से १७५५	१७x११	४८-५०	लि क वीद्याप्रमोद लि स्था. रूपनगर
२७३	१२२०५ (३०)	कापरहेडा-पार्श्वनाथ-स्तवन	हर्षकुशल	गु १७४८से १७५५	१७x११	११३वा	लि. क विद्याप्रमोद लि स्था रूपनगर
२७४	१२२१८ (६८)	कापरहेडा-पार्श्वनाथ स्तवन	सुमतिहर्प	गु १७५५से १७६७	२६ ५x१०	८९-९०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि म मे)	माप (स मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२७५	१२५८६ (३)	कामी-नर को अग	कबीरदास	१९वी श	१२x९ ५	३३ ४१	कबीर वाणी के अन्तर्गत । लि क विहारीदास
२७६	१२५४१	कायावेली अर्थ मजुत	दादूदयाल	१९वी श	२८x१३ ५	१-१०	
२७७	१२४२६ (१०)	कायामूल	कबीरदास	२०वी श	१६ ५x१३	७-८	
२७८	१०९५४ (११)	काया सज्झाय	रत्नतिलक सेवक	१८७४	२४x१६ ५	११०वा	लि क रणजीत लि स्था पाली
२७९	१२१९९ (२)	कार्तिक पूनम रो बखाण (व्याख्यान)		१९७५	२७x१४	२३-२६	लि क. प केशरीसागर लि स्था फलोदी
२८०	११५४८	कार्तिक महातम (माहात्म्य) (भाषापद्यानुवाद) पद्मपुराणगत	भगवानदास निरजनी	१९वी श	२५x१४ ५	१-९८	र का १७४३ लि क साध लछीराम
२८१	१०९४३ (१)	कार्तिक माहात्म्य		१८८४	१८x१४	१-७१	
२८२	११५५१	कार्तिक माहात्म्य-भाषा (पद्मपुराणगत)	भगवानदास निरजनी	१८९१	३० ८x१८	१-८९	र. का १७४३ लि स्था नागोर-बखतसागर लि. क वरकत निरजनी
२८३	१०९०९ (१)	कालज्ञान (वैद्यक)	लक्ष्मीवल्लभ गणि	१७८८	१५ ५x१०	१-१०	लि स्था तिलियासर (बीकानेर)
२८४	१२३६९	कालज्ञान स्वरोदय		गु १७८६	२४x१७ ५	१९०वा	लि स्था नारनोल
२८५	१२५९९	किष्किन्धाकाण्ड (रामचरितमानस गत)	गो० तुलसीदास	१९वी श	३०x१५ ५	११वा	पत्रो के कोण खण्डित ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. में)	माप (से.मी. में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८६	१२३२० (४९)	किसनजीरो विवाहलो		१८२३	२१.५×१४.५	११-१६	
२८७	११०७३	कीर्तिधर मुनि-कथा	चोथमल शिष्य नथमल		२३.५×१२	१-२	र. स्था. सोजत
२८८	१०८९९ (५२)	कुण्डलिया	मगराम	२०वीं श.	१४×११.५	४५-५३	गुटका अपूर्ण है।
२८९	११६४८ (५०)	कुण्डलिया (अगनद्ध)		१८५३	२०×१३.५	६२-७८	लि. क. गोपालदास लि. स्था. कोलिया
२९०	१०९३६ (७०)	कुण्डलियादि	संग्रामसिंह	१९३४	१२.५×८.५	३७५-४१८	संग्रामसिंहजी के पद्यों का सुन्दर संकलन है। लि. क. चोकाराम लि. स्था. जोधपुर
२९१	१२०९९ (४)	कुतुबमत		१९९२	१५.५×१४	५५-६०	
२९२	१२२०५ (२०)	कुशल गुरू-गीत (जिनकुशल)	कीर्तिवर्द्धन शिष्य दयारत्न	गु. १७४८ से १७५५	१७×११	५१वां	लि. क. विद्याप्रमोद लि. स्था. रूपनगर
२९३	१२५५१ (३०)	कुशलसूरिगीत (जिनकुशल)	लखमीचन्द	१९८०	१३×११	१७१वां	लि. क. समयकीर्त्ति
२९४	१२५६७ (२)	कुसलसिंघ चापावतरो सिलोको	बखतो साह	१८३०	२१×१५.५	९-२०	आउवा के ठाकुर राठौड़ कुशलसिंह के साहसिक कार्यों का वर्णन। बखतसिंह को गद्दी पर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
							विठाने मे इन का पूरा हाथ था। लि क चेला केसरचन्द लि स्था कटालिया ग्राम
२९५	१२५६८ (८)	कुसलसिंघजी राठौडरो सिलोको	बखतो साह	१८४८	१८ ५x१२ ५	८-१२	
२९६	१२३८० (२०)	कृष्ण-उद्धव-सवाद			२०x१४	२२६-२२९	
२९७	१२३२१	कृष्णचन्द्र चन्द्रिका (भागवतदशमस्कन्ध-भाषा)	विष्णुदास	१८००	१९ ५x१३ ५	१-९६ १-८५	लि क नृसिंहदास लि स्था फतेपुर
२९८	११४४१	कृष्णचरित (रामगीतावलीगत)	तुलसीदास	१८९७	३० ५x१५ ५	१-१३	लि क लूणकर्ण
२९९	११९९७ (४)	कृष्ण चरित्र (नेमजी का सवैया)		२०वी श		२५-२६	
३००	१२४४८ (१)	कृष्ण-बावनी	वाचक किसन	१९०९	२८x१३	१-९	र क १७६० विजया दशमी
३०१	१२४११ (६)	कृष्णचन्द्रस्य विविध नामानि		१९वी श	२१x१४	११५वा	पुष्टि मार्गीय मतानुसार श्री कृष्ण-५४ नामाली
३०२	१२३८० (१४)	कृष्ण-रुकमनी-विवाह			२०x१४	१९०-१९६	अपूर्ण। पत्र १९७ मे १९९ तक अप्राप्त। पत्र २०० से २०७ तक रिक्त।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (म मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
३०३	११०८६ (४)	कृष्ण रुक्मिणीरी वेली सटीक	पृथ्वीराज राठौड	१८१६	२१.५×१५	६८-१५२	पत्र १५३ से १५९ तक मे स्फुट ५ कृतिया अष्टकादि सस्कृत मे है। लि क गुलाबगिरि
३०४	११५८४ (१९)	कृष्ण-रुक्मिणीरी वेली	पृथ्वीराज राठौड	१८वी श	१९ ५×१६	५९-७७	र का १६४४
३०५	१२०६९ (१)	कृष्ण-रुक्मिणीरी वेली	पृथ्वीराज राठौड	१६६९	१५ ५×१४	१६-३१	पत्र स १ से १५ व २१वा अप्राप्त। १२० वे छन्द से प्रारम्भ। पत्र स ३२-३३ पर आयुर्वेदिक नुस्के है।
३०६	१२२१५ (४)	कृष्ण-रुक्मिणीरी वेली (सबालाव बोध)	पृथ्वीराज राठौड	१९वी श	२२×१६	३८-७३	अपूर्ण। ८३ छन्दो तक ही है।
३०७	११०६०	कृष्ण-रुक्मिणीरी वेली (सबालाव बोध)	पृथ्वीराज राठौड	१७६६	२८×१२	१-३०	पत्र चिपके हुए है एव बीच मे कुछ अश फट गया है। र का १६३८ (वरसि अचल गुण अग ससि) लि स्था. सत्यपुर (सोजत) लि.क कल्याणचन्द्र सूरि
३०८	१०८३९ (७)	केरडावाली चोथ माताजीरी कथा		१९०६	३२×१७ ५	४०-४३	सजिल्द गुटका लि स्था जोधपुर
३०९	१०९०२ (१०)	केहरिजीरी साखी	केहरि	१८०९	१५ ५×१२ ५	५४-६३	लि.क. साधु भीखनदास

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
३१०	१२४१४	कोक चोपई भाषा	नर्बदाचार्य	१९वी श	२३x१६.५	२-६३	अपूर्ण। प्रथम पत्र अप्राप्त। पत्र १ से १७ तक खण्डित।
❀३११	१२१५३	कोक-शास्त्र	नर्बदाचार्य	१९वी श	२५ ५x११ ५	१-८४	बीच-बीच मे सस्कृत के श्लोक भी है। ग्रन्थकार ने पुष्पिका मे अपनी गुरु-परम्परा के अन्तर्गत अपने को तपा-गच्छीय कमल कलश-शाखा मे सम्बन्धित बताया है। र का १६५६ र स्था बुरहान-पुर-अमीरगढ, मीर दल्लशाह के समय मे। लि क ठकरलाल
३१२	१०९५५ (३)	कोकसार	आनन्द कवि	१९०५	१७ ५x२३ ५	१-२१	लि क. उदैचन्द लि स्था चौपासनी (जोधपुर)
३१३	११०८० (२)	कोकसार	आनन्द कवि	२०वी श	२२x१४ ५	४१-७३	
३१४	११०९०	कोकसार	आनन्द कवि	१९वी श	१८ ५x११	२-६९	कीट विद्ध एव जलाभिषिक्त।
३१५	११३१३ (२)	कोकसार	आनन्द कवि	१७९९	१५x१४	१-२४	पत्राक १, ३, ४ अप्राप्त। लि क. निहालचन्द लि स्था. जिहानाबाद

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (से मी.मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
३१६	१२४४६ (५)	कोणकरी चौपई		१९वी श	२५x११	१४-२०	लि क विहारीलाल लि स्था रायकोट
३१७	१२३२० (२४)	क्षमा छत्तीसी	समयसुन्दर	गु १७६२ मे १८६७	२१ ५x१४ ५	३०-३१	
३१८	१०६०७ (५)	खदक मुनि चउढालियो	जैमल	१९वी श	२५ ५x१२	८-११	र.का १८७१
३१९	११०१३ (१६)	खीमडारा दूहा	खीमडा	१८१८	२३x१५	१३१-१३२	पत्राक १३९ पर स्याई फैली हुई है। लि क ऋपि सुजाण लि.स्था. चाणोद (जोधपुर)
३२०	११६४८ (२६)	खेमदासजी की चितावणी	खेमदास	१८५३	२७x१६ ५	५७३-५७४	लि.क गोपालदास लि स्था कोलिया
३२१	११५८३ (४)	खेमदासजी की चितावनी	खेमदास	१९९३	१८x१५	६-११	लि क लिखमीदास
३२२	१२३६८	१ खोडिया क्षेत्रपाल स्तुति २ औपध ३ काला भैरव-मन्त्र-तन्त्र ४ स्फुट मत्रोक्त औषध-नस्के		गु १९४३से १९९४	२१x११ ५	१-१९९	तान्त्रिक विद्या व विभिन्न गुप्त रोगो के नुस्को की दृष्टि से गुटका महत्वपूर्ण ह। बीच के पत्रो मे कालरात्रिपद्धति है। लि क लक्ष्मीचन्द, चनणमल लुंका लि स्था पाली, पारा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
३३१	११०१३ (४७)	गरोशजी का छद	कवि हेम	१९वी श.	२३x१५	३२३-३२४	लि.क ऋषिसुजाण
३३२	१२५४७ (१)	गरोशजीरा पचरत्न		२०वी श	१६ ५x१२	१-२	
३३३	१०६०३ (१)	गरभ चितावणी	रामदाम	१९वी श	१३x८	१-१३	गुटका अपूर्ण है।
३३४	१२५७१ (४)३	गरभ चितावणी	रामदास	१९वी. श	१० ५x८	२०२-२२९	
३३५	१२५९१ (४०)	गरभ चितावणी	नरिया (नारायण)	२०वी श	१५ ५x१०	२५८-२६४	गुटके के अन्तिम पत्रो मे तुरसीदास के दो पद है।
३३६	११०१३ (१८)	गहगट रा दूहा		१८१८	२३x१५	१३२वा	लि क. ऋषि सुजाण लि स्था चाणोद (जोधपुर)
३३७	१२२२० (१८)	गाइ खिलाइवे के पद (गऊ को भोजन देने सम्बन्धी)	चत्रभुज, छीत स्वामी	१९वी श	१९x१६ ५	७९वा	
३३८	१२२१७ (५)	गाइ नाहर-सवाद		१९वी श	२१ ५x१२	११०-१११	
३३९	१२२१७ (४)१९	गाथा दूहा-लक्षण		१९वी श	२१ ५x१२	१००वा	
३४०	१२३७० (६)२	गिरनार मडन-नेमिजिन स्तवन	साधु क्षमाकल्याण शिष्य अमृतधर्म	१९वी श	१६x११.५	५०-५१	र का १७६६
३४१	१५८५	गीत-अभैसिहजीरो		१९वी. श	१६ ५x१३ ५	६३वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (स मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
३५१	१०८६२ (१०)	गीत (जागोजी अलबेली नार)		१९वी श	१७x१४	११वा	लि. स्था जोधपुर
३५२	१२२१८ (१३)	गीत—जिनचद सूरिरो		गु १७५५से १७६७	२६ ५x१०	३३वा	
३५३	१०८६२ (२६)	गीत—ढोला का		१९वी श	१७x१४	२९वा	लि स्था जोधपुर
३५४	१०८६७ (३)	गीत—त्रिगुटबध	कवि मुरार	१९वी. श	१८x११	७०-७२	गुटका सजिल्द
३५५	१०८६२ (१४)	गीत (प्यारी थारा नैना मे वतावै जादूडा)		१९वी श	१७x१४	१४वा	लि. स्था. जोधपुर
३५६	१०८६२ (३)	गीत (प्यारी रा लुभाया लोभी पावणा)		१९वी श	१७x१४	१७वा	लि स्था. जोधपुर
३५७	१२५७० (१ ३	गीत-भरथरीजी को	मलूकदास	२०वी श.	९ ५x६ ५	७-१६	९ वा पत्र अप्राप्त।
३५८	१०८६२ (१५)	गीत (म्हाने प्यारी लागे छै माराज आपरी गुलाली अखियाँ)		१९वी श	१७x१४	१५वा	लि स्था जोधपुर
३५९	१२५७० (१)२	गीत-सपखरो		२०वी श	९ ५x६ ५	५-७	
३६०	१२५९१ (३९)१	गीत-सपखरो	मलियादास	२०वी. श	२५ ५x१०	२५६-२५७	र का. १९५५

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (सें.मी. में)	पत्रसंख्या	विशेष ज्ञातव्य
३६१	११०८५ (४)	गीत-भगवतरो	उदयराज	१९वीं. श.	१५ ५x१३ ५	६२वां	
३६२	११०१३ (७)१	गीत-मामोर (श्री कृष्णजीरो)		१९वीं श.	२३x१५	८३-८४	कृष्ण-सुदामा के मिलन प्रसंग पर लि. क. ऋषि सुजाण लि. स्था. नागोद (जोधपुर)
३६३	१२५७० (१९)	गीत-सामोर	तुलसी	२०वीं. श	९ ५x६ ५	१२८वां	
३६४	११०८५ (६)	गीत सिंगनी भीनराजरो	आलाउसिंघ	१९वीं श	१६.५x१३ ५	६४वां	पत्रांक ६५ वां रिक्त है।
३६५	१०८४२ (१४)	गीत वडो मामोर (हवेली झगडो हुवो जिण भाव रो)	आसियो वुधो	१९वीं श.	२४.५x१६ ५	९५-९६	ठा० भगतीदानजी ने आसियो वुधो कहै लि.क. गिडियो हरसुख व नरसूर फतो लि.स्था. जोधपुर
३६६	१०८६२ (७)	गीत-(हीदोरा हेलीरंग रह्यो सरसाय)	रसिक बिहारी	१९वीं श	१७x१४	९वां	लि.स्था. जोधपुर
३६७	१२५५३ (१०)	गीता-अठारवां अध्याय मधुवन भाषा	भगवतदास	१८९७	१४ ५x१३.५	१३३-१६७	रामानुजाचार्य के भाष्य पर भगवतदास की मधुबन-भाषा लि.क. ब्राह्मण श्रीधर लि.स्था. भागनगर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि सं में)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
३६८	१२५७४ (१७)	गीता की भाषा टीका		२०वी. श	१७x१० ५	३१८-३३५	अपूर्ण, पाचवे अध्याय तक।
३६९	११५६६	गीतामहातम (माहात्म्य) की कथा		१८६३	३१x१८ ५	१ -२३	लि क. रणछोडदास लि स्था ठठौरा गाव
३७०	१०९३९	गीतामाहात्म्य-भाषा (पद्मपुराणगत)		१९वी श	१५ ५x११	११-७५	पत्र १-१० अप्राप्त। चतुर्थ अध्याय से अष्टादश अध्याय तक।
३७१	१२४११ (७)	गीतामाहात्म्य-भाषा टीका (पद्मपुराणगत)	आनन्दराम नाजर	१९वी. श.	२१x९४	११७-११८	अपूर्ण। आगे के पत्र रिक्त। अन्तिम १८ पत्रो में सस्कृत मे स्वरोदय है।
३७२	१२४७८	गीतामाहात्म्य-भाषा (आनन्द विलास)	आनन्दराम नाजर	२०वी श	३०x१५	१-४४	पत्र स० ९,४२वे अप्राप्त। र का १७६१ (धरनी रस नीरधी मयक)
३७३	१२५५३ (१)	गीतामाहात्म्य-भाषा (पद्मपुराणगत)	आनन्दराम नाजर	१८९७	१४ ५x१३ ५	९-८१	पत्र १-८ अप्राप्त। ९वा पत्र खण्डित। पत्र गुटके से पृथक् हो गये हैं। र का. १७५४ (वेद वान मुनि विध वर्षे) लि क. ब्राह्मण श्रीधर लि स्था. भागनगर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि स में)	माप (स मी मे)	पत्रसख्या	विशेष ज्ञातव्य
३७४	१२५२६	गीतामाहात्म्य-भाषा (पद्मपुराणगत)		१८५७	३५\१६ ५	१-११	ग्रन्त मे जगजीवणदास व कबीर की साखी है ।
३७५	१२२६३ (२)	गीता-माहतम (माहात्म्य) भाषा टीका सचित्र (पद्मपुराणगत)		१६वी श	२२ ५\१६	८४-१५७	चित्र स०-५७ लिपि एव चित्रकार-विट्ठलदास लि स्था जोधपुर
३७६	११५५४	गीतामाहात्म्य-भाषा (पद्मपुराणगत)	जसवन्तसिंह पुत्र गजसिंह	१८२०	२६ ५x१३ ५	१-२६	लि क बलरामदास लि स्था नागोर-वालकदास जी का ग्रस्थल
३७७	११५५५	गीतामाहात्म्य-भाषा (पद्मपुराणगत)	जसवन्तसिंह पुत्र गजसिंह	१८२०	२६ ५\१२	२-२३	प्रथम पत्र अप्राप्त । लि क नरसिंघदास लि.स्था नागौर
३७८	१०६३६	गीतामाहात्म्य-भाषा (पद्मपुराणगत)		१६वी श	१५.५x११	११-७५	चतुर्थ से अठारवे अध्याय पर्यन्त । पत्राक १ से १० अप्राप्त ।
३७९	१२००८	गीतामाहात्म्य-भाषा (पद्मपुराणगत)		१६वी श	३१x१४ ५	१-३२	पत्राक १७-२० खण्डित ।
३८०	१२२२५ (२)	गीतामाहात्म्य-भाषा टीका सचित्र		१६वी श	२४.५x१६ ५	८७-१६०	चित्र स०-४६ पद्मपुराणगत ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स में)	माप (सें.मी में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
३८१	१२३७२ (६)	गीतासार		१६वी श	२८x१६ ५	१७३-१७८	लि.क नरनदास
३८२	१०६३६ (५७)	गीतासार		१६३८	१७ ५x८ ५	५६३-६६	लि.क. चोखमराम लि स्था. जोधपुर
३८३	१२६१२ (१७)	गुण-अक्षर-माला		१८१६	२५x१५	५८-६१	लि क. सिंघी हिम्मतराम लि.स्था. जयपुर
३८४	११५८३ (१८)	गुण-अजबनामो	बाजीद	१६६३	१८x१५	१५७-१६०	लि क. अमरदास
३८५	१२३७८ (१४)	गुणउत्पत्तिनामो	बाजीद	१८वी. श	२२x१५ ५	१०६-१११	लि.क रामचन्द दादूपथी लि.स्था. फतेपुर
३८६	१२३६६	गुणकरड गुणावलीरी चौपई	ऋषिदीप	१८६३	२५x१६ ५	४-६१	पत्र १ से ३ अप्राप्त । र.का १७५७ दशहरा दिने लि क लिखमीचन्द गुजराती लि स्था. भावी (जोधपुर)
३८७	१०८८१	गुणकरड गुणावली चतुष्पदी	जिनहर्ष शिष्य शान्ति हर्ष	१६वी श	२५x१२	१-२०	र का १७५१ अन्तिम चार पत्र कीटविद्ध
३८८	१२००१	गुणठाणा २८ द्वार		१८६६	२४ ५x१२	१-७	प्रतिलिपिकार के नाम पर रग पोता हुआ है ।
३८९	१२३७१ (४)	गुणप्रास्ताविक दूहा		१८३५	१८.५x१६ ५	१४६-२५०	लि क. भीखनदास गौड लि स्था. अहिपुर, नागोर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स में)	माप (स मी में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
३९०	१२३७१ (३)	गुण प्रास्ताविक (लधमल शतक)	लधमल	१८३५	१८ ५x१६ ५	१४२-१४५	र का १७३० लि क भीखनदास गोड लि स्था अहिपुर, नागोर
३९१	१०९५४ (१०)	गुण-बत्तीसी सज्झाय	रघुपति पाठक	१८७४	२४x१६ ५	१०८-११०	लि क रणजीत लि स्था पाली
३९२	११२८३ (५)	गुण-भवर-गीता	मोहनदास	१७८६	१६x१४ ५	५९-७२	उद्धव द्वारा कृष्ण को सन्देश लि क सीताराम सागर
३९३	१२२१४ (४)	गुणमाया-सवाद	ध्यानदास	१९वी श	२१ ५x१३	६५-६९	
३९४	१२२१७ (१८)	गुण-रूप-सवाद आदि	समन	१९वी श.	२१ ५x१२	६४-६६	
३९५	११०८७ (७)	गुण-हरिरस	ईसरदास बारहठ	१७९३	२१ ५x१५ ५	१२२-१२८	अपूर्ण। गुटके मे आगे के पत्र नही। पत्र बिखरे हुए है। लि क खुस्यालचन्द
३९६	१२३७९ (१)	गुण-हरिरस	ईसरदास बारहठ	गु १८६९	२० ५x१४ ५	१-१४	
३९७	१८१५३ (५)	गुनहित उपदेश		गु १९९३	१८x१५	११-३४	लि क लिखमीदास

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (सें.मी. में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
३९८	१२०६७ (५)१	गुर रचना प्रकाश	लिछमन गिरि	२०वीं श	२३.५x१७	१-५	
३९९	११०१३ (८)	गुराचार		१९वीं श	२३x१५	८४-८५	सभी राशियों का फल वृहस्पति से बताया गया है। लि क. ऋषि गुलाब लि स्था नागौद (जोधपुर)
४००	१२२२६ (१९)	गुरु-उपदेश महिमा जोग गन्थ	रामचरण	१९वीं श	१४x१२.५	६०८-६१४	लि क वीरमदास लि स्था. फैलू (जोधपुर)
४०१	१२२०५ (३२)	गुरु-चेला-सवाद		(गु) १७४८-१७५५	१७x११	११६-११७	पत्र ११५ में दारू द्रवने का नुस्का। लि क. विद्याप्रमोद लि स्था रूपनगर
४०२	१२५९२ (६)	गुरुदया आदि ६ अष्टक-सग्रह	सुन्दरदास	२०वीं श	१४x१०.५	१४६-१७०	
४०३	१२३७८ (३)	गुरुदेव को अग	सुन्दरदास	१८वीं. श	२२x१५.५	२६-२७	अन्त मे संस्कृत के सुभाषित श्लोक हैं। लि.क. रामचन्द दादूपथी लि स्था. फतेपुर
४०४	१२५९१ (३१)	गुरुदेव को अग आदि	रामदास	२०वीं श	१५.५x१०	१९९-२०७	अपूर्ण। आगे के पत्र रिक्त।
४०५	१२५९२ (९)२	गुरु पद	पूरणदास	२०वीं. श	१४x१०.५	१८०-१८३	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
४०६	१०६०२ (१२)	गुरु-परचावली		१८०९	१५ ५x१२ ५	८०-८२	पत्र चिपके हुए व वडकने है।
४०७	२५६११ (४)	गुरु-पारख को अग	द्याल (दयाल) वाल	२०वी. श.	१५ ५x१०	३१-३४	
४०८	१०९३८ (३)	गुरुमहिमा	रामचरण	१८८५	१६.५x८ ५	४६०-४६५	
४०९	१०७९७ (६)	गुरुमहिमा		२०वी श	१२x११	२१६-२३७	आगे के दो पत्रो मे भड्डुली के दोहे हैं।
४१०	१०८६६ (१०)	गुरुमहिमा	सेवगराम	१९१०	७ ५x६ ५	३६९-४२७	गुटका सजिल्द। लि क रामसजन शिष्य सेवगराम
४११	१०८६५ (४)	गुरुमहिमा	परसोतम	२०वी श	१२ ५x८	११-१६	लि क साधु रामस्वरुप लि स्था सूरसागर-रामद्वारा, जोधपुर
४१२	१०९५२ (१)	गुरुमहिमा पद आदि	रामचरण शिष्य कृपाराम	१९०५	७ ५x६	१-१२४	गुटके के पत्र कही-कही पृथक् हो गये है। लि क रामनरान लि स्था देवगढ–रामद्वारा
४१३	११०९२ (४)	गुरुमहिमा	रामचरण	१९३६	१८x१०.३	१७१-१७६	लि क सेवादास लि.स्था बुलुन्दा
४१४	१२४२६ (२)	गुरुमहिमा	पूरणदास	२०वी श	१६ ५x१३	१-४०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से.मी.मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
४१५	१२४२६ (६)	गुरुमहिमा	धीरमदास शिष्य दोलतराम	२०वी श	१६.५x१३	१-१३	१३वे पत्र पर हरजस के रूप मे ७ पद भी हैं।
४१६	१२५७१ (४२)	गुरुमहिमा	रामदास	१९वी. श.	१० ५x८	१४७-१९२	
४१७	१२५७७ (३)	गुरुमहिमा	तुलसीदास	१९वी श	१४ ५x१० ५	७२-७५	लि.क. साधुराम नागर लि.स्था उज्जैन
४१८	१२५७८	गुरुमहिमा आदि ११ कृतिया	जनसिम्भूराम शिष्य दयालदास	१९वी. श	१४x१०	१-१४९	सपूर्ण कृतिया शम्भुराम की है। कर्त रामदास की परम्परा मे आता हैं।
४१९	१२५९१ (३०)	गुरुमहिमा	जन तुरसी	२०वी श	१५ ५x१०	१९०-१९९	
४२०	१२५९१ (१३)	गुरुमहिमा	रामदास	२०वी. श	१५.५x१०	७०-८०	
४२१	१२५९१ (२९)	गुरुवदन-सार	जन तुरसी	२०वी श	१५.५x१०	१८७-१९०	
४२२	१०९०० (१४)	गुरु-शिष्य-सवाद	परसराम	२०वी श.	१२x८.५	९६-९९	
४२३	११६२६ (१०)७	गुरु-सम्प्रदाय	सुन्दरदास	१९वी. श.	३२x१५	८-११	
४२४	१२५६१ (१४)	गुरु-सम्प्रदाय	सुन्दरदास	गु १८५५	२३.५x१७	३६६-३६७	लि.क. नन्दराम लि.स्था. ककोड ग्राम

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि स में)	माप (से मी में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
४२५	१२५५१ (४)	गुरुस्तुति	अनतहंस शिष्य कुलतिलक	१७वीं श	१३x११	६२वां	
४२६	१२५७२ (३)	गुरुस्तोत्र	रामानन्द	१९वीं श	१० ५x८ ५	९-१०	
४२७	१२५७२ (६)	गुरुस्तोत्र-मंत्र	द्याल (दयाल) दास	१९वीं श	१० ५x८ ५	११३-११६	
४२८	११०१३ (१२)२	गुर्जर भाषा आदि के कवित्त-सवये		१९वीं. श	२३x१५	११९-१२०	लि क ऋषि सुजाण लि स्था चाणोद (जोधपुर)
४२९	११३१४ (१)	गुलेबकावली		१९वीं श	१७ ५x१७	१३-२६	पत्रांक १-१२ अप्राप्त । अपूर्ण । पत्र जलाभिषिक्त ।
४३०	१२२१० (२१)१	गुसाईं जी की बधाई	मानिकचन्द	१९वीं श	१८x१३.५	१०२वां	
४३१	१२२१० (२१)२	गुसाईं जी की बधाई	छीत स्वामी	१९वीं श	१८x१३ ५	१०३वां	
४३२	१२२१० (२१)३	गुसाईं जी की बधाई	गोविन्द स्वामी	१९वीं श	१८x१३ ५	१०३वां	
४३३	१२२१० (२१)४	गुसाईं जी की बधाई	चतुर्भुज	१९वीं श	१८x१३ ५	१०४वां	
४३४	१२२१० (२१)५	गुसाईं जी की बधाई	कृष्णदास	१९वीं श	१८x१३ ५	१०४वां	
४३५	१२२२० (२५)१	गुसाईं जी के जन्मोत्सव के पद	केसोदास	१९वीं श	१९x१६.५	८३वां	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
४३६	१२२२० (२५)२	गुसाई जी के जन्मोत्सव के पद	जन भगवान	१६वी श.	१६x१६ ५	८३वा	
४३७	१२२२० (२५)३	गुसाई जी के जन्मोत्सव के पद	गोविन्द प्रभु	१६वी श	१६x१६.५	८३वा	
४३८	१२२२० (२५)४	गुसाई जी के जन्मोत्सव के पद	चत्रभुज	१६वी श.	१६x१६.५	८४वा	
४३९	१२४१२ (३)	गुसाई जी के सेवक नन्ददास की वार्ता		१६वी श	२१x१६.५	१-६	अष्टछाप से सम्बन्धित । अपूर्ण ।
४४०	१२२२६ (१८)	गसाई तुरसीदासजी के स्फुट पद	जनतुरसी	१६वी श	१४x१२ ५	५६७-६०७	लि क वीरमदास निरजनी लि स्था कैरू (जोधपुर)
४४१	१२३७१ (१४)७	गुसाई जी ने कागद लिखण री पैठ		१८३६	१८ ५x१६ ५	१६वा	लि क. भीखनदास लि.स्था. नागोर
४४२	१२४११ (३)	गुसाई जीरै सेवकारी वार्ता		१६वी श	२१x१४	८४-६८	
४४३	११६२६ (१०)२२	गूढार्थ	सुन्दरदास	१६वी श	३२x१५	२६-३०	
४४४	१२२२६ (१४)	गूढार्थ	केशवदास आदि	१६वी. श	१४x१२.५	५७वा	लि क वीरमदास निरजनी लि.स्था. कैरू (जोधपुर)
४४५	११०१३ (४)	गूढा-हियालियां		१८२५	२३x१५	७६-८०	प्रथम दो पत्रो मे शब्दार्थ है। लि क. ऋषि सुजाण लि स्था. चाणोद (जोधपुर)

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिकाल (वि स में)	माप (स.मी में)	पत्रसंख्या	विशेष ज्ञातव्य
४४६	१०६२२ (२)	गोतराचार (गोत्राचार)		१९वी श	२६ ५x१६ ५	२२५-२२८	इस से पूर्व की कृति सचित्र लि क बोरा पुष्करणा है हीरालाल, पुस्तक प्रकाश वाले, जोधपुर
४४७	१०८४२ (२)	गोपालदासजीरा कवित्त	गोपालदास	१९वी श	२४ ५x१६ ५	२-४	अपूर्ण । ११ कवित्त है । कामदारी जिल्द ।
४४८	१२२२० (२३)	गोपाष्टमी के पद	परमानन्द	१९वी श	१९x१६ ५	८२वा	
४४९	१२२१० (१९)	गोपाष्टमी के पद	परमानन्द	१९वी श	१८x१३ ५	९९-१००	
४५०	१२४२८ (६)	गोपियारी बारखडी	सन्तदास	गु १९१२	२१x१५ ५	२१-२८	लि क वैष्णव मोतीराम लि स्था जोधपुर
४५१	१०९४४ (६)२४	गोपीचन्द		२०वी श	८ x ५	३७१-३७२	लि क वालकराम लि स्था जोधपुर
४५२	१२५८९ (२)	गोपीचन्द-भरतरी	कानड कन्नोजिया शिष्य माधोदास	१९६६	१७x१३	३-१७४	लि क. मगलदास लि स्था. कुचेरा-रामद्वारा
४५३	१०८६१ (२)	गोपीचन्द		२०वी श.	१६x१२	२-६,२७ २९	गुटका सजिल्द ।
४५४	१०८९९ (५)	गोपीचन्द		२०वी श	१४x११ ५	६७वा	गुटका अपूर्ण है ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स में)	माप (स.मी में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
४५५	१०९३६ (१८)	गोपीचन्द का गीत		१९३४	१२ ५x८ ५	८२-८३	लि क चोकसराम लि. स्था जोधपुर
४५६	१०९३६ (६२)	गोपीचन्द का गीत		१९३४	१२ ५x८ ५	२८८-३१४	लि क चोकसराम लि स्था जोधपुर
४५७	११०९२ (६)	गोपीचन्द का गीत		१९३६	१८x१० ५	१८७-१८९	लि क सेवादास शिष्य आत्माराम लि स्था वुलु दा
४५८	१२५७४ (५)	गोपीचन्द का पद		२०वी श	१७x१० ५	१५९-१६४	
४५९	१२५९२ (४)	गोपीचन्द की कथा	महीपत	२०वी श	१४x१० ५	११०-१२७	
४६०	१०८४७ (२७)	गोपीचन्द की कथा (पद्यात्मक)		२०वी श.	१७x८	६४३-६५७	लि स्था. महामन्दिर, जोधपुर
४६१	१०८५१ (२)	गोपीचन्द की कथा		१८६६	१५ ५x१०	५०-५७	लि क खण्डूराम शिष्य परसराम लि स्था कोटा
४६२	१०९३३ (९)	गोपीचन्द की चौपई		१९४०	१३ ५x८ ५	६६६-६९३	लि क विलासीराम लि स्था शाहपुर (मेवाड)
४६३	१०९४२ (२)	गोपीचन्द की चौपई		१९५२	१३x६	१७३-२११	लि. क. वालकराम लि स्था महामदिर, जोधपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्रसंख्या	विशेष ज्ञातव्य
४६४	१०९४२ (११)१४	गोपीचन्द की चौपई		१९५२	१३x६	३१३-३१४, ३७२-३७५	
४६५	१०९४४ (६) १३	गोपीचन्द की चौपई		२०वी श	८ x ५	२७५-२९५	लि क बालकराम लि स्था. जोधपुर
४६६	१२५७४ (४)	गोपीचन्दजो को बैराग वोध	दास कवि	२०वी श	१७x१० ५	१४०-१५६	लि क वक्षीराम
४६७	११६४८ (७)५१	गोपोचन्दजी की महिमा के पद		१८५३	२७x१६ ५	३४३-३४४	लि क गोपालदास लि. स्था कोलिया
४६८	१२२२६ (२६)१४	गोपीचन्दजी की महिमा के पद		१८७७	१४x१२ ५	६६६-६७१	लि क बीरमदास निरजनी लि स्था कैरु (जोधपुर)
४६९	१२५९१ (१६)	गोपीचन्दजी री लोय		२०वी श	१५ ५x१०	८८-९४	
४७०	११६४८ (१२)४	गोपीचन्द की सबदी	गोपीचन्द	१८५३	२७x१६ ५	३९०वा	लि क गोपालदास लि स्था कोलिया
४७१	१२२२६ (२३)	गोपीचन्दजी की सबदी		१९वी श	१४x१२ ५	६३८-६४०	लि क बीरमदास निरजनी लि स्था कैरु (जोधपुर)
४७२	१०८६९ (१३)	गोबिन्दजी का झूलणा	गुरु गोविन्द	१९२७	८ ५x७	५४२-५४९	कृति पजाबी मे है। लि क केवलराम लि स्था रावजी का बाग, जयपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि स में)	माप (से मी में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
४७३	१२२२६ (२१)२	गोरख-गणेश गोष्ठी आदि	गोरखनाथ	१९वीं श.	१४x१२ ५	६२१-६३४	लि क. वीरमदास निरजनी लि स्था कैरु (जोधपुर)
४७४	१०८९८ (४)	गोरख छन्द	किसनदास	१९२९	१३x८ ५	८०-८९	
४७५	१२३८० (१६)	गोरख ज्ञानतिलक	गोरखनाथ	गु० १७२४	२०x१४	२१६-२१८	
४७६	११०८५ (७)	गोरखनाथजी का छपै		१९वीं. श	१६ ५x१३ ५	६६-६७	
४७७	१०८९९ (५)२४	गोरखनाथ का पद	गोरखनाथ	२०वीं श	१८x११ ५	९९वां	गुटका अपूर्ण है।
४७८	१२५९१ (६)५	गोरखनाथजी का वरत		२०वीं. श	१५ ५x१०	४३-४८	
४७९	११६४८ (२९)	गोरखनाथजी का वरत		१८५३	२७x१६ ५	५७६वां	लि क गोपालदास लि स्था कोलिया
४८०	१२४२२ (३)	गोरखनाथजी की फुटकर वाणी (गोरखबोध)	गोरखनाथ	गु० १८३१	१५x१० ५	१९३-२४२	लि क ऊगमदास लि स्था डीडवाना
४८१	११६४८ (१२)१	गोरखनाथजी की सबदी	गोरखनाथ	१८५३	२७x१६ ५	३८२-३८८	लि क गोपालदास लि स्था कोलिया
४८२	११६४८ (११)	गोरखनाथजी को कृत	गोरखनाथ	१८५३	२७x१६ ५	३५३-३८२	लि क गोपालदास लि स्था कोलिया
४८३	१२५६७ (९)	गोरखनाथजी को सिलोको	पीपल चारण	गु० १८३०	२१x१५.५	५६वां	लि क चेला केसरचद लि स्था कटालिया ग्राम

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (स मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
४८४	११५८३ (७)	गोरखबोध	गोरखनाथ	१६६३	१८x१५	५०-६३	लि क ऊधवदास
४८५	१२२०४ (४)	गोरखनाथजीरो स्वरोदय	गोरखनाथ	गु० १८५८-१८६३	१७x१५ ५	४०-४२	लि क फतेचन्द लि स्था अवन्तिका
४८६	१०८४७ (२६)	गोरल (मीराँ व ननदबाई ऊदा का सम्वाद)	मीराबाई	२०वी श	१७x८	६६०-६६१	लि स्था महामन्दिर, जोधपुर।
४८७	११५८५ (१)	गोरा-बादल की कथा	जटमल नाहर पुत्र धरमसी	१८७६	१९ ५x११ ५	१०-२४	प्रारम्भ के ९ पत्र अप्राप्त। र का १६६५ लि क भानीदास महात्मा लि स्था रिणी
४८८	१२५८० (४)	गोरा-बादल की वारता	जटमल नाहर पुत्र धरमसी	१८६९	१५x१० ५	८५-११४	र का १६८६ लि क वैष्णव भगतराम लि स्था रामगढ
४८९	१२२१० (१४)९	गोवर्द्धन पूजा के पद	छीतस्वामी	१९वी श	१८x१३ ५	९०वा	
४९०	१२२१० (१४)८	गोवर्द्धन पूजा के पद	कुभनदास	१९वी श	१८x१३ ५	८६-८७	
४९१	१२२१० (१४)७	गोवर्द्धन पूजा के पद	लालदास	१९वी श	१८x१३ ५	८६वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
४९२	१२२१० (१४)६	गोवर्द्धन पूजा के पद	चतुर्भुज	१९वी श	१८x१३.५	८५-८६, ८९	
४९३	१२२१० (१४)५	गोवर्द्धन पूजा के पद	हरिदास	१९वी श.	१८x१३ ५	८५वा	
४९४	१२२१० (१४)४	गोवर्द्धन पूजा के पद	परमानन्द	१९वी श	१८x१३ ५	८४, ८७, ९१-९२	
४९५	१२२१० (१४)३	गोवर्द्धन पूजा के पद	विट्ठल	१९वी श.	१८x१३ ५	८१वा	
४९६	१२२१० (१४)२	गोवर्द्धन पूजा के पद		१९वी श	१८x१३ ५	७२-८१	
४९७	१२२१० (१४)१	गोवर्द्धन पूजा के पद	सूरदास	१९वी. श	१८x१३ ५	६९-७२,८१, ८२-८४, ८७-८९	
४९८	१२२२० (१९)	गोवर्द्धन पूजा के पद	सूरदास, चत्रभुज	१९वी श	१९x१६ ५	७९वा	
४९९	११५८४ (१६)	गौडी पार्श्वनाथ लघु-स्तवन	जिनराज सूरि	१८वी श	१९ ५x१६	५०वा	
५००	१२२१८ (४९)	गौडी पार्श्वनाथ स्तवन	जिनराज सूरि	गु० १७५५-१७६७	२६ ५x१०	६५वा	
५०१	१२२०५ (२९।१	गौडी पार्श्वनाथ-स्तवन	जिनराज सूरि	गु०१७४८-१७५५	१७x११	१०८वा	लि क. विद्याप्रमोद लि स्था रूपनगर

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पत्र संख्या	विशेष
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] १७७५	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] [illegible] १७८५	[illegible]	४-५	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] १७७७	[illegible]	५-६	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८वीं श	१६.५x११.५	१६०-१६२	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८५०	१८.५x१०.५	१५-२३	पत्र १०३ पर राजा मानसिंह जी के जलन्धरनाथ को राज दिया उस समय उनकी रानियों की ओर से लिखी गई पत्री। लि. क. हुक्मचन्द मुहता लि. स्था. पचलेटीवावास
८०४	१२६१८ (७१)	गीत फुटकर	नाथपन्थ	पु० १७५५-१७६३	२६.५x२०	८६-६७	
८०८	१२६८९ (१८)	गीत	[illegible]	१८वीं श	१९.५x१६	३६ वा	
८०९	१२२९० (३६)	गीत फुटकर		१८वीं श	२१.५x१४.५	३२-३३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (से मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
५१०	१०६५४ (६)	गौतमरासो	विनयप्रभ उपाध्याय	१८७४	२४x१६.५	८१-८७	र का. १४१२ लि क रणजीत लि.स्था. पाली
५११	१२३२० (३६)	गौतम सज्झाय	समयसुन्दर	१८वी श	२१ ५x१४ ५	४७ वा	
५१२	१२२१८ (११४)	गौतम स्वामी नो रास	विनयप्रभ उपाध्याय	१८वी. श	२६ ५x१०	१२६-१२६	
५१३	११५८५ (८)४३	गौतम स्वामी-स्तवन		१६वी श	१६ ५x११ ५	१७७-१७८	
५१४	१२३७० (४२) ७	गौनम स्वामी-स्तवन	समयसुन्दर	१६वी श	१६x११ ५	१२४-१२५	
५१५	१२३७० (२८)	गौतम स्वामी-स्तवन	ऋषि रायचन्द	१६वी श	१६x११ ५	२५२-२५५	
५१६	१२५६१ (७)	ग्रन्थ चौअक्षरी आदि जोग ग्रन्थ	जन तुरसी	२०वी श	१५ ५x१०	४५-५१	
५१७	११६४८ (१०)	ग्रन्थवत्तीसी	कवीरदास	१८५३	२७x१६ ५	३५२ वा	लि.क गोपालदास लि स्था कोलिया
५१८	११६२६ (१०) १०	ग्रन्थ वावनी	सुन्दरदास	१६वी. श	३२x१५	१२-१५	

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]	१-८	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१५-३०	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१२३-१५२	[illegible] (जोधपुर) [illegible] शाखा [illegible]। र. का. १७६०
[illegible]	[illegible]	[illegible]		१६वीं श	१६ ५x११ ५	१२०-१२७	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८५०	१६ ५x११ ५	२००-२११	प्रतापसिंह की आज्ञा से लिखित। ग्रन्थ में 'पोथी रो दूहो' है।
[illegible]	[illegible]	[illegible]	मोहनविजय	१८७६	२३ ५x१५	१-१२७	र का १७४० लि क लालविजय लि स्था. बीकानेर लि क प मान लि स्था मेड़ता देशे ग्रामादा ग्राम

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सं मी मे)	पत्रसख्या	विशेष ज्ञातव्य
५२५	११५८१	चदचरित-चौपई	मोहनविजय गणि	१८३९	२४ ५x११	१-८१	अन्त मे गुरुवावली है । गुण वसु सजम वर्षे । र का. १७८३ र स्था राजनगर लि क दीपसागर लि. स्था कटालिया ग्राम
५२६	१२०८६	चदचरित-चौपई	मोहनविजय गणि	१८८१	२५ ५x१२ ५	१-८०	सर्व ढाले १०८ लि क कीरत लि. स्था नागोर
५२७	१२१४२	चदचरित-चौपई	मोहनविजय गणि	१९वी. श.	२२ ५x११	१-७५	
५२८	१२३२६	चदचरित-चौपई	मोहनविजय गणि	१९वी श.	२७x१२ ५	१-८४	पुष्पिका अपूर्ण । र. का. १७८३ [गुण वसु सयम वर्षे] र स्था राजनगर
५२९	१२२१८ (१३९)	चदनमलयागिरि-चौपई	सुमतिहस	१७६४	२६ ५x१०	१४७-१५५	र का १७११ र स्था बुरहानपुर लि क अमीचन्द लि स्था. वडलू
५३०	१२२०५	चद्रगुप्त राजा सोलह स्वप्नारी-सज्झाय		१८वी श.	१७x११	१४६-१४८	पत्र खण्डित, लिपि भ्रष्ट, गुटका कीटविद्ध ।

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पृ० [illegible]	[illegible]	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३८-१०६	[illegible] १६५८ (लिपि ... मुनि ...) [illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१६६७	१-७८	लि. क. [illegible] लि. स्था. मालवी नाराणी
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पृ० [illegible] १६१८	७६-८०	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११६-१४७	लि. क. माणुराम नागर लि. स्था. उज्जैन
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पृ० १८८८	४१-५३	लि. क. जति बीरचैनराम लि. स्था. कलकत्ता
[illegible]	[illegible]	[illegible]	वीरस्तव	पृ० [illegible] १७६७	४४-४६	कृति प्राकृत में है। अन्त में 'वीर स्तुति' है। पृष्ठ भाग पर 'पार्श्व-वन्दना' संस्कृत में है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (स मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
५३९	१२२१८ (९२)	चतुरनर-सज्झाय	हर्षकुशल	गु० १७५५-१७६७	२६ ५×१०	११८ वा	
५४०	१२२०२	चतुर्मासिक-व्याख्यान		१९०१	२४ ५×१२	१-२१	लि क. प० सुखसागर लि स्था पोकरण
५४१	१०७५६	चम्पक सेठ-चरित्र	चौथमल	१९९२	२६×११ ५	१-१२	र का १८९१ र स्था सादडी-मारवाड लि क जेठमल लि स्था नागोर
५४२	१०९७४	चम्पक सेठनी चोपई	समयसुन्दर शिष्य सकलचन्द	१९४०	२०×११	१-११	र का १६९५ र स्था जालोर
५४३	११६४८ (१२) ३	चरपटजी की सबदी	चरपटनाथ	गु० १८५३	२७×१६ ५	३८९-३९०	लि क माध गोपालदास लि स्था कोलिया
५४४	१२५५६ (५)	चार-जुगा को ब्योरो		गु० १८५६	२२.४×१६	११०-११२	अंत मे स्फुट पद है।
५४५	१२५८१ (१४)	चार-जुगा को व्योरो		१७ वी श	१६×१० ५	९०-९३	
५४६	११५८४ (३८)	चिंतामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन	सिद्धसूरि	१८वी. श.	१९ ५×१६	२३४वा	अपूर्ण। पत्र खण्डित।
५४७	१२५६८ (७)	चिंतामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन	समयसुन्दर शिष्य सकलचन्द	१९ वी श		७वा	पत्र ८ वे तक स्फुट दोहे है।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि. सं.)	माप (से. मी. में)	पत्रसंख्या	विशेष ज्ञातव्य
५४८	१२३२० (६)	चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन	कुशलसिंह शिष्य रामसिंह	सं० १७६२-८४३	२१.५×१४.५	१६वा	लुंका गच्छीय।
५४९	११५८५ (८)३३	चिन्तामणि पार्श्वनाथ-स्तवन	जिनचंद्र सूरि	२०वी श	१९.५×११.५	१३८वा	
५५०	११५८५ (८)७	चिंतामणि पार्श्वनाथ-स्तवन	जिनचन्द्र सूरि	१९वी श	१९.५×११.५	१३५-१३६	
५५१	१२२१८ (१२६)	चिंतामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन	समयसुन्दर शिष्य सकलचन्द	सं० १७५५-१७६७	२६.५×१०	१३७वा	
५५२	१२५७५ (३०)	चिंतामणि पार्श्वनाथ-स्तवन	राजसमुद्र (जिनराज सूरि)	१७वी श	१३.५×१४	६१-६२	
५५३	१२३७० (४७)११	चिंतामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन	जिनलाभ सूरि	१९वी श	१६×११.५	१२८वा	
५५४	११८८१	चिह्न चिंतामणि-भाषा (सामुद्रिक शास्त्र)	जोजार (उपनाम) नागेनात्मज	९वी श	१६×११	१-३२	
५५५	११६२५	चिकित्सासार	धीरजराम	२०वी श	२३.५×१६	१-७१	र का १८१७ (श्रुति चद्र गज चद्र वरष)
५५६	१२३११ (५)	चितानन्दजी महाराज के कुंडलिया, कवित्त आदि	चेतन	सं० १९४०	१७.५×८.५	१२९-३०२	अगबद्ध। लि क साधु गगाराम लि स्था कोटा-रामद्वारा
५५७	१२५७० (७)	चितावणी को अंग	सुन्दरदास	१९वी श	९.५×६.५	२२-२५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से. मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
५५८	११०९२ (३)	चितावणी को अग	रामचरण	गु० १८३६	१८x१० ५	१४९-१७०	'सवत् छत्तीसो' लि क. सेवादास लि.स्था. बलुदा दूल्हैराम के भी दो पद हैं।
५५९	१२५८८ (२)	चितावणी को अग	रामचरण	१९वी श	१२ ५x८	१६-३७	
५६०	१०९३८ (५)	चितावणी को अग	रामचरण	गु० १८८४	१६.५x८ ५	४८१-५०२	
५६१	१२५८४ (२)	चितावणी को अग	जीवणदास	गु० १७२०	१६.५x१४ ५	१-७	
५६२	१२४२१ (४)	चितावणी को अग	हरखाराम	१९वी श.	१७x१२	१०२-११४	
५६३	१२३११ (३)	चितावणी को अग	रामवल्लभ	गु० १९४०	१७,५x८.५	१०२-११९	लि क साधु गगाराम लि.स्था. कोटा-रामद्वारा
५६४	१२५९१ (२०)	चितावणी को अग	रामदास	२०वी श.	१५.५x१०	१०६-११९	
५६५	१०९२४ (१७)	चितावणी को अग	कबीरदास	१८४४	२३x१२ ५	५८७ ५८९	
५६६	१०९०० (१०)	चितावणी को कवित्त	सेवगराम	२०वी. श.	१२x८ ५	७८-७९	
५६७	१२२१८ (९२)	चित्तभ्रम-सज्झाय	कवियण	१७९२	२६.५x१०	११४वा	पत्र ११३वे पर 'नवकार-अनुपूर्ति' है। लि.क. गुणरूपविजय।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सं मी मे)	पत्रसख्या	विशेष ज्ञातव्य
५६८	११०१३ (४६)	चित्तोड की गजल	कवि खेतल	१६वी श	२३x१५	३२५-३२७	अत मे कलश-पद व शिक्षा रूप मे ११ दोहे है। र का १७४८ (सवत्(स)ततरेमै अडतालाक)
५६६	१२३२० (१५)	चित्रसभूत-सज्झाय	मनहर गय ?	गु० १७६२-१८४७	२१ ५x१४ ५	२५वा	
५७०	१०६८१	चित्रसेग-पद्मावती-चतुष्पदी	रामविजय उपाध्याय शिष्य दयासिह	२०वी श	२५ ५x१२	१-१७	खरतर-गच्छीय। र का १८५४ र स्था बीकानेर
५७१	१०८४२ (५)	चुगलमुख चपेटिका	बाँकीदास कविराज	गु० १८६५	२४ ५x१६ ५	७२-७३	लि.क. खिडियो हरसुख, वरणसूर-फत्तो लि स्था. जोधपुर, ठाकुरा भेरूदानजीरी हवेली
५७२	१२५६५ (७)	चेतन और कर्मो के झगडे की अरजी		२०वी श.	१६x१२	५६x५८	र का. १६२८
५७३	१०६०७ (६)	चेलणारो चोढालियो	ऋषि रायचन्द	१६वी. श.	२५ ५x१२	११-१३	र का १८३७ र स्था. रीयाँ गाँव
५७४	१२२१८ (६१)	चेलणा-सज्झाय	समयसुन्दर शिष्य सकलचन्द	गु० १७५५-१७६७	२६ ५x१०	८३वां	
५७५	१२५५१ (१५)	चैत्यपरिपाटी-स्तोत्र		१७वी श.	१३x११	१०६-१११	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (स मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
५७६	१२३७० (३३)१	चैत्यवदन	वृद्धिकुशल नो शिष्य	१९वी. श.	१६×११ ५	१८-२०	
५७७	१२२१८ (८७)	चैत्यवदन	सिद्धिविजय	१७६७	२६.५×१०	१०६वा	
५७८	१२५७५ (२०)	चैत्यवदन-चौवीसी		१७वी. श.	१३ ५×१४	६४-६७	ग्रन्त मे १६६३ की जन्म-पत्रिका लिखी ।
५७९	१२५६५ (१२)	चैत्यवदन-विधि		२०वी श	१६×१२	७६-७८	
५८०	१२१९९ (५)	चैत्री पूनमरी कथा		१९७५	२७×१४	३२-३४	तपागच्छीय । लि.क. प० केशरीसागर लि स्था फलौदी
५८१	११५८४ (१७)	चोथमाताजीरो छद	कवि कान्ह	१७१५	१६ ५×१६	५१-५६	पत्र स. ५७ पर तान्त्रिक यन्त्र है । लि क थिरपाल लि स्था लाबिया
५८२	११०१३ (५)	चोथमातारी वार्त्ता	केसरीसिह मामलदामोत	१९वी श.	२३×१५	८१-८२	पद्यात्मक
५८३	१२५६८ (६)	चोथमातारे व्रतरी कथा		१९वी श.	१८ ५×१२.५	१-६	कामदारी लिपि मे । ग्रन्त मे ग्रानन्दघन कृत 'पार्श्वनाथ' स्तुति ग्रादि है ।
५८४	१०९४४ (६)२२	चौक, लावणी के पद	सूरदास	२०वी श.	८×५	३४६-३७०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्रसख्या	विशेष ज्ञातव्य
५८५	१२२०८ (१)	चौदह गुण ठाणा-वर्णन		१७७४	२५x१८ ५	१-६६	लेखनशैली-द्विपाठ लि क मुनि आसकरण
५८६	१२५५७ (१)	चौबुधीरी वारता		१८७८	२०x१५ ५	१-१०	अन्त मे सुभाषित पद तथा 'दिशाशूल-ज्ञान' है । लि क प० वखतचन्द लि स्था अजमेर
५८७	१०६३३ (५)	चौरासी-बोल	जगन्नाथ शिष्य जनतुरसी	गु० १९४०	१३ ५x८ ५	६९५-७००	लि क विलासीराम लि स्था शाहपुरा
५८८	१०६२४ (३१)	चौरासी-बोल	जगन्नाथ शिष्य जनतुरसी	१९३०	२३x१२ ५	६३९वा	
५८९	१२५९१ (१५)	चौरासी-बोल	जगन्नाथ शिष्य जनतुरसी	२०वी श	१५ ५x१०	८४-८८	
५९०	१०८४७ (६)	चौरासी-बोल	जगन्नाथ शिष्य जनतुरसी	गु० १९९९	१७x८	७३२-७३५	लि स्था जोधपुर
५९१	१०८४९ (२४)	चौरासी-बोल	जगन्नाथ शिष्य जनतुरसी	गु० १९३१-१९३४	१७x११	१८२-१८४	लि क छुछमराम
५९२	१०९०३ (३)	चौरासी-बोल	जगन्नाथ शिष्य जनतुरसी	१९वी श	१३x८	२१-२६	
५९३	१२३११ (७)	चौरासी-बोल	जगन्नाथ शिष्य जनतुरसी	गु० १९८०	१७ ५x८ ५	४६४-४७१	लि क. साधु गगाराम लि स्था. कोटा-रामद्वारा
५९५	१२४११ (२)	चौरासी-वैष्णवो की वार्त्ता (आचार्यजीरा सेवकारी)		१९वी. श	२१x१४	१-८४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (स मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
५९५	१२५४९ (१)	चौरासी वैष्णवो की वार्त्ता		१७३४	१७×१३	७-६१	प्रथम पत्र अप्राप्त। पत्र २०वा जला हुआ। पत्र ६१-७५ मे कृति स० २-९ मे सस्कृत के 'अष्टक' है। लि क. सुखदेव लि स्था रामपुरा (रावश्री मोहकमसिहजी विजय राज्ये)
५९६	१०८३९ (८)	चौवीस-एकादशी-कथा		१९०६	३२×१७ ५	४४-८०	लि स्था जोधपुर
५९७	११०८६ (९)	चौवीस-एकादशी-कथा		१८१७	२१.५×१५	१६०-१७६	अन्त मे एक सवेया भी है। लि क गुलाब गिरी
५९८	१२५६९ (५)	चौवीस-एकादशी कथा-माहात्म्य		गु० १८२२	१६ ५×११	१-७	अपूर्ण।
५९९	१२५५६ (१)	चौवीस-एकादशी व्रत-कथा		१८५६	२२ ५×१६	११-०१	प्रथम पत्र पर तुलछीदास कृत पद है।
६००	१२५६८ (२२)	चौवीस-जिन-वरणन	खेम	१९वी. श.	१८.५×१२.५	३१-३३	लि.क. भगत लछमणदास पत्र ३३ मे ३४ पर स्फुट
६०१	१२२१८ (७६)	चौवीस-जिन-स्तवन	क्षमातीर्थ	गु० १७५५-१७६७	२६ ५×१०	६६वा	दोहा, सवैया है।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (स मी मे)	पत्रसंख्या	विशेष ज्ञातव्य
६०२	१२५३५ (१५)	चौवीस-जिन-स्तवन	आनन्दविजय	१७वी. श	१३.५x१८	५५-५६	र का १५६२
६०३	१२२०५ (६६)२	चौवीस-जिन-स्तवन	कीर्तिवर्द्धन शिष्य दयारत्न वाचक	गु० १७४८-१७५८	१७x११	३८-४१	लि क विद्याप्रमोद लि स्था रूपनगर
६०४	१२२१८ (१०३)	चौवीस-जिन-स्तवन	जयसागर	गु० १७५५-१७६७	२६ ५x१०	११६वा	
६०५	१२५६८ (१७)	चौवीस जिन-स्तवन		१६वी श	१८ ५x१२ ५	८७वा	
६०६	११५८५ (८)१०	चौवीस-जिन स्तवन		२०वी श	१६ ५x११ ५	१४१वा	
६०७	१२२१८ (१२०)	चौवीस-जिन-स्तवन		गु० १७५५-१७६७	२६ ५x१०	१३३-१३४	
६०८	११५८५ (८)४६	चौवीस-तीर्थङ्कर-लच्छन	आनन्दविजय	२०वी श	१६ ५x११ ५	१८३-१८६	
६०९	२०७६३	चौवीस-देव-वदन-विधि	पद्मविजय	१६०७	२५ ५x१२ ५	१-२०	लि क उत्तमचन्द लि स्था अवन्तिका नगरे-भटेवरारा उपासरा मध्ये
६१०	१२२१८ (१३१)	चौवीसनाम		गु० १७५५-१७६७	२६ ५x१०	१३८वा	तीर्थङ्करो व गुरुओ के नाम।
६११	१२३७० (१०)	चौवीसी	जिनराजसूरि	१६वी श	१६x११ ५	६६-११४	

कमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (स मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
६१२	१२३७० (८)	चौवीसी	देवचंद	१९वी श	१६×११ ५	७२-९८	
६१३	१२०६८ (४)	चौवीसी	देवचन्द	गु० १८८८	२३ ५×१५ ५	२१-३२	लि क जति वीरवैताल लि स्था कलकत्ता
६१४	१०७५२	चौवीसी	आनन्दघन	१८४६	२६×११ ५	३५	पत्र स ५ अ तक टब्बा दिया है। अन्त के ३ पद प्रभाती राग के हैं। लि क महिमासागर लि स्था सोजत
६१५	१२०६८ (५)	चौवीसी	हरखचन्द	गु० १८८८	२३ ५×१५ ५	३२-३७	लि क जति वीरवैताल लि स्था कलकत्ता
६१६	१२०६८ (३)	चौवीसी	जिनराजसूरि	गु० १८८८	२३ ५×१५ ५	१६-२१	लि क. वीर वैताल लि स्था. कलकत्ता
६१७	१२०६८ (२)	चौवीसी	जसविजय	गु० १८८८	२३ ५×१५ ५	१०-१६	लि क. जति वीर वैताल लि स्था. कलकत्ता
६१८	१२२१८ (५४)	चौवीसी परिवार-सज्झाय		गु० १७५५-१७६७	२६ ५×१०	६७वा	
६१९	१२२१८ (१५१)	(१) चौसठ योगिनीरा सात वरदान (२) पार्श्वनाथ-गीत	(२) जसवर्द्धन	गु० १७५५-१७६७	२६ ५×१०	१६४वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (स मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
६२०	१२५६१ (३७)	छन्द-भाग	मलूकदास	२०वी श	१५ ५x१०	२३९-२५३	
६२१	१२५८६ (१)	छन्द-भुजगी	रामचरण	१९६६	१७x१३	१-३	लि क मग(न)दास लि स्था कुचेरा-रामद्वारा
६२२	१०८४२ (२१)	छन्द-रत्नावली	हरिरामदास निरजनी	१९०१	२४ ५x१६.५	१२३-१४२	र का १७९५ (शर नव मुनि शशि) र स्था. डीडवाणा
६२३	१०९७८	छन्दसार-षोडशकर्म-टीका	मू सुरति मिश्र टी इन्द्रभानु पुत्र भवानीराम	२०वी श.	२८ ५x१८	१-८	
६२४	१२३५९	छन्दसार-षोडश कर्म-टीका	मू सुरति मिश्र टी इन्द्रभानु पुत्र भवानीराम पुष्करणा	१९१५	३० ५x१५ ५	१-९	लि क उदैराम लि स्था. फलोदी
६२५	१२५५१ (२४)	छन्द-सूरजरो		१७वी श.	१३x११	१५०-१५२	
६२६	१२३८० (६)	छठी के पद (राम-जन्म के)		गु० १७२४	२०x१४	१२६-१२७	रागबद्ध।
६२७	११४३५	छायायन्त्र आदि बनाने की विधि		१९वी. श	४६x१६ ८	३-३६	प्रथम दो पत्र अप्राप्त। कृति बहीनुमा पत्रों मे लिखी गई है एव किसी फारसी ग्रन्थ का अनुवाद है। कृति का अन्तिम भाग अपूर्ण है। पत्र कीट विद्ध एव खण्डित हैं।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
६२८	११०१३ (४२)	छिनाल-पच्चीसी		१९वी श	३२×१५	३१२-३१३	२५ पद्य ।
६२९	१२३७० (१७)९	छिन्नु (९६) जिनवर-स्तवन	जिनचद्र सूरि	१९वी श	१६×११ ५	१५६-१६०	र का १७८३ अन्त मे साधुकीर्ति का एक स्फुट पद है।
६३०	११०७५	छीहल-बावनी	छीहल कवि (नालिगवशी-अग्रवाल)	१७वी श	१८x१० ५	१-१०	र का १५८४ पत्र बडकने है।
६३१	१२४४२	जबूचरित्र	ऋषि चोथमल	१९०१		१-३०	र का १८६२ लि क छगना लि स्था किशनगढ
६३२	१२५७० (६)	जबूसर की कथा		१९वी श	९ ५×६ ५	११-२१	
६३३	१०८६१ (५)	जबूसर की कथा		१९वी श	१६×१२	८१-८७	पत्र ८७-८८ पर ढाल वाल के पद है।
६३४	१०८४९ (२८)	जबूसर को प्रसग		गु० १९३१-१९३४	१७×११	२१४-२१८	लि क. छूछमराम
६३५	१२४२१ (१२)	जबूसर को प्रसग		१९वी श.	१७×१२	१८९-१९३	
६३६	१२२१८ (१००)	जबू-स्वामी-सज्झाय	हर्षकुशल	गु० १७५५-१७६७	२६ ५×१०	११८वा	
६३७	१२३२०	जबू-स्वामी-सज्झाय	हर्षकुशल	गु० १७९२-१८४७	२१ ५x१४ ५	२७वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (स मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
६३८	१२३७८ (१३)१५	जगडी	वाजीद	१८वी श	२२×१५ ५	१११-११२	
६३९	११६४८ (२०)	जगजीवणदासजी की वाणी	जगजीवणदास	गु० १८५३	२७×१६ ५	५५३-५६०	राग ८, पद ५९ लि क साध गोपाल्दास लि स्था कोलिया
६४०	१२५६८ (१२)	जगतसिहजी महाराजरो सिलोको		१९वी श	१८ ५×१२ ५	१७वा	र का १८६७
६४१	१२५६८ (१९)	जगतसिहजी राठौडरो सिलोको		१९वी श	१८ ५×१२ ५	२८-२९	र का १८६७
६४२	११५८४ (३)	जगदम्बा-छ्दद	सारग	१७००	१९ ५×१६	२३-२५	लि क चेला नरसिघ लि स्था. चितामा ग्राम
६४३	११५८४ (१)	जगदीश्वरी छ्दद	गोविन्द विप्र	१७००	१९ ५×१६	१५-२३	लि क चेला नरसिघ लि स्था चितामा ग्राम पत्र स १२-१४ अप्राप्त
६४४	११०१३ (६)	जगदेव-परमाररी वात		१८१८	२३×१५	८६-११४	लि क सुजाण लि स्था चाणोद
६४५	११५८३	जडभरथ-चरित	जनगोपाल	गु० १६९३	१८×१५	६३-७८	लि क उद्धवदास
६४६	११६४८ (२०)	जडभरथ-चरित	जनगोपाल	गु० १८५३	२७×१६ ५	५७१-५७३	लि क साध गोपालदास लि स्था कोलिया

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
६४७	१२२२१ (२)	जडभरथ-चरित	जनगोपाल	१९वी श	१५x१०	५४-६१	पत्र स ५८ से ६० तथा अनेक पत्र अप्राप्त । गुटका त्रुटित, जीर्ण तथा अस्तव्यस्त है । रामचरणजी की वाणी, जन तुरसी की वाणी, सन्त दासजी की वाणी, अनाथ-दास का सर्वंगसार, अनन्त दास कृत-नामदेव, सेऊसमन आदि की परचिया तथा अन्य स्फुट पद सग्रह और सत साहित्य का सग्रह है ।
६४८	१०९०० (४)	जनमलीला	दयालदास (द्यालबाल) शिष्य रामदास	२०वी श	१२x८ ५	२५-४५	
६४९	११०८७ (१)	जन्म-अप्टमीरी कथा		गु० १७९३	२१ ५x१५ ५	१ला	पत्र स २ से ६२ तक अप्राप्त । गुटका बिखरा हुआ है । लि.क. मुहता सोभागचद । लि.स्था जोधपुर ।
६५०	१२५५३ (६)	जन्म-कर्म-लीला	माधवदास	१८९७	१४ ५x१३ ५	११८-१२२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
६५१	१२२०५ (२१)	जयतिहुअगास्तोत्र	अभयदेव सूरि	गु० १७४८-१७५८	१७×११	५७-६१	अपभ्र श मे । अन्तिम पत्र के पृष्ठ भाग पर आधाशीषी का मन्त्र है । लि क विद्याप्रमोद लि स्था रूपनगर
६५२	१२०६८ (६)	जयतिहुअगास्तोत्र	अभयदेव सूरि	गु० १८८८	२३ ५×१५ ५	४६-५१	लि स्था कलकत्ता
६५३	११६६४	जयवन्तीरो मत-ढालियो	ऋषि रायचन्द शिष्य जयमल	१६वी श	२५×११ ५	१-४	र का १८४२ र स्था नागोर द्वि पाठ । सात ढाल ।
६५४	१०६०७ (२)	जयवन्तीरो मत-ढालियो	ऋषि रायचन्द शिष्य जयमल	१६वी श	२५ ५×१२	३-५	र का १८४२ र स्था नागोर
६५५	११०६२ (७)	जलधरजी की सबदी		गु० १८३६	१८×१० ५	१८६-१६१	लि.क सेवादास लि स्था. वर्गुदा
६५६	११६४८ (१२)५	जलधरो पावजी की सबदी		गु० १८५३	२७×१६ ५	३६१वा	लि.क साध गोपालदास लि स्था कोलिया
६५७	११०१३ (१०)	जलाल-गहाणीरा दूहा		गु० १८१८	२३×१५	११४-११७	लि क सुजाण
६५८	११६३५ (१)	जलाल-गहाणीरी वात सचित्र		१६वी श	२६ ५×१६ ५	१-५३	चित्र स० ६५ । अपूर्ण। पत्र स २४,४४,५४-५५वे अप्राप्त। गुटका पुस्तकाकार जिल्दबध।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं में)	माप (सं मी. में)	पत्रसंख्या	विशेष ज्ञातव्य
६५९	११०१३ (१७)	जवानीरा दूहा		गु० १८१८	२३×१५	१३२वा	दोहा १५ लि क मुजाण कामदारी लिपि
ॐ ६६०	११२८३ (१)	जसवन्तसिंहजी के दोहे	कालू	१७८४	१६×१४.५	५३-५४	लि.क. करमसी
ॐ ६६१	११९८३	जादवरास	चोथमल	१९वी श	२४ ५×१० ५	१-५१	प्रति रचनाकालीन प्रतीत होती है। र का. १८७८ लि क सरूपचन्द (ग्रन्थकार का पौत्र) लि स्था जोधपुर
६६२	११२५०	जानकी-मगल	तुलसीदास	२०वी श	३० ५×१५ ५	१-७	
६६३	१२३८० (२७ ५	जानराई-लीला (कृष्ण लीला)	माधोदास	गु० १७२४	२०×१४	३२७-३३७	पत्र ३३८, ३३९वे अप्राप्त।
६६४	१२३७० (४२ १०	जिनकुशल सूरि गीत	कनककीर्ति	१९वी श	१६×११ ५	१२७वा	
६६५	१२२१८ (१२७)	जिनकुशल सूरि-गीत	जिनहर्ष	गु० १७५५-१७६७	२६ ५×१०	१३७वा	
६६६	१२२१८ (१९)	जिनकुशल सूरि-स्तुति	हर्षकुशल	गु० १७५५-१७६७	२६ ५×१०	३५वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि म मे)	माप (सं मी मे)	पत्रसख्या	विशेष ज्ञातव्य
६६७	१२५५१ (५)	जिनचन्द्र सूरि गीत	श्रीसुन्दर	१७वी श	१३x११	९२-९४	पत्र ९५वे पर प्राकृत मे 'चतुर्विंशति जिन स्तुति' है।
६६८	१२५५१ (३२)	जिनचन्द्र सूरि-गीत	समयसुन्दर	१६८०	१३x११	१७३वा	लि क समयकीर्त्ति
६६९	१२२१८ (८५)	जिनदत्त सूरि-गीत		१७५१	२६ ५x१०	१०४वा	लि क ग्रमीचन्द्र
६७०	१२५५१ (७)	जिनदत्त सूरि-गीत	वीरविजय शिष्य तेजसार	१७वी श	१३x११	९५-९६	
६७१	१२३७० (४२)१६	जिनपद-सग्रह		१९वी श	१६x११ ५	१३८-१४१	
६७२	११५८५ (८)२४	जिन-प्रतिमा-स्तवन	जिनलाभसूरि	२०वी श	१९ ५x११ ५	१५६वा	
६७३	१२३७० (१९)	जिनरक्षित-जिनपाल चौपई		१९वी श	१६x११ ५	१९५-१९९	
६७४	१०७३९	जिन-विचार(चोवीस)		१९०८	२५.५x१२	१-२	लि क सवाई सागर लि.स्था श्रीसुभटपुर
६७५	११५८५ (८)५२	जिन-स्तवन		२०वी श	१९.५x११.५	१९३वा	
६७६	१२५७५ (२७)	जिन-स्तवन	प्रेमसागर	१७वी श	१३ ५x१४	७८वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से. मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
६७७	१२२१८ (७३)	जीवउत्पत्ति-सज्झाय	श्रीसार	गु० १७५५-१७६७	२६.५×१०	६१-६४	
६७८	१२२०५ (४२ ४	जीव-काया-गीत	कीर्तिवर्द्धन	गु० १७४८-१७५८	१७×११	१४१-१४२	लि क विद्याप्रमोद लि.स्था रूपनगर
६७९	१२२०५ (३६)	जीव-काया-वचन विचार-गीत	ज्ञानसमुद्र	गु० १७४८-१७५८	१७×११	१२१वा	लि क विद्याप्रमोद लि स्था. रूपनगर
६८०	१२२१८ (६३)	जीव-भेद-सज्झाय		गु० १७५५-१७६७	२६ ५×१०	११५वा	
६८१	१०६०६ (१)	जीवरास		१९२८	२३ ५×१० ५	१-२५	लि.क मुनि हीरसागर
६८२	१०६०७ (४)	जुगमधर स्तवन	ऋषि रायचन्द शिष्य जैमल	१९वी श	२५ ५×१२	७-८	र का. १८२१ र स्था डीडवाना
६८३	१२५६२ (८)	जुग-ब्रह्माण्ड प्रमाण सवैयो		१९वी श	१४×१० ५	१७९वा	
६८४	१२३०६	जैमनीय अश्वमेध यज्ञरी कथा सचित्र		१९३४	३४ ५×२० ५	१-६२	चित्र स० ५ रजिस्टरनुमा जिल्दबद्ध। जिल्द कीटविद्ध।
६८५	११९८९ (१)	जैमनीय अश्वमेधरी कथा		१९०६	२३ ५×१६	१-९८	यह प्रति रजपूत फत्ताजी की स० १८९९ वाली प्रति से लिपिकृत है जो जोधपुर मे लिखी गई थी। लि क वसन्तीराम पुर्बिया ब्राह्मण

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
६८६	१०८३६ (६)	जैमनीय अश्वमेधरी कथा		१६०६	३२x१७ ५	८१-११०	कामदारी लिपि मे । लि स्था जोधपुर
६८७	१२३६०	जैमनीय अश्वमेधरी भापा	केवलदास	१८७५	२६x१५	२-५६	प्रथव पत्र अप्राप्त । र का १७११ लि क ज्ञानदास लि स्था बिसाहू
६८८	११५८३ (३)	जोग पद	जन हरिदाम	गु० १६६३	१८x१५	४-५	
६८९	१२१५६ (२)	जोग पावडी		१९वी श.	२५ ५x११ ५	२-५	
६९०	१२४३५	जोग सुधानिधि	लछीराम पुत्र कल्याण	१९वी श	२६x१३	१-१८	दोहा ८२, चौपाई १८९
६९१	१०८४९ (२३)	जोगसिद्धान्त	सुन्दरदास	गु० १९३१-१९३४	१७x११	१७८-१८२	लि क ङ्कूछमराम
६९२	१०९७१	ज्योतिषसार (लघुजातक के अनुसार)	कृपाराम	१८१६	२४ ५x१५	२८	पत्र जलग्रस्त । लि क जती खेमचन्द लि स्था सोजत
६९३	१०९०२ (१५)	ज्ञानगज		१८०६	१५ ५x१२ ५	८५-८६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
६९४	११६२६ (३)	ज्ञानभूलणा-अष्टक	सुन्दरदास	१८९४	३२x१५	९-१०	लि क रामदयाल मारू लि.स्था. नराणो-वरकता की वगीची
६९५	१२२२६ (२१)१	ज्ञानदीप प्रवोध (दत्तात्रेय गोरख-सवाद)	गोरखनाथ	१९वी श	१४x१२.५	६१५-६२१	लि क वीरमदास निरजनी लि.स्था कैरू (जोधपुर)
६९६	१०७८३	ज्ञानपचमी देववदन-विधि		२०वी. श	२४x१३	१-२५	
६९७	१२१९९ (१)	ज्ञानपचमीरो वखाण (व्याख्यान)		१९७५	२७x१४	२०-२३	पत्र १-१९ अप्राप्त। लि क प० केशरीसागर लि.स्था. फलोदी
६९८	१२२०५ (४३)	ज्ञानपचमी-स्तवन	समयसुन्दर	गु० १७४८-१७५८	१७x११	१४४-१४६	लि क विद्याप्रमोद लि स्था रूपनगर
६९९	१०८४३ (४)	ज्ञान-पच्चीसी	वनारसीदास	गु० १८९५	२५.५x२०	४-५	लि.क. मुनि गगराज लि स्था रतनपुरी, महाराज बलवन्तसिहजी के समय मे
७००	११५८३ (२)	ज्ञान-प्रकास जोगग्रथ	सूरदास	१९९३	१८x१५	३-४	
७०१	१२४२१ (७)	ज्ञान-वत्तीसी	कवीरदास	गु० १८९३	१७x१२	१२७-१२९	लि क वालदास लि.स्था. जोधपुर
७०२	१०९२४ (१८)	ज्ञान-वत्तीसी	कवीरदास	१८४४	२३x१२	५८९-५९१	अन्त मे सृष्टि पुराण का विवरण है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
७०३	१०८६७ (७)	ज्ञात-बत्तीसी	कवीरदास	२०वी श	१२x११	२४०-२४६	
७०४	१२४२८ (८)	ज्ञान बारहखडी		२०वी श	२१x१५.५	२७-२६	
७०५	१२३७२ (६)	ज्ञानबोध		१९वी श	२४x१६ ५	९९-१००	
७०६	११६४६	ज्ञानमजरी	मनोहरदास निरजनी	२०वी श.	२०x१२	१-२९	र का १७०१
७०७	१०९२४ (२०)	ज्ञानमाला		१८४४	२३x१२ ५	५९२वा	
७०८	१२५९१ (२३)	ज्ञानलीला	रामानन्द	२०वी श	१५ ५x१०	१२६-१२७	
७०९	१२५५७ (१७)	ज्ञानलीला	रामानन्द	गु० १८७८	२०x१५ ५	४-६	कृति स० २ से १६ सस्कृत मे है। लि क. वखतचन्द लि स्था अजमेर
७१०	१०९०३ (४)	ज्ञानलीला	रामानन्द	१९वी श	१३x८	२६-२८	
७११	१०८६५ (२)	ज्ञानलीला	रामानन्द	१९४६	१२ ५x८	१-५	लि क साधु रामस्वरूप
७१२	१०८४९ (४)	ज्ञानलीला	रामानन्द	गु० १९३१	१७x११	६-९	लि क छूछमराम

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
७१३	१२५७१ (३)	ज्ञानलीला	रामानन्द	१९वी श.	१०.५x८	१४-१८	
७१४	१२२१४ (८)२	ज्ञानसप्तभोमिका	मनोहरदास निरजनी	१९वी श.	२१ ५x१३	८९वा	
७१५	११६२६ (६)	ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास	गु० १८९४	३२x१५	१-२२	लि क रामदयाल मारू लि स्था नराणो-बरकता की बगीची
७१६	१२५६१ (३)	ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास	१९वी श	२३.५x१७	१४७-१६३	
७१७	१२५५६ (२)	ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास	गु० १८५६	२२ ५x१६	१०१-१०५	
७१८	१२४८०	ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास	१९वी. श.	२९ ५x१४ ५	१-१७	पत्र जीर्ण-शीर्ण। र का. १७१०
७१९	१२३७२ (१)	ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास	१९वी. श.	२४x१६ ५	१-१९	इस कृति से पूर्व के पत्र १-३ अप्राप्त व पत्र ४-११ तक 'अवधूत गीता' दत्तात्रेय कृत सस्कृत मे है।
७२०	१०८४९ (२२)	ज्ञानसमुद्र (द्वितीय उल्लास)	सुन्दरदास	गु० १९३१-१९३४	१७x११	१७०-१७८	लि क छूछमराम

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
७२१	१०९९९	ज्ञानसमुद्र (गुरु-शिष्य-सम्वाद)	सुन्दरदास	१९वी श	२५x१२	१-२९	पत्र प्राचीन है व कोण खण्डित है । र का १७१०
७२२	१२५७० (१६)	ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास	१९वी श	९.५x६ ५	९६-१२२	अपूर्ण ।
७२३	१०८९७ (१)	ज्ञान सार	हेमदास	२०वी श	१२x११	१-१००	पत्र चिपके हुए एव खण्डित।
७२४	१२०६७ (४)	ज्ञान स्वरोदय	चरणदास	१९२६	२३ ५x१७	१-६	अपूर्ण । लि क वोराचन्दलाल लि स्था. योधपुर (जोधपुर)
७२५	१२५६२ (१)	ज्ञान स्वरोदय	चरणदास	१९४७	२८ ५x२०	१७-२५	पत्र स. १-१६ अप्राप्त । लि क. सुखरामदास लि.स्था. गाव जुझूं
❀७२६	१०८४७ (२८)	झगडो-पनघट को		गु० १९९९	१७x८	६५७-६६०	लि स्था जोधपुर
७२७	१०८९७ (५)	झूलणा	हेमदास	२०वी श	१२x११	२०८-२१६	झूलणा ३०

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
७२८	१२२२१ (३)	टेकसार जोग-ग्रन्थ	जन तुरसी	१९वी श	१५x१०	६०-६४	पत्र अत्यन्त जीर्ण त्रुटित एव अ तव्यस्त । इस गुटके मे निम्न कृतिया है—— (१) प्रहलाद चरित-जनगोपाल (४) सेऊसमन की परची-अनन्तदास (५) सर्वंगसार-नवलराम (६) रामचरणजी की वाणी-रामचरण (७) फुटकर राग-पद सग्रह (८) जनतुरसी की वाणी-जन तुरसी
७२९	१२५६२ (७	डोकरीरी कथा		२०वी. श	१४x१० ५	१७६-१७९	१७५-१७६ पर फुटकर दोहे है । १७९-१८० पर "जन रामा" के दोहे है ।
७३०	१०६३१ (२)	डोकरीरी कथा			१४x१०.५	३०७-३१६	२८ प्रश्नोत्तर दिये है । इस से बड़ी कथा सग्रह मे उपलब्ध नही है ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
७३१	१०६०२ (३)	डोकरीरी कथा		१८०६	१५ ५x१२ ५	१४-१६	लि क साधु भीखनदास
७३२	१०८४७ (७)	डोकरीरी कथा		गु० १९९९	१७x८	७३६-७५०	इस कृति मे २५ प्रश्नोत्तर है।
७३३	१२२२० (२८)१-३	ढोल के पद	कुम्भनदास परमानन्द रामदास	१९वी श	१९x१६ ५	९६, ९७, ९६, ९६-९७,	
७३४	१२२१८ ४)	ढढणऋषि-सज्झाय	हर्षमगल सूरि जिनलब्धि सूरि	गु० १७५५ १७६७	२६ ५x१०	३२वा ३३वा	अन्त मे फुटकर शृंगारिक छद हैं।
७३५	१२२१८ (२४)(३५)	ढाल "कइयै मिलस्यैजी मुनिवर एहवा"	विजयदेव सूरि	गु० १७५५ १७६७	२६ ५x१०	३७वा, ४८वा	
७३६	१२३७० (२३)७	ढाल-कपटी मिनखरी		१९वी श	१६x११ ५	२२४-२२६	
७३७	१२२१८ (५६)	ढाल-"चतु विहारीरे आतम माहरा"	भुवनकीर्ति	गु० १७५५-१७६७	२६ ५x१०	६८वा	अन्त मे 'केशकल्प" का नुस्खा है।
७३८	१२३७० (२४)१-३	ढाल-धन्नाजीरी ,, श्रावकरी ,, समकितरी	रत्नचन्द	१९वी श	१६x११ ५	२२७-२२८ २२८-२२९ २२९-२३१	(१) र.स्था अकबराबाद (२) र का १८६८ र स्था पाली
७३९	१०९४२ (९-१०)	ढाल-सग्रह	रूपदास चोथमल		१३x६	२५६-२६२ २६३-२७०	र का १८५२ (१०)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
७४०	१०९४४ (६)१८-२०	ढाल-संग्रह—	अज्ञात सेवाराम रूपदास	२०वी श०	८×५	३२४-३२५, ३३७-३४२ ३२८-३३० ३३०-३३६	
७४१	१२३७० (२४)४-५	ढाल संग्रह— 'प्रीथवी एकक एन्डकडंजी' 'दोन्यारी मीठी वाणीरे'	कुशलहेम, ऋषि दुर्गादास शिष्य पुन्यकलश	१९वी श०	१६×११ ५	२३१, २३१-२३३	र का, (२) १८५० अजमेर
७४२	११९७७	ढोला-मरवणरी वात		१८९०	१८ ५×१४ ५	८६-१६३	लि क बदुकापडी लि स्था जयपुर
७४३	१०९०१ (१)	ढोला-मारवणीरा दूहा	कुशललाभ वाचक	१९वी श०	१५ ५×१२ ५	१०-२८	अपूर्ण । १२३वे दोहे से ३४४ तक ।
७४४	१२३७९ (४)	ढोला-मारूरी चौपई	कुशललाभ वाचक	१८६९	२० ५×१४ ५	३२-८१	र का 'संवत् सोलै तेरो तरै' १६१३ र स्था जेसलमेर लि क रामकिशन
७४५	१०७०२ (२)	ढोला-मारूरी चौपई सचित्र	कुशललाभ वाचक	१८५८	२५ ५x१७	३०-९२	चित्र सं० ५८ । अन्त मे अकबर से गऊ की फरियाद के सम्बन्ध मे दोहा है । आगे के पत्र रिक्त है । लि क हेमसागर लि स्था पाली

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स में)	माप (सं मी में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
७४६	१२२८८	ढोला-मारूरी चौपई सचित्र	कुशललाभ वाचक	१६३१	१६ ५×१५	१-५३	चित्र संख्या २३ । र का १६०७ जेसलमेर लि क प्यारचन्द लि.स्था ग्राम पावटो
७४७	११०१३ (३५)	तम्बाखूरी नीसाणी	कवि कानो	१८२२	२३×१५	२४६वा	लि क सुजाण लि स्था चम्पावती नयरे
७४८	१०६२४ (२३)	तर्क चिंतावणी	सुन्दरदास	१६वी श०	२३×१२ ५	५६३-५६५	
७४९	१२३६३ (२१)	तर्क चितावणी	सुन्दरदास	१६०६	२२×१५ ५	२१५-२१७	नि क बिहारीदास वैष्णव लि स्था पाली
७५०	१२३७५ (३)	तर्क चितावणी	सुन्दरदास	१६वी श०	११×१६ ५	४८०-४६०	
७५१	१२३७८ (२१)	तर्क चितावणी	सुन्दरदास	१८वी श०	२२×१५ ५	१२८-१३८	
७५२	१२५७० (६)	तर्क चितावणी	सुन्दरदास	१६वी श०	६ ५×६ ५	३१-३६	
७५३	१०६०२ (७)	तिलोकचन्दजी की परची	अनन्तदास	१८०६	१५ ५×१२ ५	४० ४४	लि क साधु भीखनदास
७५४	११६४८ (३)	तिलोकचन्दजी की परची	अनन्तदास	१८५३	२७×१६ ५	४था	अपूर्ण । लि क गोपालदास लि स्था कोलिया

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से. मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
७५५	१२५५६ (३)	तिलोकचन्दजी की परची	अनन्तदास	गु० १८५६	२२ ५x१६	१०५-१०७	लि क भगत लछमणदास
७५६	१२५८५ (४)	तिलोकचन्दजी की परची	अनन्तदास	१६२७	१६ ५x१५	१८३-१६०	गुटके मे परची साहित्य का दुर्लभ सग्रह है। लि क आरतराम; वदनोर
७५७	११५८५ (८)११	तीनो चोवोसो के नाम		१६०३	१६ ५x११ ५	१४२-१४४	लि क. लिखमीचन्द कोचर लि स्था वालाहेडा
७५८	१२२१८ (६६)	तीर्थ-यात्रा सज्भाय	समयसुन्दर	गु० १७५५-१७६७	२६ ५x१०	८६वा	
७५९	११०६३	तीलोक सुन्दरीनो वखाण		१६८५	२५x१२ ५	१-८	११ ढाले है। लि क केसूलाल लि स्था नीवरेवारी
७६०	११५८४ (३३)	तुरकी भापा शकुनावली		१८वी श०	१६.५x१६	२३०-२३२	कुलग, फकती, टोटरू, लक, अक, तोता, वतख, हुद, बुलबुल दुर्हाज, कवूतर, मात्तरक, वऊस, वाज, खुरस, आदि नामो के पक्षियो की वोली के आधार पर शकुन विचार दिया गया है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
७६१	११६४८ (१५)	तुरसीदासजी को कृत	जन तुरसी	१८५३	२७x१६ ५	३९८-४३०	साखी ४२००, राग २६ प्रकरण-२०० जन तुरसी की कृतियो का दुर्लभ सग्रह है। लि क गोपालदास लि स्था कोलिया
७६२	१२४२२ (१५)	तुरसी-वाणी	जन तुरसी	१९वी श०	१५x१० ५	३५४-३६५	
७६३	१०८४९ (२७)	तुरसी-वाणी	जन तुरसी	गु० १९३१	१७x११	१९०-२१४	लि क मनोरथदास
७६४	१२५४४	त्रिधापद वेदान्त निर्णय	आत्माराम	२०वी श०	२१ ५x११	१-२१	
७६५	१०८४३ (७)	त्रिषष्ठिशलाका पुरुष नाम	बनारसीदास	१८९५	२५.५x२०	२५-२७	लि क मुनि गगराज लि स्था रतनपुरी
७६६	११६४८ (५४)	दत्तात्रेयजी की आरती	दत्तात्रेय	१८५३	२७x१६ ५	३४५वा	लि क गोपालदास लि स्था कोलिया
७६७	११५३७	दत्तात्रेय चो-पदे सग्रह		२०वी श०	१६x११.५	१-४८७	मराठी भाषा मे। महानुभाव सप्रदाय कृति-सग्रह। पत्र स० १०१ से ११० तक अप्राप्त।
७६८	१२४२२ (६)	दत्तात्रेयजी की सबदी	दत्तात्रेय	१९वी श०	१५x१० ५	२४३-२४५	अपूर्ण। २४६वा पत्र अप्राप्त।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी.मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
७६९	१२२२६ (१०)	दत्तात्रेय स्तोत्र	शकराचार्य	१९वी श०	१४x१२ ५	५६वा	लि क बीरमदास निरजनी लि.स्था. कैरू (जोधपुर)
७७०	१२२१८ (१४२	दपति गीत	हर्षकीर्ति सूरि शिष्य चन्द्रकीर्ति सूरि	१८वी श०	२६ ५x१०	१५७-१५८	
७७१	१०९२४ (२०)	दया वोध	गोरखनाथ	१९वी श०	२३x१२ ५	५९१-५९२	
७७२	१२२१४ (२)	दया वोध	गोरखनाथ	१९वी श०	२१ ५x१३	३८-३९	
७७३	१२२१८ (३३)	दयार्णव सज्झाय	पडित लालविजय शिष्य शुभविजय	गु० १७५५-१७६७	२६ ५x१०	४७-४८	
७७४	१२४२० (१०)	दयालदासजी का छुटकर सवद	दयालदास	गु० १९३२	१६x१४	१९२-२६१	
७७५	१२५७१ (५)	दयालदासजी की वाणी	दयालदास	१९वी श०	१०.५x८	२३४-३१८	
७७६	१०८६६ (६)	दयानदासजी की वाणी	दयालदास (घालवाल)	१९१०	७ ५x६.५	१०८-१५५	लि क. रामसजन शिष्य सेवगराम
७७७	१२५८६ (५)	दरियादासजी की वाणी	जन दरिया	१९वी श०	१२x९ ५	६०-८२	लि क. बिहारीदास 'पोथी चम्पाबाई की"
७७८	१२२१८ (८३)	दश अवतार पार्श्वनाथ स्तवन	मतिविशाल	गु० १७५५-१७६७	२६ ५x१०	१०३-१०४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
७७९	१२२१० (१०)१-७	दशहरा के पद—	नन्ददास	१९वी श०	१८x१३ ५	५२-५३	राग-मारू, सारग, गुटके मे पदो का दुर्लभ सग्रह है।
			सूरदास			५३-५४	
			रसिकदास			५४-५५	
			परमानन्द			५५,५६	
			गोविन्द स्वामी			५५	
			रामदास			५६	
७८०	१२२२० (१२)१-६	दशहरा के पद—	स्यामदास, रसिकदास	१९वी श०	१९x१६ ५	७५, ७५	
			कृष्णदास			७५-७६	
			परमानन्द			७६	
			चत्रभुज			७६	
			नन्ददास			७६	
७८१	१२३२० (२५)	दस श्रावक सज्झाय	मुनि श्रीसार	१८वी श०	२१ ५x१४ ५	३२वा	
७८२	१२३२० (५)	दसारणभद्र चो-ढालियो	कुशलसिह शिष्य रामसिह	१८वी श०	२१ ५x१४ ५	१८-१९	कर्त्ता लु कागच्छी आर्यारत्ना पठनार्थ
७८३	११९८९ (२)	दस्तूर अमल		१९०६	२३ ५x१६	१-७	रजपूत फताजी की १८९९ की प्रति की नकल। लि क वस्तीराम पूरविया
७८४	१२५४८ (१)	दाढाला एकलगिढरी वात		१९वी श०	१६x१२ ५	१-१५	लि क माणकचन्द लि स्था सोजत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
७८५	१२२०५ (२३)	दादा गुरु गीत	जिनरग सूरि	गु० १७४८-१७५८	१७x११	११९वा	पत्र स० ११८-११९ पर रक्तपीत आदि का नुस्खा है।
७८६	१२३७० (३)	दादाजीरी अष्टप्रकारी पूजा	देवचन्द्र	१९वी श०	१६x११ ५	१५-२०	
७८७	१२२१० (६) १-३	दान के कीर्तन	कुभनदास, परमानन्ददास, गोविन्द स्वामी	१९वी श०	१८x१३ ५	३९वा ३९-४० ४०-४१	राग देवगधार, विलावल, पूरबी
७८८	१२२२० (८)	दान के पद	परमानन्द	१९वी श०	१९x१६ ५	६९वा	
७८९	१०८४१ (३)	दानलीला	नन्दराम पचोली	१९००	२८x१९ ५	१-६	लि क. मुरलीधर पुरोहित लि स्था. जोधपुर
७९०	१०८६२ (२)	दानलीला	कृष्णदास	गु० १८९८	१७x१४	११-१६	लि स्था जोधपुर
७९१	१०८६२ (५) १७	दानलीला	कृष्णदास	गु० १८९८	१७x१४	१६-१९	
७९२	१०८६७ (९)	दानलीला	कृष्णदास	१९वी श०	१८x११	९३-९७	
७९३	१२४२८	दानलीला	कृष्णदास पयहारी	गु० १९१२	२१x१५ ५	१९-२१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स में)	माप (से मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
७९४	१२५५७ (१८)	दानलीला	कृष्णादास	गु० १८७३	२०x१५ ५	७-११	लि क पडित बखतचन्द लि स्था अजमेर
७९५	१०९५४ (५)	दान-शील-तप भावनारो चो-ढालियो	समयसुन्दर शिष्य सकलचन्द	१८७४	२४x१६ ५	७५-८१	र का १६६२ सागानेर लि क. रणजीत लि स्था पाली (मारवाड)
७९६	१२३७० (२५)	दान-शील-तप भावनारो चो-ढालियो	समयसुन्दर वाचक	१९वी श०	१६x११ ५	२३७-२४९	र का १६६२ र स्था सागानेर
७९७	१२३७० (१२)	दान-शील-तप भावनारो चो-ढालियो	समयसुन्दर वाचक	१९वी श०	१६x११ ५	११८-१३१	र का १६६२ र स्था सागानेर
७९८	१२५६८	दान-शील-तप भावनारो चो-ढालियो	समयसुन्दर वाचक	१९वी श०	१८ ५x१२ ५	८२-८७	
७९९	१२२१८ (१११)	दान-शील-तप भावना सज्झाय	समयसुन्दर वाचक	१८वी श०	२६ ५x१०	१२२वा	
८००	१२२१८ (८०)	दान-शील-तप भावना सवाद	समयसुन्दर वाचक	गु० १७५५-१७६७	२६ ५x१०	९९-१०३	
८०१	१२५७९ (१)	दादूदयालजी की जनम लीला	जन गोपाल	१९वी श०	१६x८	१७-७१	पत्र जीर्ण एव वडकने हैं।
८०२	१२४१६	दादूदयालजी के पद	दादूदयाल	१८४४	३०x१५ ५	१-४७	राग ३०, पद ४०९ प्रथम पत्र खण्डित।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
८०४	१२३७५ (९)	दादूदयालजी की परची	जन गोपाल	१९वी श०	१६x११ ५	८२२-९०६	
८०५	११६२७	दादूदयालजी की वाणी	दादूदयाल	१८५२		१-९१	राग १७, पद ४४४ पत्र ११-१७ त्रुटित लि.क. चत्रभुज पुत्र गुलावचन्द
८०६	१२३६२	दादूदयालजी के सबद	दादूदयाल	२०वी श०	२९x१४.५	१-४६	सटिप्पण ।
८०७	१२३६९ (१)	दादूदयालजी के सबद एव वाणी सग्रह	दादूदयाल	१७८६	२४x१७ ५	१-८५ ८५-१६५	राग २८, पद ४४४, साखी २५२ लि स्था नारनोल
८०८	१२३७४ (१)	दादूदयालजी के सबद एव वाणी सग्रह	दादूदयाल	१९वी श०	२१ ५x१६ ५	१-१०६ १०६-१८५	साखी २५९०, राग २७, पद ४४३
८०९	१२३७५ (१)	दादूदयालजी के सबद एव वाणी सग्रह	दादूदयाल	१९वी श०	११x१६ ५	१-२४४ २४४-४७५	राग २९, पद ४४२
८१०	१२३७८ (२)	दादूदयालजी की साखी	दादूदयाल	१८वी श०	२२x१५ ५	१-२५	
८११	१२३८० (१)	दादूदयालजी की साखी	दादूदयाल	गु० १७२४	२०x१४	३१-१०६	गुटका क्षतिग्रस्त । पत्र स० २२२ पर भी दादू-वाणी के कुछ अश है । पत्र स० १-३० अप्राप्त ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
८१२	१२४१५	दादूदयालजी की साखी श्रग बद्ध	दादूदयाल	१९वी श०	३०x१५	१-६५	श्रग ३७, साखी २४११
८१३	१२५६१ (१)	दादूदयालजी की साखी एव पद	दादूदयाल	१९वी श०	२३ ५x१७	१-१२२	राग २९, पद ४४३, साखी २५५८, श्रग ३७
८१४	१२५७३	दादूदयालजी की साखी	दादूदयाल	१९वी श०	१५ ५x१० ५	१-२८६	पत्र जीर्ण व बडकने है।
८१५	१०८६२ (६)४	दिस.सुर को पालग (दिशा-स्वर का पालन)		गु० १८९५	१७x१४	३९-४०	लि स्था जोधपुर
८१६	१२६१२ (१०)	दीतवारजी की कथा		१८१७	२५x१५	२९-४३	लि.क. हिम्मतराम सिंघ्वी लि.स्था दिल्ली, जमुना ती
८१७	१०९०२ (२)	दीनरा रेखता	दीन दरवेश	१८०९	१५ ५x१२ ५	६-१४	लि क साधु भीखनदास
८१८	१२२१० (१५)१-३	दीपमालिका के पद	चत्रभुज कु भनदास, परमानन्द	१९वी श०	१८x१३ ५	९१, ९२-९३ ९१, ९२	राग-हमीर, कान्हरो।
८१९	१२२२० (१६)	दीपमालिका के पद	सूरदास कु भनदास	१९वी श०	१९x१६ ५	७७ ७८ ७८	पत्र ७७ पर धनतेरस का पद है।
८२०	१०८३९ (२)	दीपमालारी कथा		१९०६	३२x७ ५	९-११	लि स्था. जोधपुर
८२१	१२१९९ (८)(११)	दीवाली पर्व व्याख्यान		१९७५	२७x१४	४१-४३, ५२-६४	लि क प० केशरी सागर लि स्था फलोदी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
८२२	१२२१८ (२६)	दीवाली भास	आणद शिष्य पार्श्वचन्द	गु० १७५५-१७६७	२६ ५x१०	३७-३८	र का १७६३ लूणसर
८२३	११३५३ (२)	दुर्गा की आरती		१९वी श०	११ ५x६ ५	८२-८५	गु० की अन्य कृतिया सस्कृत मे है।
८२४	१२०१२ (१)	दूल्हैरामजी की वाणी और पद सग्रह	दूल्हैराम शिष्य रामचरण	२०वी श०	१४ ५x११	१-५९७ १-८६	राग ४९, पद २०५।
८२५	१०९२५ (८)	दृष्टातसागर टीका सजुगति	टी० रामजन शिष्य मू० रामचरण	१९३३	२२ ५x१६ ५	१०१-१४८	र का १८५७ बैसाख सुदि ३ शनिवार गुटका रामचरण के साहित्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।
८२६	१२५४२	देवकी चौपई	क्षमाकल्याण	१९०९	२४x१२	१-८	लि क श्री चनणाजीरी चेली लि स्था. बीलाडा
८२७	१२३७० (३४)	देवकीनी ढाल		१९वी श०	१६x११ ५	२२-३२	
८२८	१२०६८ (६)	देवचन्दजी की वीमी	देवचन्द	१८८८	२३ ५x१५ ५	३८-४५	लि.क. जति वीरवैताल लि स्था. कलकत्ता
८२९	१२४२२ (५)	देवलनाथजी की सबदी	देवलनाथ		१५x१० ५	२४३वा	
८३०	१०९७३ (२)	देवसेनरी चौपई	कुसालचन्द	१९१४	२५ ५x१२	७-१०	र का १८९८ सोजत, ९ ढालें लि क लाछमा लि.स्था बिलाडा

क्रमाङ्क	ग्र-थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
८३१	११०१८ (२)	देवझीलणी एकादशी कथा-भाषा	नागरदास	१६०४	२६×१३ ५	१-३२	ब्रह्माण्ड पुराणगत पद्यानुवाद। पत्र जलाभिषिक्त।
८३२	१०६२८ (७)	देवादासजी की वाणी	स०कर्त्ता हरिराम शिष्य देवादास	१८४०	२३×१२ ५	३४२-५०४	रचनाकालीन प्रति। सकलन काल १८३७ स स्था भीलाड़े (भीलवाडा)
८३३	११०१३ (२६)	दीपावली पत्र (बारह लग्न भाव)		१८२२	२३×१५	२४६-२५२	लि क सुजाण लि.स्था. चम्पावती नयरे
८३४	११०१३ (२८)	दोहा-गीतादि सग्रह		१८२५	२३×१५	२८३-२८६	लि स्था. चाणोद
८३५	१०६४८ (१६)	दोहा-गूढार्थ		२०वी श०	८×५	३०४-३१७	
८३६	१०८४५ (७)(१-६)	दोहा-पद आदि सग्रह	जीवनदास	गु० १८८६	१५ ५×१० ५	८५७-८५६	
		,,	कबीरदास	,,	,,	८५८वा	
		,,	अग्रदास	,,	,,	८५६-८६०	
		,,	दादू	,,	,,	८५६वा	
८३७		,,	बखतावर	,,	,,	५५६वा	
		,,	ब्रिजानन्द	,,	,,		
८३८		,,	नरसिंह	,,	,,	८६०वा	
		,,	जन हरिदास	,,	,,	८६१वा	
८३९		,,	मीराबाई	,,	,,	८६०-८६२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी.मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
८४०	१०८४५ (७ ६	दोहा-पद आदि सग्रह	मीरा	गु० १८८६	१५ ५x१० ५	८६०-८६२	
८४१	१०८४५ (७)१०-१३	दोहा-पद आदि सग्रह	रसिकनाथ	गु० १८८६	१५ ५x१० ५	८६०वा	
८४२	,,	,,	,,	,,	,,	८६१वा	
८४३	,,	,,	,,	,,	,,	८६१वा	
८४४	,,	,,	,,	,,	,,	८६२वा	
८४५	११०१३ (६)	दोहा-पोथीरा		१८२५	२३x१५	८३वा	कुल १३ दोहे हैं। लि.क ऋषि सुजाण लि स्था चाणोद नगरे
८४६	११०१३ (२८)	दोहा-रिपुजीतरा	शिव कवि	१८१८	२३x१५	१५७-१६०	कुल १०३ दोहे है।
८४७	११०८५ (१०)	दोहा लाखाफूलाणीरा		१९वी श०	१६ ५x१३ ५	६९वा	
८४८	११०१३ (२०)	दोहा-वर्षारा		१८१८	२३x१५	१३३वा	१३ दोहे हैं। अन्त मे एक सवैया तथा कवित्त भी है। लि क सुजाण लि स्था चाणोद

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
८४६	११०१३ (४०)	दोहा-संग्रह	प्रीतिसखी	१८१६	२३x१५	३०८-३११	कुल १३१ दोहे है।
८५०	१०८६७ (४)	दोहा-संग्रह	जन तुरसी	१६वी श०	१८x११	७३-८५	१६३ दोहे हैं।
८५१	११०१३ (२३)	दोहा-संग्रह	केसोराइ	१६वी श०	२३x१५	१३७-१४१	कुल १०५ दोहे हैं। एक सवैये मे "केसोराइ" नाम मिलता है। संभवत: दोहे भी इन्ही के हो।
८५२	११०१३ (४६)	दोहा-संग्रह	उदैराज, समन, सजन, जमाल आदि	१८१८	२३x१५	३२१-३२३	८६ दोहे है। लि क सुजाण
८५३	१२३७१ (५)(६)	दोहा-संग्रह (श्रृंगार) " (गूढार्थ)		१८३५	१८ ५x१६ ५	२५०-२५४ २५५-२६०	१०३ दोहे हैं। १०६ दोहे हैं। लि क भीखनदास गौड लि स्था नागोर
८५४	११०१३ (४५)	दोहा संग्रह "रसिकरजन"		१८१६	२३x१५	३१५-३१७	कुल ७६ दोहे है।
८५५	११०१३ (१६)	दोहा सूरीयारा		१८१८	२३x१५	१३३वा	१० दोहे हैं। लि क सुजाण लि स्था चाणोद
८५६	११०१३ (२१)	दोहा सोरठ-वीझारा		१८१८	२३x१५	१३४-१३६	७४ दोहे हैं। लि क सुजाण लि स्था चाणोद

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
८५७	१२२०८ (५)	द्रव्यगुण पर्याय रास	यशोविजय शिष्य नयविजय	१७७४	२५x१८ ५	७२-९३	कर्ता-तपागच्छी लि क मुनि आसकरण
८५८	११०१३ (४१)	द्वादशमास वर्णन		१८१६	२३x१५	३११-३१२	अन्त मे चार दोहे है।
८५९	१०९२४ (१३)	द्विज कन्या-सवाद		१८४४	२३x१२ ५	५३७-५४५	
८६०	१२२१० (१२)	धनतेरस के पद	द्वारकेश	१९वी श०	१८x१३ ५	६७वा	राग देवगधार
८६१	१२२०५ (८५)	धनदत्त सज्झाय	लब्धि विजय	गु० १७४८-१७५८	१७x११	१४७वा	
८६२	१०९०२ (८)	धनाजी की परची	अनन्तदास	१८०९	१५ ५x१२ ५	४४-५२	लि क. साधु भीखनदास
८६३	१०९४१ (६)	धनाजी की परची	अनन्तदास	१९३७	१७x१० ५	१३९-१४३	लि.स्था. श्री पारी (पाली)
८६४	१२५७० (२)	धनाजी की परची	अनन्तदास	१९वी श०	९ ५x६ ५	१६-३४	
८६५	१२५३६	धनाजी की परची	अनन्तदास	१९वी श०	२०x१०	१-९	
८६६	१२५९१ (२)	धनाजी की परची	अनन्तदास	२०वी श०	१५ ५x१०	२०-२७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स में)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
८६७	१२३७० (४३)	धन्नाश्रणगार चौपई		१८७७	१६x११ ५	१४४-१५२	१५२-१५४ पर नव वाडि सज्झाय है।
८६८	१२२१८ (४६)	धन्नाश्रणगार सज्झाय		गु० १७५५-१७६७	२६ ५x१०	६३वा	
८६९	१२३२० (३२)	धन्नाश्रणगार सज्झाय	श्री देव	१८वी श०	२१ ५x१४ ५	३७-३८	लि स्था आल्हणपुर
८७०	१२५८१ (१२)	धन्नाश्रणगार सज्झाय	समयसुन्दर	१९वी श०	१६x१० ५	७६-७७	
८७१	१२२१८ (६)	धन्नाऋषिरी सज्झाय	सिधो	गु० १७५५-१७६७	२६ ५x१०	२९वा	
८७२	१०९५४ (४)	धन्ना शालिभद्रनी चौपई	जिनराज शिष्य जिनसिंह सूरि	१८७४	२४x१६ ५	३९-७५	र.का १६७८ लि क रणजीत
८७३	१२२१० (२३)१-५	धमारी के पद	मानिकचन्द, चत्रभुज, गोविन्द स्वामी, माधोदास, सूरदास		१८x१३ ५	११३-११४ ११४,११६, १३८,१४१, १४७,१४८, ११६-११८, १२५-१२६, १३०-१३१, १३९-१४१,	लि स्था पाली (मारवाड)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं.में)	माप (से.मी. में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
८७३	१०६४८ (८)	धमाल	रामचरण आदि	१९३५	१८ ५x७	९६-९८	लि.क. साधु रामविलास
८७४	१०८६७ (७)	धमाल	तुलसीदास		१८x११	८८-९२	
८७५	१२२०५ ४२)५	धर्म-कर्म गीत	कीर्तिवर्द्धन	१० १७४८-१७५८	१७x११	१४३वां	
८७६	१२४१८	धर्मदत्त धनवती चउपई	कुशलहर्ष शिष्य रामसिंह	१८०८	२५ ४x११	१-२४	र.का.१७८८ नगीनो (नागोर) बखतसिंह राज्ये लि.क. जीवणहंस शिष्य हीरहंस शिष्य कल्याणहंस लि.स्था. विक्रम महानगर
८७७	१२३७० (२८,६	धर्मरुचि सज्झाय	रतनचन्द	१९वीं श०	१९x११ ५	२३४-२३५	र.का. १८६५ जोधाणा (जोधपुर)
८७८	१०८८९ (२०)	धर्म-सवाद भाषा (महाभारत गत पद्यानुवाद)	जन गोपाल	मु० १९२१	१७x११	१५५-१६१	लि.क. मनोरथदास
८७९	१२४७०	धर्म-सवाद भाषा	जनगोपाल	१९३९	२७ ५x१२.५	१-१९	"महाभारत" के धर्म पर्व की भाषा "तेरं दिन में तीन में करि चोपई जोड़" लि.क. गुलाबदास लि.स्था. सुजानगढ

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
८८०	१२१६० (५)	ध्यान छत्तीसी	बनारसीदास	१८६७	२१x११ ५	८-१०	लि क रगसागर लि स्था जेतारण
८८१	१२३७८ (१३)२४	ध्यानलीला	सुन्दरदास	१८वी श०	२२x१५ ५	१०७-१०८	
८८२	११६४८ (२१)	ध्यानदासजी का सबद	ध्यानदास	१८५३	२७x१६ ५	५६१-५६३	सत साहित्य का दुर्लभ सग्रह लि क गोपालदास लि स्था कोलिया
८८३	१०६२४	ध्रुव चरित्र	जनगोपाल	गु० १८४४-१६३०	२३x१२ ५	५४५-५५७	गुटका सतो के वाणी सग्रह की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।
८८४	१०६३७ (७)	ध्रुव चरित्र	जनगोपाल	१८०६	१०x२० ५	१-२३	पत्र गलित एव चिपके हुए
८८५	१०६४० (१४)	ध्रुव चरित्र	जनगोपाल	१८८३	१५ ५x१० ५	४८४-५१३	पत्र स० ५१४-५१६ पर कर्म विपाक गीता सस्कृत मे है। लि क जैतराम लि स्था फलोदी
८८६	११०८६ (२)	ध्रुव चरित्र	जनगोपाल	१८१७	२१ ५x१५	१-१३	२१० छन्द है।
८८७	११०८६ (६)	ध्रुव चरित्र	जनगोपाल	१९वी श०	१८ ५x१५ ५	६०-६६	गु० के प्रारम्भ की पाच कृतिया सस्कृत मे है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
८८८	११५८६ (२)	ध्रुव चरित्र सचित्र	जनगोपाल	१८३३	१५.५x११	११४-१३३	चित्र स० १ लि क मथेन मसाराम लि स्था नागोर
८८९	११६४७	ध्रुव चरित्र	जनगोपाल	१७८९	२१x९ ५	१ १३	किनारे क्षति ग्रस्त लि क नरसिंहदास वैष्णव
८९०	१२२२६ (८)	ध्रुव चरित्र सचित्र	जनगोपाल	१८७७	१४x१२ ५	१-३६	चित्र स० ३५ चित्रकार-महेशदास लि क वीरमदास निरजनी लि स्था कैरू (जोधपुर)
८९१	१२३७५ (८)	ध्रुव चरित्र	जनगोपाल	१९वी श०	१६x११ ५	७९५-८२२	
८९२	१२४२२ (१७)	ध्रुव चरित्र	जनगोपाल	गु० १८३१	१५x१० ५	३८२-३८९	
८९३	१२५५३ (७)	ध्रुव चरित्र	जनगोपाल	गु० १८९७	१४ ५x१३.५	१२२-१२६	
८९४	१२५६१ (११)	ध्रुव चरित्र	जनगोपाल	१९वी श०	२३ ५x१७	३५५-३६२	
८९५	१२५६९ (३)	ध्रुव चरित्र	जनगोपाल	१८२२	१६ ५x११	१-२३	लि क रूपराम लि स्था खेडापा
८९६	१२५७२ (१०)	ध्रुव चरित्र	जनगोपाल	१९वी श०	१० ५x८ ५	२१८-२८०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
८९७	१२५७४ (११)	ध्रुव चरित्र	जनगोपाल	२०वी श०	१७x१० ५	२२७-२५६	
८९८	१२२२६ (५)	धू धलीमलजी की सवदी	धू धल	१८७९	१४x१२ ५	३०-३१	अन्त मे अग्रदासजी का एक पद है। लि क वीरमदास निरजनी लि स्था कैरू (जोधपुर)
८९९	१०७६२	नन्दि सूत्र-भाषा	ऋपि उत्तमजी	१७१२	२६x११ ५	१-१०	श्री उत्तमजी ने कई शब्दो के भी पर्याय लिखे है। लि क गोदे ऋपि लि स्था. द्रुणाला
९००	१२४२९	नन्दोत्सव व्याख्या		२०वी श०	३२ ५x२०	१-३०	
९०१	१२२०५ (३४)	निन्दा सज्भाय	समयसुन्दर वाचक	गु० १७४८-१७५८	१७x११	१२०वा	
९०२	१२३७१ (१३)	नखसिख वर्णन	प्रोहित घनश्याम	१८३९	१८.५x१६ ५	१-१०	र.का १८०५ लि.क भीखनदास लि स्था नागोर
९०३	१२२१८ (१५०)	नणद-भोजाई सवाद	मुनि टीकम	१८वी श०	२६ ५x१०	१६४वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
९०४	१२२१८ (५)३	नणद-भोजाई सज्झाय	आनन्दवर्द्धन	गु० १७५५-१७६७	२६.५x१०	२६वा	
९०५	१०९४२ (१)	नरसीजीरो मायरो	रतना खाती	१९५२	१३x६	१-१७३	र का १६१६ शाके १४८१ लि क साधु बालकराम लि स्था महामन्दिर जोधपुर
९०६	१०९४४ (४)	नरसीजीरो मायरो	रतना खाती	२०वी श०	८x५	४४-२१९	र.का १६१६ लि क बालकराम
९०७	१२४२५ (२)	नरमीजीरो मायरो	रतना खाती	२०वी श०	२६ ५x१७	६०-६५	अपूर्ण
९०८	१२५७७ (११)१०	नरसी मेहताना हुडी		१९वी श०	२१x१५ ५	१५०-१५७	लि क. साधुराम नागर लि स्था कलकत्ता
९०९	१२५८६ (६)	नरसी मेहतानी हुडी		१९वी श०	१२x९ ५	८२-८८	लि क विहारीदास, प्रेमदयाल की परम्परा मे
९१०	१२२१८ (५)४	नलदमयन्ती सज्झाय	उदयनन्दन	गु० १७५५-१७६७	२६ ५x१०	२७वा	जैन स्तुति स्तोत्रो का सुन्दर सग्रह इस गुटके मे है ।
९११	१२२१८ (१३२)	नवकार रास	अज्ञात	१८वी श०	२६ ५x१०	१४१-१४२	
९१२	१२२१८ (९८)	नवकार स्तवन	गुणसूरि	गु० १७५५-१७६७	२६ ५x१०	११८वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
६१३	११५७८	नवतत्त्व विचार		१८५७	२४ ५×१० ५	१-१५	लिपि सूक्ष्म एव सुवाच्य लि क जेठमल शिष्य रोडीदास
६१४	१२३७० (५);	नवपद कलश पूजा	यशोविजय वाचक	१६वी श०	१६×११ ५	३५-४६	
६१५	१२५६५ (६)	नवपदनी पूजा	ज्ञानविमल	२०वी श०	१६x१२	४५-५६	
६१६	१०७६७ (२)	नवपद-महिमा		१६वी श०	२७x१२	१-१०	प्रारम्भ मे 'यन्त्र राज बणावा री विधि' है।
६१७	१२३२० (४६)	नवमी स्तवन	सेवक	१८१६	२१ ५x१४ ५	५१वा	आर्या सरूपा पठनार्थ लि क खुसाला शिष्या आर्या रतना लि स्था अहिपुर
६१८	१२२१७ (४)	नवरत्न छप्पै बद्ध		१६वी श०	२१ ५×१२	८५-८६	लि,क नन्दराम
६१६	१२१६१	नववाडि सज्झाय	जिनहर्ष	२०वी श०	२५ ५x१२ ५	१-५	र का १७२६
६२०	१२२०५ (४२)२	नववाडि सज्झाय	कीर्तिवर्द्धन	गु० १७४८-१७५८	१७x११	१३२-१४०	
६२१	१२२१८ (१०१)	नववाडि सज्झाय	अजितदेव सूरि	गु० १७५५-१७६७	२६ ५x१०	११८-११६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि सं)	माप (से मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
९२२	१२३२० (१)	नववाडि सज्झाय	जिनहर्ष	१८वी श०	२१ ५x१४ ५	१०-१४	आर्या रत्नाजी पठनार्थ पत्र सं० १-९ अप्राप्त ।
९२३	१२२२० (११)	नवविलास	रसिकदास	१९वी श०	१९x१६ ५	७२-७५	
९२४	११०८० (३)	नसीहत नामा (हकीम लुकमान)		१९वी श०	२२x१४ ८	७३-७६	१०७ छन्द लि स्था पाली
९२५	११०९० (२)	नसीहत नामा (हकीम लुकमान)		१९वी श०	१८ ५x११	६९-७८	प्रारम्भ के ६० पत्र दीमक ग्रस्त
९२६	११६४३	नसीहत नामा (हकीम लुकमान)		२०वी श०	२४ ५x१३	१-६	अपूर्ण । शीर्षक मे १२५ शिक्षाओ का उल्लेख है जिनमे से ३५ दी गई है ।
९२७	१२५५३ (८)	नसीहत नामा (हकीम लुकमान)		गु० १८९७	१८.५x१३ ५	१२६-१२९	
९२८	१२२१८ (४३)	नाकोडापार्श्वनाथ-स्तवन	समयसुन्दर वाचक	गु० १७५५-१७६७	२६ ५x१०	६१वा	
९२९	१२३७० (४२)८	नाकोडापार्श्वनाथ-स्तवन	समयसुन्दर वाचक	१८६९	१६x११ ५	१२६वा	पत्र सं० १०७-१०८ पर नवकार स्तवन है । लि क सूरजमल लि स्था जोधपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
९३०	११५८५ (५)	नागजी-नागवन्तीरी बात		१८५२	१६ ५x११ ५	४७-७७	बीच के पत्र खण्डित लि क पडित केसरविजय लि स्था बीकपुर, बीकानेर
९३१	११०८६ (८)	नागदमण	सायाजी झूला	१६वी श०	१८ ५x१६ ५	७५-८७	
९३२	१२२१५ (३)	नागदमण	सायाजी झूला	१६वी श०	२२x१६	२६-३७	
९३३	१२४२८ (४)	नागलीला के पद	सूरदास	गु० १६१२	२१x१५ ५	१७-१६	१५-१६ पर दधिलीला के पद है ।
९३४	१२४६३	नाडी परीक्षा आदि फुटकर रोगनिदान व नुस्खे		१६वी श०	२६ ५x१३ ५	१-१३	
९३५	१२५८१ (१६)	नाडी परीक्षा तथा फुटकर रोगो के नुस्खे		१६वी श०	१६x१० ५	६६ १२१	९६वें पत्र पर जवूसर की कथा का प्रारम्भ मात्र है ।
९३६	११५८३ (१२)	नामदेव की परचई	अनन्तदास	गु० १६६३	१८x१५	११८-१२१	र का १६४५ पत्र खण्डित । पत्र १२१ पर शिवस्तुति भी है।
९३७	१२४२१ (९)	नामदेवजी की परची	अनन्तदास	१६वी श०	१७x१२	१५०-१६६	
९३८	१२४२२ (२०)	नामदेवजी की परची	अनन्तदास	गु० १८३१	१५x१० ५	४२६-४२६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
९३९	१२४२६ (४)	नामदेवजी का पद	नामदेव	२०वी श०	१६ ५x१३	५६-६४	राग-बद्ध
९४०	१२५८५ (५)	नामदेवजीरी परची	अनन्तदास	१९२७	१९ ५x१५	१९०-२२४	लि क आरतराम लि.स्था बदनोर
९४१	१२४२२ (१३)	नामदेवजी की फुटकर वाणी	नामदेव	गु० १८३१	१५x१० ५	२५०-२६४	साखी १०, पद-५१, राग ११
९४२	११६४८ (१६)	नामदेवजी की साखी एव पद सग्रह	नामदेव	१८५३	२७x१६ ५	४३०-४४२	राग १७ पद १६५ लि क गोपालदास लि.स्था कोलिया
९४३	१२३५६	नाम प्रकाश	हरिरामदास निरजनी शिष्य बालकदास	१८९२	३१ ५x१६	१-१०	र का १८२५शर कर वसु शशि र स्था डीडवाणा लि क साधु सम्पतराम लि स्था अजमेर
९४४	१०९३८	नाम-प्रताप जोग-ग्रन्थ	रामचरण	१८८५	१६ ५x८ ५	४६५-४७८	
९४५	१०८४६ (३)	नाम-प्रताप जोग-ग्रन्थ	रामचरण	१९५०	१५ ५x९ ५	१-२१	गुटका सजिल्द लि क रामविलास लि स्था रतनपुरी
९४६	१२३७३ (२७)	नाम-प्रताप जोग-ग्रन्थ	रामचरणदास	१९०९	२२x१५ ५	२३५-२४८	२४९-२६९ तक सस्कृत की तीन कृतिया है। अन्तिम कृति अपूर्ण ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स में)	माप (से मी में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
६४७	१२४२० (१६)	नाम-प्रताप जोग-ग्रन्थ	रामचरण	]० १९३२	१६.१४	३५२-३६०	
६४८	१२५७७ (७)	नाम-पताप जोग-ग्रन्थ	रामचरण	१६वीं श०	२१×१५ ५	८७-६७	लि क साधुराम लि स्था. उज्जैन
६४९	१२५८८	नाम-प्रताप जोग-ग्रन्थ	रामचरण	१९वीं श०	१२ ५ ८	२-१५	प्रारम्भ मे दूल्हैराम के दो पद है।
६५०	१०८६६ (४)	नाम-महिमा जोग-ग्रन्थ	आतमराम	२०वीं श०	१८×११ ५	'१-१५	
६५१	१२२२६ (१२)	नाम-महिमा जोग-ग्रन्थ		१९वीं श०	१४ १२ ५	६०-६३	
६५२	१०९३६ (६८)	नाममाला	आतमराम	१९३४	१२ ५×८ ५	३६६-३७१	लि क. साधु चोकसराम लि स्था. जोधपुर, गिया का बाग, चाँदपोल
६५३	११६४८ (२४)	नाममाला आदि		१८५३	२७×१६ ५	४६६-५७१	गुटके के पत्र बदरने हैं। लि क गोपालदास लि.स्था कोलिया
६५४	१२२१४ (७)	नाममाला	जन हरिदास	१९वीं श०	२१ ५×१३	७३-७४	
६५५	१२२१५ (१)	नाममाला	नन्ददास	२०वीं श०	२२×१५.५	५-२३	अपूर्ण-आद्यन्त अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि सं. मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
९५६	१०८४९ (१८)	नाम माहात्म्य	दादूदयाल	गु० १९३१	१७×११	१३७-१३९	पत्र १४०-१४२ मे रामदास के स्फुट पद है। लि क मनोरथदास
९५७	१०९५६	नाम विरुदावली	किसोरअलि	२०वी श०	३२×१६	१-२७	र का १८३७
९५८	१२२२६ (२७)	नारद गीता		१८८२	१४×१२ ५	६७२-६७५	कृति सस्कृत मे है।
९५९	१२२५३ (३)	नारायण लीला	माधोदास	गु० १८९७	१४ ५×१३ ५	९६-११२	चौवीस अवतार वर्णन।
९६०	१२३८० (१०)	नारायण लीला	माधोदास	गु० १७२४	२०×१६	१४२-१८०	पत्र स० १८१-१८५ पर फुटकर पद एव नुस्खे हैं। पत्रस० १८६-१८९ विष्णुसहस्र नाम आदि स्तवन सस्कृत मे है। लि क हरिदास
९६१	१०९०२ (१६)	नारी की साखी	कवि गद	१८०९	१५ ५×१२ ५	८६-८९	नारी के लिए वर्जित कार्यो का रोचक वर्णन। लि क. साधु भीखनदास

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
९६२	११६८३ (१)	नासिकेतु पुराण	सागर	१७८४	१६×१४ ५	१-५३	र का १७७३ पत्र स० १-११ अप्राप्त । लि क करमसी
९६३	१२५६७ (४)	नासिकेतु बालावबोध		१८३०	२१×१५ ५	२८-४८	लि.क केसरचन्द गुरुभाई विजैचद लि स्था कटालिया ग्राम
९६४	१०८३६ (४)	नासिकेतुरी कथा		१९०६	३०×७ ५	१३-११	चित्रो के लिए रिक्त स्थान छोडे हुए है । श्लोकयुक्त । लि.स्था जोधपुर
९६५	१०८६१ (६)	नासिकेतुरी कथा		गु० १८९८	१६×१२	८८-९९	लि स्था. जोधपुर
९६६	१०९०२ (१९)	नासिकेतुरी कथा		१८०९	१५ ५×१२ ५	९४-१११	पत्र रगीन बॉर्डर युक्त । ग्रन्त मे एक कवित्त है । गुटके के ग्रन्त मे सस्कृत मे 'ज्ञान गीता' है । लि.क. भीखनदास
९६७	१०९४७ (२)	नासिकेतुरी कथा		२०वी श०	१४ ५×७ ५	२८-९१	
९६८	११५८६ (१)	नासिकेतुरी कथा सचित्र	विष्णुदास	१८३३	१५ ५×११	१-११३	चित्र स० २८, लि क, मथेन मसाराम लि स्था श्रीनागपुर (नागोर)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी. में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
९६९	११५९१	नासिकेतुरी कथा सचित्र		१८७७	२० ५x१०	१-१९	चित्र स० ४६ अठारह अध्याय पर्यन्त लि.क. मथेन० मसाराम लि स्था. बीकानेर
९७०	१२२१५ (१)	नासिकेतुरी कथा		१९वी श०	२२x१६	१-२१	
९७१	१०९२४ (२८)	नासिकेतु व्याख्यान	दयालदास	१९वीं श०	२३x१२ ५	६०५-६३४	अपूर्ण। र.का १७३४
९७२	१२५५८	नित्य सेवा विधि और उत्सव विधि		गु० १८५४	२१ ५x१६	२ ३३	प्रथम पत्र अप्राप्त लि.क. अभैराम दवे
९७३	१२५७७ (८)४	निर्वाण सार	प्रेमदयाल	१९वी श०	२१x१५ ५	१२५-१२७	लि क. साधुराम नागर लि.स्था. उज्जैन
९७४	११५८३ (१३)	नीति के पद	रायचन्द	गु० १९९३	१८x१५	१२१-१२२	पत्र स० १२३-१२५ पर सस्कृत मे कर्मविपाक गीता है।
९७५	१२५९१ (१२)	नीति-मजरी भाषा		२०वी श०	१५ ५x१०	६२-७०	५४ छद है।
९७६	१०९५६ (२)	नीति शतक भाषा टीका	मू० भर्तृहरि टीका-इन्द्रजीत	२०वी श०	३२x१६	१-१३	टीका "विवेक दीपिका"
९७७	११०१३ (२४)	नीसाणी	गरीबदास	१९वी श०	२३x१५	१४४वा	कुल २ छन्द

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (स. मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
९७८	११०८५ (८)	नीसाणी	गरीबदास	१९वी श०	१६ ५x१३ ५	६८वा	
९७९	११०१३ (६८)	नीसाणी-भवानी की	मान कवि	१८१८	२३x१५	३२४-३२५	२५ छन्द है। पजाबी पुट है। लि क सुजाण
९८०	१०८८९ (१८)	नृसिह अवतार-चरित्र (अवतार चरित्र गत)	नरहरिदास बारहट	ग १० ३१	१७x११	८५ ८७	लि क मनोरथराम
९८१	१०८३६ (३)	नृसिह चतुर्दशीरी कथा		१९०६	३२x७ ५	११-१२	अपूर्ण लि स्था जोधपुर
९८२	११०८७ (४)	नृसिह चतुर्दशीरी कथा		१७९३	२१ ५x१५ ५	११८-१२०	लि.क खुस्यालचन्द
९८३	१२२१० (२६)१-१३	नृसिह चतुर्दशी के पद	परमानन्द सूरज प्रभु सूरदास	१९वी श०	१८x१३ ५	१७२,१७३ १७३वा १७४वा	राग-कान्हरो
९८४	१२२२० (३३)	नृसिह जयन्ति के पद	परमानन्द, सूरदास	१९वी श०	१९x१६ ५	१०२वा	
९८५	११५८४ (८)	नृसिहावतार-छद	कवि कान्ह	ग० १७०२	१९ ५x१६	३४-३६	
९८६	११५८५ (८)१	नेमजी का पद, स्तुति आदि	हर्षचन्द	ग० १८५२	१९ ५x११ ५	१३५वा	लि स्था बीकानेर
९८७	११९९७ (८ ३)	नेमजी की ढाल	ऋषि चोथमल विनयचन्द	२०वी श०	२५ ५x१२	२३वा २४-२५	लि स्था नवाशहर र का १८७५

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
९८८	१२२१८ (१४४ १४८)	नेमिनाथ गीत	अज्ञात, ऋद्धिहर्ष	१८वी श०	२६ ५×१०	१५९वा १६२वा	
९८९	१०८४७ (८)४	नेमिनाथरी जान		गु० १९९९	१७×१८	७५९-७६१	लि स्था जोधपुर
९९०	१२३२० (५२)	नेमिनाथजीरो वारैमासो	खुस्यालचन्द	१८वी श०	२१ ५×१४ ५	३७-३८	समकालीन प्रति । र का. १७९८
९९१	१२३२० (८)	नेमिनाथजीरो स्तवन	कुसलसिंह शिष्य रामसिह	१८वी श०	२१ ५×१४ ५	२०वा	लि स्था दिल्ली
९९२	११५८५ (८)५	नेमिनाथजीरो स्तवन	लालचन्द	१९०३	१९ ५×११ ५	१३७वा	लि क लिखमीचन्द कोचर लि स्था वालाहेडा
९९३	११५८५ (८)६	नेमिनाथजीरो स्तवन	जिनचन्द	१९०३	१९ ५×११ ५	१३८-१३९	लि क लिखमीचन्द कोचर लि स्था. बालहेडा
९९४	१२२०५ (१९ ४	नेमिनाथजीरो स्तवन	कीर्तिवर्द्धन शिष्य दयारत्न	१७५०	१७×११	४४-४७	लि क विद्याप्रमोद पुत्र कल्याणसिंह लि स्था रूपनगर
९९५	१२२१८ (७)	नेमिनाथजीरो स्तवन		गु० १७५५-१७६७	२६ ५×१०	३०वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स ग)	माप (स मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
९९६	[illegible] (२८१८०)	नेमिनाथजीरो स्तवन	(१) मानचन्द (२) टोडर शिष्य रेमराज	१६वीं श०	१३ ४×१८	७८-७६ ६७-१०२	(२) र का १६७६ पत्र स० ७२-७३ पर देव लक्षण है।
९९७	१२४६५ (१६७३६)	नेमिनाथजीरो स्तवन	जिनहर्ष	२०वीं श०	१६×१२	११८-१२०	
९९८	११४८५ (८,८८,३८)	नेमि-राजमती गीत	ऋद्धिहर्ष	गु० १८५२	१६ ५×११ ५	११६-१६० १७२वा	लि स्था बीकानेर
९९९	१२२१८ (५१)	नेमि राजमती गीत	भुवनकीर्ति	गु० १७५५-१७६७	२६ ५×१०	६६वा	
१०००	१२३६८ (४)	नेमि-राजमती रास	विजयदेव सूरि	१६वीं श०	२५ ५×१६ ५	६७-७६	
१००१	११३२० (३)	नेमि-राजमती सज्झाय	रगविजय	१८वीं श०	२१ ५×१४ ५	१५-१६	ग्रार्या रत्ना पठनार्थ
१००२	१२३८० (५३	नेमि-राजुल पद	खेम	१८वीं श०	२१ ५×१४ ५	३६वा	
१००३	१०६७७	नेमि-राजुल बारामासा	चोथमल	२०वीं श०	१६×१३	१-५	र का १८५२
१००४	१२३७० (२०१७	नेमि-राजुल सज्झाय	ऋषिहर्ष	१६वीं श०	१६×११ ५	२३५ २३६	गुटके मे २३६ के बाद भूल से प० स० २५०-२६१ सी दिये गए है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१००५	१२५७५ (१४)	नेमिश्वर समोसरण स्तवन	सोमसुन्दर सूरि	१९वी श०	१३ ५x१४	५३-५५	
१००६	११६२६ (४)	पचइ द्रिय चरित्र	सुन्दरदास	गु० १८९४	३२x१५	१-११	
१००७	१२४२१ (१४)१-५	पच-इन्द्री, मीन, पतग, मृग एव गज चरित्र	सुन्दरदास	गु० १८९३	१७x१२	२१४-२१९ २१९-२२६ २२६-२२८ २२८-२३१ २३१-२३५	
१००८	१२३७२ (८)	पच-उपनिपद्	चरनदास शिष्य सुखदेव	१९वी श०	२४x१६ ५	१०१-१०६	अपूर्ण पत्र स० १०७-११२ अप्राप्त
१००९	१२३७० (१५)	पचतीर्थरो स्तवन	मुनि लावण्यसमय	१९वी श०	१६x११ ५	१३६-१३८	
१०१०	१२३७० (२७)	पचतीर्थरो स्तवन	मुनि लावण्यसमय	१९वी श०	१६x११ ५	२६०-२६१	पत्र स० २५५-२६१ पर सस्कृत मे ऋषिमडल स्त्रोत है।
१०११	१२३७० (४२)१५	पचपरमेष्ठी नमस्कार मन्त्र		१९वी श०	१६x११ ५	१३७-१३८	पत्र स० १४१-१४३ पर बारहव्रत आदरणा की याददाश्त है।
१०१२	१२२२८ (५)७८	पचपरमेष्ठी मन्त्र (नवकार स्तवन)	जिनवल्लभ सूरि	१८वी श०	२६ ५x१०	९७-९८	अपभ्र श मे

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (स मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१०१३	१२३२० (१४)	पचपरमेष्ठी सज्झाय		१८वी श०	२१ ५x१४ ५	२३-२५	
१०१४	१२५५१ (१७)	पचपरमेष्ठी स्तोत्र	हीरानन्द	१७वी श०	१३x११	१२०-१२३	
१०१५	१२५६१ (१३)१-३	पचप्रभाव, गुरु सम्प्रदाय एव सहजानन्द	सुन्दरदास	१९वी श०	२३ ५x१७	३६६ ३६६-३६७ ३६७-३६८	
१०१६	१२२१८ (२)	पचमगति वेलि	मुनि हर्षकीर्ति	१७६०	२६ ५x१०	१८-२०	र का. १६८३
१०१७	१२२०५ (१८)	पचमी तप-गर्भित नेमि-जिनवर स्तवन	हर्षकुशल गणि शिष्य जिनचन्द सूरि	१८वी श०	१७x११	२२-२८	र का. १६७३ मेडता
१०१८	१२२१८ (५)४७	पचमी स्तवन	समयसुन्दर	१७५५	२६.५x१०	६३-६४	
१०१९	१२२१८ (५)१४०	पचमी स्तवन (ज्ञानपचमी)	हर्षकुशल	१७६४	२६ ५x१०	१५५-१५६	र का १६७३ लि क अमीचन्द
१०२०	१२३२० (४५)	पचमी स्तवन	रगकलश	गु० १७९७	२१ ५x१४ ५	५०-५१	लि क खुसाला शिष्या रत्ना व अनोपजी लि स्था नागोर
१०२१	१२३७० (१७)३	पचमी स्तुति		१९वी श०	१६x११ ५	१४२-१४३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१०२२	१२५७५ (१८)	पचेन्द्रिय वेलि	कवि घेल	१६वी श०	१३ ५x१४	६०-६३	र का. १५८५
१०२३	१२५७०	पद्ववारे जगयरी कथा		२०वी श०	६ ५x६ ५	१३५-१३८	
१०२४	१२२२८ (५)६२	पथीडा सज्झाय	सुमनिहम	१८वी श०	२६ ५x१०	८३-८४	
१०२५	१०६५६ (७)	पचाख्यान भाषा		२०वी श०	३२x१६	२७७-२६३	"गुवालेरी भाषा म"
१०२६	११०१३ (१)	पचाख्यान भाषा	देवीचन्द	१८२२	२३x१५	६-६७	कथा दोहा बद्ध लि क ऋषि सुजाण पत्र स० १-५, ७-८ अप्राप्त
१०२७	११०७७	पचाख्यान भाषा		१८५६	२४x१६	११-२६	लि क हेमसागर शिष्य देवेन्द्र सागर इसी गुटके मे वृद्धचाणक्य राजनीति शास्त्र सटबार्थ सस्कृत मे है ।
१०२८	११०७४	पचागुली जप-विधि		१८८१	२४x१० ५	१-३	जलाभिषिक्त लि क अविचल विजयगणी लि स्था जालोर महादुर्ग

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१०२९	१२२१६ (२)	पक्षि शकुनावनी स-पृच्छा		गु० १७५२	२४x१० ५	३७-३६	तीन पत्रो पर रगीन चित्र तथा पेसिल के खाके भी बने हुए हैं।
१०३०	१२५६५ (१७)७	पखवाडो	डू गरसी	२०वी श०	१६x१२	१२१-१२२	१२२-१२३ पर सुजानमल और चद कृत स्फुट छद हैं।
१०३१	१२१७७	पञ्चवीस (पच्चीस) बोल		१६६८	२७x१२ ५	१-३	लि क तोलाराम लि स्था सरदारशहर
१०३२	१२५२८	पञ्चदडरीबात विक्रमादित्यरी		१९वी श०	१६ ५x१३ ५	१-३१	पत्र स० २,२३-२८ अप्राप्त कीटविद्ध लि क सुजानसिह राज्ये र स्था वीकानेर
१०३३	१२६१२ (१)	पट्टी पहाडे		१८१६	२५x१५	१-१०	गुटका अस्त-व्यस्त ढग से लिखा गया है। पहाडो के ऊपर व नीचे शुभाषित दिए है।
१०३४	१२२१६ (३)	पत्तनोत्पत्ति सग्रह		गु० १७५२	२४x१० ५	५३-५४	सस्कृत मे सवत् ८०२ वनराज के समय से १३६३ तक की हिन्दू राज्य-वशावली है। कुमारपाल के समय की प्रमुख घटनाओ का भी उल्लेख है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स में)	माप (से मी में)	पत्र संख्या
१०३५	१०८४७ (२)१	पद-संग्रह	रामचरणदास	१९९९	१७×८	५८२-५८७,५९०,५९२,५९६,६०२,६३४,६३६,६३७,६६६,६६७,६८५,७४२,७४५-७५०
१०३६	१०८४७ (२,२	पद-संग्रह	कबीरदास	१९९९	१७×८	५८२,५८३,५९४,६०६,६०८,६११,६२९,६३०,६३२,६३६,६३९,६४०-६४२,६६२-६६३,६६९,६७०,६७३,६७६,६८४,६८७,६९१,७४४,७५३,७५५,७५७,७५८
१०३७	१०८४७ (२)३	पद-संग्रह	काजीमहमद	१९९९	१७×८	५८२-५८३,५९५
१०३८	१०८४७ (२)४	पद-संग्रह	भगवानदास	१९९९	१७×८	५८५,५८६,५८८,६०२,७४४
१०३९	१०८४७ (२)५-८	पद-संग्रह	नरसी, मनसुखदास बखतावर मीरा	१९९९	१७×८	५९१,६२५,६०८ ६०८,६०९,६१०, ६०९,६१२,६१९,६२०,६२४,६२९,६३१,६३२,६३८,६६५,६६८,६८१,६८३,६८७,६८९-६९१,७५१,७५३,७५४
१०४०	१०८४७ (२)९	पद-संग्रह	तुलसीदास	१९९९	१७×८	६१२,६३१,६३२,६८२,६८९
१०४१	१०८४७ (२)१०-११	पद-संग्रह	जनतुरसी, सूरदास	१९९९	१७×८	६१८,६१९,६६८,६१३,६३७,६३८,६६७,६६८,६७३,६७४,६८१,६८८,७५२,७५५,७५७

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या
१०४२	१०८४७ (२)१२-१५	पद-सग्रह	नानूदास सुन्दरदास भरथरी, परमानन्द	गु० १९९९	१७×८	६१३,६१४,६१७,६१४ ६१५,६१७
१०४३	१०८४७ (२)१६-२१	पद-सग्रह	पेमदास, बखना हस्तीराम, श्यामसखी जनमुरली, नितानन्द	गु० १९९९	१७x८	६२९,६३०,६७१ ६३०,६३१ ६३२,६३३,६३४
१०४४	१०८४७ (२,२२-२६	पद-सग्रह	नागरीदाम, नन्ददास अग्रदास, रसिकनाथ हरिदास	गु० १९९९	१७x८	६३३,६३८ ६३८,६३८ ६४२ वा
१०४५	१०८४७ (२)४१-४६	पद-सग्रह	जैतराम, गरीबदास दादूदयाल, हुसैनफकीर भवानीदास, आसाराम	गु० १९९९	१७x८	६८०,६८१ ६८६,६८७ ६८८,६९२
१०४६	१०८४७ (२)३५-३८	पद-सग्रह	बालसखी, चिमनी	गु० १९९९	१७x८	६६५,६६९-६७०
१०४७	१०८४७ (८)१-२	पद-सग्रह	रामसखी, नेमराज छीतमदास, माधोदास	गु० १९९९	१७x८	६७२,६७५ ७५१,७५६

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या
१०४७	१०८४६ (१६) १७-१६	पद-सग्रह	मीरा, सुखराम बुधानन्द	गु० १६३१	१७x११	१३१,१३२ १३२ वा
१०४८	१०८४६ (२१)१ १०	पद-सग्रह	रामदास, मेवादाम द्यालवात, पूरण नेमनाथ, कवीरदास नामदेव, काजीमंमद वंरागी, तुरछीदास	गु० १६३१	१७x११	१६१,१६३,१६४,१६५,१६६,१६२,१६३ १६४,१६५ १६५,१६७ १६७,१६८ १६८,१६६
१०४६	१०८४६ (२६)१ ७	पद-सग्रह	दीनफकीर, सूरदास कवीरदास, आत्माराम सुखदेव, सुन्दरदाम दीनदरवेश	गु० १६३१	१७x११	२१८,२१६ २२०,२१६ २२१,२२२ २२२ वा
१०५०	१०८४६ (१६)१-१०	पद-सग्रह	रामदास, हरिराम कबीर, बखतभारती हरिदास, सूरदास अग्रदास, परसराम रिणछोड, सेवकराम	गु० १६३१	१७x११	८६-६०, ६३, ६१, ६४ ६५, ११७, ११८, ११६, १२८, १३०, १३१, १३३, ६६-६७, ६७, ६८, ६६, ६६,१००,१०१-११०, ११५-११६ ११८,१११,११४,१२७,१२८,१२६

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र संख्या
१०५२	१०८४६ (११) ११-२२	पद-संग्रह	नरसी, कीतो, राघो-दास, माधोदास, मीरा बनारसी, अज्ञात अखैराम, कविगग हरिराम, ग्वालबाल रामदास	गु० १६३१	१७x११	८, ८, ८ ८,८, ६ ६,६-१२ १०, ११ वा १३-१६, १७, १८, १६ १७,१८
१०५१	१०८४६ (११) १-१०	पद-संग्रह	कबीरदास, नामदेव सुन्दरदास, सूरदास जनतुरसी, हरिदास कान्हडदास, पीपा जगजीवन, खेम	गु० १६३१	१७x११	२, ५, ४, १६ ४, ५, ५, १६ ५, १०, १२, ६ ६, ६, ७ ७, ७
१०५३	१०८४६ (१६) ११-१४	पद-संग्रह	नरसी, ग्वालबाल रामसखी, बखना	गु० १६३१	१७x११	११६, १२०, १२० १२०, १२१
१०५४	१०८५१ (५)१-२	पद संग्रह	घडसी, संतदास	१७६२	१५ ५x१०	१८३, १८५
१०५५	१०८५१ (३) २२-२५	पद संग्रह	रामानंद, तुलछी, हरिदास, मुखदेव	१८ वी श०	१५ ५x१०	११०-१११,११३-११४,१८७-१८६ १२१,१२१-१२२

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या
१०५६	१०८६१ (४)१-७	पद-सग्रह	हुसैनफकीर, सूरदास कबीर, गगाराम तुलसी	१६ वी श०	१६x१२	३० वा, ४५-५०,६७,६८ , ६६,६७ ६८,६६,७५ ७५-७६ पर कालू कृत मरसिया है।
१०५७	१०८६२ (३) १, ३-५,	पद-सग्रह	चन्द्रसखी, अज्ञात कबीर, धरमदास	गु० १८६८	१७x१४	१७,१६,२४-२५,२७ , १८ १८,२२,२३ , १८-१६,२४
१०५८	१०८६२ (३)६-१०	पद-सग्रह (रागबद्ध)	अज्ञात, तुलसीदास हसतराम, अज्ञात	गु० १८६८	१७x१४	१६,२०,२४ , २०,२२ २०-२१,२७ , २१
१०५६	१०८६२ (३)११-१६	पद-सग्रह (रागबद्ध)	मीराबाई, अज्ञात विसनदास, सूरदास बखतावर, परसोतम	गु० १८६८	१७x१४	२२,२५-२६ , २३ २४ , २५,२८-३० २६ , २८-२६
१०६०	१०८६२ (५) १-६	पद-सग्रह (रागबद्ध)	वलवत, ब्रजनिधि बखतावर अज्ञात सूरदास, चत्रदास	गु० १८६८	१७x१४	१ ला १,७,६ , ७,८ ८,१२ , ६,१०
१०६१	१०८६२ (५) ६, ११-१२	पद-सग्रह (रागबद्ध)	अज्ञात, सुन्दरदास तुलसी	गु० १८६८	१७x१४	१० , ११ १२ वा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र संख्या
१०६२	१०८६२ (५)१६,१८, २०, २२,	पद-सग्रह (रागवद्ध)	परसोतम, मीराबाई कबीरदास, प्रेमसखी	गु० १८९८	१७x१४	१६, २०,२५,२६,२७,२८,२९,३० २१-२४, २६,२७
१०६३	१०८६२ (५) २५,२७-२९	पद-सग्रह (रागवद्ध)	रूपमती, जनतुरसी जन-हरिदास,सूरजकवर	गु० १८९८	१७x१४	२८, ३० ३१, ३१,३३,३४
१०६४	१०८६४ (१)६-१२	पद-सग्रह (होली-राग वद्ध)	चत्रदास, धरमदास सूरदास, कबीर तुलसीदास,जनहरिदास अज्ञात	गु० १८९७	१० ५x७	३-६३९, ४३-४४ ४४-४६, ४६ ४८,५०-५२,६२-६३ ४८-५०, ५२-५६ ६४-६५
१०६५	१०८६४ (५)	पद-सग्रह	नामदेव	१८९७	१० ५x१७	१२५-१२६
१०६६	१०८६७ (१-२)	पद-सग्रह (रागवद्ध)	दयालदास, मोतीराम	१९ वी श० १२ वी श०	१८x११ १८x११	५१-५९, ५९-७०
१०६८	१०८६७ (८)	पद-सग्रह	सूरदास	१९ वी श०	१८x११	९२ वा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या
१०६९	१०८६८ (५)१-६	पद-सग्रह	सूरदास, चरनदास अग्रदास, रज्जव	गु० १९२७	८ ५x७	१८८ , १८९ १८९ , १९०-१९२
१०७०	१०८६८ (५)६-१०	पद-सग्रह	आतमराम, जनतुरसी दादू रामदास कबीर, परसराम	गु० १९२७	८ ५x७	१९२ , १९२-१९३ १९३ , १९३,१९६,२०३ १९७,२०० २०२ , १९७,२००
१०७१	१०८९९ (१)१-४	पद-सग्रह	जैमलदास,हरिरामदास रामदास,	गु० १९९२	८ ५x७	२–५ . ६–११,११–२० २०-२७
१०७२	१०८९७ (२)१-२	पद-सग्रह	जनरामा, हेमदास	२० वी श०	१२x११	१०१-११८ , ११९-१३०
१०७३	१०८९९ (५)११-१६	पद-सग्रह	सुखदेव, बालकदास कबीर, राजुल हरिराम, रामदास राघो, रामचरण सूरदास, रामवल्लभ बखना, वगताबर	२० वी श०	१४x११ ५	६२ ६४ ६५-८३ ९१,९३,९४,९५,९६ , ६५,६६ ६७-७० , ७१-७३,७४ ८०,८१ , ८१,८२ ८२,८४,८५ , ८८-८९ ९०,९१ , ९५ वा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या
१०७४	१०८६६ (५) ११०	पद-सग्रह	परसराम, वगतराम रामदास, मीरा नरसी, द्यालबाल सुखराम, सुरतराम हसतराम	२०वी श०	१४x११ ५	१५,१६,६७ , ५४-५५ ५५ , ५५-५६,६०-६१,८५-८७ ८६, ६०,६५ ५६-५७,६२-६३ , ५७,७५-७६ ५८-५६ , ५६ ६०
१०७५	१०६३२ (२)	पद-सग्रह	रामचरणदास	गु० १६२८	१७x१३ ५	३४३ ३७८
१०७६	१०६३३ (२) १	पद-मग्रह	रामचरणदास	गु० १६४०	१३ ५x८ ५	६०२-६०५,६०८ ६१०, ६२०-६२१, ६२२-६२४,६२५, ६२६, ६२७, ६२८, ६३०१ ६३१,६३२,६३५,६३६,६३८- ६३६,६४०-६४१,६४४,६४ ५,६४७, ६६८,६६३-६६४
१०७७	१०६३३ (२) २-८	पद-सग्रह	रामजन कबीर काजीमैमद	गु० १६४०	१३ ५x८ ५	६०५,६११,६१२,६१७,६१८,६४२ ६०६,६०७.६३२-३३३,६३६-६३७, ६४६,३४८,६५५ ६०७
१०७८	१०६३३ (४)	पद-सग्रह	मुकतिराम	गु० १६४०	१३ ५x८ ५	६६३,६६५

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या
१०७९	१०९३३ (२)५-७	पद-सग्रह	मीराबाई	गु०१९४०	१३ ५x८ ५	६१२,६४१,६४२-६४३,६४५-६४६ ६४९-६५०,६५१-६५२,६५३,६५४, ६६०
			भगवानदास			६१५-६१६,६१७,६२०-६२१, ६२५-६२६,३२८-६३०,६६५
१०८०	१०९३३ (२)८-१५	पद सग्रह	दुल्हैराम			६१८-६२०
			मनसुखदास,बगतावर रूपदास, परमानन्द तुरसी, पेम दादू, श्यामसखी	गु०१९४०	१३ ५x८ ५	६३३ , ६३४-६३५ ६३७-६३८ , ६३९ ६४०,७६५२ , ६४९ ६५०-६५१ , ६५३
१०८१	१०९३३ (२)१६-२१	पद-सग्रह	रामससखी मुरली नागरीदास बखनो पदम, सूरदास	गु०१९४०	१३ ५x८ ५	६५८ , ६५४-६५५ ६५६ , ६५७ ६५८ ६६० , ६६१-६६२,६६३
१०८२	१०९३६ (१) १	पद सग्रह	रामचरणदास	गु०१९३४	१२ ५x८ ५	१-४,६-९,१५-१७,२१,२६,३०-३५, ३६-३९,४३,४४,४५,४७, ४८, ५२, ५३,५७-६१,६३,८५-८६,१०५,१११, ११४,११५,१३७-१३८,१३९-१४१, १९४,२३०-२३१,२५०-२५१,२६१-२६२,३७१-३७२ पर कवित्ता है। ४१६-४१९

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी. मे)	पत्र सख्या
१०८३	१०६३६ (१) २	पद-सग्रह	रामजन	गु०१६३४	१२ ५x८ ५	४,११-१२,१६-२१,२८,३१,३६-३८, ४५,४६,५४,६४,२५१-२५२
१०८४	१०६३६ (१) ३	पद-सग्रह	कवीरदास	गु० १६३४	१२ ५x८ ५	५,२२,२३,३२,५१,६४,६५,७०,८७, ६२,११२, ११५, ११६, १२०, १२१, १३१,१३३,१३५,१३६, १५२-१५५, १५६,१६०,१६२-१६३,१६५-१६६, १७७,१८७-१८६,१६३, २०१, २०४, २०८-२११,२१५-२१६,२३२-२३३, २३५-२३६,२४३-२४४,२५५-२५६, २६७-२७१,२८३,२८६,३७२-३७३
१०८५	१०६३६ (१) ४-५	पद-सग्रह	काजीमहमद भगवानदास	गु० १६३४	१२ ५x८ ५	६,३३,३४,७६-८० १०-११,१८ १६,३१-३२,४०,४१,४६-५०,५४,५५,७७-७६
१०८६	१०६३६ (१) ६	पद-सग्रह	मीरावाई	गु० १६३४	१२ ५x८ ५	१५,६२,६७,७१-७३,७५ ७६,८०-८१ ८६ ८७ ६०,६१, ६२, ६४, ६६, ६७-१०४,१०५, १०६-११०, ११२-११३, ११६,११७-११८,१२८, १२६, १३०, १३२,१४३,१४५,१४६, १४७-१५०, १५५,१७१-१७३,१७५-१७७, १७८, १८२,१८६,२०५-२०७,२०६, २३१-२३२,२३४-२३५,२३६-२३८,२४१-२४२,२५६-२५८,२६६-२६७, २७३, २७४-२७५,२७६

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें. मी मे)	पत्र संख्या
१०८७	१०९३६ (१) ७-९	पद-संग्रह	नरसी	गु० १९३४	१२ ५x८.५	२३,२४-२५,१०६,१५८,१९२,२१३, २७७-२७९
			दुल्हैराम, नामदेव			३१,४२,१३९,१८०,२८५ , ३४ वा
१०८८	१०९३६ (१) १०	पद-संग्रह	सूरदास	गु० १९३४	१२ ५x८ ५	५०-५१,६७,७४,१०४,१४१-१४२ १५१,१८१,१८२-१८४,१८५, १९८-२००,२०२,२३३ २३४,३३९-२४०, २४२,२४५,२७३,२८२
१०८९	१०९३६ (१)११-१८	पद-संग्रह	तुलसीदास,मनसुखदास	गु० १९३४	१२ ५x८.५	५६,७४,७५,१३०,१३३,१३४,१५०-१५१ , ६५ वा
			वखतावर, रूपदास			६५-६६,६७,६९,१६९ , ७०-७१
			नानू , सुन्दरदास			७६,८३-८४,२०३ , ७७ वा
			अज्ञात			८१-८२ , ८२-८३ पर गोपीचन्द का गीत है।
१०९०	१०९३६ (१)१९-३०	पद-संग्रह	जनतुरसी परमानद	गु० १९३४	२१ ५x१४ ५	८४,८८-८९,९०,१८६, १९७, २१२-२१३,२६२-२६३,२८७-२८८ , ८८
			जनहरिदास, दादू			९३ , ९५-९७,१२२-१२६,१४६,२५४
			पेम, कान्हड			११७ , ११९
			बखनो, ब्रजनद			१२२,१९४,१९५-१९६,२५२,२५३ ,
			हसतराम, श्यामसखी			१२७,१२७-१२८ , १३१
			हुसैन, मुरली			१३२ , १३२,१५९,१६४,१८३-१८४

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र संख्या
१०६१	१०६३६ (१)३१-४१	पद-संग्रह	नित्यानंद, रामसरण नागरीदास, नंददास रैदास, अग्रदास निरभैराम, सूरजकवर रूपा, गंगादास गुलाबजन	गु०१६३४ गु०१६३४	१२ ५×८ ५	१३४,२११ २१२ , १३५ १३५-१३६ , १४२ १४४ , १४४-१४५ १५६-१५७,२६०-२६१,२७१-२७२,१५६ १५८-१५६ , १६०-१६१ १६४-१६५
१ ६२	१०६३६ (१)४२-५२	पद-संग्रह	पूरनदास, किसोर पदम, पोहीकर बालसखी,चिमनोविरहन जैतराम, रामसखी सिवरी, अज्ञात सेवाराम	गु०१६३४	१२ ५×८ ५	१६६-१६७ , १६७ १७० १७४-१७५ १७६,२७५ १७८ २३०,२४६,३७३ ३७४ १८१ , १८६-१६० १६१,२४७-२५० , १६६ वा २१२ , २१३-२१५ (लावणी) २१७-२१८ र का.१८६६रामपुरागढ मे
१०६३	१०६३६ (१)५८-६१	पद-संग्रह	खेम, गंगाधर लाखो, तानसेन	गु०१६३४	१२ ५×८ ५	२७४ , २७६-२८१ २८१-२८२ , २८३
१०६४	१०६३६ (४)	पद-संग्रह	रज्जब	गु०१६३४	१४×८	७०७-७४८

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या
१०९५	१०९४० (७)१-१०	पद-सग्रह	सेवादास	गु० १८८३	१५ ५×१० ५	५१७,५२२,५२३
			कबीर			५१७,५३०,५३१,५३२,५३३,५३६ ५५०,५५१,५७२,५८०-५८१,५८२, ५८४, ५८६
			गोपाल			५१८,५३५,५६५
			जगनाथ			५१८-५१९ ५४३,५४४-५४५,५५९-५६३
			अग्रदास, सुखराम			५१९-५२१,५२३,५७२,५७३,५२४ ५२४,५२५,५४३,५५२
			रज्जब, वाजीद			५५३,५७६,५७८,५७९ , ५२६
			अज्ञात, नामदेव			५२६,५३०,५३९-५४२,५६४ , ५३२
१०९६	१०९४० (७)११-२४	पद-सग्रह	सनेहीराम, अग्रदास	गु०१८८३	१५ ५×१० ५	५३४ , ५३५-५३५-५३९ पर श्लोक है
			सेवादास, तुरसी			५४४ , ५४५
			चत्रदास, नवलराम			५४६ , ५४६-५४७
			चन्द, कविगद			५४७ , ५४७-५५०
			मालमदास, किसनदास			५५० ; ५५१
			मुरारदास, मडरण			५५१ , ५५६-५५८
			विसनदास			५५८

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या
१०९७	१०९४० (७)२५-३५	पद-सग्रह	गिरधरकविराय केसोदास, नरसी खेम, रैंदास वखना, जनहरिदास मीरा, काजीमहमद सूरदास, सुन्दरविरहन	गु० १८८३	१५ ५x१०.५	५५८,५५९ ५६३ , ५६५,५७३ ५६६ , ५६७ ५६७ , ५६८-५६९,५८३ ५६९,५७०,५७१,५८२ , ५६९,५७० ५७०,५८४,५८५ , ५७३
१०९८	१०९४० (७)३९-४१	पद-सग्रह	जगजीवन, नापो नानग	गु० १८८३	१५ ५x१० ५	५८१ , ५८३ ५८३
१०९९	१०९४१ (३)१-१३	पद-सग्रह	जीवनदास, कवीर अग्रदास, दादू वखतावर, ब्रिजानद नरसिंह, जनहरिदास मीरा, रसिकनाथ रैंदास, गैंवीराम सूरदास	गु० १९३७	१७x१० ५	९९ , ९९,१०० १०० , १००,१०३ १०१ , १०१ १०१ , १०१ १०२,१०३,१०४ , १०२ १०३ ; १०४ १०४वा
११००	१०९४१ (७)१-२	पद-सग्रह	रामजन, कवीर	गु० १९३७	१७ x१० ५	१४३ , १४४

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या
११०१	१०९४२ (११)१-२	पद-सग्रह	पोहोकर	२०वी श०	१३x६	२७१-२७३
			कबीरदास			२७३-२७५,३०१,३३७,३३८,३६०, ३६२-३६५,३६८ ३७०-३७१, ३८०-३८१
११०२	१०९४२ (११)३	पद-सग्रह	सूरदास	२०वी श०	१३x६	२७५-२७६,२८१-२८२,२८६-२९२ २९८,३०८-३१०,३४७,३४९-३५०
११०३	१०९४२ (११)४-८	पद-सग्रह	मीराबाई	२०वी श०	१३x६	२७६ २७८,२८५-२८६,३००,३०२-३०३,३३६,३४१-३४५,३५२-३५६, ३५८ ३५९
			तुलसीदास,लिछमणदास			२८३-२८५ , २९२-२९४
			सेवादास, नाभादास			२९४-२९५ , २९५-२९७
११०४	१०९४२ (११)९-२०	पद-सग्रह	तुरसी, नामदेव	२०वी श०	१३x६	२९९,३१६-३१७,३३६ , ३०४-३०५
			खेम, रामसखा			३०५-३०८ , ३११
			अज्ञात, अज्ञात			३११-३१३ , ३१३-३१४,३७२-३७५
			नैनूदास, रामचरण			३१५-३१६ , ३१९-३२०,३३३-३३५, ३६९-३७०
			नरसी			३२०-३२१.३२९-३३२ , ३६१-३६२
			सीतलपुरी, कानडदास			३२१-३२४ , ३२४-३२५
			जनमाधो			३२५-३२७

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सँ. मी. मे)	पत्र सख्या
११०५	१०६४२ (११) २१ ३४	पद-सग्रह	दुल्हैराम, रूपदास	२०वी श०	१३x६	३२७-३२८ , ३३५-३३६
			मनसुखदास,बखतावर			३३८ , ३३६,३४०,३८१-३८२
			काजीमँमद, नददास			३४१ , ३४८
			नित्यानद, बखना			३४६ , ३५०-३५२
			रैदास, मुरली			३५७,३६१ , ३६५-३६७
			दादू, कालू			३७१-३७२ , ३७६-३७६
			अज्ञात, किसोर अलि			३८२-३८५ रेखता , ३८५-३६०
११०६	१०६४४ (६)१-१२	पद-सग्रह	पोहौकर	२०वी श०	८x५	२४१-२४३
			सूरदास			२४३-२४४,२४८-२४६,२५२-२५७, २६२-२६३,२७२-२७४,२६६-२६७, २६८-३०१ बारामासी
			मीरा			२४४-२४७, २५१-२५२,२६४,२६६ २६७ ३१७-३१६
			तुलछीदास,लिछमणदास			२४६-२५१ , २५७-२५८
			सेवादास, नाभादास			२५६ , २६०-२६२
			जनतुरसी, कवीर			२६३-२६४,३७५,२६५,३२२-३२३,३२६-३२७
			नामदेव, खेम			२६८ , २६६-२७१
			रामसखी,			२७४
११०७	१०६४४ (६)२५-२६	पद-सग्रह	ननूदास, रामचरण	२०वी श०	८x५	३७३-३७४ , ३७६-३७८
			सीतलपुरी, कानडदास			३७६-३८१ , ३८२
			माधोदास			३८३-३८४

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या
११०८	१०६४५ (३)१-६	पद-सग्रह	रामजन, रैदास जनहरिदास, नरसी दादू, कानडदास बखना	२०वी श०	१४ ५x७.५	३३२-३३३ , ३३३,३६४-४०० ३३४ , ३३५ ३३५-३३६ , ३३६-३३७ ३३७-३३८
११०६	१०६४५ (३)११-१६	पद-सग्रह	पोहौकर, खेम कबीर, मीरा तुरसी, रामसखी ज्ञानसखी, तुलछीदास रसिकनाथ	२०वी श०	१६५x७ ५	३६०-३६७ , ३६७ ६६८-३६६,४०० , ४०१ ४०२ , ४०२ ४०२ , ४०३-४०५ ४०५
१११०	११०६१ (३) १-५	पद-सग्रह	नरसी, रामगिरि मानदास, चन्द्रसखी	२०वीं श०	१६x१२	१२५-१२६ , १२६-१३० १३० वा , १३१-१३२
११११	१११७८ (१०) १-२,७-६	पद-सग्रह	सूरदास, किसोरजन तुलसीदास,भगवानदास	गु०१७५१-१७६२	१५.५x१२	७८-७६.६४ ६५ , ७६-८० ६७-६८ , ६६-१००
१११२	११५८३ (१)	पद-सग्रह	जनहरिदास	गु०१६६३	१८x१५	१-३
१११३	११५८३ (११)	पद-सग्रह	बाजीद	गु०१६६३	१८x१५	११६-११८

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या
१११४	११५८४ (२९)	पद-सग्रह	आनन्दघन, सूरदास नैणसी	१८ वीश	१९ ५x१६	२१७ , २१७ २१९-२२३
१११५	११६४८ (७) १-१०	पद-सग्रह	सोभा, सुखानन्द धना, सैना मुरारि, मूलकदास जगी, बनारसी काह्नजी	गु० १८५३	२७x१६ ५	३२७ , ३२८ रागबद्ध- ३२८ , ३२८ ३२८ , ३२८-३२९ ३२९ , ३२९ ३२९-३३०
१११६	११६४८ (७)११-२१	पद-सग्रह	व्यासभगत,पूरणदास नरिया, नददास चत्रदास, माधोदास धरमसी, बालमीक नाप, मुकदभारती छीतमदास	गु० १८५३	२७x१६ ५	३३० वा ३३१ वा ३३२ वा ३३२-३३३
१११७	११६४८ (७)२२-३०	पद-सग्रह	गैव, मछिन्द्रनाथ, नैनोदास, छाजू नानिक, सूरदास अगद, भावनजी डूगरसी	गु० १८५३	२७x१६ ५	३३४ वा ३३४-३३५ , ३३५-३३६ ३३६ वा ३३७ वा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सं. मी मे)	पत्र सख्या
१११७	११६४८ (७)३१-३७	पद-सग्रह	बोहथदास, सीहाजी, ग्यानतिलोक	गु०१८५३	२७x१६ ५	३३७ वा
			मतसुन्दर, सोमजी			३३७-३३८, ३३८-३३९
			काजीमेहमद			३३८-३३९
१११८	११६४८ (७)३८-५०	पद-संग्रह	सेखबहावदी, विद्याधर	गु०१८५३	२७x१६.५	३३९ वा
			हरदास, परमानन्द			३४० वा
			अग्रदास, तुलछीदास			३४०-३४१, ३४१
			वैणीदास, कानडदास			३४१ वा
			दिवाकर,			
			दास, रुघदास			३४२ वा
			जनगोपाल, अज्ञात			३४२-३४३
१११९	१२२१४ (३)	पद-सग्रह	सेवादास	१९वी श०	२१ ५x१३	३९-४९, ५०-५४
			तुरसी			४९, ६२, ६३, ६४
			कवीरदास			४९, ५५-५७, ६४, ६६
			जनहरिदास			४९, ६०-६२, ६४
११२०	१२२२६ (२४)१-५	पद-सग्रह	अज्ञात, नामदेव	गु०१८७७	१४x१२.५	६४०-६४३ ; ६४३-६४७
			रैदास, पीपा			६४७ ; ६४८-६४९
			रामानन्द			६४९

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें मी मे)	पत्र संख्या
११२१	१२२२६ (२६)१-१२	पद-संग्रह	जगजीवन, वाजीद नैनोदास, काजीमहमद जनहरिदास परमानन्द, वेणीदास कानडदास, नामदेव शाहहुसैन, दाम कालू	१८७७	१४×१२ ५	६५२-६५५ , ६५५-६५७ ६५७-६५९ , ६५९ ६६२ ६६२-६६३ ६६३ वा ६६३-६६४ , ६६४ ६६४-६६५ , ६६५-६६७ ६६७-६६९ ६६९-६७१ पर गोपीचन्द का पद है। ६७२-६७५ पर संस्कृत मे नारदगीता है
११२२	१२३११ (११)१-७	पद-संग्रह	संतदास, रामचरण रामवल्लभ, सुखराम हसतराम, मारा कबीरदास	गु० १९४०	१७ ५×८ ५	४७१-४७२ , ४७३-४८२ ४८२-५०९ ; ५०९-५१० ५१०-५११ , ५११-५१२,५१५-५१६ ५१२-५१५
११२३	१२३७८ (१३)१-१०	पद-संग्रह	जैमल, दादू, माधोदास जनतुरसी, छीपो नामदेव केवलराम, रज्जब वखना कबीर	१८ वीश०	२२x१५ ५	९१ , ९१ , ९१ १०६ ९२,९३,१०१ , ९२ ९२,९४,९५,९६ ९२ वा ९२,९९ ९२,९४,९५,९६,९७,९८, ९९,१००,१०१

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र संख्या
११२४	१२३७८ १३ ११-२०	पद-सग्रह	दादु, रैदास सूरदास नापा, जनहरिदास छीतमदास, श्यामदास हरदास, सुन्दरविरहन जनगोपाल	१८वी श०	२२×१५.५	९२,९८ , ९३,९५,९९ ९४,९५,१०१,१०२,१०३,१०४,१०५, १०८ ९७ वा ९९ वा १०१ , १०१,१०४ १०१,१०२,१०३,१०४,१०६
११२५	१२३७८ (१३)२१-२३	पद-सग्रह	वाजीद, केसोदास लघुदामो	१८वी श०	२२×१५ ५	१०३ , १०७ १०८
११२६	१२३७८ (१६)१-२	पद-सग्रह	गरीबदास,काजीमहमद	१८वी श०	२२×१५ ५	११२,१३५ , ११२ वा
११२७	१२३७८ (१९)१५	पद-सग्रह	विष्णुदास, जनतुरसी सूरदास, परमानन्द कबीरदास	१८वी श०	२२×१५ ५	१३६ वा
११२८	१२३७८ (२३)१-४	पद-सग्रह	खीवा, गरीबदास बालकराम, सूरदास	१८वी श०	२२×१५ ५	१४१ वा ग्रत में सस्कृत के सुभाषित हैं
११२९	१२३८० (२१)१-४	पद सग्रह	हरिदास कविगग, शेख, ग्रज्ञात	गु० १७२४	२०×१४	२२९ २३० , २३०-२३३

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या
११३०	१२४२० (२)१-२	पद-सग्रह	मीरा, भावनादास	गु० १९३४	१६x१४	३४-३५
१३१	१२४२० (७)	पद-सग्रह	जैमलदास	२०वी श०	१६x१४	६-२१
११३२	१२४२१ (१)१-४	पद-सग्रह	जनदरिया, रामदास नामदेव कबीरदास	१८९३	१७x१२	२-४ , ५ ६,९,११,४२,४३,६५,६८-६९ ६,९,१५,१७-१८,१९-२०,२१,२७,२९. ३१,३४,३८,४३,४५,४७-४९,५१,५२, ५४,५८,५९,६४-६५,६७,७०
११३३	१२४२१ (१)९-१७	पद-सग्रह	नापा, रैदास परमानन्द, घडसी जनतुरसी, सूर दास माधोदास, खेम नैनोदास	गु० १८९३	१७x१२	१०,५२,६५ , ११,२७,३६,४१,६६,६८ ११,५४,६९ , १४ १५,२३ , १५,४०,७१-७२ १६,३४,५०-५१ १७ वा ; १८ वा
११३४	१२४२१ (१)१८-२५	पद-सग्रह	मीरां, श्रीरग जगजीवन, टीला पीपा, बखना कान्हा, केवलदास	गु० १८९३	१७x१२	१९,२३,३३ , २० २१,६४ ; २३-२४,६८ २७,३१,३६,६९ , २८,४१,६२-६३,७१ ३१ , ३२

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी. मे)	पत्र सख्या
११३५	१२४२१ (१)२६-३७	पद-सग्रह	चैना, राघो; बनवारी	गु०१८६३	१७x१२	३३ , ३५
			नानगदास, गरीबदास			३६ , ३७,४४,६७
			खीवा			३८ वा
			परसराम,धना,सतदास			४२ वा
			जगनाथ, विद्यादास			४३ वा
			रामदास			४६ वा
११३६	१२४२१ (१)३८-५१	पद-मग्रह	हरदास, दादू	गु०१८६३	१७x१२	५०,६६ , ५१,५६
			जनबालमीक, वेणीदास			५२ वा
			जनभगता, जनहरिदाम			५३ वा
			जनमाणक			
		पद-सग्रह	नाभा,पनहीदास शिष्य			५५ , ५७ वा
			सतदास, रामचरण			५७-५८ , ५६ वा
			लालदास, जनअगद			६६ , ६६ वा
			नानिक, गोविन्ददास			७० , ७३ वा
११३७	१२४२१ (१८)१-३	पद-सग्रह	ब्रह्मदास	गु०१८६३	१७x१२	२५१-२५२
			तुलसीदास			२५२,२५६-६०,२६३-२६४,२६६,२७८
						२८५-२८६
			कबीरदाम			२५२-२५३,२६१, २६५, २६७-२६८, २७०,२७१,२७६,२८१,२८६-२८७

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (से. मी मे)	पत्र सख्या
११३७	१२४२१ (१८)४-१०	पद-सग्रह	नरसी, गोविन्द	गु० १८९३	१७×१२	२५३ , २५४ वा
			पीपा			२५५ वा
			सदाराम, धीर , मछ			२५६ , २५७-२५८
			सूरदास,			२५८ वा
११३८	१२४२१ (१८)११-२१	पद-सग्रह	सुखिया, बगतावर	गु० १८९३	१७×१२	२६०-१६१ , २६१,२८१
			माधोदास, रामजन			२६३ , २६५
			मीराबाई			२६६,२६९,२७४,२७६,२८०,२८३
			रूपदास, दादू			२६८ , २६९,२८३
			माणक, खेम			२७०-२७१ , २७२
			बखना, अज्ञात			२७२-२७३ , २७३-२७४
			रामचरण			२७५-२७६,२८४-२८५
११३९	१२४२१ (१८) २२-२६	पद-सग्रह	ललनासखी, कानडदास	गु० १८९३	१७×१२	२७६-२७८ , २७९
			सहजराम			२८०-२८१
			क्रिपासखी, जनतुरसी			२८२ वा
११४०	१२४२१ (२१)५-८	पद-सग्रह	किशनदास, रज्जब	गु० १८९३	१७×१२	७ , ७-८,१४,२६,३९,४५,५३
			जनगोपाल			८,२२-२३ २६,३०,३२,३७,३९,४०
						४५-४७,६३-६४
			सुन्दरबिरहन			९-१०,१२,१३-१४,२४,२५-२६,२८-२९,३५,६०-६२,७०-७१

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या
११४१	१२४२२ (७-११)	पद-सग्रह	रघनाथ, सती भरथरी, हणवत हालीपाव	गु० १८६३	१५×१० ५	२४७ वा २४७ २४८ : २४८-२४६ २४६ वा
११४२	१२४२६ (५)	पद-सग्रह	रैदास	२०वी श०	१६ ५×१३	६४-७३ वे-रागबद्ध
११४३	१२५४८ (४)	पद-सग्रह	सूरदास	गु० १८६०	१६×१२ ५	३७-४० वें-पत्र ४१-४३ पर चौकी बद्ध कवित्ता है।
११४४	१२५५० (१)१-१०	पद-सग्रह	रसिकनाथ, गोविंदप्रभु छीतस्वामी, चत्रभुज नददास, सूरदास कु भनदास, विठ्ठल कृष्णदास, परमानन्द	१६वी श०	१६.५×१३	१-२ , २-३ ४-५ ; ५-६ ६ ७ ; ८ वा ८-६ , १० ११-१२ , १२-१३
११४५	१२५६१ (१७)१४	पद-सग्रह	दादू,कबीर, रज्जब वाजीद	१६वी श०	२३ ५×१७	३६६ , ३७०-३७१ ३७१-३७२
११४६	१२५७० (४) १-३	पद-सग्रह	रज्जब , कबीर,तुलसी	२०वी श०	६ ५×६.५	३६ , ३७ वा
११४७	१२५७० (५)१-६	पद सग्रह	तुलसी, मलूकदास कबीर, चरनदास जनतुरसी, सूरदास परसराम, बालकृष्ण किसोरअलि	१६वी श०	६ ५×६ ५	२ , २-३ गुटका पत्र स० १-३७ तथा ३-५ , ५ वा-१४० से अन्त तक एक ५-६ , ६ वा-ही द्वारा लिखा गया है। ६-७ ; ८ वा- ६ वा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (से मी. मे)	पत्र सख्या
११४८	१२५७२ (१)	पद-सग्रह	जैमलदास	१६वी श०	१०.५x८ ५	२-५ वें
११४६	१२५७७ (८) १-२	पद-सग्रह	पेमदयाल सतोकदास	१६वी श०	१४.५x१०	६७-१०३,१०५,१०७-११६ १०३-१०५, १०६-१०७
११५०	१२५७७ (६) १-२	पद-सग्रह	कबीरदास, आत्माराम अज्ञात	१६वी श०	१४ ५x१०	१२७ वा १२७-१२६
११५१	१२५७७ (११) १-६	पद-सग्रह	बालकदास, पेमदयाल सतोकदास, नददास वाजीद, मछदरनाथ कबीर पीपा, सुन्दरदास	१६वी श०	१४ ५x१०	१३०-१३५ बारहमास, १३५-१३७ १३७-१३८,१३६-१४४ ; १३८ १४५-१४६ , १४७ १४८-१४६,१५०,१६०,१६६,१६८, १७४,१८१-१८३-१८४ १४६ , १४६-१५० सवैये
११५२	१२५७७ (११) ११-२२	पद-सग्रह	रदास, मीरा घाटमदास मीणा जनधनजी, परसराम सुखदेव, अज्ञात रामचरण, नरसी बगतावर, सूरदास रामसखी	१६वी श०	१४ ५x१०	१५८ , १५८,१७२,१७५-१७८,१८२ १५६ , वा १६० , १६१ १६५ , १६६ १६६-१७०,१७५,१८४ , १७१ १७२-१७३ , १७३,१७६-१८१ १८३ वा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या
११५३	१२५८१ (३)१-११	पद-सग्रह	सूरदास, मीरा	१६ वी श.	१६x१० ५	२८,२६ , २८
			ग्रानन्दघन,सुन्दरविरहन			२६ , २६-३१,३३
			बखनो, कवीर			३२ , ३३,३८-३६
			ग्रज्ञात , नापो, मुकद			३४ , ३५
			परमानन्द, हरिदास			३५-३६ , ३६-३७
११५४	१२५८१ (६) १ ५	पद-सग्रह	कबीरदास, हरिदास	१६ वी श	१६x१० ५	४२,४३,४५ , ४२-४३,४४-४५
			बुधानद, गगादास			४३ , ४५
			रूपदास शिष्य हरिदास			४६ वा
११५५	१२५८१ (१५)१-२	पद-सग्रह	विष्णुदास, शिवदत्त	१६ वी श	१६x१० ५	६३-६४ ; ६४-६५ पर स्फुट कवित्त है। ६५-६६ ६
११५६	१२५८६ (१)१-५	पद-सग्रह	कबीरदास, मीरा	१६ वी श	१२x६ ५	१-२ , २ ४,६,८८-६०
			ग्रमरदास, दुलहराम			३-३४
			जनतुरसी			६ ठा
११५७	१२५८८ (२)१-४	पद-सग्रह	सतदास	१६ वी श	१२.५x८	३७-३६ वें
			रामचरण			४०-४२,४४,४६-४७,४६,५१,५३-५५, ५८-५६,६१-६४,६५-६६,७१-७२
			चेतनदास			४२,४७,५१,५६,६५,७०,७३,७७
			रामजन			४३,६०-६१,६७-६८,७३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि. सं.)	माप (सें. मी.)	पत्र संख्या
११४७	१२४८८ [illegible]	पद-संग्रह	रामरग	१९वीं श०	१२ ४x८	४८,५०,५२,५६-५७,६६,७४-७५,७८
			गुरुदेव			१२८ वां
११४८	१२४८८ [illegible]	पद-संग्रह	रामशरण	१९वीं श०	१२ ५x८	७६-७७,७८ ८२,८५ ८७,९०-९२,९६, १००-१०२,१०८,१०८-१०९,१११-११३,११८ १२०,१२१-१२२
			चेतनदास			७७,८२-८३,१०३,१०५,१०७-१०८, ११३,११८
			रामजन			८७-९०,९२,९८
			रामरम			८८,९४-९६,९७,९८-१००,१०३-१०४, १०६-१०७, १०९-११०, ११८,१२०-१२१,१२२ १२८,१४१-१४४
११४९	१२४८८ (२)७-१०	पद-संग्रह	कबीरदास	१९वीं श०	१२ ५x८	१२५-१२६,१२८-१३०,१३६,१३७
			नानिग			१२६ वां
			मीराबाई			१२७,१३२,१३५,१४६-१५०,१५२-१५३
			शेखफरीद, तुरसीदास			१२७-१२९, १३०-१३१,१३९
			नागरीदास, देवादास			१३१; १३२
			नरसिंह			१३३ वां
११५०	१२४८८ (२)१५-३३	पद-संग्रह	सूरदास, भगतराम	१९वीं श०	१२ ५x८	१३४-१३५,१३६,१४०,१५१, १३७
			त्रिजानन्द, चरनदास			१३८ वां
			हमतराम, नित्यानन्द			१३९, १४० वां
			फकीरदास, चन्द्रसखी			१४५, १५० वां
			नन्दानन्द			१५३ वां

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या
११६१	१२५८६ (४) १-६	पद-सग्रह	कबीरदास	१६६६	१७x१३	१७५ १७६,१७६,१८०-१८१,१८५, १८६-१८७
			सूरदास			१७७,१८०,१८३-१८४
			चन्द्रसखी, तुलछीदास			१७७ , १७८
			जनमुरली, जनमगल			१७८,१८२ , १८५-१८६
११६२	१२५६० (१)१-७	पद-सग्रह	जनहरिदास	१८४०	१६x१२	१-१२,२३,२८,३०
			सूरदास			१,१७,१८-१६,२४-२६,३१-३२
			जनतुरसी			१२-१३,१६-२०,२१ २२,२३-२४,२७,४३
			कबीरदास			१३ १४,१६-१७,२०,२१,२६,२६,३२, ३४,४३
			बुधानन्द			१४,१८
			सुन्दरदास, नैनोदास			१४-१५ , १५
११६३	१२५६० (१)८-२०	पद-सग्रह	बनारसी, तुलसीदास	गु०१८४०	१६x१२	१६ , १८,१६
			केसवदास, नापो			२६ , २७,३३
			बखनो, जगजीवन			२७-२८ , ३०
			परमानन्द, मुकन्द			३१ वा
			मीरा, परमराम			३२,३३,३५ ३६ , ३४
			गब्रीराम काजीमैमद			३५ वा
			ग्रानन्दघन			३६ वा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स में)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या
११६४	१२५६० (१)२१-२८	पद-सग्रह	नागरीदास, भूतनाथ नरसी माधोदास अभयराम, दादू कानड, हरिवश	१८४०	१६x१२	४० वा ४१,४२ , ४१ ४२ , ४२-४३ ४३ , ४४
११६५	१२५६१ (१)७-८	पद-सग्रह	सुखदेव, दासकवि	२०वी श०	१५ ५x१०	१८-१६ , १६-२०
११६६	१२५६१ (३)१-११	पद-सग्रह	तुलछीदास, कबीर बगतावर, ललितमखी सूरदास, मीरा सुरतराम, धरमदास सुखराम हसतराम, गग	२० वीश०	१५ ५x१०	८६-८७ , ८७ ६७,१००-१०१ ८८ , ८८-८६ ८६,६४,६६ , ८६-६०,६८-६६ ६०-६१ , ६१-६२ ६२,६६ ६३ वा
११६७	१२५६१ (६)१-४	पद-सग्रह	हरिराम, रामदास ग्वालवाल, सेवादास	२०वी श०	१५ ५x१०	३६ , ३६-४१ ४१-४२ , ४२-४३
११६८	१२५६१ (१४ १-२	पद-सग्रह	मलूकदास, दीनदरवेश	२०वी श०	१५ ५x१०	८० , ८२-८४,६७
११६९	१२५६१ (१६)१-२	पद-सग्रह	मलूकदास, वखना	२०वी श०	१५ ५x१०	६६-१०० , १०० वा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (स मी मे)	पत्र सख्या
११६९	१२५९१ (१९)३-११	पद-सग्रह	रामसखी, कबीर हरिराम, परसराम रामदास, भावनादास गुपतराम, जनमूरली नागरीदास	२०वी श०	१५ ५×१०	१०१ , १०२,१०३ १०२ ; १०२,१०३ १०३-१०४ , १०४-१०५ १०५ वा
११७०	१२५९१ (२८)	पद-सग्रह	बगतराम	२०वी श०	१५ ५×१०	१८४-१८७
११७१	१२५९१ (३४)१-८	पद-सग्रह	अखैमल, रामचरण सेवगराम, कबीर सीतलसखी, सुखराम ग्वालबाल, भीखमदास	२०वी श०	१५ ५×१०	२१५ लावणी ; २१६,२१७ २१७ वा २१८ वधावा , २१८-२१९ २१९ , २१९-२२१ पखवाडा
११७२	१२५९२ (१)१-१०	पद-सग्रह	दासकवि, परसराम दादू, बापजी ? सुखमणदास मीराबाई विजैराम, कबीरदास ग्वालबाल, सेवगराम	१९वी श०	१४×१० ५	१ ; २-३ ३ रा १ ला २,११-१३,१४,१५-१६,१८-२३,२६, २७,३०,३२,३४ ४०,४२ ३-५ , ५,१०,११,३६-३७,४१ ४३ ५,१७,२४,२९,३०-३१,३८,५१,५२ ६-७

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या
११७३	१२५६२ (१)११-२०	पद-सग्रह	तुलसीदास, बुधानन्द जनहरिया, दादू हरिदास, रामसखी साईदास, पूरणदास बाईराना, सूरदास	१६वी श०	१४×१० ५	७-८,१६-१७ ३२-३३-४१ , ८-६ १०,१३,२८ , १०-११ १४ ; १७ १८ , १८,२४-२५,४४ २३ ; २४,४३
११७४	१२५६२ (१)२१-३१	पद-सग्रह	रसिकराम, अखैमल रामदास, नरसी जैमलदास, पेम कृपासखी, परसराम रूपदास, बगतभारती ललितसखी,नागरीदास	१६वी श०	१४x१०.५	२५,२६ , २६-२७ २६,३७-३८,५१ , ३१-३२ ३४,३५ , ३४ ३५ , ३५,३६,३६ ३७ ; ३८-३६,४८-४६ ४० ; ४३-४४
११७५	१२५६२ (१)३३-३७	पद-सग्रह	दासगोपाल, धरमदास सीतलसखी नामदेव श्रीभट	१६वी श०	१४x१० ५	४५-४७ बारामासो , ४७-४८ ४८ , ५० वा ५२ वा
११७६	१२५६२ (३)१२-१७	पद-सग्रह	रामदास, मुरलीराम जनहरिया, सेजराम पोहोकर, जैतराम	१६वी श०	१४x१०.५	६४ , ६५ ६७-६८ , ६६-१०० १०१-१०६ ; १०६-१०६

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (से मी मे)	पत्र संख्या
११७७	१२५६२ (५)५-६	पद-संग्रह	सूरदास रूपदास, कबीरदास जूणादास, जनभावन	१६वीं श०	१४x१०.५	१३० वा १३१ १३२-१३३ , १३३-१३४
११७८	१२५६२ (५)१०-१६	पद-संग्रह	मीरा, नागरीदास नरसी व्रजानन्द, रतनसखी ललितसखी, बगनावर	१६वीं श०	१४x१० ५	१३५-१३७ , १३७-१३८ १३८ वा १३६ वा १४०, १४१, १४०-१४१, १४१-१४२
११७६	१२२२० (३२)१-२	पद-संग्रह (अक्षय तृतिया के)	चत्रभुज, परमानन्द	१६वीं श०	१६x१६ ५	१००, १०१-१०२
११८०	१२२२० (३१)२-१	पद-संग्रह (आचायजीके जन्म-उत्सव के)	तिलोक, कृष्णदास	१६वीं श०	१६x१६ ५	१००, १००-१०१
११८१	१०८६६ (६)१-८	पद-संग्रह एव साखी	बनारसी, माधोदास तुरसी, रामचरण हरिराम, सुन्दरदास कल्याण, अज्ञात	गु० १६२७	८ ५x७	२४२-२४३ , २४३-२४५ २४५-२४६, ४७८-४८० ; २४६ वा २४६-२४७ , २४७-२४६ २४६-२५० , २५०-२५३
११८२	१०८६६ (६)६-१४	पद-संग्रह एव साखी	जनरामा, रज्जब परसराम, सेवादास कबीर, किशनदास	गु० १६२७	८ ५x७	४५६ , ४५६-४५७ ४५७ ४६२-४६४ , ४५८ ४६४-४६८ , ४६८-४७१

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. में)	माप (सें मी में)	पत्र संख्या
११८३	१२२१० (१)१-१०	पद-संग्रह (कृष्ण जन्म के)	गोविन्दस्वामी सूरदास चत्रभुजदास,विट्ठलदास कुंभनदास, कृष्णदास जगन्नाथ, नंददास परमानंद माधव	१९वी श०	१८×१३.५	१०.२२ सभी पद राग बद्ध है । ११,१४-१५,१६-१७,१८,२१,२२-२३ ११ , १२ वा १२ ; १३ १३ , १३-१४,२१ १७-१८,१९-२०,२१,२२,२४-२५ २३-२४
११८४	१२२२० (६)	पद-संग्रह (छठी के)	लछिराम	१९वी श०	१९x१६ ५	६७-६८
११८५	१२२२० (३)१-५	पद-संग्रह (जन्म के)	सूरदास, परमानन्द माधोदास, चत्रभुज गदाधर	१९वी श०	१९×१६.५	६१,६२,६३ , ६१,६३-६४,६५ ६१ वा ; ६२ वा ६४ वा
११८६	१२२११ (३)	पद-संग्रह (जन्माष्टमीके)	सूरदास	२०वी श०	१७×१३	२०-२३ राग-देवगधार
११८७	१२२०५ (५३)१-५	पद-संग्रह (जैन)	रूपचन्द, जिनलाभ आनन्दघन, दोलत फतेचन्द	१८वी श०	१७×११	१४३,१४५ , १४३ १४३-१४४,१४५ , १४६ १४५ वा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से. मी. मे)	पत्र सख्या
११८८	१२२२० (५)	पद-सग्रह (ढाढी के)	सूरदास	१९वी श०	१६x१६ ५	६७ वा
११८९	१२२१० (२)	पद-सग्रह (ढाढी के)	सूरदास	१९वी श०	१८x१३.५	२५,२६ वा-राग धनाश्री
११९०	१२२१० (२३)१६-१७	पद-सग्रह (धमारि के)	कृष्णदास, मुरारि	१९वी श०	१८x१३ ५	१३८-१३९ , १४७ राग-गोरी, श्रडानो
११९१	१२२१० २३)११-१४	पद-सग्रह (धमारि के)	कुभनदास, गदाधर लच्छीराम, रसिकदास	१९वी श०	१८x१३ ५	१२८,१३९ , १२१,१२२,१३१-१३२ १३३ १३४-१३५,१४८-१४९ : १३७ वा
११९२	१२२१० (२३)१-५	पद-सग्रह (धमारि के)	मानिकचन्द	१९वी श०	१८x१३ ५	११३-११४
			चत्रभुज			११४-११६,१३८,१४१,१४७-१४८
			गोविन्दस्वामी			११६-११८,१२५-१२६,१३०-१३१, १३९-१४१,१४३-१४४,१४६
			माधोदास			११८-११९
			सूरदास			११८-१२०,१३१,१३६,१३७,१४२,१४६
११९३	१२२१० (२३)६-९	पद-सग्रह (धमारि के)	परमानन्द	१९वी श०	१८x१३ ५	१२१,१२४,१२६-१२७,१२९
			नददास			१२२.१३३-१३४
			छीतस्वामी			१२३ वा
			अज्ञात			१२२-१२३,१२७,१३२,१३५. १३६,१४२,१४३,१४४-१४६,१४९

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स में)	माप (सें मी में)	पत्र संख्या
११६४	१२२२० (२७)१-१०	पद-संग्रह (धमारि के)	मानिकचद, चत्रभुज गोविन्दस्वामी,जनमाधो जनहरिया, परमानद गदाधर, नददास छीतस्वामी	१९ वी श०	१९x१६.५	८६ , ८६-८७ ८७-८८,९४ , ८८-९१ ९१-९२ , ९२-९३ ९३ वा ९४-९६
११६५	१२२२० (३४)-१३	पद-संग्रह (ध्यान यात्रा के)	परमानन्द, सूरदास, विठ्ठलप्रभु	१९ वी श०	१९x१६ ५	१०३ वा
११६६	१२२२० (३८)६-११	पद-संग्रह (नित्य के)	विष्णुदास, जनभगवान कृष्णदास, गोविन्दप्रभु वल्लभ, आमकरन	१९ वी श०	१९x१६ ५	१२१ , १२२ १२२ , १२३-१२४ १२४ वा
११६७	१२२२० (३८)१-५	पद-संग्रह (नित्य के)	परमानद, छीतस्वामी नन्ददास, चत्रभुज सूरदास	१९ वी श०	१९x१६ ५	११८,११९,१२१,१२२,१२३,१२४,११८ वा ११८-११९ , ११९-१२०,१२१ १२०,१२२
११६८	१२२१० (३)१-६	पद-संग्रह (पलना के)	कृष्णदास,चत्रभुजदास विठ्ठल, परमानन्द सूरदास, गोविन्दस्वामी	१९ वी श०	१८x१३ ५	२६ , २७,२८ २७,२८ , २८,२९ २९ , ३०
११६९	१२२२० (४) १-५	पद-संग्रह (पलना के)	गोविन्दप्रभु,कृष्णदास रसिकदास, विठ्ठल, आसकरन	१९ वी श०	१९x१६ ५	६५,६६ , ६५ वा ६६ वा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या
१२००	१२२१० (२०)१-२	पद-सग्रह (प्रबोधनी के)	परमानन्द, रसिकदास	१६ वी श०	१८x१३.५	१००-१०१ , १०१-१०२
१२०१	१२२२० (२४)१-२	पद-सग्रह (प्रबोधनी के)	रसिकदास, सूरदास	१६ वी श०	१६x१६.५	८२ , ८३ वा
१२०२	१२२१० (२५)१-३	पद-सग्रह (फूलमडली के)	परमानन्द चत्रभुज कु भनदास	१६ वी श०	१८x१३.५	१५३, १५५, १५६ राग-सारंग १५३-१५४,१५५ १५४-१५५
१२०३	१२२२० (२६)१-३	पद-सग्रह (फूलमडली के)	गोविन्दप्रभु, सूरदास, चत्रभुज	१६ वी श०	१६x१६.५	६८ वाँ
१२०४	१०८६४ (२)१-८	पद-सग्रह (वधावारा)	मीरा कबीर दादू, पदमातेली अज्ञात, दीनदयाल सतदास, सुखराम	गु० १८६७	१०.५x१७	६६,६७ १२४-१२५ ६७-७१,७४-७६,७८-८०,८२,८३, १२२-१२४ ७१-७२ , ७२-७४ ८१ ; ८३-८४ ८५-८६
१२०५	१०६४४ (६) १४	पद-सगह (वधावारा)	तुरसी	२० वी श०	८ x५	२६७-२६८,३७८
१२०६	१०८४७ (२)३०-३२	पद-सग्रह (वधावारा)	पूरणचन्द, सूरजकवर रूपां	गु० १६६६	१७x८	६६३ ; ६६४, ६६४

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या
१२०७	१२२१० (२२)१-६	पद-सग्रह (बसत के)	कु भनदास, चत्रभुजदास परमानन्द, सूरदास लघुगोपाल, कल्याण	१६वी श०	१८×१३ ५	१०५-१०८ , १०८-१०६ १०६-११०,११३ , ११०-१११ ११२ , ११२ वा
१२०८	१२२२० (२६)१-३	पद-सग्रह (बसत के)	चत्रभुज, परमानन्द सूरदास	१६ वी श०	१६×१६ ५	८४,८५ वें ८५ वा
१२०६	१२३११ (११)८-१०	पद-सग्रह(बारामासी,लावणी)	परमानन्द, अज्ञात लवलीनराम	गु०१६४०	१७ ५×८ ५	५१६-५२० ५२१-५५०
१२१०	१२२१० (४) १-५	पद सग्रह (बाललीला के)	परमानन्द, सूरदास चत्रभुजदास,आसकरण ऋषिकेश	१६ वी श०	१८×१३ ५	३१-३२,३३-३४,३५ , ३२,३४ ३२-३३; ३४ वां ३५ वा
१२११	१०६४४ (६)२३-२४	पद-सग्रह (भरथरी,गोपीचन्द)		२० वी श०	८×५	३७०,३७१ ; ३७१-३७२
१२१२	१२२१० (१८)	पद सग्रह (भाईदूज के)	आसकरन	१६ वी श०	१८×१३ ५	६८-६६ राग-सारग
१२१३	१२२२० (२२)१-२	पद-सग्रह (भाईदूज के)	आसकरन, रामदास	१६ वी श०	१६×१६ ५	८१ , ८२
१२१४	१२२१० (३२) १-७	पद-सग्रह (मलार राग के)	चत्रभुज, गोविन्दप्रभु कु भनदास, सूरदास परमानन्द, रसिकदास विट्ठल	१६ वी श०	१८×१३ ५	१७८ , १७८ १७६,१८० , १७६,१८०,१८१ १७६ ; १८० १८१

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से मी. मे)	पत्र सख्या
१२१५	१२२२० (३२)१-६	पद-सग्रह (मलार-राग के)	परमानन्द, कृष्णदास विट्ठल, सूरदास कु भनदास, रामदास	१६ वी श०	१६x१६ ५	१०५ ; १०५,१०७-१०८ १०५ ; १०५-१०६,१०७,१०८,१०६ १०६,१०८,१०६ , १०६
१२१६	१२२२० (३६)७-११	पद सग्रह (मलार-राग के)	गोविन्दप्रभु जनभगवान,छीतस्वामी चत्रभुज, नददास	१६वी श०	१६x१६.५	१०७,१०८,१०६ १०७ वा १०६ वा
१२१७	१२२१० (३१)१-३	पद-सग्रह (रथ-यात्रा के)	कृष्णदास, परमानन्द गोविन्द	१६वी श०	१८x१३ ५	१७६ , १७६,१७७-१७८ १७७ वा राग-बिलावल, मलार
१२१८	१२२२० (३५)१-३	पद-सग्रह (रथ-यात्रा के)	गोविन्दप्रभु, कृष्णदास सूरदास	१६ वी श०	१६x१६ ५	१०४ वा
१२१६	१२२१० (५)१-८	पद सग्रह (राधाष्टमी के)	रसिकदास, नददास परमानन्द, कृष्णदास दासगोपाल कु भनदास, आसकरन, सूरदास	१६ वी श०	१८x१३ ५	३५,३६,३७ , ३६ वा ३६, ३८ ; ३७ वा ३८ वा ३८ वा राग-देवगधार, विलावल पूरबी ३८
१२२०	१२२२० (७)१-४	पद-सग्रह (राधाष्टमी के)	परमानन्द, कृष्णदास रसिकराय, विट्ठल	१६ वी श०	१६x१६ ५	६८ वा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें. मी. मे)	पत्र सख्या
१२२१	१२२२० (२६)१-४	पद-सग्रह (रामनवमी के)	तुलसीदास परमानन्द सूरदास नददास	१६वी श०	१८x१३ ५	१५६,१५७,१५८ राग-विलावल, सारग १५७,१५६,१६०-१६१ १५८,१६० १५८-१५६
१२२२	१२२२० (३०)१-२	पद सग्रह (रामनवमी के)	परमानन्द, कल्याणदास	१६वी श०	१६x१६.५	६६ वा
१२२३	१२२१० (६)	पद-सग्रह (रास के)	रसिकदास	१६वी श०	१८x१३ ५	४७-५२ राग-मारू, मालवगौड, विलावल, टोडी, मालव
१२२४	१२२२० (१३)१-३	पद-सग्रह (रास के)	कृष्णदास, परमानद कु भनदास	१६वी श०	१६x१६ ५	७६ वा ७७ वा
१२२५	१२२१० (११)१-७	पद-सग्रह (रास कीर्तनके)	चत्रभुजदास कृष्णदास परमानन्द, सूरदास, कुंभनदास नददास, गोविन्दस्वामी	१६वी श०	१८x१३ ५	५६-५७ ५७-५८,५६,६१-६३-६४-६६ ५८-५६,६०,६३-६४,६६-६७ ५६ ; ६०-६१,६३ ६२,६६ : ६४
१२२६	१२२२० (१५)१-२	पद-सग्रह (रूप-चौदस के)	विष्णुदास, विट्ठल	१६वी श०	१६x१६ ५	७७ वा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स में)	माप (से मी. मे)	पत्र संख्या
१२२७	१२२२० (२ १-४	पद संग्रह (वर्ष उत्सव के)	सूरदास, चत्रभुज, परमानन्द विट्ठल	१६ वी श०	१६×१६.५	५६-५८,५६,६० ५८-५६,५६-६०
१२२८	१२२१० (७)	पद-संग्रह (वामनजी की-वधाई के)	परमानन्ददास	१६ वी श०	१८ १३ ५	४१-४३ : राग-विलावल, सारग, देवगधार, धनाश्री
१२२६	१२२२० (६)१-२	पद-संग्रह (वामनद्वादशी के)	सूरदास, परमानद	१६ वी श०	१६×१६ ५	७० वा
१२३०	१२२२० (१०)	पद-संग्रह (साझि के)	द्वारिकेश	१६ वी श०	१६×१६ ५	७०-७२ वा
१२३१	११६४८ (१३)	पद-संग्रह (सिद्ध एव नाथ)	हणवत, हालीपाव, कणेरीपाव, भरथरी, रुघनाथ,	गु०१८५२	२७×१६ ५	२६६, ३६७ पत्र स० ३६७-३६८ पर प्रेमकृत सिद्ध वदना है।
१२३२	१२२१० (३०)१-३	पद-संग्रह (स्नान यात्रा के)	वल्लभ, परमानन्द, सूरदास	१६ वी श०	१८×१३ ५	१७४, १७५ · राग-विलावल, सारग १७५ वा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (स. मी मे)	पत्र सख्या
१२३३	१२२१० (१६)१-५	पद-सग्रह (हटरी के)	विट्ठल, गोविन्दप्रभु सूरदास, नन्ददास रसिकदास	१९ वी श०	१८×१३ ५	९३;९४, ९४, वा राग कान्हरो ९४ वा
१२३४	१२२२० (१७)१-२	पद-सग्रह (हटरी के)	परमानन्द, गोविन्दप्रभु	१९ वी श०	१९ १६ ५	७८ वा
१२३५	१२५०४	पद-सग्रह (हरि कीर्तन)	वल्लभ, कृष्णादास, चत्रभुजदास, श्रीभट	गु०१९०३	२३×१६ ५	१-३
१२३६	११००३ (३)	पद-सग्रह (हरिजस)	रामदास	१९ वी श०	२९ ५×१४ ५	३३-३६
१२३७	११००७	पद-सग्रह (हरिजस)	रामदास	१९ वी श०	२९.५×१४.५	१-३
१२३८	१२५७२ (१३)	पद-सग्रह (हरिजस)	परसराम	१९ वी श०	१० ५×८.५	३६४-३७८
१२३९	१२४२६ (३)	पद सग्रह (हरिजस)	पूरणदास	२० वी श०	१६ ५×१३	४०-५६

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी. मे)	पत्र सख्या
१२४०	१२४२६ (६)	पद-सग्रह (हरिजस)	गुपतराम	२० वी श०	१६ ५x१३	१-६
१२४१	१२५४८ (२)	पद-सग्रह (हरिजस)	चतुर्भुजदास	गु०१८६०	१६x१२ ५	१५-३४ ; ५१ से १०८ दोहे अप्राप्त
१२४२	१२५७१ (२)	पद-सग्रह (हरिजस)	जैमलदास	१६ वी श०	१०.५x८	१८-५३ २६ वा पत्र अप्राप्त
४३	१२६७२ (६)	पद-सग्रह (हरिजस)	रामदास	१६ वी श०	१० ५x८.५	१९६-१९८ , १९९,२०३-२०८, २१२ २१३,२१४-२१७
			दयालदास			१९८-१९९,२००-२०३,२०९-२११, २१३-२१४
१२४४	१०८४९ (५)	पद-सग्रह (हरिजम)	जैमलदास	गु०१९३१	१७१	६-१२
१२४५	१०८५१ (१) १-२	पद-सग्रह (हरिजस)	रामानन्द, सेवगराम	१६ वी श०	१५ ५x१०	१-३ ३-६, राग-बसत, सोरठ, पुरज, मारू, विलावल, कानडौ
१२४६	१०८५१ (१) ३	पद-सग्रह (हरिजस)	मीरावाई	१६ वी श०	१५.५x१०	६-१४,४४-४६,४८,५७,५६,६२. ६५,८१,८२,८४,८६ राग-सोरठ, पुरज, बसत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या
१२४७	१०८५१ (३)१६-२०	पद-सग्रह (हरिजस)	मीराबाई, वाजीद बखना, पीपा जनमुन्दर	१८ वी श०	१५ ५×१०	८६,६५,६६,१००-१०३,१०७-१०६, १११-११३,११६-१२०, १०२,१८३ १०३,११८,११६,१०४,१६४ १०४-१०५,१६४-१६५
१२४८	१०८५१ (३)११-१५	पद-सग्रह (हरिजस)	नामदेव, जगजीवन नरसी, राघवदास माधवदास	१८ वी श०	१५ ५×१०	८२, ८३,८४ ८५-८६,१८४, ६८,१६५ ६६,१८४
१२४९	१०८५१ (३)६-१०	पद-सग्रह (हरिजस)	सूरदास, रामदास हरिराम, ग्वालबाल काजीमहमद	१८ वी श०	१५ ५×१०	७२-७५,१६०-१६३,१६७; ७५, ७६,१५३-१८५ ६६,६७, ७७-७८ ८० वा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी. मे)	पत्र सख्या
१२५०	१०८५१ (३)१-५	पद-सग्रह (हरिजस	तुलसी, प्रेमदास सुन्दरदास, रज्जब जनहरिदास	१८ वी श०	१५ ५x१०	५६,६५,१०५,१०६ , ६०, ६०, ६१,११७,१८२ , ६०,८७ ६६,६७ राग-पिछुरी, घनाश्री, देवगंधार
१२५१	१०८५१ (१)४	पद-सग्रह (हरिजस)	कबीरदाम	१६ वी श०	१५.५x१०	१४,१५,५६,६५,७०,७१,७२,८६, ६५,११६,११७,१२३-१५३,१८६, १६६,१६७
१२५२	१०८५१ (१)५-६	पद-सग्रह (हरिजस)	जैमलदास,हरिरामदास	१७६२	१५ ५x१०	१-३ , ३-७,६६,६७ गुटके के पत्र १८५ तक प्राचीन हैं । आगे-पीछे नवीन पत्र लगाकर गुटके की सिलाई कर दी गई है ।
१२५३	१०८५१ (१)७-६	पद-सग्रह (हरिजस)	रामदास, द्यालबाल परसराम	१८ वी श०	१५.५x१०	८-१५,३६-३८,१२०-१२१ ; १५-३२ ३२-३६,३६,४०,६८,६६,७६ राग-सोरठ, कानडो, सारग, बसत
१२५४	१०८५१ (१)१०-१२	पद-सग्रह (हरिजस)	सेवगराम सुन्दरविरहन,ईसरदास	१८ वी श०	१५.५x१०	४०-४४,६६-६८,१०६-११०, ११४-११६,१६८,२०० ४७ , ४६ राग-होरी, मल्हार, सोरठ
१२५५	१०६००(१)	पद-सग्रह (हरिजस)	जैमलदास	२० वी श०	१२x.८ ५	१-२ पत्र स २-४ पर द्यालबाल कृत 'ब्रह्म-स्तुति' है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि. स. मे)	माप (सें. मी. मे)	पत्र सख्या
१२५६	१०८६५ (३)१-२	पद-सग्रह (हरिजस)	जैंमलदास,परसोतम	२० वी श०	१२.५x८	६-८ , १०-११ पत्र स ६ अप्राप्त
१२५७	१०८६६(१)	पद-सग्रह (हरिजस)	जैंमलदास	१९१०	७ ५x६.५	१-११
१२५८	१०८६६(७)	पद-सग्रह (हरिजस)	परसराम	१९१०	७ ५x६ ५	१०८-११५
१२५९	१२२१० (३३)१-११	पद-सग्रह (हिंडोरा के)	कृष्णदास, चत्रभुज कु भनदास, विट्ठल गोविन्दप्रभु, वल्लभ सूरदास, परमानन्द नन्ददास, रसिकदास धोधी	१९ वी श०	१८x१३.५	१८१-१८४,१९४ , १८५,१९२ १८६,१९१-१९२,१९३ ; १८६,१८९ १८७-१८९,१९३,१९५ , १९० १९१-१९२ , १९३ १९४ , १९५ १९५ वा गुटका अपूर्ण है। पदो का दुर्लभ सग्रह है। राग—घनाश्री, मलार, कान्हरौ, मालव, नट, केदारो
१२६०	१२२१० (२४)१-७	पद-सग्रह (हिंडोरा के)	परमानन्द, विष्णुदास सूरदास, कृष्णदास चत्रभुजदास, रामदास नन्ददास	१९ वी श०	१८x१३ ५	१४९,१५१,१५२ , १५० १५० , १५१ १५१ , १५२ १५३ राग—देवगधार, जंतश्री, कल्याण, सारग

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या
१२६१	१२२२० (३७)८-११	पद-सग्रह (हिंडोरा के)	कु भनदास, विठ्ठल मोहनप्रभु, आसकरन	१९ वी श०	१९x१६ ५	११२,११३-११४ ; ११२ ११३ वा गुटके मे पदो का सग्रह ३८ शीर्षको से किया गया है। गुटका अपूर्ण।
१२६२	१२२२० (३७)१-७	पद-सग्रह (हिंडोरा के)	कृष्णदास, कल्याण चत्रभुजदास,गोविंदप्रभु परमानन्द रसिकदास, सूरदास	१९ वी श०	१९x१६.५	१०९-११०,११४ , १११ १११,११२,११६ , १११,११४,११५-११६ १११-११२,११५ ११२ वा
१२६३	१२३११ (११)११-१९	पद-सग्रह (होरी)	मीरा	१९४०	१७.५x८ ५	५५०-५५१,५५३-५५४,५५६-५५८, ५६१-५६२,५७४,५७५
			कबीरदास सूरदास			५५१-५५२,५५४-५५५,५६५-५६६ ५५२-५५३,५५८-५६१,५६२-५६३, ५७५,५७६,५७७
			माधोदास, तुलसीदास चन्द्रसखी, छीतमदास हरिदास, पदम			५६३-५६४ , ५६७,५७०-५७३ ५६८,५८० , ५६९ ५७३-५७४ ; ५८२ पत्र स० ५८२-५८४ तक गुटके की कृतियो का ब्योरा है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या
१२६४	१२२१७ (४)२१-२६	पद-सग्रह (होली)	माधोदास, सूरदास कृष्णदास, आसकरन कासीराम	१९ वी श०	२१ ५x१२	१०७ ; १०७-१०८ १०८ वा १०९ वा पत्र स ९० पर सेनारा दूहा, छत्तीस पौणि (जाति) तथा पुरुष दशा की टीप है।
१२६५	१२४२६ (१)१-८	पद-सग्रह (होली, बसत के)	जनहरराम, कबीर ग्वालबाल, कासीराम जनरामा, आत्मराम छीतमदास, सूरदास	२० वी श०	१६ ५x१३	१-३ , ३,४,६,११ ४,५,६-७ , ५ ८ , ९ १० ; १२
१२६६	१०८६४ (१)१-५	पद-सग्रह (होली-रागबद्ध)	जनदरिया, सुखराम प्रेमदास, नित्यानद गगदास	गु० १८९७	१०.५x७	१-६ ; ६-१०,५६-६२ ११-३४,३९-४३ ; ३४ ३४-३५

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि. स. मे)	माप से. मी में	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१२६७	१०६०६ (२)	पद्मावतीरास	समयसुन्दर	१६२८	२३.५x१०.५	१५-१८	लि क. मुनि हीर सागर
१२६८	१०६२८ (२)	पन्ना-वीरमदेरी बात	किशोरसिंह	१८८६	२२x१७	१-३६	लि क वाल हरलाल लि, स्था. हरिदुर्ग
१२६९	१२३०८	पन्ना-वीरमदेरी बात सचित्र	कवर शेरसिंह	१६ वी श०	२१x१४	८ पत्र कुल	चि स. ८१ मरम्मत किए हुए। बात अपूर्ण
१२७०	१०८६६ (११)	परचै-प्राण जोगग्रन्थ	द्यालबाल(दयालदास)	गु०१६२७	८ ५x७	५२२-५३७	
१२७१	१०७३२	परदेसी राजारी चौपई	अज्ञात	१६४०	२४x११ ५	१-१६	लि क नथेजीराम लि. स्था रिणी
१२७२	१०६७२	परदेसी राजारी चौपई	अज्ञात	१८८०	२३.५x१०.५	१-१५	लि. क. मानजी लि. स्था. मेड़ता

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से. मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१२७३	१२३७३	परदेसी राजारी चौपई	अज्ञात	१८५७	२५ ५x११ ५	१-१६	लि क उमेद लि स्था नगर सरवाड
१२७४	१०८०६	परदेसी राजारी सधी	अज्ञात	१८६६	२५ ५x११ ५	१-१४	लि क सत्तूडी लि स्था बघेरा
१२७५	१२१५६(१)	परमसुख वत्तीसी	अज्ञात	१९ वी श०	२५ ५x११.५	१-२	
१२७६	१०८०६	परमात्मप्रकाश-भापा (ढालवद्ध)	मू० योगेन्द्रदेव सूरि टी० धर्ममन्दिर गणि शिष्य दयाकुशल	१९ वीं श०	२५ ५x१३	१-२६	र का १७४२ जेसलमेर लि क. प क्षमासागर लि स्था सोजतदुर्ग
१२७७	१२५६४	परमार्थशिक्षा		गु०१८८६	१४ ५x१० ५	९-१५	प्रारम्भ के ८ पत्र अप्राप्त
१२७८	१०८५० (३)	परसरामजी को कृत	परसराम शिष्य रामदास	१८६६	१७x१०.५	५४-११६	लि क खण्डूराम लि. स्था. कोटा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१२७९	१०८६६ (९)	परसरामजी के छुटकर सबद	परसराम	गु० १९१०	७ ५x६ ५	३१६-३९९	
१२८०	१०८६८ (२)	परसरामजी के छुटकर सबद	परसराम	१९२७	८.५x ७	२८-३९	लि क. केवलराम लि. स्था. सवाई जयपुर रावजी का बाग
१२८१	१२४२० (१४)	परसरामजी के छुटकर सबद	परसराम	२० वी श०	१६x१४	३४२-३५२	पत्र स. ३५२ पर सेवगराम के पद है।
१२८२	१२२०४ (१)	पवनविजय स्वरोदय	मोहनदास कायस्थ	१८५८	१७x१५ ५	१-२६	लि. क. फतेहचन्द लि. स्था अवन्तिका नगरे
१२८३	१०९०२ (१७)	पसुव (पशुओ) की रास		गु०१८०९	१५.५x१२ ५	८९-९०	पशु जीवन पर आध्यात्मिक विचार।
१२८४	१२३२० (२२)	पाच पाण्डव सज्झाय		१८ वी श०	२१ ४x१४.५	२७-२८	
१२८५	११०८२ (२)	पाच सहेलियारी वात		गु०१८४३	१८x१० ५	२३-२७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१२८६	१२३५० (४२)५-६	पाक्षिक प्रतिक्रमण एवं प्रतिक्रमण सूत्र		१६ वी श०	१६x११ ५	१११ १२२, १२२-१२८	प्राकृत एवं अपभ्रंश मे
१२८७	११०१३ (२७)	पाबूजीरा दोहा-सोरठा	लधराज	१८१८	२३x१५	१४८-१५६	र का १७७८ महाराजा जसवन्तसिंह जी के समय मे कुल दोहे ३०२
१२८८	१२३२० (३०)	पारणो (वटोडा वीर को)		१७९२	२१ ५x१४ ५	३५-३७	लि क ऋषि हरचन्द आर्या रतनाजी पठनार्थ
१२८९	१२३७० (२१)	पार्श्वनाथ-गीत	मुनि रत्नचन्द	१९ वी श०	१६x११ ५	२०७-२०८	
१२९०	१२२१८ (५) ६७	पार्श्वनाथ-गीत	हर्षकुशल	१८ वी श०	२६ ५x१०	८९ वा	
१२९१	१२२१८ (५)१०२	पार्श्वनाथ-गीत	जिनहर्षसूरी	१८ वी श०	२६ ५x१०	११९ वा	
१२९२	१२२१८ (५)१५१	पार्श्वनाथ-गीत	जसवर्द्धन	१८ वी श०	२६ ५x१०	१६४ वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१२६३	१२१६० (१)	पार्श्वनाथजीरो छन्द	अज्ञात	गु० १८६७	२१×११.५	१-२	लि क. रगसागर लि. स्था. जैतारण
१२६४	१२३७० (३०)	पार्श्वनाथजीरी नीसाणी	जिनहष	१६ वी श०	१६×११.५	२-७	गुटके में २६१ के बाद चार पत्रो को छोडकर पुन.-- पत्राङ्क १ से प्रारभ
१२६५	१२२१८ (५)१२५	पार्श्वनाथजीरी नीसाणी	जिनहर्ष	१८ वी श०	२६ ५×१०	१२५-१३७	
१२६६	१२३२० (२३)	पार्श्वनाथजीरी नीसाणी	जिनहर्ष	१८ वी श०	२१.५×१४.५	२८-३०	
१२६७	१२५३५ (१७)१	पार्श्वनाथजीरी लावणी	जिनराज	२० वी श०	१६×१२	११४-११६	पत्र स. ११६, ११७ पर सेवाराम तथा चद्रकिशन के स्फुट पद हैं।
१२६८	१२२१८ (५)४८	पार्श्वनाथजीरो बारामासो	जिनहर्ष	१७५५	२६ ५×१०	६४-६५	
१२६९	१२३७० (१७)८	पार्श्वजिन भयहरस्तोत्र		१६ वी श०	१६×११.५	१४८-१४९	पत्र स. १४९-१५५ पर सस्कृत मे 'ऋषिमडलस्तोत्र' है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं. में)	माप (सें.मी. में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३००	१२३७० (१७)७	पार्श्वनाथ नवग्रह स्तोत्र	जिनपद्मसूरि	१६ वीं श०	१६x११.५	१४७-१४६	'अपभ्रंश' में। गुटके में प्राचीन स्तुति स्तवन संग्रह है।
१३०१	१२२०५ (१७)	पार्श्वनाथ स्तवन	अज्ञात	१८ वीं श०	१७x११	२१ वां	
१३०२	१२३७० (४२)१३	पार्श्वनाथ स्तवन	सदानन्द पाठक	१६ वीं श०	१६x११.५	१३०-१३१	पत्र सं. १३२-१३६ पर रूपचन्द आदि कृत स्फुट पद हैं।
१३०३	१२३७० (१७)४	पार्श्वनाथ स्तवन	जिनभक्तिसूरी	१६ वीं श०	१६x११.५	१४३-१४४	पत्र सं. १४४-१४५ पर संस्कृत में 'मौनेकादशी स्तुति' है।
१३०४	१२३७६ (३)	पार्श्वनाथ स्तवन	बनारसीदास	२० वीं श०	१६x१४	१-३०	पत्र सं. २४ तक ६ पंक्ति बाद में १२ पंक्ति प्रतिपत्र।
१३०५	११५८४ (३५)	पार्श्वनाथ स्तवन	अज्ञात	१८ वीं श०	१६.५x१६	२६४ वां	पत्र खण्डित
१३०६	११५८५ (८)३४	पार्श्वनाथ स्तवन	अज्ञात	१६ वीं श०	१६.५x११.५	१६८-१६६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सॅ. मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३०७	११५८५ (८)४२	पार्श्वनाथ स्तवन	अज्ञात	१६ वी श०	१९ ५x११ ५	१७६ वा	१७९ पर आनन्दघन का पद है।
१३०८	११५८५ (८)४७-४८	पार्श्वनाथ स्तवन एव पद	वृद्धिकुशल, रूपचन्द्र	गु० १८४६	१९ ५x११ ५	१८७ वा	
१३०९	१२२०५ (१६)	पार्श्वनाथ स्तवन	मतिविशाल	१८ वी श०	१७x११	२० वा	
१३१०	१२२०५ (५०)	पार्श्वनाथ स्तवन	पासचद	१८ वी श०	१७x११	१३१-१३२	
१३११	१२२१८ (९)	पार्श्वनाथ स्तवन	रत्नहर्ष	१८ वी श०	२६ ५x१०	१७-१८	गुटका १७५५ से १७६७ तक विभिन्न स्थानो पर लिखा गया है। प्रमुख रूप से जैन स्तुतिस्तोत्र एव सज्झाय सगृहीत है। प्रारभ के १६ पत्र अप्राप्त
१३१२	१२२१८ (५)	पार्श्वनाथ•स्तवन	जगरूप	१८ वी श०	२६.५x१०	३४ वा	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स में)	माप (सें मी. में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३१३	१२२१८ (४)५१-५५	पार्श्वनाथ स्तवन	ज्ञानोदय, रत्नराज	१८ वी श०	२६ ५x१०	६१ वा	
१३१४	१२२१८ (५)११०	पार्श्वनाथ स्तवन (वामाराणी पार्श्वनाथ	जिनचंद	१८ वी श०	२६.५x१०	१२२ वा	'वामाराणी' पार्श्वनाथजी की माता का नाम था।
१३१५	१२५५१ (१०)	पार्श्वनाथ स्तवन	अज्ञात	१९ वी श०	१३x११	१०१ वा	पत्र स १०१-१०२ पर 'सीमधर जिन स्तुति' 'प्राकृत' मे है।
१३१६	१२५५१ (१६)	पार्श्वनाथ स्तवन	दानविनय	१७ वी श०	१३x११	१३४-१३५	
१३१७	१२५७५ (१६,२१)	पार्श्वनाथ स्तवन (रामपुरा)	गुणसागरसूरि शिष्य पद्मसागर हीरहर्ष	१९ वी श०	१३.५x१४	६४ ६८-७१	र. का. १६६३ पत्र स ७२-७३ पर 'देव-लक्षणारी' टीप है।
१३१८	१२५७५ (२६,३१)	पार्श्वनाथ स्तवन	मुनिमनोहर शिष्य हीरहर्ष गुणसागरसूरि शिष्य पद्मसागर	१९ वी श०	१३ ५x१४	८७-९० ९३-९४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि सं. मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३१९	१२५७५ (२३,३५)	पार्श्वनाथ स्तवन (मगसी पार्श्वनाथ)	अज्ञात, गुणसागरसूरि शिष्य पद्मसागर	१९ वी श०	१३ ५x१४	७४-७५ १०३ वा	पत्र स १०४ पर रायचन्द कृत स्फुट पद है ।
१३२०	११२८३ (५)	पाशाकेवली	अज्ञात	गु०१७८६	१६x१४ ५	७३-८२	अपूर्ण,कीटविद्ध
१३२१	११६४०	पाशाकेवली	अनारि	१८ वी श०	२९ ५x१३.५	१-२	स्फुट दो प्राचीन पत्र मात्र
१३२२	१०९२४ (२९)	पिसणश्रृंगार	सेवादास	१९ वी श०	२३x१२ ५	६३४-६३६	५१ से ७९ तक के दोहे अप्राप्त है ।
१३२३	१०९४८ (५)	पिसणश्रृंगार	सेवादास	गु० १९३५	१४ ५x७	९८-११६	
१३२४	१०९३८ (९)	पिसणश्रृंगार	सेवादास	गु०१८८५	१६ ५x८.५	५६१-५७०	दोहा १०१, सोरठा १९

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. में)	माप (सें.मी. में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३२५	१००६१	[illegible] वर्णन (जैन)		१९ वीं श०	२६.५×११	१-७	कल्पसूत्रों की कथाएं।
१३२६	११५८८ (२३)	पीपाजी की परची	अनन्तदास	१९६३	१८×१५	१९५-२३६	लि क जगजीवन ईसरदास पाठनाथ
१३२७	१२३८० (६८)	पीपाजी की परची	अनन्तदास	गु०१७२४	२०×१४	३४०-४१७	अपूर्ण
१३२८	१२५८५ (१)	पीपाजी की परची	अनन्तदास	१९२७	१९.५×१५	१-११६	गुटके मे परचीसाहित्य की दृष्टी से दुर्लभ सग्रह है। लि क. आरतराम शिष्य सूलभराम लि स्था वदनोर
१३२९	११६४८ (१८)	पीपाजी की वाणी	पीपा	गु०१८५३	२७×१६.५	५४९-५५२	राग ६, पद २१
१३३०	१६२०८ (२)	पुद्गल व्रत-अव्रत भेद		१७७४	२५×१८.५	६६-६८	लि क. मुनि आसकरण

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप से मी मे	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३३१	१०७५८	पुन्यविलास-रास	जिनहर्ष शिष्य शान्तिहर्षगणि	१८३०	२६ ५×१२.५	१-५६	पत्राक ३ से २२, २७, व ३१ से ३६ तक अप्राप्त । लि. क प. जैतसी गणि लि. स्था. डांगियावास (जोधपुर महाराज श्री विजयसिंह-राज्ये)
१३३२	११०१३ (३२)	पुरुषाधमछद		गु०१८२२	२३×१५	२०१ वा	
१३३३	१२४११ (४)	पुरुषोत्तम सिद्धान्त		१६ वी श०	२१×१४	६६-११०	
१३३४	१२४२२ (४)	पृथ्वीनाथजीरी सबदी	पृथ्वीनाथ	गु०१८३१	१५×१०.५	२४२-२४३	
१३३५	११०१३ (२३)२	पेटरा कवित्त		गु०१८२२	२३×१५	१४१-१४३	३४ कवित्त हैं ।
१३३६	१२१६६(३)	पोषदसमी व्याख्यान		गु० १६७५	२७×१४	२७-२६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३३७	११६८१	प्रतापरासो-जङ्गमगढ रासो (प्रतिलिपिमात्र)	जाचिग-जीवण	२१ वी श०	२०x२०.५	१-१५	१८७३ की प्रति से प्रतिलिपित. प्रतिष्ठान की ग्रन्थ-माला मे प्रकाशित। लि क. फतेहचन्द शर्मा लि स्था अलवर
१३३८	१०६५४ (८)	प्रतिक्रमणसूत्र (पडिक्कमणसूत्र)		गु० १८७४	२४x१६.५	९६-१०८	'प्राकृत' मे है।
१३३९	१२२०५ (२४)	प्रतिक्रमणसूत्र		१७५०	१७x११	७१-७७	पत्र स· ७८ पर कार्यसिद्धि का मन्त्र है।
१३४०	१२२०५ (२)	प्रतिक्रमणसूत्र-भाषा		१८ वी श०	१७x११	५२-५६	
●१३४१	११५८४ (५)	प्रत्युत्तरा (जैन) (मूक रिया)	कुशललाभ	१७०२	१९.५x१६	२९-३०	माधवानल कामकदला चौपाई से उद्धृत लि. क हर्ष सुन्दर-कक्कसूरि विजयराज्ये लि स्था. लाबिया पत्र स ३० पर बालक होने का मन्त्र एव तन्त्र है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी में	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३४२	१०८७८	प्रत्येकबुद्धि चतुष्पदिका	समयसुन्दर वाचक	१८९७	२४ ५×१२ ५	१-२८	र. का १६६५ लि. क. सवाईसागर लि स्था बीकानेर
*१३४३	११५८२	प्रबोधचन्द्रोदयनाटक-भाषा	कवि मल्ह अपरनाम मथुरादाम शिष्य खेमचन्द्र	१७१७	१६ ५×१५	१-३८	पत्र सख्या १-३ अप्राप्त
१३४४	१०८४०	प्रवीणसागर	प्रवीणराय	१९ वी श०	३५×२०	१२-१४१	अपूर्ण । अष्टम लहर से ७२ वी लहर तक । सजिल्द । सिलाई टूटी हुई है ।
१३४५	११५८४ (३१)	प्रश्नचदऋषि चउढालियो	ऋषि उदयगणि	१७२८	१६ ५×१७	२२४-२२५	
१३४६	१२५६१ (१८)	प्रश्नोत्तर	रामदास	२० वी श०	१५ ५×१०	९७-९९	पत्र स ६५ पर 'आठ सुख' पत्र स ९६ पर 'स्थूल शास्त्र परिचय' है ।
१३४७	१२५९१ (३३)	प्रश्नोत्तर	हरिदेव	२० वी श०	१५ ५×१०	२१२-२१५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३४८	१०९५६ (५)	प्रश्नोत्तर ज्ञानरत्नमाला भाषाप्रश्न-प्रकाशिका	मू शकराचार्य रामदासभट्ट शिष्य तुलसीदास	२० वी श०	३२x१६	१-१५	पद्यानुवाद र स्था मलारना "मथुरा मडल माहि"
१३४९	१०९३८ (७)	प्रश्नोत्तरमाला		गु० १८८५	१६ ५x८ ५	५०२-५२३	
१३५०	१०८४९ (२५,२६)	प्रश्नोत्तरमाला		गु० १९३१	१७x११	१८४-१८९	
१३५१	१०९०० (६)	प्रश्नोत्तरी	जनहरिराम	२० वी श०	१२x८ ५	४९-५१	
१३५२	१२५८१ (४)	प्रश्नोतरी		१९ वी श०	१६x१० ५	३९-४१	पत्र स. ४१ पर स्फुट सवैया है।
❀१३५३	१०८४८ (८)	प्रश्नोत्तरीभाषा	बालकराम	१९ वी श०	१५.५x८	६८२-७१५	र का १८२१ भीलवाडा
१३५४	१०९२४ (८)	प्रह्लादचरित्र	जनगोपाल	गु० १८४०	२३x१२ ५	५०४-५१२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३५५	१०९४० (३)	प्रह्लादचरित्र	जनगोपाल	गु०१८८३	१५ ५x१०.५	४१९-४४५	
१३५६	१०९४५ (४)	प्रह्लादचरित्र	जनगोपाल	१९ वी श०	१४ ५x७ ५	४०५ ४५४	
१३५७	१०९४८ (३)	प्रह्लादचरित्र	जनगोपाल	गु०१९३५	१४ ५x७	३०-९६	
१३५८	११५८३ (९)	प्रह्लादचरित्र	जनगोपाल	गु०१६९३	१८x१५	७८-९९	
१३५९	१२३२९ (४)	प्रह्लादचरित्र	जनगोपाल	२० वी श०	२३x९.५	३६२-३७३	
१३६०	१२३८० (२३)	प्रह्लादचरित्र	अग्रदास	गु०१७२४	२०x१४	२६७-२७८	
१३६१	१२४२० (१७)	प्रह्लादचरित्र	जनगोपाल	२० वी श०	१६x१४	३६०-३८०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३६२	१२४२२ (१८)	प्रह्लादचरित्र	जनगोपाल	गु० १८३१	१५x१० ५	३९९-४१२	
१३६३	१२५६१ (१२)	प्रह्लादचरित्र	जनगोपाल	१९ वी श०	२३ ५x१७	३६२-३६६	
१३६४	१२५६९ (४)	प्रह्लादचरित्र	जनगोपाल	१८२२	१६ ५x११	२३-४६	लि क रूपराम लि स्था. खेड़ापा
१३६५	१२५७४ (१०)	प्रह्लादचरित्र	जनगोपाल	२० वी श०	१६ ५x१० ५	१९५-२२७	
१३६६	१२९७२ (११)	प्रह्लादचरित्र	जनगोपाल	१९ वी श०	१०.५x८.५	२८१-३४६	
१३६७	१२२२९	प्रह्लादचरित्र सचित्र	जनगोपाल	१९४१	३३.५x१७ ५	११३	चित्र स —९ पूर्व प्रति की चोरी हो जाने से ललितराम द्वारा पिता की आज्ञा से जोधपुर मे शीघ्रता से लिखी गई प्रति।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३६८	१२५५१ (३१)	प्राभातिक गीत	जयमल	१७ वी श०	१३x११	१७१-१७२	
१३६९	१२२१८ (५)२५	प्राणातपात गीत		१८ वीं श०	२६.५x१०	३७ वां	
❀१३७०	१२०६९ (५)	प्रिथीराज चहूग्राण रासउ-रसाल	चन्दवरदाई	१६६७	१५ ५x१४	६१-१०७	धारणोज वाली बहुचर्चित प्रति, भगवानदासजी पठनार्थ पत्र स १०९ पर सस्कृत मे स्तुति है। पत्र स. १११ पर स्फुट नुस्खे हैं।
१३७१	११०१३ (४४)	प्रेमपत्री		गु०१८१९	२३x१५	३१४-३१५	पत्नी द्वारा २१ दोहे एव पति द्वारा २५ दोहे कहे गए हैं।
१३७२	१२२१७ (१)	प्रेमरत्नाकर	भय्या रत्नपाल	१९ वी श०	२१.५x१२	१-१३	प्रथम पत्र खण्डित तृतीय से पचम तरग पर्यन्त

ग्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३७३	१०८६१ (१)	प्रेम-स्तुति	हरिरामदास	१६ वी श०	१६x१२	१-२	
१३७४	११६४८ (२७)	फरीदजी के पद	फरीद	गु०१८५३	२७x१६ ५	५७५४-७५	गुटके मे सगुण, निर्गुण सतो की वाणी के ३४,००० श्लोक है । पत्र जीर्ण है ।
१३७५	१२२०५ (१३)	फलवर्द्धी-पार्श्वनाथ स्तवन	जिनरगसूरि	१८ वी श०	१७x११	१६ वा	
१३७६	१२२०५ (३१,३५)	फलवर्द्धी-पार्श्वनाथ स्तवन	जिनहर्षसूरि	१८ वी श०	१७x११	११३-११४	पत्र स १२० पर नामदेव का पद एव (जैन) देववदनरी विधि' है ।
१३७७	११६३५ (२)	फूलजी नं फूलमतीरी वात	अज्ञात	१६ वी श०	२६ ५x१६ ५	५६-६४	प्रारभ मे गणपति का चित्र है । अन्य चित्रो के लिए स्थान छोड दिया गया है । लि. क पुरोहित फतेकरण लि स्था जोधपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३७८	१०६५५ (१)	फूलजी नै फूलमतीरी वात	अज्ञात	गु०१६०५	२३ ५x१७.५	१-१०	अपूर्ण
१३७६	१०७०१ (२)	फूलजी नै फूलमतीरी वात सचित्र	"	गु०१८६२	१६.५x१२	७३-१५२	पत्र स. ७० से ७२ तक अप्राप्त। अपूर्ण। चित्र स. — ३६ लि. स्था. मेड़ता
१३८०	१२२२७ (१-२)	फूलजी नै फूलवतीरी वात सचित्र	"	१६ वी श०	१८ ५x१३	८-५१	चित्र स – १८; पत्र मरम्मत किए हुए हैं। दो प्रतियो को एक साथ सी दिया गया है। दूसरी प्रति महाजनी लिपि मे सवत् १६५५ की है। पत्र स १-७ अप्राप्त, बीच के दो पत्र खण्डित
१३८१	१२३७१ (१८)	फूलजी नै फूलवतीरी वात	"	१८५२	१८ ५x१६ ५	६२-६४	गुटका १८३५ से १८३६ तक भीखनदास द्वारा नागौर मे लिखा गया; अतिम कृति जोधपुर मे लिपिकृत है। अगले पाच पत्रो पर स्फुट नुस्खे हैं।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३८२	१२५८५ (९)	फूलीबाईरी परची	सुखसारण	गु०१९२७	१९ ५×१५	२६९ २८२	महाराजा जसवतसिहजी के समय की जाटकुलीय भक्त महिला
१३८३	१२२२८ (५)५९	वभणवाडी सज्भाय	कमलकलश	१८ वी श०	२६ ५×१०	८१-८२	
१३८४	१०९३५ (३)	बडे रारी वसावलीरी याददाश्त		१९ वी श०	२१ ५×१७.५	१-७	सवत् १७०० मे परबतसिह जी के पुत्र लूणकर्ण के समय से प्रारभ । महाराजा मानसिह जी के समय इनके पिता सदाशिव को 'लाख-पसाव' से अलकृत किया गया था ।
१३८५	१२६१२ (८)	वडो-कक्को	गुलाबचद	गु०१८१७-१८३६	२५x१५	२४ ७७	उपदेशात्मक पद्य
१३८६	११६४८ (२२)	वाजीदजी की वाणी	वाजीद	गु०१८५३	२७×१६ ५	५६३-५६४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३८७	१२५६२ (४)	बारहभावना	जगदीश स्वामी	१८८९	१४.५x१० ५	६१ वा	लि क लिछमण
१३८८	१२५५१ (१६)	बारहभावना सधि	जयसोम शिष्य प्रमोद माणिक्य	१७ वी श०	१३x११	११२-११९	र का. १६४६ बीकानेर
१३८९	११८६६	बारहमास व्रत-स्नान-विधि			२२x११	२-३४	अपूर्ण; पद्मपुराण एव स्कन्धपुराणागत
१३९०	१२५७७ (११)१, (१६,१८	बारहमासी	बालकदास हृदयराम शिष्य माधोदास तुलसीदास	१९ वी श०	१४ ५x१०	१३०-१३५ १६१-१६५ १६६-१६८	
१३९१	११५८५ (४)	बारहमासी		१९०४	१९.५x११ ५	३५-३८	गु० कोचर परिवार का है। लि क लिखमीचन्द कोचर लि स्था. बाला हेड़ी, सवाईजैपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (से मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३६२	१२२०८ (६)	बारहव्रत बारह-अतिचार		गु० १८वीश०	२५x१८ ५	११४-११८	महाजनी लिपि
१३६३	११०६१ (२)	बारेमासारा दूहा			१६ ५x१२	१२३-१२५	पत्र म १२२-१२३ पर राधाकृष्ण-भक्ति परक दोहे है ।
१३६४	११०८६	बारेमासो	ब्रह्मदास शिष्य रामदास	१८१८	२१ ५x१५	२ २।	अगले पत्रो पर मीरा के पद, 'चडकलो शकुन विचार' एव 'हनुमानाष्टक' है ।
१३६५	११५८५ (८)५०	बारेमासो		१८८७	१६.५x११.५	१८६ १६२	
१३६६	१०८४७ (४)	बालणचरित्र	परमराम	गु०१६६६	१७x८	१०३-१२६	
१३६७	१०६०२ (६)	बालणचरित्र	परसराम	गु०१८०६	१५ ५x१२ ५	३३-४०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३९८	१०९२४ (३०)	बालणचरित्र	परसराम	२० वी श०	२३×१२.५	६३६ ६३८	गुटका १८४० से १९३० तक लिखा गया है।
१३९९	११००३ (१)	बालणचरित्र	परसराम	१९ वी श०	२६ ५×१४ ५	१-३	कीट-विद्ध पत्र स ३-४ पर सोलह स्वप्न विचार है।
१४००	१०९५०	बालापद्धति		१९२२	१४.५×८	११-८६	नाथ सम्प्रदाय की तात्रिक विधि लि स्था. जोधपुर
१४०१	१२२१८ (५)१२४	बावीस अभिक्ष बत्तीसी	अज्ञात	१८ वी श०	२६ ५×१०	१२५ वा	
१४०२	१२१४८	बासठियो बालावबोध		१९१९	२६×१२.५	१-१४	'जीव के ६२ मार्गणा करे ते कहै छै।' लि क. गणपतविजय लि. स्था सुभटपुरनयरे (जोधपुर)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४०३	१२२२८ (५) ५२	बाहुवली-गीत	आणद मुनि	१८ वी श०	२६ ५x१०	६६ वा	
१४०४	१२२१८ (५)३९	बाहुबली सज्झाय	समयसुन्दर	१७५५	२६ ५x१०	५७ वा	
१४०५	११३१३ (५)	विहारी सतसई	बिहारीदास	गु०१८०२	१५x१४	१-५२	पत्र स. ४८-५१ अप्राप्त ७१५ दोहे हैं।
❀१४०६	१२२०७ (३)	विहारी सतसई	बिहारीदास	गु०१८१४-१८२४	२४x१७ ५	१-४४	❀ अत मे जसभद्रसूरि के समय (१८३९) पाटण मे राव लाखणजी द्वारा महालक्ष्मी की स्थापना तथा 'मेहता साख' के प्रारभ आदि का ब्यौरा दिया है।
१४०७	११०८५ (१२)	बिहारी सतसई के स्फुट दोहे	बिहारीदास	१९ वी श०	१६.५x१३.५	७१-७३	पत्र स. ७२ पर गोरखनाथ के कवित्त हैं। अतिम पत्रो पर कबीरदासजी की साखी आदि है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल वि.स मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४०८	११०५६	बिहारी सतसई सटिप्पण	विहारीदास	१७८६	२८x१०.५	१-३४	लि. क. रंजीत सागर गणि लि. स्था. जोधपुर ७०३ दोहे हैं
१४०९	१२३७१ (१२)	बिहारी सतसई सटीक	मु. बिहारीदास	गु०१८३९	१८ ५x१६.५	१-१२२	अपूर्ण, ६९७ दोहो तक
१४१०	१२३७० (१७)६	बीज स्तुति	लब्धिविजय	१९ वी श०	१६x११ ५	१४६ वां	
१४११	११०१३ (३०)	बुद्धिरासो		गु०१८२२	२३x१५	१८९-१९२	शिक्षाप्रद ६७ छंद
१४१२	१२२१८ (५)८	बुधरासो		१८ वी श०	२६.५x१०	३०-३१	शिक्षाप्रद ४४ छंद
१४१३	११५८५ (३)	बुलाकीदास कायस्थ की विगत		१८७६	१९.५x११.५	३४-३६	लि. क. शिवदास कोचर
१४१४	१२३७८ (२२)	ब्रजसूची उपनिषद्		१८ वी श०	२२x१५.५	१४०-१४१	कृति संस्कृत मे है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४१५	१२४११ (५)	ब्रह्मजिग्यास उपनिषद्		१६ वी श०	२१x१४	१११-११४	
१४१६	१२३८० (१७)	ब्रह्मजिग्यास उपनिषद्		गु०१७२४	२०x१४	२१८ २२०	
१४१७	१२२२६ (८)	ब्रह्म जिज्ञासा भाषा		गु०१८७७	१४x१२ ५	५६-६०	
१४१८	१२३७२ (११-१०)	ब्रह्मजिग्यास, ब्रह्मज्ञानसागर	चरनदास शिष्य सुखदेव	१६ वी श०	२४x१६.५	१४४-१४५ १२६-१४४	११ वी कृति अपूर्ण।
१४१६	१२५७१ (५)	ब्रह्मध्यान	संतदास	१६ वी श०	१४.५x१०	७६-८७	
१४२०	१२२१४ (६)	ब्रह्मनामस्तुति आदि	जनतुरसी	१६ वी श०	२१.५x१३	१०३-१०७	वाणी के स्फुट प्रकरणमात्र
१४२१	१०८६६ (२)	ब्रह्मस्तुति	हरिरामदास	गु०१६१०	७ ५x६.५	११-१३	गीतक छंद

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं में)	माप (सें मी में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४२२	१२५७२ (२)	ब्रह्मस्तुति	हरिरामदास	१९ वीं श०	१० ५x८ ५	६-९	
१४२३	११०८९ (७)	भँवरगीता (भ्रमरगीत)	विष्णुदास	१९ वी श०	१८.५x१६ ५	६६-७५	छंद संख्या १२०
१४२४	१२५७७ (१०)	भक्त पचीसी	बालकदास शिष्य प्रेमदास	१९ वी श०	१४ ५x१०	१३०-१३५	
१४२५	११०१२	भक्तमाल	द्यालबाल (दयालदास)	१८७२	३०x१४ ५	१-८०	लि क. तुलसीराम लि. स्था. पचगाया केवास टेउ मध्ये ५३६ छंद है।
१४२६	१२३७३ (१५)	भक्तमाल	द्यालवाल शिष्य रामदास	१९०९	२२x१५ ५	७७-१९२	र का. १८६१ लि क बिहारीदास वैष्णव लि स्था पाली
१४२७	१२३८० (२२)	भक्तमाल	नारायणदास (नाभोदास) शिष्य अग्रदास	गु० १७२४	२०x१४	२३४-२६६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४२८	१२४२० (३)	भक्तमाल	रामदास	२० वी श०	१६x१४	१-२०	
१४२९	१२५९१ (२६)२	भक्तमाल	रामदास	२० वी श०	१५ ५x१०	१५३-१७४	
१४३०	१२३२३	भक्तमाल टीका- 'भक्तिरसबोधिनी' युक्त	मू. नाभादास टी प्रियादास	१९२८	२९ ५x१७	१-१०५	र का १७६९ लि क हरसुखदास, तितरी के सतो की परम्परा का लि. स्था बीदासर
१४३१	१२५०८	भक्तमाल टीका- 'भक्तिरसबोधिनी' युक्त	मू नाभादास टी प्रियादास टिप्पण लालदास	१८६२	३० ५x१४	१-१०४	पत्र स १-२,९५-१०४ खण्डित
१४३२	११०४३	भक्तमाल टीका- 'भक्तिरसबोधिनी' युक्त	मू. नाभादास टी प्रियादास	१८७६	३१x१४ ५	१-१५१	र का. दस सात सत्तउन्हत्तर फाल्गुन मास वदि सप्तमी लि क जमनादास लि स्था जोधपुर प्रथम एव अंतिम पत्र खण्डित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४३६	१२०७४	भक्तमाल भाषा टीका-'भक्तिरसबोधिनी'	मू नाभादास टी, प्रियादास	१८४६	३०.५x१५	१-८२	लि. क, क्रानडपथी सदाराम बाबाजी सूरतरामजी के लिए। लि स्था नागपुर (नागोर) पत्र स ६६ अप्राप्त
१४३७	११५५२	भक्तमाल भाषा टीका-'भक्तिरसबोधिनी'	मू नाभादाम टी प्रियादास	१८४०	२५x१२ ५	१-१४२	र का टीका १७६६ लि क, रामकृष्ण वैष्णव लि. स्था नागपुर (नागोर)
१४३८	११५४४	भक्तमाल भाषा टीका-'भक्तिरसबोधिनी'	मू नाभादास टी प्रियादास	१६ वी श०	२५ ६x११ ५	१-१२८	र का टीका १७६६ वृन्दावन लि. क. चरणदास वैष्णव लि. स्था गाव छपिया पत्र स. ८५ वा अप्राप्त ४६ वा दोबार अत मे एक होली का पद है।
१४३६	११५६२	भक्तमाल भाषा टीका-'भक्तिरसबोधिनी'	मू. नाभादास टी. प्रियादास	१८६५	३१x१५ ५	१-८६	र. का टीका १७६६ लि. क. यमुनादास लि. स्था. मुरलीमनोहरजी का मदिर,बीकानेर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४४०	१२०१५	भक्तमाल भाषा टीका-'भक्तिरसबोधिनी'	मू नाभादास टी प्रियादास	१६ वी श०	१४.५×११	१ ६८	अपूर्ण, ३१३ दोहे पर्यन्त
१४४१	११५४२	भक्तमाल भाषा टीका-'भक्तिरसबोधिनी'	मू नाभादास टी प्रियादास	१६ वी श०	२०×११ ५	२ २१७	प्रथम पत्र अप्राप्त अत मे लालदास कृत प्रशस्ति पद्य है।
१४४२	१२३८४	भक्तमाल भाषा टीका-'भक्तिरसबोधिनी'	मू नाभादास टी प्रियादास	१६ वी श०	३१ ५×१६	१-८४	र का मूल १७६६ अत मे लालदास कृत प्रशस्ति पद्य है।
१४४३	११६४४	भक्तमाल भाषा टीका	मू. राघोदास टी. चतुरदास	१८८७	२६×१५	१-६४	र का. मूल १७१७ र का टीका १८५७ लि क रामभजनदास लि. स्था नागोर प्रतिष्ठान की ग्रन्थमाला में प्रकाशित।
❀१४४४	१२५०३	भक्तरतन	जैदास	१६३२	२१ ५×१६	१-२५	र का १८३७ २३३ दोहे है। महाजनी लिपि मे

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४४५	१२५५६ (४)	भक्त-विरुदावली	भगवानदास	गु०१८५६	२२ ५x१६	१०७-११०	
१४४६	१२२१८ (३)	भक्तामर भाषा	हेमराज	१८ वी श०	२६ ५x१०	२०-२३	
१४४७	१२३२० (२८)	भक्तामर स्तवन	सोमरत्न	१८ वी श०	२१ ५x१४ ५	३३ वा	
१४४८	१२२०५ (२३)	भक्तामर स्तोत्र	मानतु गसूरि	१७५०	१७x११	६४-६६	लि. क विद्याप्रमोद लि स्था. रूपनगर पत्र स ७० पर सतान होने का नुस्खा है ।
१४४९	१०८६८ (१)	भक्ति जोगग्रन्थ	रामानन्द	१९ वी श०	१० ५x८	१-३	
१४५०	१०८६९ (१४)	भक्ति जोगग्रन्थ	सुन्दरदास	गु०१९२७	८ ५x७	५५०-५५८	
१४५१	१०९०२ (१३)	भक्ति जोगग्रन्थ	रामानन्द	गु०१८०९	१५ ५x१२.५	८२-८३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४५२	११४८५	भक्तिभावती	लालदास शिष्य द्वारिकादास शिष्य प्रपन्न गैसानन्द	१९ वी श०	२५×११ ५	११५	र का १६०९ मथुरा-केशवालय
१४५३	१०९४० (४)	भक्तिविधान-जोगग्रन्थ		गु० १८८३	१५ ५×१०.५	४४६-४६५	गर्भगीता, भागवत आदि के श्लोक देते हुए भक्तिमहिमा का वर्णन किया गया है।
१४५४	१०८६६ (८)	भगतमाल	द्यालबाल शिष्य रामदास	गु० १९१०	७ ५×६ ५	१५८-३१६	लि क रामसजन शिष्य सेवगराम
१४५५	१०८७२ (१)	भगतमाल	द्यालबाल शिष्य रामदास	१९ वी श०	२७ ५×१५	१-४९	र का १८६१ काती वद एकादशी लि क, पूरणदास शिष्य द्यालबाल
⊛१४५६	१०८७२ (२)	भगतमाल	पूरणदास	१९ वी श०	२७ ५×१५	१-४	अपूर्ण, चार पत्र मात्र हैं।
१४५७	१०९६७	भगतमाल का प्रसग-दृष्टात		२० वी श०	२५ ५×१२ ५	१-७०	१०० दृष्टांत व कथाए दी हैं। अत मे कुलक्षणा नारी के बारे मे दो सवैये है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८५८	१०८५१ (६)	भगतविरुद	चरनदास	२० वी श०	१५ ५x१०	२००-२०३	
१४५६	१२३८० (१)	भगतिप्रताप		गु०१७२४	२०x१४	१११ वा	अपूर्ण
१४६०	१२५०४ (१)	भगवद्गीता सभाषा (गद्य)		१६०३	२३x१६ ५	१-५२	स्याही फैली हुई है। लि स्था जोधपुर
ꙮ१४६१	१२०२०	भगवद्गीता सभाषा टीका (अपरनाम-परमानन्दप्रबोध)	आनन्दराम नाजर	१६०६	२३ ५x२०	१-१६७	लि क गुसाई मानपुरी लि स्था जोधपुर,तखतसिह विजयराज्ये पत्र चिपके हुए है। अतिम पत्र खण्डित।
१४६२	१२२६३ (१)	भगवद्गीता सभाषा टीका सचित्र		१६ वी श०	२२ ५x१६	१-८३	चित्र स —४५ लि. क एव चित्रकार विट्ठलदास

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४६३	१२३०६	भगवद्गीता सभाषा टीका सचित्र	आनन्दराम नागर	१६१५	३०.५×१५ ५	१-६६	चित्र स.- २५ लि. क. वैष्णव भगलदास कबीरपथी लालदास पठनाथ
१४६४	१२५६१ (१८)	भगवद्गीता सभाषा	भगवानदास निरजनी	१६ वी श०	२३ ५×१७	३७३-३८०	पंचम अध्याय पर्यन्त। पत्र जीर्ण
१४६५	१०८४८ (४)	भगवद्गीता भाषा पद्यानुवाद	हरिवल्लभ	१६ वी श०	१५ ५×८	५०६-५६४	
१४६६	१०८४६ (४)	भगवद्गीता भाषा पद्यानुवाद	हरिवल्लभ	गु०१६३१	१७×११	१-६१	६८४ दोहे, प्रारंभ के तीन पत्रो पर बारखडी है। लि. क. साधु छूछमराम
१४६७	१०८६५ (१)	भगवद्गीता भाषा पद्यानुवाद	हरिवल्लभ	गु०१६४६	१२.५x८	१-२६	पत्र स. २७ से २८ रिक्त
१४६८	१०६२७ (५)	भगवद्गीता भाषा पद्यानुवाद	हरिवल्लभ	गु०१८०६	२० ५×१०	१४६-१५३	अपूर्ण
१४६९	११२६४	भगवद्गीता भाषा पद्यानुवाद	हरिवल्लभ	२० वी श०	१६×१२	१-७३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४७०	११४६६	भगवद्गीता भाषा पद्यानुवाद	हरिवल्लभ	१६ वी श०	२२ ५x१३ ५	७-६३	अपूर्ण १ से १६ एव अतिम पत्र अप्राप्त
१४७१	१०८४१ (१)	भगवद्गीता सभाषा (गद्य)		१६००	२८x१६ ५	१-५१	लि. क. मुरलीधर पुरोहित लि. स्था जोधपुर
१४७२	१२२२५ (१)	भगवद्गीता सभाषा (गद्य) सचित्र		१६ वी श०	२४ ५x१६ ५	१-८६	गु० चित्र स. ४६ पत्र स.- ५३ वा अप्राप्त
१४७३	१२४६४ (२)	भगवद्गीता सटीक 'पदबोधिनी टीका' एव 'ज्ञानसतसई टीका'	भवानीदास पाठक जनहरिदास	१६२३	३३x२१	५-१५६	लि क मूरतराम ब्राह्मण लि स्था सिकन्दराबाद की छावनी र का १८११ भवानीदास पाठक ने पदच्छेद व अर्थ मात्र दिया है।
१४७४	१२३५३	भगवद्गीता सटीक 'बालबोधिनी' टीका	कालूराम बोहरा	२० वी श०	३१ ५x१६ ५	१-१५६	त्रिपाठ अपूर्ण, १८ वें अध्याय के ७७ वें श्लोक तक

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४७५	१२४११ (१)	भगवद्गीता सटीक 'बालबोधिनी टीका'	कालूराम बोहरा पुत्र रामदत्त	१९ वी श०	२१×१४	३९-१८३	र. का. १८२५ पत्र स १ से ३८ अप्राप्त
१४७६	१०९५७	भगवद्भक्ति रत्नावली भाषा टीका सहित	मू. विष्णुपुरी टी चतुरदास शिष्य सतदास	१८९६	३२×१६	१-१५२	लि क आत्माराम 'मारवाड के पूर्व भाग मे भाषा लिखने का कार्य प्रारभ किया'
❀१४७७	१०९३२ (१)	भगवानदासजी की वाणी	मू भगवानदास सकलनकर्त्ता– काशीराम	१९२८	१७×१३ ५	१-३४३	लि क दयाराम लि स्था महामन्दिर-जोधपुर
१४७८	१०९३४ (३)	भगवानद सजी की वाणी	भगवानदास शिष्य रामचरण	१९ वी श०	१४×८	७८-७०७	लि क सुलभदयाल, हरिदास एव मोबतराम
१४७९	१०९४४ (३)	भगवानदासजी की वाणी	भगवानदास शिष्य रामचरण	२० वी श०	८×५	२१-४४	
१४८०	१०९४५ (२)	भगवानदासजी की वाणी	भगवानदास शिष्य रामचरण	१९ वी श०	१४ ५×७ ५	२३६-३१९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४८१	१२२१८ (५) ८८	भजगोविन्द स्तोत्र	शकराचार्य	१७६७	२६ ५×१०	१०६-१०८	कृति सस्कृत है लि. क रामकृष्ण लि. स्था डिडपुर
१४८२	१२२२६ (१३)	भजगोविन्द स्तोत्र भाषा	मू. शकराचाय	गु० १८७७	१४×१२ ५	६३-६४	पत्र स. ६५ पर तुलसीदास जी कृत स्फुट दोहे है।
१४८३	१२११८	भड्डलीपुराण		१९ वी श०	२५ ५×१० ५	१-१२	अत मे नक्षत्रो की स्थिति के आधार पर वर्षा का फलाफल दिया है जो अपूर्ण है।
१०८४	१०८४९ (१६)१५	भरत की बारामासी	लालदास	गु० १९३१	१७×११	१२१-१२४	कर्त्ता वासबरेली के निवासी थे।
१४८५	१२१८५	भरत बाहुबलि सवाद	लक्ष्मीवल्लभ शिष्य लक्ष्मीकीर्ति (खेमकीर्ति शाखा)	१८६९	२५×१२	१-५	छन्द सख्या १०३ लि. क. पडित तिलकनिधान ज्ञानानदजी वाचनार्थं लि. स्था. अजमेर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४८६	१०८६८ (५)	भरथरी उपदेश		गु०१६२६	१३x ८५	८६-६५	
१४८७	१२२२६ (२२)	भरथरीजी की सबदी		गु०१८७७	१४x१२.५	६३४-६३८	
१४८८	१२४२६ (११)	भरथरीजी री लावणी	जरणादास (चरणादास) (नाथपथी)	२० वीं श०	१६ ५x१३	१-३	गुटके के प्रारभ मे सादूराम द्वारा अपनी चेली हीरा को गुटका बख्शीस करने की टीप है।
१४८९	१२३७३ (१४)	भरथरी वैराग्य		२० वीं श०	२२x१५.५	पृ ४१-७४	पृ. ४१ पर गर्भ थभन का मंत्र है।
१४९०	१२४२१ (५)	भरम बिघूंस को अग (भ्रम विध्वंस को अग)	हरखराम	गु०१८६३	१७x१२	११४-११६	पत्र स. १०२-११४ पर इन्ही की 'चितावणी' है।
१४९१	१२०६७ (३)	भर्तृहरि शतकत्रय भाषा पद्यानुवाद	महाराजा प्रतापसिंह	१६२६	२३ ५x१७	१-३७	र. का. १८५१ लि. क. बोहरा चदलाल लि स्था जोधपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि म मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
ॐ१४९२	१०९२६ (४)१-३	भर्तृहरि शतकत्रय भाषा पद्यानुवाद	भावनादास	गु०१९३६	२१×१५.५	२२०-२४४ २४५-२६५ २६५-२८६	अत में पत्र सं. २८६-२९१ पत्र सतदासजी के पद हैं।
१४९३	१२२१८ (५)३०	भवानीजी री पूजा विधि		१७६३	२६ ५x१०	४३ वा	अत मे स्फुट तान्त्रिक मत्र हैं।
१४९४	१२२१८ (५)३१	भवानी स्तुति		१७६३	२६ ५x१०	४४ वा	
१४९५	१०८४९ (१३)	भागवत (छुटकर दोहे)	पीताम्बरदास	१९३१	१७x११	१५-४४	दोहा-बद्ध भाषा की गई है। कर्त्ता-मथानिया के थे। लि. क. मनोरथराम द्वादशस्कन्ध पर्यन्त
१४९६	१२५८७	भागवत एकादशस्कन्ध दीपिका भाषा	भावनादास शिष्य दामोदर	२० वीं श०	२० ५x१६ ५	१-११८	र. का. हिमकर लोचन नद ससि = १९२१ महाराजा तखतसिंहजी विजयराज्ये। किंचित कीटविद्ध

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४९७	११६६५	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा (गद्य) सचित्र		२० वी श०	३१x१४ ५	२-२६	चित्र स – १६ अपूर्ण, दशमस्कन्ध के बारहवे अध्याय के प्रारभ तक।
१४९८	१०८४५ (२)	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१८८६	१५ ५x१० ५	५२६-७६१	र का १६९२ लि क जैरामनारायण लि स्था, पोकरण
१४९९	१०८५३	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१८८६	३०x१४ ५	१-१४३	र. का १६९२
१५००	१०८६५ (६)	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१९४९	१२ ५x८	१८-४९	द्वितीय अध्याय पर्यन्त लि क साधु छूछमराम लि स्था सूरसागर रामद्वारा, जोधपुर
१५०१	१०८६६ (११)	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	गु०१९१०	७ ५x६.५	४२७-४८९	११ से १४ वें अध्याय तक।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५०२	१०८७३	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुर्दास शिष्य सतदास	१९ वी श०	२८×१५	१-८२	र. का. १६९२ अपूर्ण, २१ वें अध्याय के ३८ वें पद्य तक
१५०३	१०९२४ (११)	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुर्दास शिष्य संतदास	गु०१८४०	२३ ५×१२ ६	५२१-५३४	अपूर्ण, २६ वे अध्याय पर्यन्त।
१५०४	१०९२७ (४)	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१८०९	२०.५×१०	७-१४६	पत्र बडकने हैं। प्रारभ की तीन कृतिया संस्कृत मे हैं।
१५०५	१०९३१ (१)	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१९ वी श०	१४×१० ५	१-३०७	र का. १६९२ चौपाई २३९४ दोहा ४४
१५०६	१०९३८ (२)	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुर्दास शिष्य सतदास	गु०१८८५	१६.५×८ ५	३-४६०	र का. १६९२ जेठ शुक्ला ९ मगलवार
१५०७	१०९४१ (१)	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुर्दास शिष्य सतदास	गु०१९३७	१७×१० ५	१-८०	लि. स्था. श्री पारी मध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५०८	१०६६१	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१८८२	२४.५×१२ ५	१-११६	लि. क. गोविन्दराम साधु लि. स्था. लोहावट ग्राम
१५०९	११५४१	भागवत एकादशस्कन्ध भापा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१९ वी श०	२५ ५×११	१-२५	प्रथम पत्र खण्डित अपूर्ण, ११वें स्कन्धके ३०वें अध्याय के ६ ठे श्लोक तक
१५१०	११५५६	भागवत एकादशस्कन्ध भापा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१९ वी श०	२८x१५	१-३१	अपूर्ण, जलाभिपिक्त
१५११	११५८६ (४)	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१८३३	१५ ५×११	१४३-१६८	लि क. मथेन अभैराम लि स्था श्री नागपुर (नागोर)
१५१२	११६३१	भागवत एकादशस्कन्ध भापा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१९०८	२८ ५×१५ ५	१-१३०	र का १६९२ लि. क. प्रसोत्तमदास, शिष्य मोतीराम शिष्य द्यालदास शिष्य रामदास पत्र स १२२-१२५ खण्डित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५३१	१२३२७	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१९३०	२८x१३.५	१-१३३	र. का १६९२ लि. क. गुलाबदास शिष्य सायबराम लि स्था. सुजानगढ रामद्वारा
१५१४	१२५०२	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१९२१	२०x१२.५	१-१९०	र. का. १६९२ लि. क. साधु सीसाराम पत्र स. २९,७०-७२,७४,७५, १२५, १२८ अप्राप्त
१५१५	१२५६१ (५)	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१९ वो श०	२३.५x१७	२२५-३०८	र का १६९२
१५१६	१२५७९ (२)	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१९वीं श०	१६x८	७१-३७५	र. का १६९२ पत्र बडकने हैं अतिम तीन पत्र नवीन
१५१७	१०८४८ (९)	भागवत तृतीयस्कन्ध इकतीसमो अध्याय सभाषा	कश्चित रामदास शिष्य	१९ वीं श०	१५.५x८	७१७-७५०	अंतिम कृति 'हरचद सत' का प्रारभ मात्र है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५१८	१०८५४	भागवत दशमस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	भगवानदास निरजनी	१६१८	२४ ५×१३	१-४३४	र का १७६० लि क साधु दयालदास शिष्य सेवाराम लि स्था महामदिर, जोधपुर
१५१९	१०८४६ (१०)	भागवत दशमस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	रघुराजसिंह	१९३४	१७×११	१-२६	र. का १९१ द्वितीय से सप्तम स्कन्ध पर्यन्त
१५२०	१२०२१	भागवत दशम स्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	नरहरिदास बारठ	१९०६	२६ ५×१८ ५	१ १६१	चित्र स -२७ अन्य चित्रो के लिए रिक्त स्थान छोडे हुए हैं। लि. क बिहारीलाल-गुलालचदोत लि. स्था जोधपुर
१५२१	१२०७१	भागवत महापुराण भाषा	रसजानि शिष्य प्रियादास	१८६१	३१.५×१३.५	१०२१	र. का. १८०७ लि. क. रामगोपाल-खण्डेलवाल लि स्था सवाई जयपुर पत्र स. स्कन्धवार लगी है।
१५२२	१०९२६ (२)	भागवत माहात्म्य भाषा (पद्मपुराणगत)		गु०१९३६	२१×१५ ५	२५-४४	दो अध्याय एव शुक मुनी की कथा मात्र है

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि. स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५२३	१२६०६ (१)	भागवतसार पच्चीसी	गो० चद्रलाल	१८८४	१८x१०.५	२-१४	लि.क जगदीश व्यास (पारीक) प्रथम पत्र अप्राप्त । आगे के १-४ पत्रो पर सस्कृत मे वैश्य सख्या है ।
*१५२४	१२३५०	भारत-भाषा सारचन्द्रिका वचनिका	चैनकवि	१६ वी श०	३६x१८.५	१-७८	उद्योगपर्व के प्रथम अध्याय पर्यन्त । सूर्यवशी राव शभु के पुत्र राव चादसिह की आज्ञा से रचित ।
१५२५	१२५०७	भारत-भाषा सारचन्द्रिका वचनिका (आदि, मौशल महाप्रस्थान पर्व)	चैनकवि	१६ वी श०	३०x१४.५	१-६	र. का. १८८५ तीन पर्व, मात्र ।
*१५२६	१०८३८	भाषा-भारत	सादू खेतसी (कवि सीह)	१६०६	३२.५x२०	१-२१५	अत की पुष्पिका महत्वपूर्ण है । महाराजा अभैसिहजी (जोधपुर) के आश्रय में रचित । र.का १७६० लि क. परोपगाराय लि स्था. जोधपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५२७	११००८ (१)	भाषाभूषण	जसवतसिंह	२० वी श०	२६x१३	१-१४	अलकार प्रकरण पर्यन्त ।
१५२८	११३२४ (१)	भाषाभूषण	जसवतसिंह	१६ वी श०	२२ ५x१५ ५	२-२८	प्रारम के २७ दोहे अप्राप्त सर्व-२०४
१५२६	१२३३० (३)	भाषाभूषण	जसवतसिंह	१६ वी श०	२० ५x१४ ५	१-३१	अपूर्ण
१५३०	११०१३ (१२)	भाषा-वर्णन		गु०१८१८	२३x१५	११६-१२०	मराठी एवं गुर्जर आदि भाषा के १२ छन्द है ।
१५३१	१०८६६ (८)	भीखनजी की बावनी	भीखनदास शिष्य सतदास	गु०१६२७	८ ५x७	२२०-२४२	र का १६८३
१५३२	११०१०	भीखनजी की बावनी	भीखजन (भीखनदास)	२० वी श०	२६x१३ ५	१-७	र का १६८३
१५३३	१२३७३ (२५)	भीखम-बावनी	भीखनदास, शिष्य सतदास	२० वी श०	२२x१५ ५	पृ २२६-२३३	पृष्ठ २३३-२३५ पर सस्कृत की कृति है ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५३४	१०८४३ (३)	भूपाल-चौवीसी (स्तोत्र भाषा)	भूपाल नरिंद	गु० १८६५	२५ ५x२०	३-४	लि क गंगराज लि स्था रतनपुरी
१५३५	११५८३	भोगलपुराण		गु० १६६३	१८x१५	३५-५०	
१५३६	१२५७४ (६)	भोगलपुराण		२० वी श०	१७x१० ५	१७३-१६४	
१५३७	११०१३ (२६)	भोज राजा री पनरमी विद्या री वात	भवानीदास व्यास	गु०१८१८	२३x१५	१६०-१८६	
१५३८	१०६०२ (११)	भ्रमतोड जोगग्रन्थ	सतदास	गु०१८०६	१५ ५x१२ ५	६३-८०	चौपाई ११६, दोहा १ अतिम पत्र शोभन
१५३६	१२३८० (२५)	भ्रमर-गीत	जनमोहन	गु०१७२४	२०x१४	२८०-३००	पत्र सं. ३००-३०६ पर फुटकर पद है।
१५४०	११०१३ (२२)	भ्रमर-बत्तीसी	मुनि केशवदास	गु० १८१८	२३x१५	१३६-१३७	४८ दोहे है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५४१	११२८३ (३)	भ्रमर-बत्तीसी	मुनि केशवदास	गु० १७८४	१६x१४ ५	५८-५६	
१५४२	१२४६७	मगलकलश चउपई	जिनहर्ष शिष्य गुणवर्द्धन	१८७६	२० ५x१० ५	१-२३	र का १७१४ लि क अमरचन्द लि स्था लदेरा
१५४३	१२३२० (५७)	मगलकलश फाग		गु० १८४७	२१ ५x१४ ५	४४-४८	
१५४४	१२३७० (६४)	मंडोवरपुर मडन पार्श्वनाथ स्तवन आदि	साधु क्षमाकल्याण शिष्य अमृतधर्म	१६ वी श०	१६x११ ५	५४ वा	र का १८६८ र स्थान मडोवर, जोधपुर
१५४५	११०१३ (१४)	मदनकु वर सत	दामो	१८१८	२३x१५	१२४-१२६	लि क ऋषि सुजाण चेला प्रेमचन्द वाचनार्थ र स्था चाणोद नगर
१५४६	१२४५६	मदालसा आख्यान (मारकण्डेय पुराणगत)	माधोदास शिष्य दामोदर	१८३८	३०x१४	१-३१	पत्र जलाभिषिक्त लि क जति तिलोकचन्द लि स्था नागोर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५४७	१२२१८ (५)३४	मधुबिंदु सज्झाय	प्रेमसुख	१७६३	२६,५x१०	४८ वा	
१५४८	११६३३	मधुमालती रसविलास री कथा चौपई सचित्र	चतुर्भुजदास	१९ वी श०	२३ ५x१७	३-१९७	चित्र स -३०२ प्रथम दो पत्र अप्राप्त।
१५४९	११६०८	मधुमालती री कथा चौपई सचित्र	चतुर्भुजदास	१९ वी श०	२३x२०	२-१०१	चित्र स -८५ १, ३-६, ११-२२, ३८, ७५, ९९, १०० वे पत्र अप्राप्त।
१५५०	११५८४	मधुमालती री कथा चौपई-सचित्र	चतुर्भुजदास	१९ वी श०	२०x११ ५	४ कुल	चित्र स -५ मात्र स्फुट पत्र।
१५५१	११५९५	मधुमालती री कथा चौपई सचित्र	चतुर्भुजदास	१९ वी श०	२३x२१ ५	४ कुल	चित्र स -४ मात्र स्फुट पत्र। चित्र काट कर अलग, अलग चिपका दिए गए हैं।
१५५२	१२३३० (१)	मधुमालती री कथा चौपई सचित्र	चतुर्भुजदास कायस्थ पुत्र अभैराम पुत्र नाथा	१९ वी श०	२५ ५x१८ ५	१-८८	चित्र स -१३५ विभागीय प्रकाशन 'मधु-मालती सचित्र कथा' मे चित्रो का पूर्ण ब्यौरा देखे।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५५३	१२३०१	मधुमालती री कथा चौपई सचित्र	चतुर्भुजदास पुत्र अभैयराम पुत्र नाथा	१९ वी श०	२३ ५x१७ ५	२-११६	चित्र स -१०४ लि क भागचद देवीचद १, २२, ३२, ५०, ५१, ५४, ५७, ६०, ६४, ६५, ६८, ७०, ७२-७४, ७६, ८४-८६, ९०, ९८, १०९ वे पत्र अप्राप्त
१५५४	१२५५७ (२०)	मधुमालती री कथा चौपई	चतुर्भुजदास	गु० १८७८	२०x१५ ५	२३-७४	अपूर्ण लि क पं. बखतचद लि. स्था- अजमेर
१५५५	१०९५५ (२)	मधुमालती री वात	चतुर्भुजदास	१९०५	२३ ५x१७ ५	१-५७	लि क उदैचद लि स्था चौपासनी (जोधपुर)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५५६	१०७००	मधुमालती री वात सचित्र	चतुर्भुजदास	१८३३	२० ५x१३	१-७६	चित्र स -४४ पत्र स ७१-८२ अप्राप्त। चित्रो का विवरण विभागीय प्रकाशन 'मधुमालती सचित्र कथा' मे देखे। लि क. नदकिशोर लि स्था करोली, माणिकपाल के राज्य मे।
१५५७	१२२२४ (६)	मनपरसग जोगग्रन्थ	जनहरिदास	१९ वी श०	२१ ५x१३	७१-७३	
१५५८	११९५४ (१)	मनबोध		१९ वी श०	२२x१० ५	१-२१	कृति मराठी भापा मे।
१५५९	१२२१८ (५)५३	मन समझो सज्झाय (उद्बोधन)	आसो	१८ वी श०	२६ ५x१०	६६-६७	
१५६०	१०८३९ (६)	मनसा वाचा री कथा		१९०६	३२x१७ ५	३१-४०	चित्रों के लिए शीर्षक देकर स्थान रिक्त छोडे हुए हैं। लि स्था जोधपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५६१	१२३५८	मनहर छन्द (वाणी संग्रह)	रामचरण	१८९९	३१ ५x१६ ५	१-१६	छन्द १६२, अग ८३ लि क प्रोहित घुघरराम लि स्था वीकानेर
१५६२	१२५८५ (६)	मलूकदासजी री परची	परमानन्द	गु० १६२७	१६ ५x१५	२२४–२४४	अनन्तदास के अतिरिक्त दो अन्य परचीकारो की जानकारी इस गुटके से प्राप्त होती है।
१५६३	१०७७०	महादण्डक-भाषा		१८७०	२६ ५x१२ ५	१–२०	लि क लखमीचन्द लि स्था गॉव कुकडसर, हुलकर राज्ये।
१५६४	११०१३ (१३)	महादेवजी री निसाणी	लवराज	गु० १८१८	२३x१५	१२१-१२३	८७ छद है
१५६५	११२६३	महादेवजी रो व्यावलो	शभुदत्त जोशी	१९ वी श०	१८ ५x१४	१-३०	
१५६६	१०८३९ (५)	महादेवजी रो व्यावलो (गद्य)		१९०६	३२x१७.५	२१–३१	चित्रों के लिए शीर्षक देकर स्थान रिक्त छोडे हुए हे। लि स्थान जोधपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
*१५६७	११००४	महादेवजी रो व्यावलो (शिवरामस्तोत्र भाषा)	शभुराम जोशी	१६०७	२७ ५x१२ ५	१-१५	लि क. हीरविजय लि. स्था लूणसर भडारी श्रीचदजी मोतीचदजी की परत से प्रतिलिपि कृत। अत मे तत्कालीन अनाज के भाव व गाव के भोक्ता का वर्णन है। इस समय महाराज-तखतसिहजी का डेरा बालसमन्द मे बताया गया है।
*१५६८	११०१३ (५०)	महाराजा अभैसिहजी रा कवित्त	वगता खिडिया	१६ वी श०	२३x१५	३२८-३४६	गुटके की यह अंतिम कृति दूसरे के हाथ की है।
१५६९	१२५६८ (१२) १६	महाराजा जगतसिहजी रो सिलोको		१६ वी श०	१८ ५x१२ ५	२८-२६	र का. १८४७
१५७०	१२२०५ (५)	महारुद्र तेरही	कीर्तिवर्द्धन	गु० १७४८-१७५५	१७x११	४-८	
१५७१	१२३८० (६-११)	महावीर, ऋषभदेव एव पार्श्वनाथ गीत	कुशलसिह शिष्य रामसिह	१८ वी श०	२१ ५x१४ ५	२१ वा	पत्र संख्या २२-२३ पर महावीर स्तवन तथा 'सूर्यजी रो सिलोको' है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेप ज्ञातव्य
१५७२	१२५७५ (४०)	महावीर जन्माभिषेक कलश		१६ वी श०	१३x१४ ५	१११-११६	पत्र सख्या १०८–११० पर 'वृहत्शाति' सस्कृत मे है ।
१५७३	१२५६५ (८)	महावीरजी नो पारणो		२० वी श०	१६x१२	५८-६०	पत्र सख्या ६० पर 'गौडी-पार्श्वनाथ स्तवन' है ।
१५७४	१०६०७ (३)	महावीरजी रो चो-ढालियो	ऋषि रायचद शिष्य जैमल	१६ वी श०	२५ ५x१२	६-७	र का १८३६, नागोर दीपावली के दिन ।
१५७५	१२५५१ (१२)	महावीरदेव-विनती	वीरविजय गणि शिष्य तेजसार	१६ वी श०	१३x११	१०२ वां	
१५७६	११५८५ (८१६)	महावीर-स्तवन	समयसुन्दर	गु० १६०३	१६ ५x११ ५	१४६, १५८ वा	र स्था जेसलमेर पत्र १५८ पर पूर्ण किया है ।
१५७७	१२३२० (३६)	महावीर-स्तवन	लक्ष्मण	१७६७	२१ ५x१४ ५	४१-४६	र का १५२१ फागण वद ७ सोमवार । लि क भावविजय लि स्था मेडता

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५७८	१२३७० (३१)	महावीर-स्तवन	समयसुन्दर	१६ वीं श०	१६x११ ५	७-१०	र. स्था जेसलमेर
१५७६	१२४०३	महासती द्रोपदी री चउपई	कनककीर्ति शिष्य जयमंदिर	१६४५	२५ ५x१३	१-२०	र. का १६६३ जेसलमेर अत मे शृङ्गारिक दोहे है ।
१५८०	१०६२४ (५)	महिमासमुद्र, ब्रह्मसत आदि (चोहद्ग ग्रन्थ)	बालकराम शिष्य मीठाराम	गु० १८४०	२३x१२ ५	३२३-३३८	रामचरणजी की महिमा आदि ।
१५८१	१०६२५ (४)	महिमासमुद्र (चोहद्ग ग्रन्थ)	बालकराम शिष्य मीठाराम	गु० १६३३	२५ ५x१६ ५	३०-३७	
१५८२	११३८१	माघमाहात्म्य भाषा पद्यानुवाद		१६ वी श०	३१ ५x१३ ५	२-१५	पद्मपुराणगत
१५८३	१०६२४ (४)	माणिक बोध (चोहद्ग गन्थ) (सबद माणिक बोध)	बालकराम शिष्य मीठाराम	गु० १८४०	२३x१२ ५	३१७-३२३	सूक्तियो का विस्तार चोहद्ग ग्रन्थो मे किया गया हे ।
१५८४	११५८८ (७)	माताजी रो छन्द		गु० १७०२	१६ ५x१३	३१-३३	४० छन्द हैं । पत्र स ३६ पर समयसुन्दर कृत कुन्थुनाथ गीत । है

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सॅ.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५८५	११५८४ (१८)	माताजी रो छन्द (पद)	अज्ञात	गु० १७१५	१९ ५x१६	५८-५९	राग-गउरी
१५८६	१२५४७ (३)	माताजी रो छन्द	हररूप	२० वी श०	१६ ५x१२	६-२५	गुटके के मध्य के पत्रों पर भीमसिंहजी राठौड पर कवित्त है।
१५८७	१२३६७ (१)	मानतु ग-मानवती चरित्र	अभयसोम	१९ वी श०	२५ ५x१६.५	३५-४४	र का १७२७ पत्र स १-३४, ४८-६६ अप्राप्त। पत्र स ४४-४७ पर 'मेण-रेहा चौपई' का प्रारभिक अश मात्र है।
१५८८	११०५०	मानतु ग-मानवती रास	मोहनविजय शिष्य रूपविजय	१८९०	२६x१३	१-३९	र का ० ६ ७ १=१७६० पुण्य-काय मुनी चन्द्र सुवर्षे र स्था अणहिलपुर पट्टन, दुर्गादास राठौड राज्ये। लि क मुनि उमेदविजय लि स्था. गीरपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५८९	१२३३० (२)	मानमजरी	नददास	१९ वी श०	२०.५x१४ ५	१८-६१	
१५९०	१२५५३ (५)	मानलीला		गु० १८९७	१४ ५x१३ ५	११६-११७	अपूर्ण । ७७ वे छन्द तक । "श्रीकृष्ण रूप चैतन्य धन, तन सत मुकर प्रकाश ।"
१५९१	१२५६८ (१८)	मानसिंहजी बारै पधार्‌या तिण समय रो कवित्त		१९ वी श०	१८ ५x१२ ५	२८ वा	
१५९२	१०९५५ (५)	मानसिंहजी रा मरसिया		१९०५	२३.५x१७ ५	१-३	महाजनी लिपि मे । लि क कुनणराज लि स्था. जोधपुर
१५९३	१०८४९ (३)	मानसी सेवा	रामानद	गु० १९३१	१७x११	५-६	
१५९४	११०००	मानसी सेवा	रामदास	१९ वी श०	३०.५x१४ ५	१-७	पत्र कीटविद्ध ।
१५९५	१२४२० (६)	मानसी सेवा	रामानन्द	२० वी श०	१६x१४	४-५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५९६	१२५७१ (१)२	मानसी सेवा	रामानन्द	१९ वी श०	१० ५x८	१०-१३	
१५९७	१२२१८ (५)९६	मारू-भाषा कवित्त एव पत्री		१८ वी श०	२६ ५x१०	११७ वा	
१५९८	१२४७१	मार्कण्डेयपुराण भाषा पद्यानुवाद	दामोदर	१९०८	२८.५x१६	१-७०	र. का १६८८ लि स्था. पोकरण, रामद्वारा "पुस्तक प० साधु बुधराम की छै" प्रथम व अंतिम पत्र त्रुटित।
१५९९	१०८५५	मार्कण्डेयपुराण भाषा पद्यानुवाद	दामोदर	२० वी श०	२७ ५x१५	१-५७	र. का. १६८८
१६००	१०८४३ (८)	मार्गणा-विधान	बनारसीदास	गु० १८९५	२५ ५x२०	२७-२८	लि क गगराज लि. स्था रतनपुरी
१६०१	१०८४२ (६)	मावडिया मिजाज		१८९५	२४ ५x१६ ५	७६-८२	लि. क. खिडियो हरसुख तथा वणसुर फत्तौ लि स्था. जोधपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६०२	१०८४२ (६)	मिनष (मनुष्य) जन्म रा कवित्त	साधूराम गाडण	१८६५	२४ ५x१६ ५	८८ वा	लि क खिडियो हरसुख तथा वणसुर फत्तौ लि स्था जोधपुर
१६०३	११०६२ (६)	मीडकीपावजी की सबदी	मीडकीपाव	गु० १८३६	१८x१० ५	१६२ वा	नाथ साहित्य
१६०४	१२५८५ (१३)	मीराबाई की परची	सुखसारण	गु० १६२७	१६ ५x१५	३११-३५५	दुर्लभ परची
१६०५	१०६५१	मुकतरामजी की बाणी एव पद-सग्रह	मुकतराम शिष्य रामचरण	१६ वी श०	१० ५x८	१-६३	बीच के ६ पत्रो में सुदामाजी की बारखडी है ।
१६०६	१२५८५ (१४)	मुगतीबाई, ज्ञानदेव की परची	सुखसारण	गु० १६२७	१६ ५x१५	३५५-३८१	'दिखण देश पूनो-सतारो .. बिसनदेव ब्राह्मण हुआ . . ऐक सुता मु गता हुवी ॥'
*१६०७	१०६८०	मुनिपति-चरित्र	सिंहकुल	१७६५	२५.५x११	१-१५	र. का १५५० लि क किस्तूरचन्द लि स्था. कृष्णगढ 'जैन गुर्जर कवियो' में इसका कर्त्ता सिंहकुल देवगुप्त सूरि का शिष्य लिखा है ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६०८	११९९८	मुनिपति-चरित्र	मुनि धर्ममदिर शिष्य दयाकुशल	१८८९	२६x१२	१-२९	र का १५२५, पाटण लि.क. के नाम पर रग पोत दिया गया है।
१६०९	१२५५१ (१८)	मुनिमालिका	मतिभद्र शिष्य सूरविजय	१७ वी श०	१३x११	१२४-१३०	र का. १६३६, र स्था. रिणी पत्र चिपके हुए हैं।
१६१०	१२५७४ (८)	मुरलीरामजी का दृष्टात	जनमुरली	२० वी श०	१७x१० ५	१७२ वा	
१६११	१०९६३	मुरलीरामजी की वाणी	मुरलीराम	२० वी श०	२३ ५x१३ ५	१-५७	गुटका बाद मे शुद्ध किया गया है।
१६१२	१२५५३ (९)	मूरख सत (मूर्ख शतक) गद्य		गु० १८९७	१४.५x१३ ५	१२९-१३२	मूर्खो के १०१ लक्षण दिए है। अत मे, गुटके की कृतियो की विगत है। सुदामाजी की बारखडी विगत के अनुसार अप्राप्त है।
१६१३	१०८६६ (५)	मूलपुराण		गु० १९१०	७ ५x६ ५	९८-१०८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि सं में)	माप (सें.मी. में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६१४	१०८४९ (८-६)	मूलपुराण एव पद संग्रह	रामदास	गु० १९३१	१७x११	१७-१९ २०-२५	
१६१५	१२२११ (२)	मूलपुरुष	द्वारिकेश	२० वी श०	१७x१३	१४-२०	वल्लभ-सम्प्रदाय की वंश-परम्परा ।
१६१६	१०९०२ (१४)	मूलमंत्र	कवीरदास	गु० १८०९	१५ ५x१२ ५	८३-८५	
१६१७	११०५७	मृगलेखानी चौपई (मृगाङ्कलेखा)	ऋषि रायचन्द शिष्य जैमल	१८८९	२५x१२	१-१९	र का १८३८ र. स्था. जोधपुर लि.क रामुजी की सिष्या । लि स्था बलुदा
१६१८	११५८५ (८)३९	मृगापुत्र सज्झाय		१९ वी श०	१९.५x११ ५	१७२-१७४, १७१	महाजनी लिपि में । कृति का ग्रत पत्र संख्या १७१ पर किया गया है ।
१६१९	१२२१८ (५)१४३	मृगापुत्र सज्झाय		१८ वी श०	२६ ५x१०	१५८-१५९	
१६२०	१२३२० (२९)	मृगापुत्र सज्झाय	मुनि खेम	गु० १७९२	२६ ५x१०	३४ वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६२१	१२२१८ (५)६६-७०	मेघकुंवर सज्झाय	धर्मसार ज्ञानउदय	१८ वी श०	२६ ५x१०	६० वा ६०, ६१ वें	
१६२२	१२५६८ (३)	मेघकुमार चो-ढालियो		१६ वी श०	१८ ५x१२ ५	३०-३३	अपूर्ण पत्र स. ३४-४२ अप्राप्त ।
१६२३	१२१३६	मेघमाला सार्थ		२० वी श०	२७x१२ ५	१-१२	अपूर्ण श्लोक के नीचे राजस्थानी में अर्थ दिया हे। पत्र चिपके हुए है।
१६२४	१२३१६ (७)	मेघमुनि-गीत	देवमुनि	गु० १७६२-१८४७	२१ ५x१४ ५	१६-२०	
१६२५	११६६२	मेतारज मुनि री चौपई	ऋषि चोथमल	१८७६	२५x१० ५	१-५	र का. १६८१ लि क लिखमीचद लि स्था वगरी
१६२६	१२२१८ (५)११	मेतारिज ऋषि सज्झाय		१८ वी श०	२६ ५x१०	३२-३३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. में)	माप (सें.मी. में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६२७	१२१९९ (९)	मेरू-तेरस रो वखाण		गुं० १९७५	२७x१४	४४-४७	लि. समय – तपागच्छाचार्य विजयमुनि चन्द्रसूरीश्वर विजयराज्ये । लि.क केशरीसागर, फलोदी
*१६२८	११०१३ (३३)	मेवाड़ गुण-वर्णन छद	कवि जिनेन्द्र	गु० १८२२	२३x१५	२०१ वा	
१६२९	११९९७ (१)	मैनासुन्दरी-नाटक	न्यामत	२० वी श०	२५.५x१२	१-२३	
१६३०	१२४२० (११-१३)	मोतीरामजी का छुटकर सबद एव वाणी-सग्रह	मोतीराम शिष्य रामदास	२० वीं श०	१६x१४	२६१-३४२	
१६३१	१२३२० (३८)	मोनी-एकादशी-स्तवन	समयसुन्दर	गु० १७९७	२१ ५x१४ ५	४७ वाँ	र का १६८१ र स्था जेसलमेर लि क भावविजय लि स्था मेड़ता
१६३२	१२३७० (१६)	मोनी-एकादशी-स्तवन	समयसुन्दर	१९ वी श०	१६x११ ५	१३८-१४०	र. का १६८१ र स्था. जेसलमेर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६३३	१०९३६ (३)	मोरधज राजा री कथा	सूरदास	गु० १९३४	१२ ५x८ ५	३१९-३३४	लि क. चोकसराम लि स्था जोधपुर, बडा रामद्वारा
१६३४	१०९४४ (५)	मोरधज राजा री लावणी	सूरदास	२० वी श०	८x५	२२०-२४१	
१६३५	१०८४७ (३)	मोहमरद राजा री कथा	जगनाथ शिष्य तुरसी	गु० १९९९	१७x८	६९२-७२३	र का १७७६ काति वदी १२, सोमवार।
१६३६	१०९२४ (१५)	मोहमरद राजा की कथा	जगनाथ	१९ वी श०	२३ ५x१२ ५	५५७-५७२	र का १७७६
१६३७	१०९३० (२)	मोहमरद राजा की कथा	जगनाथ	१९ वी श०	१५ ५x१२	१६-५५	र का. १७७६
१६३८	१०९३१ (४)	मोहमरद राजा की कथा	जगनाथ	गु० १९३७	१७x१० ५	१०४-१३४	र का १७७६ "श्री तुलसीदास धर्‌यौ सिर हाथ मोहैमरद कथा कही जगनाथ"
१६३९	१२३७५ (७)	मोहमरद राजा की कथा	जगनाथ	१९ वी श०	११x१९ ५	७८३-७९५	र का १७७६

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६४०	१२५६१ (१०)	मोहमरद राजा की कथा	जगनाथ	१६ वी श०	२३ ५x१७	३५१-३५५	
१६४१	१२५७२ (८)	मोहमरद राजा की कथा	रामदास	१६ वी श०	१०.५x८.५	१४१-१६६	र. का. १८४१
१६४२	१२५८१ (१)	मोहमरद राजा की कथा	जगनाथ	१६ वी श०	१६x१०.५	१-१४	
१६४३	१२५८६ (२)	मोहमरद राजा की कथा	जगनाथ	१६ वी श०	१२x६.५	७-३३	
१६४४	१२५७४ (१५)	मोहमरद राजा की कथा का दृष्टात		२० वी श०	१७x१० ५	३०४-३०७	
१६४५	११६७४	मोहरम को गुरो फल एव ३२ शुभ-अशुभ लक्षण		२० वी श०	११ ५x८	१-४	ग्रन्थाङ्क ११८२२ के साथ के पत्र है।
१६४६	१२३८० (५)	मोह-विवेक	जनगोपाल	१७२४	२०x१४	११२-१२६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३४७	१२१६६ (१०)	मौनी-ग्यारस रो वखाण		गु० १६७५	२७x१४	४८-५१	
१६४८	१२२१८ (५)२६	यत्र-महिमा		१७६३	२६ ५x१०	४१-४२	पत्र स ४२ क पर मेडता व व कोटा के पाटाधीशो की प्रशस्ति है। पत्र स ४२ ख पर स्त्री-पुरुष वशीकरण मत्र एव औषधि सग्रह है।
१६४६	११४१२ (२)	यमुनाष्टक भाषा-टीका	मू वल्लभाचार्य टी गोविन्दस्वामी	१६ वी श०	२१x१६ ५	१६-२६	
१६५०	१२५५६ (३)	यमुना-स्तुति टीका (यमुनाष्टक)	टी गोविन्दस्वामी	गु० १८०५	२१x१४	६१-६६	श्री वल्लभाचार्य कृत 'यमुनाष्टक' की टीका।
१६५१	१२२१८ (५)४२	यादवा रो रास	पुन्यरत्न मुनि	१७५५	२६.५x१०	५६-६१	
*१६५२	११००६	युक्ति (युक्त निर्णय) सग्रह		१६२५	२८x१६ ५	१-६१	प्राचीन हिन्दी-गद्य द्रष्टव्य है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६५३	१०७४१	योगपावडी	गरीबदास	१९ वी श०	२३x१२	१-४	
१६५४	११५८३ (२२)	योग-वासिष्ठ-सार भाषा	मुरारि मिश्र	गु० १९९३	१८x१५	१७२–१९४	मूल श्लोको सहित ।
१६५५	१०८४२ (३)	रघुनाथ-रूपक गीताँ रो	कवि मँछ (मनसाराम)	१८९५	२४ ५x१६.५	४–७२	मरुधर देश-भाषा में । कामदारी लिपि । लि क वणसुर फत्तौ नै खिडिया हरसुख । लि स्था जोधपुर - ठाकुरा भेरू दानजी री हवेली मे ।
१६५६	११००१	रघुनाथ-रूपक गीताँ रो	मछाराम सेवग	१८९६	२६x१२ ५	१-५५	लि क हीरविजय लि स्था लूणसर
१६५७	१२५२२-१२५२३	रघुवर विसद जस (रामायण माहात्म्य)		१९ वी श०	३४ ४x१६	१-५ १-८	ग्रन्थाङ्क १२५२३ पर "रावण-वध" नामक कृति इसी के साथ के पत्र ज्ञात होते हैं ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि. स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६५८	११६८७	रज्जवजी के कवित्त	रज्जव	१६ वी श०	२६x१३	१-११	अङ्कवद्ध ।
१६५६	१२३७६ (६)	रज्जवजी के कवित्त	रज्जव	१६ वी श०	११x१६ ५	७५३-७८३	कवित्त ६०, अग ३८
१६६०	१२५६१ (६)	रज्जवजी के कवित्त	रज्जव	१६ वी श०	२३ ५x१७	३४३-३५१	
१६६१	११०७६	रतनसिंह महेशदासोत री वचनिका	खिडियो जगो	१७६५	२२ ५x११ ५	१-१३	लि.क. पडित पेमनन्द
१६६२	१०६२८ (१)	रतना-हमीर री वात		१८६६	२२x१७	१-३६	लि क हरलाल लि स्था हरिदुर्ग
१६६३	११०८०	रतना-हमीर री वात		१६ वी श०	२२x१४.५	१-४१	जलाभिषिक्त लि स्था पाली छन्द स. - ८२५
१६६४	११०६६	रत्नपाल रास	सुरविजय	१६१७	२६ ५x११.५	१-२४	र का १७३२ र स्था बुरहानपुर लि क उत्तमचन्द नागोरी लि स्था हेमावास, नागोर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६६५	११०५२	रत्नावती नो रास	जिनहर्ष	१६१७	२७x११ ५	१-२२	र का १७२१ लि क. उत्तमचन्द नागोरी र.स्था. नागोर, गाव हेमावास
१६६६	१०८२६	रमल शास्त्र		२० वी श०	२४ ५x१२	१-१३	लि क भोलानाथ
१६६७	१२२०१	रसरत्नाकर (मत्रखण्ड)	नित्यनाथ पार्वतीपुत्र	१६ वी श०	२४ ५x१२.५	१-६८	अपूर्ण । १६ वे उपदेश तक पूर्ण, २० वे उपदेश का प्रारम्भ मात्र ।
१६६८	१०८४४	रसराज (राजस्थानी भाषा टीका सहित)	मू० मतिराम	१६ वी श०	२१ ५x१५ ५	४२-१७७	आद्यन्ताश अप्राप्त । दो लिपियो मे लिखित । पत्र स ५३-६५, १५४-१६६ अप्राप्त ।
१६६९	१२२१८ (५) ६७	रसावला	जसराज	१८ वी श०	२६.५x१०	११७-११८	पत्र स ११५ पर 'महावीर तप सज्झाय, पत्र स. ११६ पर बुलाकीदास खत्री का वर्णन-आगरा से अन्य शहरो की दूरी सबधी है ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६७०	१२२१८ (५)८६	राचा-बत्तीसी	राचो	१८ वी श०	२६ ५x१०	१०५-१०६	
*१६७१	१२३७६ (५)	राजनीति की रीति	जसुराम	१६२८	१६x१८	५०-१३६	र का १८१४, अभेपुर लि क विष्णुदास लि स्था. जोधपुर
१६७२	११०५६	राजनीति रा कवित्त	देवीदास	१८३८	२८x१२	१-१५	लि. क. लक्ष्मीचन्द्र
१६७३	११०८५ (१)	राजनीति रा कवित्त	देवीदास	१६ वी श०	१६ ५x१३ ५	१-५६	प्राग्भ के पत्रो पर स्फुट कवित्त एव शकुनावली है। पत्राङ्क ६१ पर भूषण कृत ७ कवित्त हैं।
१६७४	११२१५ (२)	राजनीति रा कवित्त	देवीदास	२० वी श०	२२x१५ ५	१-१६	अपूर्ण - ६५ कवित्त हैं।
१६७५	१२३७१ (८)	राजनीति रा कवित्त	देवीदास	१८३६	१८ ५x१६.५	२६८-२८६	लि क भीखनदास लि स्था. नागपुर (नागोर)
१६७६	१२३७६ (२)	राजनीति रा कवित्त	देवीदास	२० वी श०	१६x१८	१३-४८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६७७	१२२१८ (५)३	राजमती विनती		१८ वी श०	२६ ५x१०	२६-२७	
१६७८	१२५४७ (४)	राजा दावसलेम री कथा		२० वी श०	१६ ५x१२	२६-३५	अपूर्ण । आगे लिखना छोड दिया है ।
१६७९	११९७७ (?)	राजा नल री वात		१८९०	१८ ५x१४ ५	८-५५	लि स्था बदुकापडी, जगपुर ।
१६८०	१०८५१ (३)२३	राजा भरथरी रा पद		१८ वी श०	१५ ५x१०	१०६-१०७, १८९-१९०	
१६८१	१०९५४ (१७)	राजा भोज री पनरमी-विद्या री वात	व्यास भवानीदास	गु० १८७४	२४x१६ ५	१३८-१८८	अंत के कवित्त मे बीलाडा के कल्याणदास भूपाल द्वारा भोज कथा कराने का आग्रह व चारण कीठु द्वारा कथा कहने का उल्लेख है ।
१६८२	११०६४	राजा भोज री पनरमी-विद्या री वात	व्यास भवानीदास	१९ वी श०	२५x१२.५	१–१५	सूक्ष्माक्षर ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६८३	१०८४१ (५)	राजा मान रे नाम पत्री		गु० १९००	२८x१९ ५	१-३	जयपुर के राजा मानसिह का मारवाड में जन्म लेने तथा पूर्वजन्म का वर्णन है। लि क मुरलीधर पुरोहित लि स्था जोधपुर
१६८४	१०९४२ (३)	राजा मोरधज की लावणी			१३x१६	२११-२३६	
१६८५	११०१३ (३१)	राजा रिसालू री वात	नरबद चारण	गु० १८२२	२३x१५	१९२-२०१	लि. क ऋषि सुजाण लि. स्था नदपुर नगरे
१६८६	१०९३६ (४)	राजा हरिश्चन्द्र की कथा	सूरदास	गु० १९३४	१२.५x८ ५	३३४-३४८	लि क चौकसराम लि स्था जोधपुर, वडा रामद्वारा। पत्र सख्या ३५५-३५९ पर लावणी एव दोहा सग्रह है।
१६८७	१२२१८ (५) १२१	राजुल कागल	जीतविजय शिष्य विनयविजय	१८ वी श०	२६ ५x१०	१३४ वा	गुटके मे जैन स्तुति-सज्भाय का सुन्दर सग्रह है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि सं से)	माप (सें.मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६८८	१२५५१ (३३)	राजुल गीत	समयसुन्दर	१६८०	१३x११	१७३-१७५	लि क समयकीर्ति
१६८९	११६२६ (५)	राजुलदे को बारेमासो	अज्ञात	गु० १८९४	३२x१५	१-३	
१६९०	१२२१८ (५) १-२	राजुल सज्झाय	हर्षकीर्ति, आनदवर्द्धन	१८ वी श०	२६ ५x१०	२६ वा	
१६९१	१२५६८ (३३)	राणकपुर यात्रा स्तवन	समयसुन्दर	१८५४	१८ ५x१२.५	३४-३५	र का १६७६
१६९२	११५८४ (३६)	राणकपुर स्तवन	समयसुन्दर	१८ वी श०	१९ ५x१६	२३४ वा	र. का. १६७६ र. स्था. राणकपुर
१६९३	१२५८५ (८)	रानाबाई री परची	सुखसारण	गु० १९२७	१९ ५x१५	२५३-२६८	परचीकार का नाम अत्यल्प-ज्ञात रहा है। रानाबाई — "मुरधर देस गांव हरनामा।"
१६९४	१२२१८ (४)	रात्रि भोजन चौपई		१८ वी श०	२६ ५x१०	२३-२५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६९५	१०८४१ (४)	राधा-कृष्ण-व्रजविहार लीला		१९००	२८x१९ ५	६-३६	अ्रत मे मारवाड के राजा मानसिहजी के सम्बन्ध में किसी साधु की पत्री है। लि क मुरलीधर पुरोहित लि स्था जोधपुर
१६९६	११०१३ (३४)	राम-गुण रासो	माधवदास दधवाडिया	१८२२	२३x१५	२०४-२४९	लि क ऋषि सुजाण लि स्था नन्दपुर नगरे
१६९७	११०७२	राम-गुण रासो	माधवदास दधवाडिया	१९ वी श०	२३x११ ५	१-४४	लि स्था वीझेवा नगरे
१६९८	१२४१९ (१)	रामचन्द्रजी री कथा		१९०३	२५x१७	४०-९४	महाजनी लिपि मे। पत्र सख्या ४२-४५ व प्रारभ के ७-३९ अ्रप्राप्त।
१६९९	१०८४७ (१)	रामचरणजी की अ्रणभै वाणी	रामचरण स क नवलराम	१९९९	१७x१८	१-५८१	सन्त-साहित्य की दृष्टि से गुटका महत्वपूर्ण है। स स्था शाहपुरा "नवलराम भग वाणिगा" लि स्था महामदिर, जोधपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सॅ.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७००	१०९४२ (४)	रामचरणजी की लावणी	लवलीनराम शिष्य रामचरण	गु० १९५२	१३x६	२३६-२४३	
१७०१	१०९३६ (६३)	रामचरणजी की लावणी आदि	*लवलीनराम	गु० १९३४	१२ ५x८ ५	३१५-३१९, ३४९-३५२, ३५२-३५५	*तीनो लावणियाँ इन्ही की है।
१७०२	१०८४८ (१)	रामचरणजी की वाणी	रामचरण	१९ वी श०	१५ ५x८	१-२३	
१७०३	१०९२४ (२)	रामचरणजी की वांणी	रामचरण स कर्त्ता–नवलराम	गु० १८४०	२३x१२ ५	६५-२८८	सं का १८२७ स स्था. साहिपुरा, भीलवाड़ा सर्व 'सबद' ३०६३
१७०४	१०९२४ (६)	रामचरणजी की वाणी (स्फुट)	रामचरण	गु० १८४०	२३x१२ ५	३४२-३५६	
१७०५	१०९२५ (२)५	रामचरणजी की वाणी	रामचरण	गु० १९३३	२५ ५x१६ ५	१६-३०, ४२-५१, ५५-५९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७०६	१०९२९	रामचरणजी की वाणी	रामचरण	१९२२	१३x८ ५	१-२५	लि क नेनूराम लि स्था साहिपुरा गु० १९२३ मे जोधपुर मे श्री हजूर चैनरामजी कू वकस्यो।
१७०७	१०९३० (१)	रामचरणजी की वाणी	रामचरण	१९ वी श०	१५ ५x१२	१-१६	
१७०८	१०९३३ (१)	रामचरणजी की वाणी	रामचरण	१९४०	१३ ५x८ ५	१-६०२	लि क विलासीराम लि स्था साहपुरा-भीलवाडा
१७०९	१०९३४ (२)	रामचरणजी की वाणी	रामचरण	१९ वी श०	१४x८	१६-७८	लि क "सुलभदयाल हरिदासजी तीजो मोवतराम। तीनू मिल गुटको लिख्यो
१७१०	१०९३७ (१)	रामचरणजी की वाणी	रामचरण	गु० १९२२	१४ ५x७ ५	१-४२४	छाटमा 'सनदो' का सग्रह है। लि क रामलाल लि स्था. वदनोर, रामद्वारा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि. स. मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७११	१०९४० (२)	रामचरणजी की वाणी	रामचरण	१८८३	१५.५x१०.५	६७-४१९	लि. क जैतराम लि स्था. फलोदी राग २५, पद १०५।
१७१२	१०९४४ (२)	रामचरणजी की वाणी	रामचरण	१९ वी श०	८x५	११-२१	लि. क बालकराम शिष्य दुलभराम
१७१३	१०९४५ (१)	रामचरणजी की वाणी	रामचरण		१४ ५x७.५	१-२३६	
१७१४	१०८४६ (२)	रामचरणजी की वाणी	रामचरण	१९५०	१५ ५x९ ५	२२-२९	लि क. रामनिवास लि. स्था रतनपुरी
१७१५	१०९४८ (२)	रामचरणजी की वाणी	रामचरण	गु० १९३५	१४ ५x७	१०-३०	
१७१६	१०९४९ (२)	रामचरणजी की वाणी	रामचरण	१९३५	११x६ ५	५७-११८	लि क. चोकसराम लि. स्था रतनपुरी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७२२	१२३६१	रामचरणजी की वाणी एव कृति सग्रह	रामचरण	१६ वी श०	२८x१४	३-१४२	आद्यन्त पत्र अप्राप्त।
१७२३	१०६३८ (१)	रामचरणजी की स्फुट-वाणी	रामचरण	गु० १८८५	१६ ५x८ ५	१-६	
१७२४	११०३३	रामचरितमानस	गो० तुलसीदास	१८६०-१६०७	३१x१५ ५	१-२८८	लि क. हरसुखदास लि स्था. डीडवाणा।
१७२५	११४४३	रामचरितमानस (उत्तरकाण्ड)	गो० तुलसीदास	१८६७	३१ ५x१४ ५	१-३८	लि.क लालदास शिष्य सेवाराम लि स्था कोट मरोट
१७२६	११५४६	रामचरितमानस (आरण्य, लका एव अयोध्या काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८४५	२८x१४	१-२६ १-५० १-६४ १७०	लि. क खेमदास मनसाराम
१७२७	११५५०	रामचरितमानस (बालकाण्ड एव उत्तरकाण्ड)	गो० तुलसीदास	१६०१-१६०२	३१ ५x१४ ५	१-६४ १-४४	लि क साधु कीमतराम एवं मगदत्त व्यास

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (सें मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७२८	११५५३	रामचरितमानस (सुन्दरकाण्ड एव किष्किधा-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१६ वी श०	३०.५x१४	१-१८, १-११	
१७२६	११५५७	रामचरितमानस (आरण्यकाण्ड)	गो० तुलसीदास	१६ वी श०	३१x१४	१-२४	पत्र बडकने हैं।
१७३०	११५६१	रामचरितमानस (लङ्का, अयोध्या, सुन्दर एव किष्किधा काण्ह)	गो० तुलसीदास	१६१५-१६१३	३० ५x१५ ५	१-४६, १-८२, १-१६, १-१४ — १६१	लि क रामकृष्णदास निरजनी लि. स्था पीपली गली, मीदर पोल, अहिपुर(नागोर) लिखायत साध द्वारकादास।
१७३१	११५७०	रामचरितमानस (अयोध्या, बाल, आरण्य, सुन्दर एव लङ्का काण्ड)	गो० तुलसीदास	१६१०	३१x१४ ५	१- ७४ १-१०३ १- २२ १- १६ १- ४८ — २६३	पत्र बडकने है। लि क लालदास साधु लि स्था फलोदी, रघुनाथद्वारा।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७३२	११५६३	रामचरितमानस (सातो काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८६३	३१ ५x१५	१-६३, १-७६, १-२१, १-१०, १-१६, १-४३, १-३६, — २६८	लि. क रामजीदास लि स्था अहिपुर (नागोर)
१७३३	११६२६	रामचरितमानस (सातो काण्ड)	गो० तुलसीदास	१६३२	३० ५x१६	कुल ५१०	पत्र सं –बाल. १५८, सुन्दर २५, आरण्य ३०, किष्किधा १६, लङ्का ८४, अयोध्या १२६, उत्तरकाण्ड ६८।
१७३४	११६५१	रामचरितमानस (सातो काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८८६-१८८८		१-२४५, १-१५६, १- ५२, १- १६, १- ३३, १- ६१, १- ५३, — ६४६	किष्किधा काण्ड का ७ वा पत्र अप्राप्त । लि क महात्मा भीखमचंद, जती जेठमल एव शकरगिरि लि स्था. विक्रमपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७३५	११६५२	रामचरितमानस (सातो काण्ड)	गो० तुलसीदास	१६०६, १६१४–१६१५	३३x१८ ५	१-८८ १-६२ १-२० १- ६ १-१५ १-४८ १-२६ २६४	लि क लिछमणदास एव मगदत्त सेवग लि स्था अहिपुर वापू हरशेठ द्वारा मु बई से शक सवत् १७७२ मे प्रकाशित प्रति की नकल।
१७३६	१२०२७	रामचरितमानस (छह काण्ड)	गो० तुलसीदास	१६१७	२५ ५x१५ ५	१-११३ १- ६२ १- २४ १- १६ १- ६१ १- ४७ ३५६	सुन्दर काण्ड नही है। लि क ब्राह्मण खण्डेलवाल फूसा लि स्था लाडणू।
१७३७	१२२१२	रामचरितमानस (सातो काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८६२	२५x२० ५	२-४४५	पत्र खण्डित, चिपके हुए। प्रथम पत्र अप्राप्त।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७३८	१२३२४	रामचरितमानस (सातो काण्ड)	गो० तुलसीदास	१९३८	२९x१७	१-३४ १-६७ १-१६ १-९२ १-२१ १-१४ १-४२ २८६	लि क हरसुखदास लि. स्था वीवास (वीदासर)
१७३९	१२३५१	रामचरितमानस (सातो काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८७६	३५ ५x१६ ५	१-२७१	लि स्था सूरजगढ
१७४०	१२५९९	रामचरितमानस (किष्किधा काण्ड)	गो० तुलसीदास	१९ वी श०	३०x१५ ५	१-११	पत्रो के कोण खण्डित ।
*१७४१	१०९०२ (४)	रामचरित्र	सुन्दरदास शिष्य कालुजी	गु० १८०९	१५ ५x१२ ५	१७–२३	
१७४२	११९५४ (२)	रामचरित्र (रामलीला)		१९ वी श०	२२x१० ५	२१–२४	वाल्मीकि कृत शतकोटि रामायण के आधार पर ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७४३	१०९२२ (१)	राम चरित्र-गुण-कथा वार्ता सचित्र (ब्रह्माण्डपुराण गत)			२६ ५x१९ ५	१–२२४	चित्र सख्या – ४४७ सभी चित्रो पर शीर्षक दिया गया है। सभी पत्र फूलयुक्त लाल वोर्डर के है। लि क बोरा पुष्करना हीरालाल, पुस्तक प्रकाश वाले। लि स्था जोधपुर ठाकुरा देवीसिहजी रै पूज्य माजीसायवा पठनार्थ।
१७४४	१०८४८ (२)	रामजन की वाणी	रामजन शिष्य रामचरण		१५ ५x८	२३–३०	
१७४५	१०९२५ (६)	रामजन की वाणी	रामजन	गु० १९३३	२५ ५x१६.५	१४९–३३५	
१७४६	१०९६८	रामजन की वाणी	रामजन	१९१४	२५.५x१२ ५	१–१२०	सबद, साखी एव पद सगह।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७४७	११६४८ (७)५२-५३	रामदासजी का कडखा एव पद	रामदास	गु० १८५३	२७x१६ ५	३४४-३४५	पत्र स ३४५ पर ही सुखदेव एव कल्याणदास कृत भारती है।
१७४८	१२४२० (६)	रामदासजी का छुटकर सबद	रामदास	२० वी श०	१६x१४	११८-१६२	
१७४६	१०८५१ (४)	रामदासजी की वाणी	रामदास	१७६२	१५ ५x१०	१५३-१८१	लि क श्यामाबाई
१७५०	१२५६१ (२६)१	रामदासजी की वाणी	रामदास	२० वी श०	१५ ५x१०	१३४-१५२	
१७५१	१०८६६ (१८)१	रामदासजी की वाणी कवित्तबन्ध	रामदास	गु० १६२७	८ ५x७	६१६-६६२	अङ्ग ७, कवित्त ६०।
१७५२	१२५०७ (३)१	रामदासजी के छुटकर सबद एव कृति-सग्रह	रामदास	१६ वी श०	१० ५x८	१६७-१६२	अङ्गबद्ध। पत्र सं – १६२ से २३४ तक इन्ही की अन्य कृतियों का सग्रह है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७५३	१२२२६ (२-३)	राम-ध्यानमजरी तथा रामचरित्र को कक्को	अग्रदास	१८७६	१४x१२ ५	२-८ ८-११	पत्र स - १ पर जनहरिदास की 'ब्रह्मस्तुति' है। लि क वीरमदास निरंजनी सेवादास की शिष्य परम्परा मे। लि स्था केरू, जोधपुर
१७५४	१२३७१ (१०)	राम-नाम महिमा	सतदास	गु० १८३६	१८ ५x१६ ५	३१६ वा	पत्र स - ३१६-३२० पर स्फुट दोहे हैं।
१७५५	१०८६८ (७)	राम-बारखडी	रामरतन	गु० १९२६	१३x८ ५	१७७-१८७	
१७५६	१२५६१ (६)	राममत्र-महिमा	कबीरदास	२० वी श०	१५ ५x१०	५२-५४	
१७५७	१२३७६ (३)	रामरक्षा (स्तोत्र भाषा)	रामानद	गु० १८६६	२० ५x१४ ५	२६-३१	पत्र स - ३२ पर 'सप्तश्लोकी गीता' है।
१७५८	१२५६१ (३८)	रामरक्षा (स्तोत्र भाषा)	रामदास	१९ वी श०	१५ ५x१०	२५३-२५५	अत में रामदासजी के कवित्त है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७५९	१०८४९ (२)	रामरक्षा (स्तोत्र भाषा)	रामानद	गु० १९३१	१७x११	१-५	प्रारम्भ के पत्र पर सूरदास का एक पद है।
१७६०	१२४२० (४-५)	रामरक्षा (स्तोत्र भाषा)	रामानंद	२० वीं श०	१६x१४	२१-२२, १-४	पत्राङ्क, २२ के बाद पुन. १ से प्रारभ किए गये है।
१७६१	१०८६८ (४)	राम-रसायन	मानिकदास	गु० १९२७	८ ५x७	४६-१८७	अत मे एक कवित्त है।
१७६२	१०९५६ (६)	राम-रसायन	मानिकदास	२० वी श०	३२x१६	१-३५	सव्याख्या।
१७६३	१२३६५	रामरासो	माधोदास दधवाडिया	१७८३	२२ ५x१६ ५	१-८८	पूर्व प्रति का उल्लेख है। लि क हरकिशन शिष्य दयारत्न लि. स्था गांव बलू दा— रामदास चांदावत ऐ गाव
१७६४	१२५७० (१२)	रामरिछ्या (रामरक्षा स्तोत्र-भाषा)	रामानद	२० वी श०	९ ५x६ ५	४१-४६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७६५	१२५१७ (१)१	रामरिच्या (रामरक्षा स्तोत्र भाषा)	रामानद	१९ वी श०	१० ५x८	१-६	
१७६६	१२५६१ (३२)	रामरिच्या (रामरक्षा स्तोत्र भाषा)	रामानद	२० वी श०	१५ ५x१०	२०८-२११	पत्र सं - २१२ पर कबीर-दासजी का पद है।
१७६७	१२३११ (३)	रामवल्लभजी की साखी	रामवल्लभ	गु० १९४०	१७ ५x८ ५	३०३-४६४	अङ्गबद्ध। लि क साधु गगाराम लि स्था कोटा
१७६८	१२२१३ (१)	रामविनोद ग्रन्थ-रोगानुक्रमणिका		गु० १८४७	२१x१६ ५	३-७	मूलग्रन्थ से पत्र अलग सीं दिये गए हैं। मूल ग्रन्थ इसी गुटके में है। रामविनोद ग्रन्थ में वर्णित रोगो की पत्र क्रम से अनु-क्रमणिका दी गई है। प्रथम दो पत्र अप्राप्त होने से पत्र स ५१ से १०२ तक की विगत है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७६९	१२३८५	रामविनोद भाषा (आयुर्वेद)	रामचन्द्र शिष्य पद्मरग	१९२८	३२x१५ ५	१-७१	लि. क. घनस्यामदास वैष्णव अत मे स्फुट नुस्खे है।
१७७०	१२२१३ (४)	रामविनोद भाषा	रामचन्द्र शिष्य पद्मरग	गु० १८४७	२१x१६ ५	१-१००	अत के दो पत्र अप्राप्त। गुटका आयुर्वेद-विज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। सस्कृत मे लोलिम्बराज कृत "वैद्यजीवन" के १-२२ पद्य भी इस गुटके मे हैं।
१७७१	१०८६३	रामविनोद भाषा	रामचन्द्र पुत्र केशवदास मिश्र	१९ वी श०	१६ ५x११ ५	१-८८	अपूण। प्रारम्भ के तीन पत्रो पर "वैद्यमनोत्सव भाषा" का अतिमाश है।
*१७७२	१०९७९	रामविनोद भाषा	रामचन्द्र शिष्य पद्मरग	१८९५	२५ ५x१० ५	१–७९	र का १७२० 'गगन पाखि फुनि दीप ससि' औरगजेब के समय मे खुरसाण मे रचित। लि. क साधु गगाराम सर्वगाथा - ३०३

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि सं. मे)	माप (सॅ.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
*१७७३	१२३६४	राम विवर-विजय गीत (रामचरित्र)	तुलसी	१९ वी श०	२४ ५x१२	१–११५	दुर्लभप्रति । अपूर्ण । दोहा चौपईबद्ध अहिरावण वध-कथा है । २३७ वी चौपई पर्यन्त ।
१७७४	१०६२४ (१०)	रामसत	चत्रभुजदास	गु० १८४०	२३ ५x१२ ५	५१८-५२१	
१७७५	१२३११ (२)	रामसत	चत्रभुजदास	गु० १९४०	१७ ५x८ ५	९६-१०२	लि क साधु गगाराम लि स्था कोटा
१७७६	१२३२९ (५)	रामसत	चत्रभुजदास	२० वी श०	२३x१९ ५	३७३-३७७	
१७७७	१०६२४ (१२)	राम सागर	कबीर	गु० १८४०	२३ ५x१२ ५	५३४-५३६	
*१७७८	१०९७०	राम-सीता-चरित्र	ऋषि चोथमल	१८६७	२५ ५x१३	१-६७	र का १८६२, जोधाण लि क मोती लि स्था गुरा (गुढा-जोधपुर)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि सं मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७७६	११०६७	राम-सीता चरित्र	ऋषि चोथमल	१६१२	२५x१२.५	१-६४	र का १८६२, जोधाणे लि क. केसर लि स्था गागराणा
१७८०	१०७५५	राम-सीता-चरित्र टीका (गद्य)		१६ वी श०	२६x११ ५	१-१३	अपूर्ण । जैन कृति । सीता के पुन' अयोध्या लौटने पर लगाये गये कलक तक की कथा है ।
१७८१	१०६६४	रामाज्ञा	गो० तुलसीदास	१६४५	२५ ५x११ ५	१-१२	दोहे – ३४३ लि क चोकसराम
१७८२	११६४८ (१६)	रामानदजी का पद एव रामरक्षा	रामानद	गु० १८५३	२७x१६ ५	५५२-५५३	
१७८३	१२३१६	रामायण (अवतारचरित्र गत)	नरहरिदास बारठ	१६०८	२२४x२	४-२०४	लि क ब्राह्मण गगादास गौड; लि स्था नागिना पत्र सख्या–१-३, ५, ६-१८ अप्राप्त ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७८४	१०६६०	रामाश्वमेध भाषा	मधुसूदनदास माथुर	२० वी श०	३२x१६ ५	१–२०५	र का १८३६ पद्मपुराणगत ।
१७८५	१२५२०	रामाश्वमेध भापा		१६०३	३१x१५ ५	१-१८	लि क व्यास रामसुख पारीक लि स्था बीकानेर
१७८६	१२५६७ (१३)	रायमल, महासिंह-राठौड रो सिलोको		गु० १८३१	२१x१५ ५	६४-६७	लिपि भ्रष्ट है । पत्र स —५७, ६१, ६२-६४ पर पट्टी-पहाडे हैं । पत्र स —५६-६० पर स्फुट पद हैं ।
१७८७	१०६४२ (५)	रावण की लावणी	लवलीनराम शिष्य रामचरण	गु० १६५२	१३x६	२४३–२४८	
१७८८	१२५६५ (१७)	रावण प्रतिवासुदेवजी की लावणी		२० वी श०	१६x१२	११७–११८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७८९	१०७०१ (१)	रिसालुकुँवर री वार्ता (सचित्र)	नरबद चारण	१८९२	१६.५x१२	१-६६	चित्र स.—७१ गुटके की सिलाई नही है। लि स्था मेडता
१७९०	१०६५४ (१६)	रिसालु राजा री वात	नरबद चारण	१८७४	२४x१६ ५	१२२-१३८	लि क फतेचन्द लि स्था. पाली समदकुवरजी जुहारमलजी वाचनार्थ।
१७९१	१२३७० (६)६	रिषभदेव-गीत	जिनलाभसूरि	१९ वी श०	१६x११ ५	५५ वा	
१७९२	१२६००	रुक्मिणीमगल	विष्णुदास	१९ वी श०	२० ५x१५	१५-६६	लि क वलदेव लि स्था अलवर पत्र स – १-१४, २५, २८, २९, ६७ अप्राप्त। ३५ वा पत्र दो वार।
१७९३	२२४२५	रुक्मिणीमगल	पदमइयो शिष्य पीपा (पदमा तेली)	२० वी श०	२६ ५x१७	१-६०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७६४	१२५६२ (३)	रुक्मिणीमगल	जनपदम (पदमा तेली)	१६ वी श०	१४x१० ५	५३-८६	
१७६५	११५८८	रुक्मिणीमगल (सचित्र)	पदमईया	१६४२	२७ ५x१८	१-११४	चित्र सं –८, पत्र के माप के। लि क नन्दराम लि. स्था. नागोर
१७६६	१२५५३ (२)	रुघनाथलीला	माधोदास	गु० १८६७	१४ ५x१३ ५	८२-६६	लि क ब्राह्मण श्रीधर लि स्था. भागनगर
*१७६७	१०८४२ (१६)	रूपग-दवावेत महाराजा-अजीतसिहजी री	द्वारकादास	१६००	२४ ५x१६ ५	११२-११६	१२ दोहे, ३ कवित्त तथा २ गाहा। र. का. १७७२ लि क खिडयो हरसुख
१७६८	१२२१० (१३) १-२	रूप-चौदस के पद	विष्णुदास विठ्ठल	१६ वी श०	१८x१३ ५	६८ वा ६८-६६	राग-देवगधार, विलावल।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७९९	१०८४२ (२०)	रूपदीप पिगल-भाषा	जयकृष्ण भोजग पुत्र भवानीदास	१९००	२४ ५x१६ ५	११९-१२३	पत्र स. – १२३ पर स्फुट कवित्त है। किंचित अपूर्ण, महाजनी लिपि मे।
१८००	१२५८० (१)	रूपदीप पिगल-भाषा	जयकृष्ण भोजग शिष्य कृपाराम	गु० १८६६	१५x१० ५	१-१२	र का १७७६ अत मे गणविचार दिया है। लि क वैष्णव भगतराम लि स्था रामगढ़
१८०१	१०८४७ (२)३३-३४	रेखता (स्फुट)	गगादास बखतावर	गु० १९९९	१७x८	६६४ वा ६६५ वा	
१८०२	१०८४९ (६)	रेखता-ब्रह्मस्तुति	हरिरामदास	गु० १९३१	१७x११	१३-१४	
१८०३	१२५९२ (६)२	रेखता-सग्रह	हरिरामदास किसना	१९ वी श०	१४x१० ५	१७३-१७४ १७४-१७५	
१८०४	१२४४६ (१)	रेणादेनी चो-ढालियो	ऋषि रायचन्द	१९ वी श०	२५x११	१-३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८०५	१२८२२ (२१)	रैदासजी की परची	अनन्तदास	गु० १८३१	१५x१० ५	४२९-४३३	पत्र स – ४४८-४४९ पर कबीरदास कृत 'बत्तीस जोग ग्रन्थ' का प्रारम्भ है। पत्र स – ४५० पर 'साध को ब्यौरो' है।
१८०६	१२५८५ (३)	रैदासजी री परची	अनन्तदास	गु० १९२७	१९ ५x१५	१५०-१८३	गुटके में १५ सतो की परचियो का सग्रह है।
१८०७	११६४८ (१७)	रैदासजी की वाणी	रैदास	गु० १८५३	२७x१९ ५	५४२-५४९	राग १४, पद ८६
१८०८	१२१९९ (७)	रोहिणी-व्याख्यान		गु० १९७५	२७x१८	३८-४०	
१८०९	११०११	लघुचाणक्य भाषा पद्यानुवाद	भावनादास वैष्णव	२० वी श०	२९x१४	१-१३	र का १९२९ "अक अयन गह इन्दु"
१८१०	१०८९७ (८)	लघुतानाम ग्रन्थ	खेमदास	२० वी श०	१२x११	२४६-२५४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८११	१०७७३	लघुसग्रहणी-बालावबोध	शिवनिधान गणि	१८९३	२६x१२ ५	१-७२	मध्य मे सारणिया दी हुई हैं। लि क क्षमासागर लि. स्था. श्री विक्रमपुर (बीकानेर)
१८१२	१०८४७ (८)३,५	लावणी	रामलोचन	गु० १९९९	१७x८	७५८-७५९	पत्र संख्या ७६१-७६२ पर निर्भयराम के पद हैं।
१८१३	१०८४७ (२)३९-४०	लावणी	सेवाराम चोथमल	गु० १९९९	१७x८	६७६-६७७ ६७७-६८०	र का (३९) १८६९, रामपुरा गढ र का (४०) १८५२
१८१४	१२५७४ (६)	लावणी - प्रह्लादजी की	कृष्णदास	२० वी श०	१७x१० ५	१६४-१६७	
१८१५	१०९४२ (६-८)	लावणी - संग्रह	अमोलकराम कबीरदास सेवाराम	गु० १९५२	१३x६	२४८-२५० २५१-२५३ २५३-२५५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८१६	१०६३६ (१)५३-५५	लावणी-संग्रह	रूपदास चौथे छीतमदास सुन्दर बिरहन	गु० १६३४	१२ ५x८ ५	२१६-२२३ २२३-२२८ २२८-२२६ २५८-२५६	पदसग्रह है।
१८१७	१२५७४ (२)	लावणी-सग्रह (मीराबाई व ध्रुवजी की)	रामनारायण देवीदास अज्ञात	२० वी श०	१७x१० ५	७४-७६ ७६-७६ ७६-८१	लि. क बक्षीराम पत्र स —८१ पर रामचरण कृत आरती है।
१८१८	१०६३५ (१)	लीलावती गणित चितामणि	सेवग रिदलाल	१६ वी श०	२१ ५x१७ ५	१-१३५	
१८१६	१२३८० (२७) १-४	लीला-सग्रह (बाललीला, प्रबोधलीला, भक्तिप्रताप लीला)	माधोदास	गु० १७२४	२०x१४	३०७-३१३ ३१५-३१६ ३१६-३२६	पत्र स. – ३१४ पर नामदेवजी की साखी है।
१८२०	१०६३५ (२)	लेखा रा ऊपर वाडिया		१६ वी श०	२१.५x१७.५	१३६-१५४	गणित सम्बन्धी प्रश्नोत्तर।
१८२१	१२५८१ (७)	वंदना आदि	सेवादास	१६ वी श०	१६x१०.५	४७-५१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८२२	१०८४२ (१७)	वमेकवार री निसाणी	केसोदास गाडण	१८९७	२४ ५x१६ ५	१०१-१०९	पत्र स —१०९-११२ पर 'सारस्वत व्याकरण' है। लि क खिडियो हरसुख
१८२३	१२३७९ (२)	वमेकवार री निसाणी	केसोदास गाडण	गु० १८६९	२० ५x१४ ५	१४-२८	
१८२४	१२४३४	वमेकवार री निसाणी	केसोदास गाडण	१८६१	२५x१२ ५	१-६	कीर्तिमल रणजीत पठनार्थं।
१८२५	११५८४ (९)	वरकानापार्श्वनाथ स्तवन		१७१४	१९ ५x१६	३६ वा	पत्र स.-३७-३८ पर सस्कृत मे 'कालज्ञान' है।
१८२६	१२२०५ (४७)	वरकानापार्श्वनाथ स्तवन	कीर्तिवर्द्धन	१८ वी श०	१७x११	१४९ वा	पत्र सख्या-१५० पर शेख महीमदीन का पद है।
१८२७	१२३२० (४)	वर्द्धमानस्वामी स्तवन	उदयसिंह	गु० १७९२-१८४७	२१ ५x१४ ५	१६-१७	र का १७६८ र स्था. किशनगढ

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. में)	माप (सें.मी. में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८२८	१२२११ (१)	वल्लभाख्यान के पद	गोपालदास	२० वीं श०	१७x१३	१-१४	राग — केदारो, रामकली, भूपाली, प्रभाती, सामेरी, परज, धनाश्री ।
१८२९	१२२१८ (५) २८	वस्तुपाल-तेजपाल धर्मकृत्य		१७६३	२६ ५x१०	४१ वां	
१८३०	१०९७५	वाक्यवल्लरी		२० वीं श०	२८.५x१३ ५	१-९	कोश ग्रन्थ है । अंतिम पत्र फटा हुआ है ।
१८३१	१२५७० (२४)	वाजीदजी की अरेल	वाजीद	२० वीं श०	९ ५x६ ५	१४०-१५५	
१८३२	१०८९८ (१-३)	वाणी-संग्रह	संतदास जनदरिया किसनदास	गु० १९२९	१३x८.५	१-४७ ४७-६७ ६७-८०	
१८३३	१२३३० (४२)	वासपूजजिन स्तवन	कल्याणप्रसाद	गु० १७९७	२१ ५x१४ ५	४९-५०	र का १६६५ र स्था हिसार पत्र संख्या ५० पर 'सीमंधर स्वामी स्तवन' है ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८३४	१२५६५ (३)	विंशति-स्थानक पूजा	जिनहर्षसूरि शिष्य जिनचद सूरि	२० वी श०	१६x१२	१०-३३	र. का १८७१ गुटके मे स्तुति-स्तोत्र आदि लघु कृतियो का सग्रह है। पत्र स —३४ पर इन्ही की 'वीसथानक आरती' है।
१८३५	११०६५	विक्रमादित्य-खापर्‍या चोर री चौपई	लाभवर्द्धन	१९१६	२७ ५x१३ ५	१-२०	र का १७२७ र स्था जैतारण सर्व ढाले—२७ लि क उत्तमचन्द लि स्था हमावस (नागोर)
१८३६	११०७०	विक्रमादित्य राजा री चौपई	मानकवि	१७८०	२४ ५x११ ५	१-४६	सर्व ढाले—५१
१८३७	१०८४५ (४)१	विचारमाला	अनाथदास	१८८६	१५ ५x१० ५	८२१-८३७	पत्र सख्या ८३७-८५० तक जडभरत कृत 'प्रश्नावली' सस्कृत मे है। र. का. १७२६ लि. क जैरामनारायण लि स्था पोकरण

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८३८	१०८४८ (५)	विचारमाला	अनाथदास	१६ वी श०	१५ ५x८	५६४–५८१	र का १७२६
१८३६	११६४८ (२३)	विचारमाला	अनाथदास	गु० १८५३	२७x१६ ५	५६४–५६६	र का १७२६
१८४०	१०८४६ (१६)	विचारमाला	अनाथदास	गु० १६३१	१७x११	१४३–१५५	र का १७२६
१८४१	१०८६६ (७)	विचारमाला	अनाथदास	गु० १६२७	८ ५x७	२०५-२२०	
१८४२	११००५	विचारमाला	अनाथदास	१६१०	२७ ५x१३	१-४१	र का १७२६ लि क तुलछीदास शिष्य शभूराम लि स्था नेडापा, राम-मोहल्ला
१८४३	१०६४१ (२)	विचारमाला	अनाथदास	गु० १६३७	१७x१० ५	८०-६६	र का १७२६ किंचित अपूर्ण ।
१८४४	१०६६५	विचारमाला	अनाथदास	२० वी श०	२५ ५x१२ ५	१-१६	र का १७२६

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि सं. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८४५	१२२२६ (४)	विचारमाला	अनाथदास	१८७९	१४x१२ ५	११-३०	र का १७२६ लि क बीरमदास निरजनी लि स्था केरू (जोधपुर)
१८४६	१२५६१ (७)	विचारमाला	अनाथदास	१९ वी श०	२३ ५x१७	३३०-३३६	र का १७२६
१८४७	१२५७० (१५)	विचारमाला	अनाथदास	२० वी श०	९ ५x६ ५	७०-९६	र का १७२६ पत्र सख्या ६७-६९ पर सेवगरामजी कृत लावणी है।
१८४८	१०७२५	विचार षट्त्रिंशिका		१८ वी श०	२६x११	५ वा	लि क. गजसार शिष्य धवलचन्द्र
१८४९	१०७६९	विचार षट्त्रिशिका-बालावबोध		१८९८	२५x१२	१५ वां	लि क सवाईसागर लि स्था फलोधी नगर
१८५०	१०९५८	विचारसागर-भाषा	निश्चलदास	२० वी श०	३२x१६	१-३२	र स्था — "दिल्ली तै पश्चिम दिसा कोस अठारह गाम । तामैं यह पूरो भयो किहिडोली तिहि नाम ॥"

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८५१	१०६६७	विचारसागर–भापा	निश्चलदास	१६२४	३१x१५ ५	१-१८०	लि क कुसलदास र स्था किहिंडोली ग्राम साधु रामसिहजी की इच्छा से सतोकदास नारायणजी त्रिकमजी ने इसे मुबई में ग्रन्थप्रकाश छापेखाने में छपवाया था।
१८५२	१०६३० (४)	विधवा-विवेक	मुरलीदास	१६ वी श०	१५ ५x१२	४७-५२	स्त्री स्वभाव पर औपदेशिक कवित्त।
१८५३	१०८६७ (१०)	विनयपत्रिका के पद	गो० तुलसीदास	१६ वी श०	१८x११	६७-१००	गुटका अपूर्ण है— पत्र स ५१ से १०० तक के ही पत्र है।
*१८५४	१२३५२	विनयपत्रिका सटीक	मू० गो० तुलसीदास टी० शिवप्रकाश	१६ वी श०	३१x१८ ५	१-२६१	टी का १६३५ पत्रो के कोण क्षतिग्रस्त।
१८५५	१२२१८ (५) १५२	विनयाध्ययन गीत	ब्रह्म	१८ वी श०	२६ ५x१०	१६५ वा	गुटका विभिन्न लिपिको द्वारा लिखा गया है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि सं. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८५६	१२२०३	विपर्यय को अग रहस्यार्थ-दीपिका टीका	सुन्दरदास	१९ वी श०	२१ ५x११	१-४१	टीका गद्य मे है।
१८५७	११६८५ (८)४१	विमलगिरि स्तवन	पद्मविजय	१९ वी श०	१९.५x११ ५	१७५-१७६	
१८५८	१२३७० (६)५	विमलनाथ गीत	जिनराज	१९ वी श०	१६x११ ५	५५ वा	
१८५९	१२०६७ (७)	विमलपचीसी (देवी स्तुति)		गु० १९२६	२३ ५x१७	१३-१५	पत्र सख्या १५-१६ पर सक्षेप-पूजन विधि है।
१८६०	१२५७५ (२८)	विमलाचल स्तवन	गुणसागर सूरि शिष्य पद्मसागर	१९ वी श०	१३x१४ ५	८०-८६	
१८६१	१०९०० (७)	विरह को अग	परसराम	२० वी श०	१२x८ ५	५१-७०	
१८६२	१२६१२ (३)	विरह को कक्को		१८१९	२५x११	१४-१६	लि क. हिम्मतराम राजा सूरजमलजी की बही से प्रतिलिपि कृत।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८६३	१२०६७ (६)	विराट एव सूक्ष्म-रूप वर्णन	लिछमन गिरि	गु० १९२६	२३ ५x१७	५-९	पत्र सख्या ९-१३ पर स्फुट नुस्खे एव मत्रादि है।
१८६४	११५७१	विराटपर्व बाणगगा माहात्म्य भाषा	अखैराम शिष्य चरणदास	१८४०	२९x१४ ५	१-९५	पत्र कीटविद्ध । लि क साधु मनोहरदास लि स्था पत्तेपुर (फतेपुर)
१८६५	११०३०	विवाह-सारणी	पुण्यहर्ष	१९ वी श०	२५x१	१-२	कृति दोहा-कवित्तबद्ध है।
१८६६	१०९३६ (५)	विवेक चितावणी	सुन्दरदास	गु० १९३४	१२ ५x८ ५	३५९-३६६	लि क चोकसराम लि स्था जोधपुर
१८६७	१२३२९ (६)	विवेक चितावणी	सुन्दरदास	२० वी श०	२३x९ ५	३७७-३७९	
१८६८	१२३७८ (२१)	विवेक चितावणी	सुन्दरदास	१८ वी श०	२२x१५ ५	१३७-१३८	पत्र सख्या १३८-१३९ पर इन्ही की 'तर्क चितावणी' है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८६९	१२५७० (३)	विवेक चितावणी	रामजन	२० वी श०	६.५x६.५	३४–३६	
१८७०	१५५९१ (३)	विवेक चितावणी	सुन्दरदास	२० वी श०	१५ ५x१०	२७-३१	
१८७१	१०६२४ (२४)	विवेक चितावणी	सुन्दरदास	१९ वी श०	२३ ५x१२ ५	५६६-५६७	पत्र सख्या ५६७-५६८ पर 'हरबोल चितावणी' इन्ही की है।
१८७२	१२३७८ (४)	विवेकसागर	लछीराम	१८ वी श०	२२x१५ ५	२८-३१	
१८७३	१०९०४ (१-२)	विवेकसिन्धु एव परमामृत	मुकुन्दराज योगी	१९ वी श०	२०x१५ ५	२०-८४ १-२१	प्रथम कृति अपूर्ण है। दोनो कृतियाँ मराठी भाषा मे है।
१८७४	१०९०० (११)	विश्वास को अग	कबीरदास	२० वी श०	१२x८ ५	७९-९४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि. स मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८७५	१२४२८ (२)	विशातनलीला	प्रेमदास	गु० १९१२	२१x१५ ५	९-१५	कृष्ण का सखी वेश मे राधा मिलन प्रसग।
१८७६	१२५६२ (२)	विष्णुपुराण भाषा		१९४९	२८ ५x२०	२५-१०९	लि स्था गाव जुझू पत्र स –११० पर नारायण-शास्त्री कृत सत्यनारायण कथा का प्रारम्भ मात्र है।
१८७७	१२२०५ (१९)	विहरमान–वीसी	कीर्तिवर्द्धन शिष्य दयारत्न वाचक	गु० १७४८ १७५५	१७x११	२९-३७	लि क विद्याप्रमोद लि स्था रूपनगर पत्र स –३७ पर ही सूरदास का पद है।
१८७८	१२५५१ (२१)	वीर-जिन स्तवन (महावीर स्तवन)	समयसुन्दर	१७ वी श०	१३x११	१४५–१४७	पत्र खण्डित है।
१८७९	११५८५ (८) ३-४	वीर स्तवन	जिनलाभ	गु० १८५२	१९ ५x११ ५	१३६ वा	इसी पत्र पर 'लोद्रवा-पार्श्वनाथ स्तवन' भी है।
१८८०	११५८५ (८) ४०	वीर स्तवन	जसविजय	१९ वी श०	१९ ५x११.५	१७५ वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेप ज्ञातव्य
२८८१	१२२०८ (८)	वीरस्तवन		१८ वी श०	२५x१८ ५	१२०-१२१	पत्र सख्या १२२-१६५ तक सस्कृत प्राकृत मे टव्वे सहित मत्र प्रवचन आदि है।
२८८२	११६३७	वीसथानक-पूजा	विजयलक्ष्मी सूरि शिष्य विजयसौभाग्य	१९१६	२६ ५x१२	१-१८	र का १८४१, प्रति शोभन लि क मुनि जयसागर लि. स्था मु नई बदरे लिखावत— शाह् श्री मूलचन्द दुल्लभ।
२८८३	१२५७५ (१३)	वीसविहरमान नाम-ठाम-विचार		१९ वी श०	१३ ५x१४	५१-५३	
२८८४	१२२१८ (५) १२८-१२९	वीसविहरमान स्तवन एव वीरस्तवन	समयसुन्दर	१८ वी श०	२६ ५x१०	१३८ वा	
२८८५	१२३७० (३७)	वीहरमान गौतम चो-ढालियो	ऋषि रायचन्द	१९ वी श०	१६x११ ५	४२-४९	र का १८७३

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सॅं.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८८६	११०१३ (३६)	वृन्दविनोद सतसई	वृन्द कवि	१८१६	२३x१५	२८७-३०७	र का १७६१ र स्था ढाका शहर
१८८७	१२३७१ (६)	वृन्दविनोद सतसई	वृन्द कवि	१८३५	१८ ५x१६ ५	२८७-३१८	र. का १७६१ "शशि हर(रस)वार शशि" र स्था ढाका सर्व ७०६ दोहे लि क भीखनदास गौड़ लि. स्था अहिपुर
१८८८	१०६८२	वृन्दसतसई	वृन्द कवि	१६ वी श०	२५ ५x१२ ५	१-२७	र का १७६१ र स्था ढाका
१८८६	१२०६७ (१)	वृन्दसतसई	वृन्द कवि	१६०५	२३ ५x१७	१-३६	र का १७६१ र स्था ढाका लि क सेवग भुगरलाल
१८६०	१२५८० (२)	वृन्दसतसई	वृन्द कवि	गु० १८६६	१५x१० ५	२-८२	र का १७६१ र स्था. ढाका लि क वैष्णव भगतराम लि स्था रामगढ फतेचन्द सरावगी पठनार्थ ।

क्रमाङ्क	गन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८९१	१०८७१	वृहद वासिष्ठसार भाषा		१९ वीं श०	२७ ५x१५	१-४१	अपूर्ण— वैराग्य प्रकरण, १८ वे सर्ग पर्यन्त ।
१८९२	१०८४३ (६)	वेदनिर्णय पचाशिका	बनारसीदास	गु० १८९५	२५ ५x२०	२१-२५	लि क गंगराज लि स्था रतनपुरी
*१८९३	१२०६७ (२)	वेदान्त अद्वैत-अद्भुत नाटक	देवकृष्ण दरजी	१९२६	२३ ५x१७	१-१२	र. का. १९१७ लि. क बोरा चदलाल लि स्था जोधपुर
१८९४	१२२१८ (५)१३८	वैदर्भी चौपई	सुमतिहस	१७६३	२६ ५x१०	१४४-१४७	र का. १७१३ र स्था जेतारण लि. क असीचद लि स्था लूणसर पत्र सख्या १४३ पर सवत् १७६६ मे पोमदत्त को जिन-समुद्र-सूरि के समय दीक्षा देने की बिगत है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि सं मे)	माप (सें मी में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८९५	१२३२० (५८)	वैदर्भी चौपई		गु० १८४७	२१ ५x१४ ५	४९-५५	
१८९६	१२५४५	वैद्यक नुस्खा सगह		२० वी श०	२१x१० ५	१-४४	गुटका लछीराम दादूपंथी का है।
१८९७	१०८४२ (७)	वैद्यक-वारता	बांकीदास	१८९५	२४ ५x१६ ५	८२-८४	लि क खिडियो हरसुख तथा वणसुर फत्तौ लि स्था जोधपुर
१८९८	१०९०९ (२)	वैद्यमनोत्सव	नयनसुख पुत्र केशवदास	१७८८	१५ ५x१०	१-२४	र स्था तीनिगासर नगरे (बीकानेर) अंतिम दो पत्रो पर फुटकर नुस्खे है।
१८९९	११५८४ (२३)	वैद्यमनोत्सव	नयनसुख पुत्र केशवदास	१८ वी श०	१९ ५x१६	१९७-२२१	पत्र कीटविद्ध एव गलित।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं में)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६००	१२२१३ (३)	वैद्यमनोत्सव-भाषा	नयनसुख पुत्र केशवदास	१८४७	२१x१६ ५	१-८३	पत्र स —८४ पर फुटकर नुस्खे तथा अगले ७ पत्रों मे तात्रिक मत्रादि है।
१६०१	१२५६६ (६)	वैद्यमनोत्सव-भाषा	नयनसुख पुत्र केशवदास	१६ वी श०	१६.५x११	१-१३५	अपूर्ण ।
१६०२	१२४५८	वैद्यमनोत्सव-भाषा	नयनसुख पुत्र केशवदास	१८४७	२६ ५x१३ ५	१-१६	र का १६४६ अकबर शाह के समम मे । लि क किशन व्यास पुत्र मोहनलाल लि स्था नागपुर
१६०३	११०१३ (२)	वैद्य विरहनी प्रबन्ध	उदैराज	१८२५	२३x१५	६८-७०	लि क ऋषि सुजाण लि स्था चाणोद (जोधपुर) ७६ दोहे है।
१६०४	१२५६१ (१६)	वैराग्यप्रकरण-भाषा	उदैराज	१८५५	२३ ५x१७	३८०-३८२	लि क नदराम लि स्था ककोडग्राम पत्र स – ३८३ पर समनजी की साखी है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१९०५	१२५९१ (११)	वैराग्यमजरी	भावनादास	२० वी श०	१५ ५x१०	५५–६२	अपूर्ण।
१९०६	१२४२१ (१०)	वैराग्यमजरी-भाषा	महाराजा प्रतापसिंह	गु० १८९५	१७x१२	१६६-१८०	र का. १८५२ लि स्था जयपुर, चन्द्र महल मे।
१९०७	१०९५६ (१)	वैराग्यशतक-भाषा विवेक दीपिका टीका	इन्द्रजीत	२० वी श०	३२x१६	१-३८	
१९०८	१२२०५ (४०)	वैराग्य सज्झाय	राजसमुद्र	१८ वी श०	१७x११	१२४-१२५	
१९०९	१०९५४ (१२-१४)	वैराग्य सज्झाय आदि	मानसागर समयसुन्दर लावण्यसमय	गु० १८७४	२४x१६ ५	११२ वा १११ वा ११२-११३	पत्र सं – १११ पर समय-सुन्दर कृत 'तीर्थ जात्रा फल स्तवन' है।
१९१०	१२३२० (३४-३५)	वैराग्य सज्झाय एव सीमधर-स्तोत्र	कुशलसिंह	गु० १७९७	२१ ५x१४.५	३९-४०	पत्र स – ३९ पर 'दोसानी गजझाय' है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६११	१०८३६ (१)	वैशाख-माहात्म्य भाषा (पद्मपुराणगत)		१६०६	३२x१७ ५	१-६	१२ वा अध्याय । लि स्था जोधपुर
१६१२	१२४८२	वैशाख-माहात्म्य भाषा (पद्मपुराणगत)	सेसदास शिष्य मगनानन्द शिष्य रनजीत	१६००	३०x१५	१-१८	र का १८६२ 'दस आठ साठ रु दोय' कर्त्ता ने एक स्थान पर अपना नाम लिछमणदास भी दिया है ।
१६१३	१२५०४ (२)	वैशाख-माहात्म्य भाषा		गु० १६०३	२३x१६ ५	१-२४	
१६१४	११३७८	वैशाख-माहात्म्य भाषा पद्यानुवाद	सेसदास शिष्य मगनानन्द शिष्य रणजीत	२० वी श०	३० ५x१४ ५	१-१७	अपूर्ण । पद्मपुराणगत ।
१६१५	१२३७१ (१५)	वैष्णववार्त्ता		गु० १८३६	१८ ५x११ ५	१८-५८	अपूर्ण ।
१६१६	११६६६	व्रत-अव्रत नो थोकडो एवं बोल आदि		१६०८	२२ ५x११	१-७	लि स्था सोजत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१९१७	१२५७८	शभूरामजी की वाणी एव कृति-सगह	जनशभूराम शिष्य दयालदास	१९ वी श०	१४x१०	१-१४९	गुटके मे केवल इन्ही का कृति सग्रह होने से महत्व-पूर्ण है।
१९१८	११०१३ (३७)	शकुनदीपिका		गु० १८२२	२३x१५	२५६-२८२	चौपईवद्ध।
१९१९	११५९०	शकुनपृच्छा सचित्र		१८०९	२२x१०	१-७	चित्र सख्या—४ किनारे टूटे हुए। लि क जति हरिचन्द लि.स्था अहिपुर (नागोर)
१९२०	१०८९२ (६)	शकुनविचार		गु० १८९८	१७x१४	३५-४१	अत मे शकुन लेने का श्लोक है। लि स्था जोधपुर
१९२१	१२५५१ (३४)	शकुनावली		१८ वी श०	१३x११	१७७-१९१	पत्र सख्या १९२ पर प्रताप-सिहजी के पुत्र देवीसिह तथा उनके पुत्र छजमल्ल का सवत् १९२७ का जन्मलग्न है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१९२२	१२५९२ (१०)	शकुनावली (स्फुट)		१९ वी श०	१४x१० ३	१९६–१९८	
१९२३	१२२९०	शकुनावली सचित्र		१८७०	१३x१२ ५	१-१२२	र. का १८७० विजय सवत् १७०१ की प्रति से प्रतिलिपि कृत । चित्र स – ११७ लि क मोनजी (मोहनजी) लि स्था नवानगर पत्र सख्या ६९, ७५, ७६, ८९, ११७ खण्डित । पत्र २०, ७६, १०२ वे अप्राप्त
१९२४	१२५७५ (६)	शत्रुञ्जय सज्झाय	मल्लिदास	१९ वी श०	१३ ५x१४	११-१२	प्रारम्भ के १० पत्रो मे सस्कृत-प्राकृत मे 'अजित-शाति - स्तवन', 'भयहर-स्तोत्र', 'लघुशाति' एव 'उवसर्गस्तवन' तथा 'सात स्मरण' है ।
१९२५	१२२१८ (५)९०	शत्रुञ्जयउद्धार-स्तवन		१७७०	२६ ५x१०	१०९ वा	पत्र सख्या १०७ (ब) पर 'मुनिपति पडिलेहण ५० बोल' तथा 'रामानुज-स्तुति' है ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६२६	१२२१८ (५) ११७	शत्रुञ्जयगिरि-स्तवन	पेमविजय शिष्य विमलहर्ष	१८ वी श०	२६ ५x१०	१२६-१३१	पत्र सख्या १२६ पर भी 'शत्रुञ्जय - स्तवन' तथा कविगद कृत कवित्त एवं सुभाषित हैं।
१६२७	१२२०५ (४२) १-५	शत्रुञ्जय गीत आदि	कीर्तिवर्द्धन	१८ वी श०	१७x११	१४१-१४३	
१६२८	१२५५१ (२७)	शत्रुञ्जयगीत	श्रीकर्ण	१८ वी श०	१३x११	१५६-१५७	
१६२९	१०६५४ (७)	शत्रुञ्जयरास	समयसुन्दर	गु० १८७४	२४x१६ ५	८६-६४	र का १६८२ र स्था नागोर
१६३०	१२३२० (५६)	शत्रुञ्जयरास	समयसुन्दर	१८४७	२१ ५x१४ ५	४०-४४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६३१	१२३७० (४१)	शत्रुञ्जयरास	समयसुन्दर	१८६६	१६x११ ५	८८-१००	र का १६८२ र स्था. नागोर लि क. सूरजमल लि स्था जोधपुर
१६३२	१२५६५ (१०)	शत्रुञ्जयरास	समयसुन्दर	२० वी श०	१६x११	६४-७३	र का १६८२ र स्था नागोर
१६३३	१२२०५ (६)	शत्रुञ्जय-स्तवन	समयसुन्दर	१८ वी श०	१७x११	६-७	
१६३४	११०८२ (३)	शनिश्चरजी री कथा		गु० १८४३	१८x१०.५	१-८	
१६३५	१२१६० (२)३	शनिश्चरजी रो छद	कवि हेम	गु० १८६७	२१x११ ५	२-५	पत्र सख्या ५ पर ही नेम-सागर कृत 'पार्श्वनाथस्तुति' है।
१६३६	१२५८० (३)	शनिसरजी रो छद	कवि हेम	गु० १८६६	१५x१०.५	८२-८५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१९३७	१२३७१ (१)	शनीसर देवता री कथा		१९ वी श०	२०x३१	१८ ५x१६ ५	महाजनी लिपि मे । अपूर्ण । पत्र सख्या ९७ पर महाराजा मानसिहजी को सबोधित कर लिखा एक कवित्त एवं दोहा है ।
१९३८	१२५९१ (३५)	शब्दप्रकाश (योग)		१९ वी श०	१५ ५x१०	२२१-२२६	
१९३९	११५८४ (३७)	शातिनाथ-स्तवन	सिद्धसूरि	१८ वी श०	१९ ५x१६	२३४ वा	
१९४०	१२२१८ (५)६४	शातिनाथ-स्तवन	हर्षधर्म	१८ वी श०	२६.५x१०	८६-८७	
१९४१	१२२२८ (५)७९	शातिनाथ-स्तवन	गुणसूरि	१८ वी श०	२६ ५x१०	९८-९९	
१९४२	१२३७० (४२)९	शातिनाथ-स्तवन		१९ वी श०	१६x११ ५	१२७ वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१९४३	१२५५१ (१३)	शातिनाथ-स्तवन	हर्षधर्म	१७ वी श०	१३x११	१०३-१०६	
१९४४	१२५६५ (१७)१०	शातिनाथ-स्तवन	दीपसागर	१९३७	१६x१२	१२३ वां	र का. १९३१ लि. क दीपसागर शिष्य हस्तीसागर लि स्था फलोदी पत्र सख्या १२४-१२९ पर गुटके की कृतियो के नाम तथा पद-स्तवनो आदि के चरण देकर सूचीपत्र लिखा गया है।
१९४५	१२५७५ (२५)	शातिनाथ-स्तवन (चम्पावती मडण)		१९ वी श०	१३x१४ ५	७७ वा	
१९४६	१२५७५ (१७)	शातिनाथ-स्तवन	पार्श्वचन्द	१९ वी श०	१३ ५x१४	५८-५९	
	(२४)		गुणसागर शिष्य			७६-७७	
	(३२)		पद्मसागर			९४-९५	
	(३८)		अज्ञात			१०७ वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१९४७	१२०७०	शातिपर्व-भाषा	लालदास पुत्र ऊधोदास	१८८५	३०x१४ ५	१-४७	लि क जमना श्रावगी कर्त्ता आगरा निवासी है।
१९४८	१२२०५ (२६)	शाबरमत्र एव फुटकर नुस्खे		१८ वी श०	१७x११	८७-१०२	पत्र सख्या ८७-९३ तक मत्र तत्र व यंत्रादि है।
१९४९	१२५६६	शाबरमत्रतत्र एव नुस्खा-सग्रह		२० वी श०	१७x११	१-२८५	
१९५०	११०८३	शाबर-मत्र-तत्र सग्रह		२० वी श०	१५x१०	१-३०	
१९५१	१०९०५	शालिभद्र महामुनिरास	मतिसार शिष्य जिनसिह सूरि	१८८०	२५x१२	१-६२	र. का १६७८ लि क. मुनि कनीराम लि स्था सणधरी
१९५२	१२५६८ (४)	शालिभद्रमुनि-चौपई	जिनराज शिष्य जिनसिह सूरि	१९ वी श०	१८ ५x१२ ५	३४-८१	र का १६७८ अंत मे 'पार्श्वनाथ-स्तवन' है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१९५३	१२२०५ (२२)	शालिभद्रमुनि-सज्भाय	हर्षकुशल	१८ वी श०	१७x११	६३ वा	पत्र सख्या ६२ पर पीलिया रोग का नुस्खा है।
१९५४	१२२१८ (५)७४	शालिभद्र-सज्भाय	सहजसुन्दर	१८ वी श०	२६.५x१०	६४-६५	
१९५५	१०९४३ (२)	शालिहोत्र-भाषा (गद्य)		गु० १८८४	१८x१४	१-३९	अश्व चिकित्सा।
१९५६	११०७९ (४)	शालिहोत्र-भाषा		१८५५	१५ ५x१४ ५	१-१९	"व्यास चतुरभुज देवदत्त री परत सु उतारी" लि क सवाईराम व्यास लि स्था चीतवाणा
१९५७	१२२१६	शिक्षापत्र भाषा	हरिराय	१९ वी श०	१९x१७	१-६९	अपूण। पत्र कीटविद्ध-खण्डित। ४१ शिक्षाओ तक।
१९५८	१२२२० (१)	शिक्षापत्र भाषा	हरिराय	१९ वी श०	१९x१६ ५	१-५६	पुष्टिमार्ग से सबधित।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१९५९	१२२०४ (५)	शिवजीरो स्वरोदय भापा		गु० १८५८-१८६३	१७x१५ ५	४०-४२	गद्य मे । गुटके मे 'स्वरोदय विचार का सग्रह है । पत्र सख्या ४४ - ७० तक 'पवनविजय-स्वरोदय' सस्कृत मे है । पत्र सख्या ७०-७२ पर पुन. 'स्वर विचार' है ।
१९६०	११०१३ (२५)	शिवरात्रि री कथा		गु० १८१८	२३x१५	१४४-१४७	
१९६१	१२५६७ (१)	शिवरात्रि री कथा		गु० १८३०	२१x१५ ५	१-९	कोण मुडे हुए–जलाभिषिक्त लि. क. केसरचन्द लि स्था कटालिया ग्राम
१९६२	१११७८ (५)	शिबरी मगल	तुलसीदास	१७९२	१५.५x१२	८८-९१	लि क राधावल्लभदास पत्र सख्या ८४ - ८८ तक 'गुरु-परम्परा' दी है ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१९६३	१२२०५ (२८)	शीतलनाथ-स्तवन	समयसुन्दर	१८ वी श०	१७x११	१०४-१०५	पत्र सख्या १०५-१०७ तक पेट दुखने, स्वेतमडल, स्तभन आदि के नुस्खे हैं।
१९६४	१२३२० (३१)	शीतलनाथ-स्तवन	श्रीसार	१८ वी श०	२१ ५x१४ ५	३७ वा	
१९६५	१२२७८ (५) १०४	शील सज्भाय	जिनहर्ष सूरि	१८ वी श०	२६ ५x१०	११९ वा	
१९६६	१२३७८ (१७)	शुकदेवजी की स्तुति भाषा		१८ वी श०	२२x१५ ५	११३-११६	
१९६७	१०९२४ (९)	शुक-संवाद	खेम	गु० १८४०	२३.५x१२.५	५१२-५१८	
१९६८	१२४२२ (१६)	शुक-सवाद	खेम	गु० १८३१	१५x१० ५	३६९-३८२	
१९६९	१२४९७	शुक-सवाद	खेम	१९ वी श०	२०x१०	१-२७	लि. क रामधनँ लिछमणदास पठनार्थे।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेप ज्ञातव्य
१६७०	१२५६१ (८)	शुकसवाद	खेम	१६ वी श०	२३.५x१७	३३६-३४३	
१६७१	१२५७४ (१)	शुकसवाद	खेम	२० वी श०	१७x१० ५	५३-७४	प्रारंभ के ५२ पत्र अप्राप्त ।
१६७२	११३१३ (३)	शुभाशुभ-विचार		१८०२	१५x१४	१-१७	तत्वविजय – निहालचन्दजी वाचनार्थं । लि स्था जयपुर
१६७३	१२५६८ (६-१०)	शेरसिंहजी राठौड रो कह्यो सिलोको (राजा रामसिंहजी के लिए)	शेरसिह	१८४४-१८४६	१८ ५x१२ ५	१३	(१०) कवर अमरसिंह पर जसवन्त के भाई गजसिंहजी ने कोप किया उस समय के कवित्त । लि स्था हेमावास (जोधपुर)
१६७४	१०८४२ (१६)	शेषसिहजी ठाकुर का गीत	पहाडखाँ आढा	१६ वी श०	२४ ५x१६ ५	६६-१००	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१९७५	१२३७० (११)	श्रावक री करनी सज्झाय	जिनहर्ष	१९ वी श०	१६x११ ५	११५-११८	
१९७६	११५८५ (८)४५	श्रावक री करनी सज्झाय	जिनहर्ष	१८४६	१९.५x११ ५	१८०-१८२	लि क. लिछमणदास कोचर अत मे स्फुट दोहे हैं।
१९७७	१२३७० (२६)	श्रावक री मर्यादा		१८७०	१६x११ ५	२५०-२५४	प्रस्तुत विगत रत्नचन्दजी के पास सवत् १८७० मे मानजी जैपुरिये ने व्रत लिया, उस समय की है। गुटके मे रत्नचन्दजी की कृतियां समकालीन होने से प्रामाणिक एव महत्वपूर्ण है।
१९७८	१२५६५ (१५)	श्रावक वदितु सूत्र		२० वी श०	१६x१२	८७-९०	प्राकृत भाषा मे है। पत्र सख्या ९०-९२ पर राग-कल्याणबद्ध दोहे है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६७६	१२८१३ (१-२)	श्रावकविचार, बोल, गुणठाणा आदि		१८२६	२६x११ ५	४-१८ १-२०	पत्र बडकने हैं । पत्र सख्या १ बीच से टूटा हुआ है । लि. क आरज्या मोटी शिष्या सुजाणा लि स्था बीकानेर
१६८०	१०६५४ (६)	श्रावक सज्झाय	जिनहर्ष	गु० १८७४	२४x१६ ५	८७-८८	
१६८१	१२२१८ (५) १०७	श्रीकृष्ण चरित्र	ज्ञानउदय	१८ वी श०	२६ ५x१०	१२१-१२२	
१६८२	११६७६	श्रीकृष्ण-जन्मलीला		१६१०	२१.५x१० ५	१-३१	
१६८३	१२५५६ (१)	श्रीनाथजी की वार्त्ता		१८०५		१०-६८	कीटविद्ध । लि स्था श्री मगवार पत्र सख्या १-६ अप्राप्त ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१९८४	१०७६८	श्रीपाल-रास (सटिप्पण)	विनयविजय शिष्य कीर्तिविजय एव यशोविजय	१८५८	२५.५x११	२२	लि स्था सोजत
१९८५	१०८२४	श्रीपाल-रास मटबार्थ	विनयविजय गणि शिष्य महो०कीर्तिविजय एव यशोविजय	२० वी श०	२४x१२	७२	तृतीय खण्ड के बाद पत्र सख्या ३४ से ७२ मे टिप्पण दिये गये हैं। पत्र सख्या १० से २० तक प्राचीन तथा शेष पत्र नये प्रतीत होते है। र का १७२८, रानेर मे चातुर्मास्य के समय। लि. क ऋषभसागर लि स्था जोधपुर
१९८६	१०८७७	श्रीपाल-रास	विनयविजय एव यशोविजयद्वय	१९ वी श०	२५x१२.५	१-६२	
१९८७	११५४३	श्रीपाल-रास	विनयविजय एव यशोविजय	१९ वी श०	२६.५x११ ५	१-५२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१९८८	१२२२८	श्रीपाल-रास (सचित्र)	ज्ञानसागर शिष्य गुणदेवसूरि	१७६४	२६x११	१-२१	चित्र सख्या— ६ । बाकी चित्र बनाने के लिए स्थान छोडा गया है । र का १५३१ र स्था पत्तन महानगर, शीतलनाथ प्रसादात् । श्राविका श्री रूपबाई पठनार्थं ।
१९८९	१०८५६	श्रीपाल-रास सटबार्थ (चरित्र चतुर्थ खण्ड)	विनयविजय एव यशोविजय	१९४१	२५x१२ ५	१-७१	र का १७२८ र. स्था. रानेर ७०० गाथा तक विनय-विजय और उनकी मृत्यु हो जाने पर यशोविजय ने इसे पूर्ण किया । लि क महात्मा करमचद
१९९०	११३५३ (५)	श्री बद्रीनाथ विसभर स्तोत्र		१९ वी श०	१४.५x१६.५	९६-९८	गुटके की अन्य कृतिया सस्कृत मे हैं ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१९९१	१०८४७ (५)	श्रीमुखनामो	वाजीद	गु० १९९९	१७x८	७२९-७३२	
१९९२	१२२०५ (१२)	श्रीस्तवन	ऋषभसागर	१८ वी श०	१७x११	१३-१४	पत्र सख्या १५ पर 'पृच्छा-सारणी' है ॥
१९९३	११३२७	पट्ऋतु-लीला के पद	सूरदास	१९ वी श०	२९x१२ ५	१-३७	१०७ पद रागबद्ध है। पत्र खण्डित एव कीटग्रस्त हैं।
१९९४	१२५६४ (३)	पट्पाठ स्तोत्र		१८८९	१४ ५x१० ५	५१-६१	र का १८५९ छ. ढालो मे धर्म और ईश्वर की ओर उन्मुख होने की शिक्षा दी गई है। लि क लिछमण
१९९५	११६२८	पट्प्रश्नी निर्णय-भाषा	मनोहरदास निग्जनी	१८०६	३० ५x१५	१-६५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१९९६	१०७५४	षडावश्यक-बालावबोध		१७ वी श०	२६x११ ५	३३x८३	आद्यन्त अपाप्त ।
१९९७	१२२०८ (९)	षष्ठीशतक	भण्डारी नेमिचन्द	१७१५	२५x१८ ५	१६६-१७७	भाषा – अपभ्र श गि क चेला गुडीदास
१९९८	१०८४९ (१७)	षोडश-स्वप्न		गु० १९३१	१७x११	१३५-१३७	ग्रत मे फकीरी पर रोचक पद है ।
१९९९	१२२१८ (५) १०९	सखेसर पार्श्वनाथ स्तवन	गुणरत्न शिष्य	१८ वी श०	२६ ५x१०	१२२ वा	
२०००	१२३७० (१४)	सखेश्वर पार्श्वनाथ स्तवन	उदयरत्न	१९ वी श०	१६x११ ५	१३५-१३६	
२००१	१२५५१ (२६)	सखेश्वर पार्श्वनाथ स्तवन		१८ वी श०	१३x११	१५३-१५६	लिपि भ्रष्ट— 'आदिजिन-स्तवन' तथा 'सखेश्वर पार्श्वनाथ का प्रारभ मात्र ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२००२	१२५६८ (१३)	सखेश्वर पार्श्वनाथ स्तवन	जिनचद	१९ वी श०	१८ ५x१२ ५	१८ वा	लि क उत्तमचन्द नागोरी पत्र सख्या १८ पर ही स्फुट सवैया है। पत्र सख्या १९ पर 'वर्द्धमान पद' तथा स्फुट दोहे हैं।
२००३	१२५६८ (२०)	सखेश्वर पार्श्वनाथ स्तवन	उदैरत्न	१९००	१८ ५x१२ ५	२९-३०	लि. क उत्तमचन्द लि स्था हेमावास पत्र सख्या ३० - ३१ पर समयसुन्दर कृत 'जीव॰ सज्भाय' है। ग्रत मे स्फुट दोहे है।
२००४	१०७२६	सग्रह वेलि		१७७५	२६x११	२-११	प्रथम पत्र प्रप्राप्त। लि. क मुनि वालचन्द
२००५	१०९८९ (१)	सतदासजी की छाटमा साखी	सतदास	गु० १९०७	११x६ ५	२-५७	लि क चोकसराम लि स्था रतनपुरी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२००६	१०८४६ (१)	सतदासजी की वाणी	सतदास	१९५०	१५ ५x९ ५	१-२१	सर्व साखी १२१ गुटका सजिल्द । लि क रामनिवास लि. स्था. रतनपुरी
२००७	१०९२५ (१) ६	सतदासजी की वाणी	सतदास	गु० १९३३	२५ ५x१६ ५	१-१६; ५१-५४	
*२००८	१०९२४ (१)	सतदासजी की वाणी	सतदास	गु० १८४०	२३x१२ ५	१-६४	स. का १८३० स क नवलराम स स्था साहिपुरा (भीलवाडा) सर्व सबद १३८८
१००९	१०९२६ (१)	सतदासजी की वाणी	सतदास	गु० १९३६	२१x१५.५	१-२५	सतदासजी की परमधाम-प्राप्ति का भी अत मे कुण्डलिया है ।
२०१०	१०९३४ (१)	सतदासजी की वाणी	सतदास	१९ वी श०	१४x८	१-१५	
२०११	१०९४० (१)	सतदासजी की वाणी	सतदास	१८८३	१५.५x१० ५	१-६६	लि क जैतराम लि. स्था फलोदी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०१२	१०६३८ (६)	सतदासजी की वाणी	सतदास	गु० १८८५	१६ ५x८ ५	५०२-५२०	
२०१३	१०६४८ (१)	सतदासजी की वाणी	सतदास	१६३५	१४.५x७	१-१०	लि. क साधु रामबिलास
२०१४	११०६२ (१)	सतदासजी की वाणी	सतदास	१८३६	१८x१० ५	१-६७	लि क सेवादास शिष्य आत्माराम लि स्था घलू दा
२०१५	१०६०४ (१)	सतदासजी की वाणी	सतदास	२० वी श०	८x५	१-११	
२०१६	१२३२६ (१)	सतदासजी की वाणी	सतदास	२० वी श०	२३x६ ५	१-४६	पत्र वडकने है।
२०१७	१२५७७ (१)	सतदासजी की वाणी	सतदास	१६ वी श०	१४ ५x१०	१-२६	
२०१८	१२५८६ (४)	सतदासजी की वाणी	सतदास	१६ वी श०	१२x६ ५	४२-५६	गुरुदेव संतोषदासजी की आज्ञा से चम्पाबाई के लिए बिहारीदास ने लिखी।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०१६	१०८४२ (८)	सतोक (प)–बावनी	बाँकीदास	१८६५	२४ ५x१६ ५	८४–८६	रचनाकाल से सन्निकट प्रति । र का १८७५ लि क खिडियो हरसुख तथा वणसुर फत्तौ लि स्था जोधपुर
२०२०	१२५७१ (६)	सप्रदाय-यशवर्णन	पूरणदास	१९ वी श०	१० ५x८	३१६–३२४	रामानन्द सम्प्रदाय के सतों का गुणवर्णन है । अंतिम पाच पत्रों पर महाजनी लिपि में कबीरदास आदि के पद है ।
२०२१	१२२०५ (२९)४-८	सभवनाथ अभिनदन, सुमतिनाथ, पद्मप्रभु, पार्श्र्वनाथ गीत	जिनराजसूरि	१८ वी श०	१७x११	११०-११२	
२०२२	१२३२० (१८-२०)	सभवनाथ अभिनदन, वासपूज्य जिनगीत	जिनराज	१८ वी श०	२१ ५x१४.५	२६ वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि सं. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०२३	१२५५१ (२९)	सभवनाथ-स्तवन	चारुदत्त	१७ वी श०	१३x११	१७० वा	
२०२४	१२२०७ (२)	सयोग वत्तीसी	मानमुनि	गु० १८१४-१८२४	२४x१७.५	१-१४	र का १७३१ 'चन्द्र समुद्र शिवाक्ष शशि' सर्वदोधक ४५, सवैया ३२, कवित्त ।
२०२५	१०८१०	सवत्सर-सारणी		१८७६	२६x१२.५	५	वि स १५७६ से प्रारम्भ की गई हे ।
२०२६	१२५६७ (८)	सतनाथजी रो सिलोको	साधुकीर्ति शिष्य अमरमाणिक्य	गु० १८३०	२१x१५ ५	५४-५५	लिपिभ्रष्ट । पत्र सख्या ५५ - ५६ पर गुटके के स्वामी जीवाजी के पुत्र नाथजी का जन्मलग्न सवत् १८५४ का दिया हे ।
२०२७	१२१६४	सतरहभेदी पूजा विधि	साधुकीर्ति	१९ वी श०	२६x१० ५	१-७	र का १६१८ लि क कमलसागर लि स्था आसोप

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०२८	१२३७० (४)	सतरहभेदी पूजा विधि		१६ वी श०	१६x११ ५	२०-३५	र का १६१८ र स्था अणहिलपुर
२०२६	१२५५१ (२)	सतरहभेदी पूजा	साधुकीर्ति	१६५३	१३x११	७७-६०	पत्र चिपके हुए है। लि स्था रायधनपुर पत्र सख्या ६० - ६२ पर 'दडक-स्तुति' सस्कृत मे है।
२०३०	१२५६५ (५)	सतरहभेदी पूजा	साधुकीर्ति	२० वी श०	१६x१२	३५-४५	र का १६१८
२०३१	१२२१८ (५) १३०	सती सज्झाय	हर्षकुशल	१८ वी श०	२६ ५x१०	१३८ वा	पत्र सख्या १३६ पर विहरमानो के नाम तथा उदयराज कृत कवित्त है।
२०३२	१२३७० (४२) ३	सत्तरिसय जिनस्तवन		१६ वी श०	१६x११.५	१०८-११०	प्राकृत मिश्रित अपभ्रश मे।
२०३३	१११७८ (३-४)	सत्ताईस नक्षत्र एव सप्तवार पद्रह तिथि विचार		गु० १७८२-१७६२	१५ ५x१२	८०-८१ ८१-८४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०३४	२२४२५ (३)	सत्यनारायण कथा भाषा	नारायणशास्त्री शिष्य रगाचार्य वैष्णव	२० वी श०	२६ ५x१७	६६-८१	
*२०३५	१२३६४	सत्यार्थ भास्कर वेद		१९४७	३०x१४ ५	१-८६	इसमें स्वामी दयानन्द सरस्वती के 'सत्यार्थप्रकाश' का खण्डन किया गया है । लि क गोवर्द्धनदास वैष्णव लि. स्था नागोर पत्र सख्या १८, २५ - २७ अप्राप्त ।
२०३६	१२३२० (५०)	सदैवच्छ सावलिंगा री वात		१८२७	२१ ५x१४ ५	१३-३६	लि क. मुनि राजसी लि स्था. नागोर बाई सरूपा पठनार्थ ।
२०३७	१२३०५	सदैवच्छ सावलिंगा री वात (सचित्र)		१९ वी श०	१८x१३ ५	१-१३९	अपूर्ण । चित्र स – १४१ पत्र सख्या १२० - १३८ अप्राप्त ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि. स. मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०३८	११५८५ (६)	सदैवच्छ सावलिगा री वात		१८५२	१६ ५x११ ५	७८-११६	अपूर्ण । लि क केसरविजग लि स्था बीकानेर
*२०३६	१०७०२ (१)	सदैवच्छ सावलिगा री कथा (सचित्र)	मुनि केशव	१८५८	२५ ५x१७	१-२६	चित्र स – ३० प्रथम दो पत्र कीटविद्ध - जलाभिषिक्त । कर्त्ता का नाम अद्यावधि अज्ञात था । र का १६६६, विजय दसमी, रविवार ।
२०४०	१२२२३	सदैवच्छ सावलिगा री वात (सचित्र)		१६ वी श०	१७x१३ ५	४-४५	चित्र स – ४२ कथा – प्रसगानुसार चित्र दिए है । पत्र सख्या १-३ अप्राप्त ।
२०४१	१२२०५ (४६)	सनत्कुमार गीत		१८ वी श०	१७x११	१४८ वा	पत्र सख्या १४६ पर कनककीर्ति कृत 'जिनकुशलपद' है ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०४२	१२२१८ (५)८१	सनत्कुमार सज्भाय	हर्षकुशल	१८ वी श०	२६ ५x१०	१०३ वा	
२०४३	१२२१४ (८)	सप्तभूमि का वर्णन	हर्षकुशल	१९ वी श०	२१.५x१३	८८-८९	
२०४४	१२२९३ (३)	सप्तश्लोकी गीता-भाषा	मनोहरदास निरजनी	१९ वी श०	२२ ५x१६	१-६	पत्र तडके हुए है।
२०४५	१२२२५ (३-५)	सप्तश्लोकी गीता-भाषा (सचित्र)			२४ ५x१६ ५	१६१-१६६	चित्र स. - १+१+१=३ पत्र सख्या १६६-१७० पर 'एकश्लोकी रामायणभाषा' पत्र सख्या १७१-१७४ पर 'एकश्लोकी भागवत-भाषा' दोनो कृतियो मे एक-एक चित्र है।
२०४६	१०९२५ (३)	सबद माणिक बोध	रामचरण शिष्य कृपाराम	गु० १९३३	२५ ५x१६ ५	३०-३७	प्रारभ व अंत में चोहोडूग्रन्थ कृत नालकराम 'सबद माणिकबोध' लिखा है।
२०४७	१२५७२ (४-५, ७)	सबद-सग्रह	दयालदास रामदास	१९ वी श०	१० ५x८ ५	१०-१०८ १०९-११३ ११६-१४०	अगबेद्ध।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सॅ.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०४८	११६४८ (१२)१-६	सवदी-सग्रह	गोरखनाथ	गु० १८५३	२७x१६ ५	३८२-३८८	
			भरथरी			३८८-३८६	
			चरपटनाथ			३८६-३६०	
			गोपीचन्द			३६०-३६०	
			जलधरपाव			३६१-३६१	
			पृथ्वीनाथ				
२०४६	११६४८ (१२)७-२४	सवदी-सगह	चौरगीनाथ	गु० १८५३	२७x१६ ५	३६१	पत्र सख्या ३६५ पर 'महादेव एव पार्वती की सबदी' है।
			कणेरीपाव			३६१	
			हालीपाव			३६१-३६२	
			मीडकीपाव			३६२	
			हणवत			३६२	
			अरजणजी नागा			३६२-३६३	
			सिद्धहरताली			३६३	
			गरीबजी			३६३-३६४	
			धूधूमलीलजी			३६४	
			बालगुदाई			३६४	
			घोडाचोली			३६४	
			अजैपाल			३६५	
			चोणकनाथ			३६५-३६६	
			देवलनाथ				
			मालीपाव				
			दत्तात्रेय				

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०५०	१२२०५ (३८-३९)	समतारस सज्झाय आदि	हर्पकुशल भुवनकीर्ति	१८ वी श०	१७x११	१२२ १२२-१२४	
२०५१	१०८४३ (१)	समयसार नाटक	बनारसीदास	१८९५	२५.५x२०	१-७५	सजिल्द । लि. क मुनि गंगराज लि स्था रतनपुर महाराजा बलवतसिहजी के समय मे ।
२०५२	१२२०६	समयसार नाटक	बनारसीदास	१७३१	२२.५x१३		र का १६६३ शाहजहाँ के समय । लि क कीर्तिविजय लि स्था झुझणू प्रारभ के ३ पत्रो पर 'कबीरदास के पद' है । चौथे पत्र पर 'उडद की दाल का पाक' बनाने की विधि है ।
२०५३	१२४१७	समयसार नाटक	बनारसीदास	१९ वी श०	२४.५x१४ ५	८९	र. का. १६९३ र. स्था. आगरा पत्र जलाभिषिक्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिसमय (विक्रमीय)	पत्र (पंक्ति, अ)	[illegible]	विशेष विवरण
२०५२	११३१८ (१)	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२०५५	११२१८ (४)१३४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
२०५६	११६०१ (३)	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२०५७	१०८४६ (४)	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०५८	१०८४५ (१)	सर्वांगसार – सत विचार	नवलराम शिष्य रामचरण	१८८६	१५ ५x१० ५	१-५२६	ग्रन्थ ३२ विधानों में बाटा गया है। गुटका सजिल्द। र का १८३४ र स्था शाहपुरा लि क. जैरामनारायण लि स्था पोकरण
२०५९	१२३२९ (३)	सर्वांगसार	नवलराम शिष्य रामचरण	२० वी श०	२३x९ ५	१७७-३६२	र का १८३४ ४१ विधानो मे श्रेष्ठ सस्कृत ग्रन्थों से श्लोक लेकर उनकी टीका लिखी गई है।
२०६०	१०८४८ (३)	सर्वांगसार	नवलराम	१८३४	१५ ५x८	३०-५०९	र का. १८३४ र स्था. शाहपुरा (भीलवाडा)
२०६१	१०८५२	सर्वांगसार	नवलराम	२० वी श०	२८x१५	१-१३२	र का १८३४ र स्था शाहपुरा (भीलवाडा)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र संख्या
२०६२	१०८६६ (१०)१	सर्व-अग-सार के छुटकर सवद	सतदास	गु० १६२७	८ ५x७	४८० ४६६, ५०१-५०४, ५१८, ५१६ एव ५२२ वा
२०६३	१०८६६ (१०)२	सर्व-अग-मार के छुटकर सवद	रामचरण	गु० १६२७	८ ५x७	४८१, ४८२, ४८५, ४८७, ४६३, ४६६, ५०२, ५०३, ५०७, ५०६, ५१२ एव ५२२ वा
२०६४	१०८६६ (१०)३	सर्व-अग-सार के छुटकर सवद	कबीरदास	गु० १६२७	८ ५x७	४८१, ४८२, ४८५, ४८८, ४६१ ४६२, ४६८, ५०१, ५०६, ५०७ ५१२, ५१६, ५१८, ५१६ एव ५२० वा
२०६५	१०८६६ (१०)४	सर्व-अग-सार के छुटकर सवद	जनतुरसी	गु० १६२७	८ ५x७	४८१, ४८२, ४८५, ४८८, ४६१-४६२, ४६८, ५०१, ५०६, ५०७, ५१२, ५१६, ५१८, ५१६ एव ५२० वा
२०६६	१०८६६ (१०)५-६	सर्व-अग-सार के छुटकर सवद	रज्जब चेतनदास	गु० १६२७	८ ५x७	(१) ४८२, ४६०, ४६८, ५०५ एव ५१३ वा (२) ४८२ एव ४८५ वा
२०६७	१०८६६ (१०)७-८	सर्व-अग-सार के छुटकर सवद	सूरदास अज्ञात	गु० १६२७	८ ५x७	(१) ४८३ वा (२) ४८३, ४८४, ४८६, ४६४, ५०७, ५०८, ५०६, ५१०, ५११ एव ५१४-५१५ वा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०६८	१०८६९ (१०) ९-१०	सर्व-अग-सार के छुटकर सवद	जनहरिदास	गु० १९२७	८ ५x७	(१) ४८५ ५०१ ५०४ ५११	
			दादूदयाल			(२) ४८५ ४८८ ५०० ५०४ ५१२ ५१३	
२०६९	१०८९६ (१०) ११-१८	सर्व-अग-सार के छुटकर सवद	गोरखनाथ	गु० १९२७	८.५x७	४८६	
			परसराम			४८६, ५१३	
			रामप्रताप			४९७	
			जगजीवन			४९९, ५१९	
			मारकण्डेय			५०८	
			मुरारि			५१६	
			रामदास			५१९-५२०	
			नृसिह			५२१	
२०७०	१२२१० (८)	साभी के पद		१९ वी श०	१८x१३ ५	४३-४६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०७१	१२२१८ (५)१२	साप्रति राजा सज्झाय	कनकविजय शिष्य काह्नजी	१८ वी श०	२६ ५x१०	३३ वा	
२०७२	१०९३१ (३)	साती कवित्त सग्रह	जनहरिदास	१९ वी श०	१४x१०.५	३१६-३२४	
२०७३	१०८६९ (१७) १-१०	साखी-सग्रह	नानक	गु० १९२७	८ ५x७	५९७-६०२	कविगद का सवेया है।
			बखनो			६०२	
			कबीर			६०३,६१५	
			समन			६०५	
			रज्जब			६०५,६१० ६१५	
			कविगद			६०६,६०९	
			सजना			६११	
			नापा			६१३	
			सैना			६१३-६१४	
			पीपा			६१४	
२०७४	१०८६९ (१८) ८-१२	साखी-सग्रह	नामदेव	गु० १९२७	८.५x७	७०३-७०५	आगे के पत्रो में गुटके की कृतियो की पद्यवद्ध विगत है।
			रेदास			७०५-७०६	
			पीपा			७०६-७११	
			धना			७११	
			रज्जब			७११-७१२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. में)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०७५	१०८९९ (१)	साखी-सग्रह	जनहरिया	२० वी श०	१४x११ ५	१, ३-११, १६-३४, ३४-४५, ६७	
			दयालदास			२ रा	
			तुलसीदास			३, ५४ वा	तुलसीदास के पद है।
२०७६	१२२१८ (५)११२	सागरसेठ चौपई	ज्ञानउदय	१८ वी श०	२६ ५x१००	१२३-१२४	
२०७७	१०५८५ (८)५१, ५३-५४	सात सखिया रा, फुटकर एव जलालबूवना रा दोहा-सग्रह		१८५०	६१ ५x११ ५	१६२ १६३-१६४ १६४-१६७	
२०७८	१२५६५ (१७)३	सात्रवीसना नी लावणी	चम्पालाल दीवान	२० वी श०	१६x१२	११७ वा	
२०७९	१२३२० (५१)	साधु-गुण गीत	उदयसिह	गु० १८२७	२१ ५x१४ ५	३७ वा	र का १७७५ र स्था सुभटपुर (जोधपुर)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०८०	१०६२८ (३)	साधु-परीक्षा	मुरलीराम	गु० १८४०	२३x१२ ५	२६६–३१६	
२०८१	११५८३ (१४-१५)	साधु-परीक्षा एव सील-समाधि	पृथ्वीनाथ	गु० १६६३	१८x१५	१२६-१३५ १३५-१३७	
२०८२	१२५७१ (५)	साधु-महिमा आदि कृतिसग्रह	दयालदास	१९ वी श०	१० ५x८	२३४-३१८	साध-महिमा, अरक्षनिरणं, रिष्याबत्तीसी, करुणासागर, पिता-पुत्र संवाद ।
२०८३	१२२१८ (५)२७	साधुवदना		१७६३	२६ ५x१०	३८–४१	लि क आणद लि स्था लूणसर
२०८४	१२२१८ (४०)	साधुवदना	समयसुन्दर	गु० १७५५-१७६७	२६ ५x१०	५७ वा	
२०८५	१२३२० (४७)	साधुवदना	पासचद	१८१९	२१ ५x१४ ५	१-६	लि स्था अहिपुर (नागोर)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०८६	१२३७० (३८)	साधुवदना	मुनि देवचद शिष्य ज्ञानचद	१८७४	१६x११ ५	४६ ७३	लि स्था जोधपुर पत्र सख्या ७४ - ८७ तक सस्कृत मे 'कल्याणमदिर स्तोत्र' तथा 'वृहत्शांति' है।
२०८७	१२५५१ (२८)	साधुवदना	पुण्यसागर उपाध्याय शिष्य जिनहस	१६३२	१३x११	१५८-१७०	बीच-बीच मे अक्षरो का स्थान रिक्त छोड दिया गया है।
२०८८	१०६२४ (२६)	साधु-सगत को अग एव पद सग्रह	कबीरदास	१६ वी श०	२३x१२ ५	५६८-६०१	
२०८९	१२५६५ (११)	सामाइक लेवा नी विधि		२० वी श०	१६x१२	७३-७६	
२०९०	१२२१८ (५) १४६	सामाइक-व्रत स्तवन	जिनलब्धिसूरि	१८ वी श०	२६ ५x१०	१६२-१६४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि. स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०६१	१२३७३ (४)	सामुद्रिकशास्त्र भाषा	सुखदेव	२० वी श०	२२x१५ ५	पृ ७–१७	पृ० सख्या १-७ तक सस्कृत की तीन कृतिया हैं । पृ० सख्या १७-१८ पर स्फुट रेखते है । पृ० सख्या १६ - ४० तक सस्कृत की ८ कृतिया है ।
२०६२	१०६७६	सामुद्रिकशास्त्र सटीक	मू० समुद्रकवि	२० वी श०	२५x१२	१-२४	
२०६३	१२५६१ (२१)	सायर		२० वी श०	१५ ५x१०	१.१६-१२३	"तन सूखा कुवडी पीठ हुई घोडे पर जीन धरो बाबा अब मोत नगारा आ वाजा चलने का फिकर करो बावा"
२०६४	१०६५६ (३)	सारचन्द्रिका भाषा	किशोरअलि शिष्य वशीअलि	१८३७	३२x१६	१-२७	र का १८३७ सर्व सवद – ५६५
२०६५	१२५७४ (३)	सारचन्द्रिका भाषा	"	२० वी श०	१७x१०.५	८२-१४०	सतसग माहात्म्य परक कृति– विभिन्न पुराणो और धार्मिक ग्रन्थो के श्लोक देते हुए भाषा पद्यानुवाद चौपई मे है ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०९६	१०८४८ (७)	चारुचन्द्रिका भाषा व्याख्या	किशोरअलि शिष्य वशीअलि	१९ वी श०	१५ ५x८	६०८-६२२	र का १८३७ कर्त्ता सखि सम्प्रदाय के है।
२०९७	११५४७	सारतत्व सग्रह		२० वी श०	२५ ५x१२ ५	१-३३	प्रसिद्ध आयुर्वेदिक ग्रन्थो के सस्कृत श्लोको के आधार पर औपधी सग्रह। प्रथम दो पत्र खण्डित।
२०९८	११४७१	सावित्री ची पोथी		१९ वी श०	२१x१२	१-२३	कृति मराठी भापा मे।
२०९९	११०६२	साहिजादा कुतबदीनरी वात		१८०३	२५x११ ५	१-८	लि क दीपविजय गणि लि स्था कँवला
२१००	१०८४३ (५)	सिंदूरप्रकरण (मुक्त-मुक्तावली-भाषा)	बनारसीदास एव कुँवरपाल	गु० १८८५	२५ ५x२०	७-२१	गुटके मे बनारसीदास की कृतियो का सुन्दर सग्रह है। दोनो मित्रो ने मिलकर ग्रन्थ बनाया है। र का. १६९१ लि क. गगराज लि स्था रतनपुरी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१०१	११०१३ (२६)	सिंह-वानर कथा		गु० १८१८	२३x१५	१४७ वा	११ दोहे । अत मे प्रेम करने के सवध मे २ दोहे है ।
२१०२	११५८५ (८)५६	सिहासन-बत्तीसी री कथा		१८५७	१६ ५x११ ५	२१२-२२६	अपूर्ण । २३ वी कथा तक । लि क लालविजय लि स्था बीकानेर लछमणजी कोचर पठनार्थं ।
२१०३	११५४६	सिंहासन-बत्तीसी री वार्त्ता		१८३३	२६ ५x११ ५	१-१५	अत मे ३२ देवियो के नाम भी दिए हैं । लि क शिष्यणी फत्तु शिष्या केसरजी चेना लि स्था खण्डप शहर मध्ये
२१०४	११०१३ (१५)	सिखामण एव वस्तु-विशेष-नाम वर्णन		गु० १८१८	२३x१५	१२६-१३१	पानी गगा रो, खेती वाडरी आदि ।
२१०५	११५८४ (२)	सिचियाव कवित्त-छद आदि	खेतसी	१७००	१६ ५x१६	२३ वा	लि क चेला नरसिह लि. स्था चीतामा ग्राम

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१०६	१२१२५ (१-७)	सिद्धमुक्ताफल, प्रश्नोत्तर, सिद्धसम्प्रदाय, तेजमजरी, पच्चावली, सिद्धगगा, परमारथ के कवित्त सग्रह	महाराजा मानसिह	२० वी श०	२३ ५x१७ ५	१-११	मानसिहजी की स्फुट कृतियो का सग्रह है । कवित्त प्रारभ कर लिखना छोड दिया है ।
२१०७	१२५६५ (१३)	सिद्धाचलजीनो स्तवन	ग्यानउद्योत	२० वी श०	१६x१२	७८ वा	
२१०८	१२३७० (१७)२	सिद्धाचल स्तुति	नदसूरि	१९ वी श०	१६x११ ५	१४२ वा	
२१०९	१०९४६ (२)	सिद्धान्त-रहस्य सटीक	मू० वल्लभाचार्य	१९ वी श०	१४ ५x७ ५	१९-२७	
२११०	१०९२०	सिद्धान्त-विचार (जैन)		१९५९	२२ ५x११	१-४९	लि क सवाईसागर शिष्य विजयसागर लि स्था देपालपुर नगरे
२१११	१२२१९ (१)	सिद्धान्त-विचार-सगह	लब्धिरुचि शिष्य हर्परुचि	१७५२	२४x१० ५	१-३६, ४०-५२	स्वलिखित प्रति । प्रारभ के पत्र जलाभिपिक्त एव खण्डित । लि स्था खमनोरनगर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२११२	१०७३७	सिद्धान्त सारोद्धार		१९ वी श०	२३ ५x१०	१-५३	ग्रन्थ का अन्तिमाश अपूर्ण है। लिपि दो प्रकार की है। सारणियो के लिए स्थान रिक्त छोडे हुए है।
२११३	१२५८५ (१२)	सिवरीबाई री परची	सुखसारण	गु० १९२७	१९ ५x१५	२९८-३११	गुटके मे कर्त्ता की आठ परचियो का दुर्लभ सग्रह है।
२११४	१२२१८ (५)३७	सीता गीत	जिनरगसूरि	१७६३	२६ ५x१५	४९ वा	पत्र सख्या ५० वे पर स्फुट मत्र, पद व दोहे हैं।
२११५	१२२०५ (१४)	सीता गीत	जिनरगसूरि	१८ वी श०	१७x११	१६-१७	पत्र सख्या १८ वे पर राशि-फल है।
२११६	११५७५	सीताराम चौपई	समयसुन्दर वाचक शिष्य सकलचद	१९ वी श०	२२ ५x१६	१-११३	पत्र चिपके हुए एव स्याही फैली हुई है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२११७	१२५५१ (१४)	सीमधर स्तवन	भक्तिलाभ	१७ वी श०	१३x११	१०६-१०८	र का १६७४
२११८	१२२१८ (५)६३	सीमधर स्तवन	हर्षकुशल शिष्य जिनचद	१८ वी श०	२६.५x१०	८४-८६	
२११९	१२२०८ (१०)	सीमधर स्तोत्र	जयविजय शिष्य नयविजय	गु० १७१५	२५x१८.५	१७८-१८२	
२१२०	१२२१८ (५)१२३	सीमधर स्तोत्र	लालचद गणि	१८ वी श०	२६.५x१०	१३४ वा	अत मे फुटकर कवित्त है।
२१२१	१२२१८ (५)१८	सीमधर स्वामी गीत	हर्षकुशल	१८ वी श०	२६.५x१०	३५ वा	
२१२२	१२२१८ (५)४४	सीमधर स्वामी बृहत्-स्तवन	भक्तिलाभ	१७५५	२६.५x१०	६१-६२	पत्र सख्या ६२ पर ४५ आगमो के नाम दिए है।
२१२३	१२२०५ (४१)	सीमधर स्वामी स्तवन	हर्षकुशल गणि	१८ वी श०	१७x११	१२५-१२६	अत मे बिच्छु का विप उतारने का मत्र है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
११२४	१२२१८ (५)३८	सीलरास	विजयदेव सूरि	१७५५	२६ ५x१०	५१-५७	
११२५	१२२०५ (३)	सील-सज्झाय	समयसुन्दर	गु० १७४८-१७५५	१७x११	३ रा	इसी पत्र पर अज्ञात कर्तृक लावणी है।
२१२६	१०८४२ (४)	सीह (सिंह) छत्तीसी	कृष्णसिंह कविराज	१८९५	२४.५x१६.५	७२-७३	लि क. खिडयो हरसुख तथा वणसुर फत्तौ लि स्था. जोधपुर
२१२७	१२३७० (१८)	सुदर्शण-चरित्र कथा	धर्मसीह शिष्य कृत	१९ वी श०	१६x११ ५	१६१-१९४	कर्त्ता लुंकागच्छी है। कवित्तबद्ध, १२१ कवित्त।
२१२८	१२१२३	सुदामा-चरित्र	बीरबल	२० वी श०	२६x१५	१-७	
२१२९	१२२१७ (३)	सुदामा-चरित्र	वलभद्र	१९ वी श०	२१ ५x१२	६५-६९	
२१३०	१०९०२ (१८)	सुदामाजी की बारखडी	सतदास	गु० १८०९	१५ ५x१२ ५	९०-९४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१३१	१२४२८ (७)	सुदामाजी की बारखडी		गु० १९१२	२१x१५.५	२४ वा	अपूर्ण ।
२१३२	१२५६६ (२)	सुदामाजी की बारखडी		१८२२	१६ ५x११	१-८	अपूर्ण— २० पद मात्र, 'न' वर्ग पर्यन्त । लि क रूपराम लि. स्था. खैडापा
२१३३	१५५९१ (५)	सुदामाजी री बारखडी		२० वी श०	१५ ५x१०	३५-३९	
२१३४	१२५३९	सुन्दरदासजी का अष्टक	सुन्दरदास	२० वी श०		१-६	र स्था. नारायणपुर १३ अष्टक हैं ।
२१३५	१२५७० (७-९)	सुन्दरदासजी की चितावणी (हरिबोल, विवेक, तर्क-चितावणी)	सुन्दरदास	२० वी श०	९ ५x६ ५	२२-२५ २५-३१ ३१-३९	
२१३६	१२५८१ (१३)	सुन्दरदासजी का सवैया	सुन्दरदास	१९ वी श०	१६x१० ५	७७-९०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१३७	१२४२१	सुन्दरदासजी का सवैया	सुन्दरदास	गु० १८९३	१७x१२	२८७-२९१	पत्र सख्या २९२ पर स्फुट कवित्त एव पत्र सख्या २९२-२९४ पर 'दडक' नामक लघु कृति है।
२१३८	१२४२० (२२)	सुन्दरदासजी का सवैया	सुन्दरदास	१९३४	१६x१४	४४८-४५४	अगवद्ध। लि क साधु उदोतराम लि स्था. बीदासर रामद्वारे
२१३९	१२५६१ (४)	सुन्दरदासजी का सवैया एव अष्टक आदि	सुन्दरदास	१९ वी श०	२३ ५x१७	१४७-१६३ १६३-२२५	
२१४०	१२५७४ (१६)	सुन्दरदासजी का सवैया आदि	सुन्दरदास	२० वी श०	१७x१० ५	३०८-३१७	
२१४१	१२३७५ (५)	सुन्दरदासजी का सवैया	सुन्दरदास	१९ वी श०	११x१६ ५	४९८-७५३	
२१४२	१२३७६ (४)	सुन्दरदासजी का सवैया	सुन्दरदास	२० वी श०	१५x१४	३०-३५	पत्र सख्या ३६-४९ पर 'द्विजवदन चपेटा' सस्कृत मे है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१४३	१२३७८ (५)	सुन्दरदासजी का सवैया	सुन्दरदास	१८ वी श०	२२x१५ ५	३१-३७	
२१४४	१२५७७ (४)	सुन्दरदासजी का सवैया	सुन्दरदास	१९ वी श०	१९ ५x१०	७६-७८	अपूर्ण।
२१४५	१२३७२ (१-७)	सुन्दरदासजी रो कृति-सग्रह	सुन्दरदास	१९ वी श०	२४x१६ ५	१-१०१	"ज्ञानसमुद्र, सवैया, अष्टक, हरिहर - सवाद, राजजोग, ज्ञानबोध, विज्ञानबोध"।
२१४६	१०९२६ (३)	सुन्दर-विलास (अगवद्ध वाणी)	सुन्दरदास	गु० १९३६	२१x१५ ५	४४-२२०	
२१४७	११३१३ (१)	सुन्दरशृङ्गार	कविराज सु:दर	१७९९	१५x१४	३१-८६	प्रारभ के ३० पत्र अप्राप्त। लि क निहालचद शिष्य कुशलसिंह लि स्था. जिहानाबाद, (जैसिहपुर)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१४८	११३१८ (२)	सुन्दरश्रृङ्गार	कविराज सुन्दरदास	गु० १७६१	२२ ५x१५ ५	१-२५	अपूर्ण-कवि शाहजहाँ द्वारा सम्मानित किया गया था । लि क जुगलसागर लि स्था पाटण छद सख्या २८७ वे पर्यन्त ।
२१४९	१२२०७ (१)	सुन्दरश्रृङ्गार	कविराज सुन्दरदास	१८१४	२४x१७ ५	१-५८	कीटविद्ध । र का १६८८, शाहजहा के समय । लि क पङ्ग्या पीताम्बर लि स्था गिरपुर (डूँगरपुर)
२१५०	१२५८२	सुन्दरश्रृङ्गार	कविराज सुन्दरदास	१८०७	१५x१०.५	८-६३	पत्र सख्या १-७ अप्राप्त ।
२१५१	१२५५१ (२५)	सुन्दरश्रृङ्गार का सवैया	सुन्दरदास	१७ वी श०	१३x११	१५३ वा	
२१५२	१२५५१ (२०)	सुबाहु-सधि	पुण्यसागर उपाध्याय शिष्य जिनहस सूरि	१७ वी श०	१३x११	१३६-१४५	र का. १६१४ र स्था जेसलमेर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१५३	११०८५ (८)	सुभाषित-सग्रह	वृन्द कवि	१६ वी श०	१६.५x१३.५	६७-६८	
२१५४	१२५७५ (६)	सुमतिनाथ स्तवन		१६ वी श०	१३ ५x१४।	२०-२१	पत्र सख्या २१-२२ पर सस्कृत प्राकृत में सुभाषित हैं।
२१५५	११०६१	सुरसुन्दरी चौपई	धर्मवर्द्धन	१८३७	२५x११	१-१६	पत्र बडकने हैं। लि क आरज्या जीऊ लि स्था. सोजत
२१५६	१०६०१ (२)	सूआ-बहुत्तरी री कथा		१६ वी श०	१५ ५x१२ ५	२६-६६	अपूर्ण। नवमी कथा के प्रारभ तक है। पत्र चिपके हुए है।
२१५७	१०६५४ (१८)	सूआ-बहुत्तरी री कथा		गु० १८७४	२४x१६ ५	१८६-२८३	अपूर्ण। ६६ वी कथा वीच मे छोड दी गई है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१५८	११०६१ (५)	सूरातण को अग (वाणी)	रामचरण	गु० १८३६	१८x१० ५	१७६-१८६	
२१५६	१११७८ (६)	सृष्टिपुराण	गोरखनाथ	गु० १७६२	१५ ५x१२	६२-६३	
२१६०	१०६०३ (२)	सेऊसमन की परची	अनतदास	१६ वी श०	१३x८	१३-२१	
२१६१	१०६२४ (२७)	सेऊसमन की परची	अनतदास	२० वी श०	२३x१२ ५	६०२-६०४	अत मे रामभक्तिपरक तीन 'धमाल' है।
२१६२	१०६४० (५)	सेऊसमन की परची	अनतदास	गु० १८८३	१५ ५x१० ५	४७८-४८३	अत मे राग सुभग मे कबीरदास का पद है।
२१६३	१०६४१ (५)	सेऊसमन की परची	अनतदास	गु० १६३७	१७x१०.५	१३४-१३६	
२१६४	१२५७४ (१३)	सेऊसमन की परची	अनतदास	२० वी श०	१७x१० ५	२६४-२६६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१६५	१२५८५ (१५)	सेऊसमनजी की परची	अनन्तदास	गु० १९२७	१९ ५x१५	३८१-३९०	लि क. आरतराम शिष्य सुलभराम लि. स्था वदनोर
२१६६	१०८६८ (१८)६	सेवगरामजी का कवित्त अगबद्ध	सेवगराम	गु० १९२७	८ ५x७	६८०-६८६	पुष्पिका मे गुटके की सकलित कृतियो का पद्यात्मक वर्णन है।
२१६७	१२५७२ (१२)	सेवगरामजी का झूलणा अगबद्ध	सेवगराम	१९ वी श०	१० ५x८ ५	३४७-३६४	
२१६८	१०८६५ (५)	सेवगरामजी की साखी कुण्डलिया	सेवगराम	१९४६	१२ ५x८	१६-१७	लि क साधु रामस्वरूप
२१६९	१२४२१ (३)	सेवादासजी का रेखता	सेवादास	गु० १८९३	१७x१२	९०-१०२	
२१७०	१२२१४ (१)	सेवादासजी की वाणी	सेवादास	१९ वी श०	२१.५x१३	९-३८, ५९-६५, ७५-८८, ९७-१०३	पत्र चिपके हुए एवं खण्डित पत्र सख्या १-८। अप्राप्त पत्र सख्या ९ 'क' पर कबीरदास के पद है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि सं मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१७१	१२४२२ (१४)	सेवादासजी की वाणी एव कृतिसग्रह	सेवादास	गु० १८३१	१५x१० ५	२६४-३५४	"गुरुमत्र, नाममहिमा, तत्व-निर्णय" ।
२१७२	१२२२६ (१६)	सेवादासजी की वाणी एवं पदसग्रह	सेवादास	गु० १८७७	१४x१२ ५	३००-४३८ ४३८-४७४	
२१७३	११६४८ (८)	सेवादासजी की वाणी एव पदसग्रह	सेवादास	गु० १८५३	२७x१६ ५	१७०-२८५ २८५-३२७	लि क गोपालदास लि स्था कोलियानगर पद ४००, राग २३
२१७४	११६०६	सैलकु वरनी चौपई	समयसुन्दर	१९ वी श०	२४ ५x११	४ था मात्र	पत्र चित्रित है ।
२१७५	११५८५ (८)१३	सोलह-सतियो के नाम		गु० १९०३	१९ ५x११ ५	१४६ वा	पत्र सख्या १४७ पर एक सौ अठ्ठावन कर्म-प्रकृति-वर्णन है ।
२१७६	१२२१८ (५)३६	सोलह-सती सज्झाय	प्रेमराज	१७६३	२६ ५x१०	४९ वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि. स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेप ज्ञातव्य
२१७७	१२३७० (१३)	सोलह-सती सज्भाय	उदयरत्न	१९ वी श०	१६x११ ५	१३१-१३४	
२१७८	१०९०० (५)	सोला-कला	द्यालबाल	२० वी श०	१२x८ ५	४६-४८	वाणी का ही एक अंग है।
२१७९	१२४२१ (११)	सोले-सुपना (स्वप्न)	परसराम	गु० १८९३	१७x१२	१८०-१८९	
२१८०	१२३८० (७)	सोहिलो (रामजी को)	तुलसीदास	गु० १७२४	२०x१४	१२७-१२९	पत्र सख्या १२६-१२७ पर रामजी की छठी के रागबद्ध पद है।
२१८१	१२०६६	सौन्दर्यलहरी-सभाषाटीका	शभुदत्त पुत्र ज्योतिर्विद शिवकृष्ण	१८७६	१७ ५x११	१-१३८	पोरवाल बालकृष्ण वाचनार्थ। लि. स्था जोधपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें मी में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१८२	१२४३०	सौ-प्रश्नी भाषा		२० वी श०	१६ ५x११ ५	१-२७	
२१८३	१२२१८ (१५३)	स्तभण-पार्श्वनाथ गीत	कुशललाभ	१८ वी श०	२६ ५x१०	१६५–१६८	अपूर्ण । अतिम पत्र खण्डित ।
२१८४	११५८४ (१३)	स्तभण-पार्श्वनाथ गीत		१७१४	१६ ५x१६	३६ वा	लि क नयणा लि स्था लाविया पत्र सख्या ४० - ४१ पर सस्कृत मे नाडी-परीक्षा है।
२१८५	१२२०५ (१२)	स्तभण-पार्श्वनाथ-स्तवन		१७५५	१७x११	११-१२	लि क विद्याप्रमोद लि स्था. रूपनगर
२१८६	१२२०५ (२७)	स्तभण-पार्श्वनाथ-स्तवन	भुवनकीर्ति	गु० १७४८-१७५८	१७x११	१०३ वा	लि क विद्याप्रमोद लि स्था रूपनगर
२१८७	१२५५१ (२३)	स्तभण-पार्श्वनाथ-स्तवन	जयसोम	१७ वी श०	१३x११	१४६ वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१८८	१२५६५ (१६) १-११	स्तवन पद सगह	माणक, कुशालराय	२० वी श०	१६x१२	६३ वा	पत्र सख्या ६० - ६२ पर रागवद्ध दोहे है।
			रूपचद			६३, ६४, १०७, १०८, १०६	कल्याण राग के स्तवन १०, पत्र सख्या ६२-६४ ।
			माधोदास			६४	काफी राग के स्तवन ६, पत्र सख्या ६४-६६ ।
			बनारसी			६४, ६५,	
			रूपविमल			६५, ६७	
			देव			६५	
			अज्ञात			६६	
			चदकुशाल			६७, १००, १०८ १११	जंजोटी के स्तवन ४, पत्र सख्या ६७-६८ ।
			हस्तीमल			६८	ठुमरी के स्तवन ६, पत्र सख्या ६८-१०० ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१८९	१२५६५ (१६) १२-२१	स्तवन-पद-सग्रह	धर्मभगत	२० वी श०	१६x१२	९८ वा	*र का १९३१
			लालचद			९९, १००, १०१, १०३-१०४, ११३, ११४	पत्र सख्या १०२ पर सोरठ राग के दोहे है।
			*प्रधानसागर			९९ वा	रेखते के स्तवन ४,
			आनन्दघन			९९, १०४, १०५-१०६	पत्र सख्या १००-१०१।
			जादुराय			१०० वा	
			राजाराम			१०१ वा	
			कीर्तिसागर			१०२ वा	
			चैनविजय			१०१-११२	
			रायचद			१०३ वा	
			रिखवदास			१०५ वा	
२१९०	१२५६५ (१६) २२-३१	स्तवन-पद-सग्रह	धर्मपाल, हरखचद	२० वी श०	१६x१२	१०६ वा	
			श्रीधर			१०७ वा	
			धन्नो, खेम			१०९	
			भावविजय			११० वा	
			केशरीचद			११३ वा	
			मुकनचद			११० वा	र. स्था बालोतरा
			चतुरकुशल			११३ वा	
			बस्तीराम			११४ वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स में)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१९१	१०८२२	स्तवन-सग्रह	जसविजय	१९ वी श०	२७.५x१३ ५	१–११	"बीस विहरमान स्तवन" है। लि क लखमीकुसल
२१९२	११५८५ (८) १७-२२	स्तवन-सग्रह	रूपचद लावण्यसमय जिनराज अज्ञात समयसुन्दर	१९ वी श०	१९ ५x११ ५	१५० वा १५१-१५३ १५३-१५४ १५४ १५५	सुविध जिन स्तवन पचतीर्थ स्तवन वासुपूज्य स्तवन आदिजिन स्तवन शेणिक सज्झाय
२१९३	१२२०५ (२५)	स्त्री-प्रवाह-प्रतिकार ओखद		१८ वी श०	१७x११	७९–८६	
२१९४	१२५७० (१७)	स्थूलदेह-वर्णन आदि	जनतुरसी	२० वी श०	९ ५x६ ५	१२३-१२४	पत्र सख्या १२५-१२८ पर 'नरसी' कृत पद हैं।
२१९५	१२३७० (३२)	स्थूलिभद्र नव-रासो	उदयरत्न	१९ वी श०	१६x११ ५	१०-१८	र का. १७५९

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१९६	१२१७८	स्थूलिभद्रनी सीयल वेल	वीरविजय	१९४०	२८x१२	१-७	र का १८६६, राजनगर लि क पवोरविजय लि स्था चाणसमा नगरे
२१९७	१२२०५ (३७)	स्थूलिभद्रमुनि-गीत	सौभाग्यसुन्दर	गु० १७४८-१७५८	१७x११	१२१-१२२	
२१९८	१२२१८ (७५)	स्थूलिभद्र सज्झाय	सिद्धविजय शिष्य शीलविजय	गु० १७५५-१७६७	२६ ५x१०	६५-६६	
२१९९	१२२१८ (५)१६	स्थूलिभद्र सज्झाय	जिनराज	१८ वी श०	२६ ५x१०	३४ वा	
२२००	१२२१८ *(२१-२३)	स्थूलिभद्र सज्झाय	समयसुन्दर	गु० १७५५-१७६७	२६ ५x१०	३६ वा	*(२१) भुवनकीर्ति कृत "गुरु-स्तुति" रूप मे ढाल है। (२३) "नीसाणी" शीर्षक से २५ सतो के नाम व उनकी जाति दी गई है।
२२०१	१२२१८ (४१)	स्थूलिभद्र सज्झाय	धर्मविजय शिष्य चारित्रविजय	गु० १७५५-१७६७	२६ ५x१०	५७-५८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२०२	१२३७० (१)	स्नात्रपूजा-विधि	देवचन्द्र	१६ वी श०	१६x११ ५	१–६	ढालबद्ध ।
२२०३	१२५६५ (१)	स्नात्रपूजा-विधि	देवचन्द्र	२० वी श०	१६x१२	१–८	
२२०४	१०६२७ (८)	स्नेहलीला	मोहनदास वैष्णव (जनमोहन)	गु० १८०६	२० ५x१०	१-१३	अगले दो पत्रो पर 'दत्तात्रेय स्तोत्र' है ।
२२०५	११६७५	स्नेहलीला	ब्रजनिधि (सवाई प्रतापसिह)	१६ वी श०	२३ ५x१० ५	१-११	अपूर्ण— ११८ छन्द है ।
२२०६	११५८६ (३)	स्नेहलीला (सचित्र)	विष्णुदास	गु० १८३३	१५ ५x११	१३३–१४३	चित्र सख्या—२
२२०७	१२५५७ (१६)	स्नेहलीला	जनमोहन	गु० १८७८	२०x१५ ५	१२-२२	
२२०८	१०६४७ (१)	स्नेहलीला	जनमोहन	२० वी श०	१४ ५x७	१-२८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२०९	१२४२८ (१)	स्नेहलीला	रसिकराय	१९१२	२१x१५ ५	१-९	प्रथम पत्र शोभन । लि क वैष्णव मोतीराम लि स्था जोधपुर
२२१०	१२१६०	स्फुट-आलापक (जिन-प्रतिमाजी री हुडी)		१८४९	१९ ५x११ ५	१-३२	जलाभिषिक्त । लि क अमरचन्द लि. स्था मेडता
२२११	१२५६७ (५)	स्फुट-औपधि एव आयुष्य विचार-सग्रह		गु० १८३०	२१x१५ ५	४९-५०	पत्र सख्या ५० से ५४ पर स्कन्धपुराण के कुछ श्लोको की टीका एव ज्योतिष-विषयक सग्रह है ।
२२१२	११५८४ (२)	स्फुट-औपधि एव मत्र-सग्रह		१७४९	१९ ५x१६	१३०-१३६, १३८ वा	
२२१३	११५८५ (८)८	स्फुट-औषधि सरसो री		१९०३	१९ ५x११ ५	१४० वा	
२२१४	११५८३ (२०)	स्फुट-कवित्त-सग्रह	गगकवि	गु० १९९३	१८x१५	१६४-१६६	लि क अमरदास

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी. से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२१५	१०८५० (२)	स्फुट-कवित्त-सग्रह	दयालदास	१८६६	१७x१० ५	१०-५३	अन्त में गुटके की कृतियो का विवरणात्मक कु डलिया है।
२२१६	१०८६७ (५)	स्फुट-कवित्त-सग्रह		१९ वी श०	१८x११	८६ वा	गुटका सजिल्द ।
२२१७	१०८९७ (९)	स्फुट-कवित्त-सग्रह (वाणी के अग)	रामदास	१९ वी श०	१२x११	२५४-२७०	गुटका अपूर्ण है। पत्र फटे हुए एव चिपके हुए हैं।
२२१८	१०९३६ (७२)	स्फुट-कवित्त-सग्रह	पद्माकर	१९३४	१२ ५x८ ५	४१५-४१६, ४१९-४२१	लि. क चोकसराम लि स्था जोधपुर
२२१९	११०८५ (२)	स्फुट-कवित्त-सग्रह	रामदत्त	१९ वी श०	१६.५x१३.५	५७-५९	
२२२०	१२२१८ (१२२)	स्फुट-कवित्त-सग्रह		१८ वी श०	२६ ५x१०	१३४ वा	गुर्जर-भाषा मे।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२२१	१२६१२ (२, ४, ६)	स्फुट-कवित्त-सग्रह	लछीराम देवीदास रावबुधा कासीराम वाजीद	गु० १८१६	२२x१५	११ वा १४ वा १७ वा १८ वा १९-२०	पत्र सख्या १८ पर 'तूला-पागला की खोट की टीप' है।
२२२२	१२५४७ (२)	स्फुट-कवित्त एव लघुचाणक्य	कविशभु	२० वी श०	१६ ५x१२	२–३ ४–५	पत्र सख्या ३-४ पर 'पञ्चाक्षर मत्र' सस्कृत मे है।
२२२३	११५८४ (२४-२५)	स्फुट-कवित्त-संग्रह (जालिकाबद्ध, मादगबद्ध, टोकरियो आदि)		१८ वी श०	१६ ५x१६	२११, २१२ वे	
*२२२४	१०८४२ (१२)	स्फुट-कवित्त-सग्रह (राठोडा रा)		१९ वी श०	२८ ५x१६ ५	६२ वा	इसमे राव तीडा से लेकर, जोधपुर के महाराज विजयसिह तक का नामोल्लेख है।
*२२२५	१०८४२ (१३)	स्फुट-कवित्त-सग्रह (रिणमल-रायाँ-राव)		१९ वी श०	२४.५x१६.५	६४ वा	अत मे स्फुट दोहा है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
*२२२६	१०८४२ (१५)	स्फुट-कवित्त-सग्रह		१९ वी श०	२४ ५x१६ ५	९७-९८	"जीवराज सोलखी लारे सती हुई जिणरो"। ११ चरण हैं।
*२२२७	१०८४२ (११)	स्फुट-कवित्त-सग्रह (सरणै राखिया रा)		१९ वी श०	२४ ५x१६ ५	९० वा	मण्डोर के महाराजाश्रो के प्रशसात्मक कवित्त है।
*२२२८	१०९५५ (४)	स्फुट-कवित्त-सग्रह		गु० १९०५	२३ ५x१७ ५	१-४	मानसिंहजी की प्रशस्ति-परक एव श्रृङ्गारिक कवित्त है।
२२२९	१२३७० (२०)	स्फुट-कवित्त-सग्रह	धर्मसी	१९ वी श०	१६x११ ५	२००-२०७	
२२३०	१२३७६ (१)	स्फुट-कवित्त-सग्रह		२० वी श०	१६x१४	१-२२	
२२३१	१२४४८ (२)	स्फुट-कवित्त-सग्रह	कविसिद्ध, सूरत पद्माकर गग कविलाल	गु० १९०९	२८x१३	९ वा ९, १० वे ९ वा १० वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि सं. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२३२	१०६३० (५)	स्फुट-कवित्त-सग्रह	कविगद	१९ वी श०	१५ ५x१२	५२ वा	स्त्री-स्वभाव पर औपदेशिक कवित्त हैं। अत मे तात्रिक मत्रादि है।
२२३३	१०८६९ (१८) २-६	स्फुट-कवित्त-सगह (अगवद्ध)	नारायण	गु० १९२७	८ ५x७	६६२-६६५	
			अज्ञात			६६५-६७०	
			हरिदेव			६७०-६७७	
			अज्ञात			६७७-६७९	
			सेवगराम			६८०-६८६	
२२३४	११०१३ (११)	स्फुट-कवित्त, सवेया	कविगद आदि	गु० १८१८	२३x१५	११८-११९	प्रेमी-प्रेमिका के वार्तालाप सबन्धी शृङ्गारिक सवैये आदि हैं।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२३५	१२१७४ (१) १-१४	स्फुट-कवित्त, सवैया आदि	तुलसी	२० वी श०	१८ ५X७	१, ७, ६, २६	किसी बडे गुटके के बीच के पत्र मात्र हैं। मूल पत्राङ्क ५१ से ७७ तक लगे हुए है। सगुण भक्ति-परक छन्द हैं।
			जगनाथ			१, ८	
			गैव			२ रा	
			रामवल्लभ			३ रा	
			माणक			४, ५, ६	
			साईदीन			८ वा	
			केशव			१०, १६	
			वनारसी			११ वा	
			देवीदास			१७, २५	
			हरिदास			१८–२४	
			ईसरदास			१८ वा	
			मालमदास			१६ वा	
			राघोदास			१६ वा	
			दीनानाथ			२५ वा	
२२३६	१२४२० (२०) १-३	स्फुट-कवित्त, सवैया आदि (वाणी के अग)	परसराम	२० वी श०	१६X१४	४३१–४३५	पत्र संख्या ४५२ पर भी परसरामजी के कवित्त हैं।
			जनतुरसी			४३२–४३४	
			सुन्दरदास			४३५–४३७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२३७	१२२२६ (७) १-१३	स्फुट-कवित्त, सवैया, कुण्डलिया-सग्रह		१८७९	१४x१२ ५	४२-५८	सर्वं ६१— अत मे तीन दोहे है।
			अज्ञात			४२,४३, ४६	
			देवीदास			४३-४४	राजनीति रा।
			कवि व्यास			४४, ५४	कलजुगी मित्र रा।
			कवि ब्रह्म			४५-४६	
			ऋषि लालचद			४७ वा	लि. क. बीरमदास निरजनी
			कवि जनक			४८ वा	शिष्य कोमलदास
			कवि सार			४८,५१,५३	शिष्य वनमालीदास
			कवि गद			४९ वा	शिष्य मगलदास
			उदयराम			५० वा	शिष्य अमरदास
			गिरधरकविराय			५२ वा	शिष्य सेवादास
			लिखमीदास			५७ वा	लि स्था कैरू (जोधपुर)
			केसोदास			५८ वा	पत्र सख्या ५४ से ५६ पर 'पृथ्वी रा खण्ड द्वीप रो प्रमाण' है।
			जगन्नाथ				
२२३८	१२५७४ (१४) १–३	स्फुट-कवित्त, सवैया, ढाल	तुरसीदास	२० वी श०	१७x१० ५	३०० वा	
			माधोदास			३०१–३०२	
			चोथमल			३०२-३०४	र. का. १८५२

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२३९	१२२८१ (९)१-५	स्फुट-चन्द्रायणा	सेवादास हरिदास कबीर रूपदास जनतुरसी	१९ वी श०	१६x१० ५	७०-७१ ७३-७५ ७२ वा ७३ वा ७५ वा	जनतुरसी की 'साखी' है।
२२४०	१२३७१ (१६)	स्फुट-दोहा-सग्रह (शृङ्गार)		१८५२	१८ ५x१६ ५	५९-६०	महाजनी लिपि मे। पत्र सख्या ६१-६२ पर पत्र लिखने की कला के दोहे है।
२२४१	१२२०५ (४९)	स्फुट-दोहा-सग्रह		१८ वी श०	१७x११	१२६-१३१	७७ दोहे हैं।
२२४२	१२५७० (२२)	स्फुट-दोहा-सग्रह (दोहावली)	गो० तुलसीदास	२० वी श०	९ ५x६ ५	१३०-१३५	
२२४३	१०९४० (७) ३६-३७-३८	स्फुट-दोहा-सग्रह	रहीमदास आदि	गु० १८८३	१५ ५x१० ५	५७४-५७५	पत्र सख्या ५७६-५७८ पर "रघुनाथ-अजनी-सवाद" है।
२२४४	११५८५ (८)९	स्फुट-दोहा-सग्रह		१९०३	१९-५x११ ५	१४०-१४१	लि क लिखमीचद कोचर लि स्था वालाहेडा

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि. स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२४५	११०८२ (१)	स्फुट-नुस्खा-सग्रह	सगह कर्त्ता मेघराज वलाई	१८४३	१८x१० ५	१-६७	पत्र खण्डित एव जलाभिषिक्त लि. क. मेघराज वलाई लि स्था पाली गुटका प्रतिलिपि कर्त्ता का स्वयम् का ही है।
२२४६	१२२१३ (२)	स्फुट-नुस्खा-सग्रह		गु० १८४७	१२x१६ ५	५-२३	
२२४७	११५८३ (१६)	स्फुट-पद	रैदास	१८ वी श०	१८x१५	१६१-१६२	
२२४८	११५८५ (८) २५, २८	स्फुट-पद एव दोहे	रूपचद एव अज्ञात	१६ वी श०	१६ ५x१५ ५	१५७, १६४	
२२४९	१२५६२ (६) १-३	स्फुट-पद, कवित्त आदि	पूरणदास	१६ वी श०	१४x१० ५	१८०-१८३	पत्र सख्या १६३ पर 'बावीस-अभक्ष वर्णन' है।
			देवीदास			१८३-१६१	
			तुलसीदास			१६१-१६२, १६३-१६५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२५०	१२६१२ (१२) १-५	स्फुट-पद, कवित्तादि	जुगतराम ख्यालीराम विहारीदास भूधरदास अज्ञात	गु० १८१७-१८३६	२५x१५	४५ वा ४६ वा ४७ वा ४८-४९ ५०-५४	पत्र सख्या ४९ - ५० पर 'विहरमान विनती', ५१ वे पर 'पार्श्वनाथ स्तुति' एव ५२ वे पर 'श्रीपाल दर्शन' है।
२२५१	१०९३६ (७)	स्फुट-पद, कवित्तादि	हरीदास अज्ञात पद्माकर	१९३४	१२ ५x८ ५	३७४-३७५ ४१५-४१६ ४१९-४२१	लि क. चौकसराम लि स्था वडे रामद्वारे-चाँदपोल, जोधपुर
२२५२	१२०६९ (३)	स्फुट-पद, कवित्तादि	वेणीदास कवियण अज्ञात	गु० १९६०	१५ ५x१४	३४, ३८, ५०, ५१ २४ वा ३४-५५	पत्र सख्या ४२ - ४३ पर 'हनुमान-स्तुति' है। पत्र सख्या ४६ पर रागो के नाम हैं।
२२५३	१२५७० (२५) १-४	स्फुट-पद, कुण्डलिया आदि	सग्राम जनभावन जगजीवन रामदास	२० वी श०	९ ५x६ ५	१५५-१५७ १५९-१६७ १६८ वा १६९-१७०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२५४	११३१३ (४)	स्फुट-पद, दूहा-सग्रह		गु० १८०२	१५x१४	१-७	
२२५५	१२६१२ (१८)	स्फुट-पद, विनती आदि	रिखबदास	गु० १८१६	२५x१५	६१-६३	पत्र सख्या ६४ पर धर्मचर्चा का प्रारभ मात्र है।
२२५६	१२२०५ (५१)	स्फुट-पद-सग्रह	मीरा	१८ वी श०	१७x११	१३३ वा	"राधा मोहजोरी स्याम खेलो होरी"
२२५७	१०६०० (१२)	स्फुट-पद-सग्रह	नामदेव रैदास		१२x८ ५	६४-६५ ६५ वा	स्फुट नुस्खे व मत्र भी है। गुटका अपूर्ण है।
२२५८	११४७७ (२)	स्फुट-पद-सग्रह	ब्रह्मानन्द		२३ ५x१६	१-१०	लिपि गुजराती मोड लिए हुए है। पदो की भाषा भी गुजराती है।
२२५९	११५८३ (२४)	स्फुट-पद-सग्रह	जनहरिदास	गु० १६९३	१८x१५	२३८–२३९	अत मे सवत् १७४५ की घरेलू-याददाश्त है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२६०	१२२१७ (४)	स्फुट-पद-सग्रह	जिनरग केशवदास परमानन्द कासीराम	१९ वी श०	२१ ५x१२	७४ वा ७६ वा ७७ वा ७८-७९	
२२६१	१२२२६ (२०)	स्फुट-पद-सग्रह	तुलसीदास मीरा जनतुरसी	गु० १८७७	१४x१२ ५	६१४ वा	
२२६२	१२३७० (४५)	स्फुट-पद-सग्रह	आनन्दघन	१८७८	१६x११ ५	१५५-१५७	लि क विनैचद लि स्था जोधपुर पत्र सख्या १५८ पर लल-वाणी मानमलजी के पुत्र नवलमल का सवत् १८८१ का जन्म-लग्न है । पत्र सख्या १५९ पर साहजी रामचन्द्रजी के पुत्र सकलचद का जन्म-लग्न है ।
२२६३	१२३७८ (१)	स्फुट-पद-सग्रह	गोविन्ददास सुन्दरविरहन	१८ वी श०	२२x१५ ५	१-६	बीच - बीच मे सस्कृत के सुभापित भी है ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२६४	१२३८० (६)	स्फुट-पद-सग्रह	वखना आदि	गु० १७२४	२०x१४	१३२-१३६ १६०-१६१	पत्रो पर एक ओर ही लिखा गया है।
२२६५	१२३८० (१५) १-३	स्फुट-पद-संग्रह	कबीरदास	गु० १७२४	२०x१४	२०८, २१५–२१६	
			नापा			२०६–२१३	
			कान्हा			२१३–२१४	
२२६६	१२४१६ (२)	स्फुट-पद-सग्रह	परमानन्द	गु० १९४३	२५x१७	९४ वा	पत्र सख्या ९५ - ९६ पर 'महादेवजी री स्तुति' है। अगले पत्रो पर 'फूलजी–फूलमती की वात' का प्रारभ मात्र किया गया है।
			मीरा			९५ वा	
२२६७	१२५७५ (३६-३७)	स्फुट-पद-सग्रह	रायचद	१९ वी श०	१३x१४ ५	१०४ वा	
			प्रेमसागर			१०५-१०६	
२२६८	१२६१२ (७) १-३	स्फुट-पद, सवैया आदि	रूपचद	गु० १८१७-१८३६	१५x१५	२१ वा	पत्र सख्या २८ पर सवत् १९१४ की गाव की आमदनी की टीप है।
			वनारसी			२२,२८	
			भूधर			२३-२४, २७-२८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२६९	१२३७० (२३)	स्फुट-पद, सवैया, कुण्डलिया	रत्नचन्द	१९ वी श०	१६x११ ५	२१६-२२०, २२१-२२४	
			बनारसीदास			२२०-२२१	
२२७०	१२५७० (५) १०-१३	स्फुट-पद, साखी, कवित्तादि	जनरामा	२० वी श०	९ ५x६ ५	९ वा	पत्र सख्या १० पर ही गोपीचंद का कुण्डलिया है।
			रज्जब			१० वा	
			जनहरिदास			१०, ११	
२२७१	१२४२१ (२) १-१०	स्फुट-पद, साखी, सवया, कवित्तादि	अज्ञात	गु० १८९३	१७x१२	७२-७४, ७७-७८	
			मुकद			७४-७५	
			राघोदास			७५ वां	
			सेवादास			७५-७६	
			जनतुरसी			७६, ७८	
			जगनाथ			७७, ८०, ८२	
			सुन्दरदास			७७, ८८, ९०	
			किशनदास			७८ वां	
			गोपाल, जगजीवन			७९ वा	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं में)	माप (सें.मी. में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२७२	१२४२१ (२) ११-२०	स्फुट-पद, साखी, सवैया, कवित्तादि	रज्जब, विगनदास जननीजो, कृष्णदास बालकराम कबीर मोहनलाल देवीदास खेमदास चतुरदास	गु० १८९३	१७x१२	८० वा ८१ वा ८१, ८७-८८ ८३, ८९ ८३ वा ८४ वा ८५ वा ८६ वा	
२२७३	१२४२१ (१६) १-६	स्फुट-पद, साखी, सवैया, कवित्तादि	जनभगवान जगनाथ रज्जब जनतुरसी माधोदास सुन्दरदास	गु० १८९३	१७x१२	२४३ वा २४४, २४५ २४४ वा २४६ वा २४६, २४७ २४७, २५१	
२२७४	११९७३	स्फुट-पद होली आदि	नारायण	२० वी श०	१६ ५x१०	१-४	
२२७५	११३२४	स्फुट-रेखता		१९ वी श०	२२ ५x१५ ५	२८-३४	राधा-कृष्ण परक २८ रेखते है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२७६	११६४८ (२८)	स्फुट-रेखता, कवित्त सग्रह	रूपराम	गु० १८५३	२७x१६ ५	५७५-५७६	गुटके मे सत व नाथ-साहित्य का दुर्लभ सग्रह है।
२२७७	१२०६६	स्फुट-रोग एव नुस्खा सग्रह		गु० १६६२	१५ ५x१४	३२-५२	पत्र एक-ओर लिखे हैं।
२२७८	११५८५ (८) ३१-३२	स्फुट-सज्झाय एव पद	राजसमुद्र आनन्दघन	१६ वी श०	१६ ५x११ ५	१६६-१६७	
२२७९	१०८५० (१)	स्फुट-सबद-सग्रह	रामदास	गु० १८६६	१७x१०.५	१–६	लि. क खण्डूराम लि स्था कोटा
२२८०	१२५६१ (१)१-६	स्फुट-सबद-सग्रह	दासहरिआ (हरिदास) भीखजन आतमराम रामचरण जनरामा द्यालवाल	२० वी श०	१५ ५x१०	१-२ २-४ ४-६ ६ ठा ७-१२, १४-१५ १६ वा	
२२८१	१०६४५ (३)१०	स्फुट-सबद-सग्रह	अनेक सतो के	१६ वी श०	१४ ५x७ ५	३३८-३६०	सग्रह-सवैया, कवित्त दोहा मनहर-छद आदि मे है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२८२	१०६४४ (६)१५	स्फुट-सवैया	केसोदास	२० वी श०	८x५	३०२-३०४	
२२८३	१२२१७ (४)	स्फुट-सवैया, कवित्त-सग्रह	मोहनविजय	१६ वी श०	२१ ५x१२	६६-७१, ७३	
			कविगग			८१ वा	
			अज्ञात			७५,८०-८१, ८२-८३	
			बनारसीदास			८७-८६	
			मुकदकवि			६१-६२	
			बिहारी			६३ वा	
			हरिनाथ			१०१ वा	
२२८४	१०८६१ (७)	स्फुट-सवैया, कवित्त		१६ वी श०	१६x१२	६६-१०३	
२२८५	११६४८ (६)	स्फुट-सवैया, कवित्त, रेखता		गु० १८५३	२७x१६ ५	३४५-३४७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२८६	१२२१७ (२)	स्फुट - सवैया, सुभाषित, समस्यापूर्ति एव नुस्खा-सग्रह	कविगग, मनराम लालकवि बनारसी, केसोदास आदि	१९ वी श०	२१ ५x१२	१३-२३ २६-२७ ३५-३८ ४५-५१, ५४	पत्र सख्या २३ से २५ पर 'सोमोत्पत्ति परिशिष्ट' सस्कृत मे है। पत्र सख्या २७ से ३४ पर सस्कृत मे सुभाषित एव स्तुति है। गुटके मे भाषा व सस्कृत पद्यो को एक-साथ लिख दिया गया है।
२२८७	१०८६९ (१२) १-३	स्फुट-साखी	रज्जब जगजीवन कालू	गु० १९२७	८ ५x७	५३७-५३८ ४५२ वें ५३९-५४१ ५४१ वा	
२२८८	११०९२ (१०)	स्फुट-साखी	कबीरदास	गु० १८३६	१८x१० ५	१९३-१९४	
२२८९	१२५९१ (८,१०,१७)	स्फुट-साखी	सेवादास कबीरदास जनतुरसी	२० वी श०	१५ ५x१०	५२ वा ५४-५५ ९४-९५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२९०	१२५८१ (८) १-१३	स्फुट-साखी, पद, कवित्तादि	माधवदास	१९ वी श०	१६x१० ५	५१ वा	
			रज्जब			५२-५३	
			अज्ञात			५३ वा	
			सेवादास			५४ वा	
			जनरूपदास			५४-५६, ६८ वा	
			हरिराम			५६-६४	
			समन			६४ वा	
			तुलसीदास			६५ वा	
			कबीर			६६ वा	
			सेखवहावदी, सुन्दरदास			६७ वा	
			कानड, मीरा			६९ वा	
२२९१	११६४८ (२)	स्फुट-साखी, पद-सग्रह	दादूदयाल	१९ वी श०	२७x१६ ५	१-४	पत्र जीर्ण है।
२२९२	१२५८१ (२)	स्फुट-साखी-सग्रह	अहमद आदि	१९ वी श०	१६x१० ५	१४-२८	
२२९३	१२५७५ (८,१०,१२)	स्फुट-सैद्धान्तिक बोल-सग्रह (जैन)		१९ वी श०	१३ ५x१४	१७-२०, २२-२८, २९-५१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२६४	११०१३ (३)	स्फुट-शृङ्गारिक प्रहेलिका-सग्रह	दलपति विप्रभान पिगल शुभसागर वृन्द	गु० १८२५	२३x१५	७०-७१	दोहा, कवित्त, सवैया बद्ध । आगे के पत्रों पर भी गूढार्थ एव पहेलिया हैं । पत्र स ७४ पर कुण्डलिया है ।
२२६५	१२२१८ (५)१०८	स्वयभू-पार्श्वनाथ स्तवन	हर्षकुशल	१८ वी श०	२६ ५x१०	१२२ वा	
२२६६	१२३८० (८)	स्वयवर (सीता का)	नन्ददास	गु० १७२४	२०x१४	१२६-१३१	
२२६७	११८२२	स्वरज्ञान	चरनदास	१६ वी श०	११ ५x८.५	१-१०	स्वर-चलने के आधार पर शकुन विचार है । जेबी डायरीनुमा है ।
२२६८	१२५५६ (२)	स्वरूप-निर्णय भाषा		गु० १८०५	२१x१४	६८-६१	पुष्टिमार्गीय ग्रन्थ ।
२२६९	१२२०४ (३)	स्वरोदय	चरनदास	१८६३	१७x१५ ५	२६-४०	लि क. फतेचद लि स्था अवतिका नगरे

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३००	१२२२६ (६)	स्वरोदय		१८७६	१४x१२ ५	३२-४१	लि.क वीरमदास निरजनी लि स्था कैरू (जोधपुर)
२३०१	१२२०४ (२)	स्वरोदय-शास्त्र-तत्वज्ञान		गु० १८५८	१७x१५ ५	२६-२६	
२३०२	१०६८४	हसराज-वच्छराज चौपई	जिनोदयसूरि	१६ वी श०	२५ ५x१२	१-२४	र का १६८० पत्र चिपके हुए है।
२३०३	१२५६८ (३४)	हसराज-वच्छराज चोपई	जिनोदयसूरि	१८५६	१८ ५x१२.५	१-५३	र का १६८०। कीटविद्ध। सवत् १८३० की पूर्व प्रति से प्रतिलिपि कृत। लि स्था ग्राम माडावास
२३०४	१०८६६ (६)१५	हनुमन्नाटक-पद्यानुवाद	अज्ञात	गु० १६२७	८ ५x७	४७१-४७२	मनहर छद मे कुछ श्लोको का अनुवाद है। इनके बाद जगन्नाथ कृत स्फुट सवैये है।
२३०५	१०६६४ (६)२१	हरचद (हरिश्चन्द्र) की लावणी	सूरदास	२० वी श०	८x५	३४३-३४५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३०६	१०९२४ (१६)	हरचन्द (हरिश्चन्द्र) सत	ध्यानदास	१९ वी श०	२३ ५x१२ ५	५७२–५८७	
२३०७	१२८२१ (१३)	हरचन्दसत	ध्यानदास	गु० १८९३	१७x१२	१९३-२१४	
२३०८	१२३७३ (२०-२२)	हरबोल-चितावणी	सुन्दरदास	२० वी श०	२२x१५ ५	पृ० २१४–२१५ २१५-२१९	इसीके आगे 'तर्क चितावणी' तथा 'विवेक चितावणी' है। पृ० सख्या २१९-२२५ पर दो सस्कृत कृतिया है।
२३०९	१२३७५ (२-४)	हरबोल-चितावणी	सुन्दरदास	१९ वी श०	११x१६ ५	४७६–४८० ४८०–४९० ४९०–४९७	'तर्क चितावणी' 'विवेक चितावणी
२३१०	१०९३० (३)	हरिचन्दसत	ध्यानदास	१९ वी श०	१५ ५x१२	१-४७	सर्व सवद ३४०
२३११	११००२	हरिचन्दसत	ध्यानदास	१९ वी श०	२१ ५x११	१-२४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३१२	१२४२० (१)	हरिचदसत	ध्यानदास	२० वी श०	१६x१४	१-३४	पत्र सख्या ३४ - ३५ पर मीरा के पद है।
२३१३	१२५७४ (१२)	हरिचदसत	ध्यानदास	२० वी श०	१७x१० ५	२५७-२६४	
२३१४	१२४२१ (१३)	हरिचदसत	ध्यानदास	१६ वी श०	१७x१२	१६३-२१४	
२३१५	१२२२६ (२८)	हरिचदसत	ध्यानदास	१८८२	१४x१२ ५	६७६-७०६	
२३१६	११०८७ (७)	हरिचरणा री महिमा		गु० १७६३	२१ ५x१५ ५	१२१ वा	
२३१७	१०८३६ (१०)	हरिजस	दी .दरवेश	१६०६	३२x१७ ५	१-४७	अत मे स्फुट सवैये तथा 'हरिगीता-छद' दिया हुआ है। लि स्था जोधपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि. स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३१८	११५८३ (१६)	हरिदासजी का चन्द्रायणा एव पद-सग्रह (वाणी)	जनहरिदास	१८ वी श०	१८x१५	१३८-१४६ १४६-१५६	अमरदास ईश्वरदास पठनार्थ । अत मे सवत् १७३८ की याददाश्त है ।
२३१९	१०९६६	हरिदासजी की वाणी	जनहरिदास	२० वी श०	२५ ५x१२ ५	१-३९	
२३२०	१२२२६ (१५)	हरिदासजी की वाणी एव कृति-सग्रह	जनहरिदास	१८७७	१४x१२ ५	१-२९९	पत्र सख्या २९९ पर अमरदासजी का, पत्र सख्या ३०० पर हरिदासजी का, पत्र स ३०१ पर मगलदासजी का, पत्र सख्या ३०२ पर वनमालीदासजी का चित्र है । लि. क बीरमदास निरजनी लि स्था कैरू (जोधपुर)
२३२१	१२४२२ (२)	हरिदासजी की वाणी एव कृति-सग्रह	जनहरिदास	गु० १८३१	१५x१० ५	१-१९३	लि क ऊगमदाम लि स्था डीडवाणा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३२२	११००३ (२)	हरिदासजी की साखी	जनहरिदास	१९ वी श०	२९ ५x१४ ५	४-३३	पत्र चिपके हुए है।
२३२३	१२५५३ (४)	हरि-नाम-प्रताप	दामोदर	गु० १८९७	१४ ५x१३ ५	११२-११६	
२३२४	१०६०२ (६)	हरिबोल-चितावणी	सुन्दरदास	गु० १८०६	१५ ५x१२ ५	५२-५४	
२३२५	१२३२९ (७)	हरिबोल-चिनावणी	सुन्दरदास	२० वी श०	२३x९ ५	३७९-३८०	
२३२६	११०८९ (९)	हरिरस	ईसरदास बारठ	१९ वी श०	१८ ५x१६ ५	८८-१०१	२६४ छद है।
२३२७	१२४२० (६)	हरिरामदासजी का छुटकर सबद	जनहरिया	२० वी श०	१६x१४	२१-११८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३२८	१२५७१ (३)३	हरिरामदासजी री वाणी (गग्घर निसाँणी)	जनहरिया शिष्य जैमलदास	१९ वी श०	१० ५x८	५३-१४७	
२३२९	१२५९१ (२५)	हरिरामदासजी री वाणी	जनहरिया	२० वी श०	१५ ५x१०	१३२-१३४	प्रारंभ मात्र है।
२३३०	१२५७१ (३)१-५	हरिरामदासजी के सवद एव कृति-सग्रह	जनहरिया	१९ वी श०	१० ५x८	५३-१२८ १२८-१३५ १३६-१४३ १४४-१४६ १४६-१४७	अगवद्ध। पद-बत्तीसी गग्घर-निसाँणी प्रश्नोत्तर पद
२३३१	११००९	हरिवश-प्रवन्ध (ढाल-सग्रह)	गुणसागर सूरि शिष्य प्रेमसागर	१७८३	२६ ५x१०	१-९६	र का १६७२ 'मास सावण सुद तीज' र. स्था. कुकुटेश्वर नगरे लि क चेना— कनकादे प्रसादात् पत्र सख्या ७६-८४ अप्राप्त। पत्र जीर्ण।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३३२	११०९२ (८)	हालीपावजी की सबदी	हालीपाव	गु० १८३६	१८x१० ५	१९१-१९२	नाथ-साहित्य ।
				१८ वी श०	१९ ५x१६	२३२ वा	
२३३३	११५४८ (३४)	हिंगुलाजदेवी-गीत					
२३३४	१२२१८ (५)११९	हित-शिक्षा-सज्झाय	विजयभद्र	१८ वी श०	२६ ५x१०	१३२-१३३	
२३३५	१२३७१ (२)	हितोपदेश कथा	मू० विष्णुशर्मा	१८३५	१८ ५x१६ ५	१००-१४१	लि क भीखनदास गौड लि स्था अहिपुर (नागोर)
२३३६	११९८८	हितोपदेश पञ्चाख्यान सभाषा-सहित	मू० विष्णुशर्मा	१९ वी श०	२३ ५x१६	१-७०	अपूर्ण— विग्रहभेद कथा तक ।
२३३७	१२५७६	हितोपदेश पञ्चाख्यान भाषा	मू० विष्णुशर्मा	१९ वी श०	२१x१५ ५	१-५०	अतिमाश अप्राप्त । प्रति जेठमल आसोपा की ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि सं. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३३८	११०६० (३)	हितोपदेश भाषा		१६ वी श०	१४ ५x११	७८-३४३	अपूर्ण । गुटका दीमकग्रस्त । पत्र सख्या ३३६ वें के बाद पत्र गुटके से अलग हो गए है ।
२३३६	१२१५८	हितोपदेश भाषा		१६ वी श०	२५x११ ५	१-१३	विग्रह-कथा मात्र ।
२३४०	१२२१८ (५)६	हीरविजयसूरि-सज्झाय	भक्तसेन शिष्य विजयसेनसूरि	१८ वी श०	२६ ५x१०	३१ वा	अत मे हर्षकुशल का एक पद है ।
२३४१	१२२१८ (५)१५	हीयाली (प्रहेलिका)		१८ वी श०	२६ ५x१०	३४ वा	
२३४२	१२३२० (५४)	हीयाली-सग्रह	मुनि जयमल	गु० १८२७-१८४७	२१ ५x१४ ५	३६ वा	पत्र सख्या ३६ - ४० पर साध्वी सरूपा जिसके लिए गुटका लिखा गया है, उसी के हाथ का लिखा पत्र है ।

ग्रन्थाङ्क ७८५६ से १०६८८ तक के
हिन्दी ग्रन्थों तथा अवशिष्ट राजस्थानी
ग्रन्थों का विवरण :—

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३५५	१०५०२	अमृतसागर	सवाई-प्रतापसिंह कारित	२० वी श०	२१ ५x१३ ५	२-१७३	आयुर्वेदिक ग्रन्थ । अपूर्ण । पत्र सख्या ५७ से ७३ खण्डित ।
२३५६	१०१८१	अवतारचरित्र	नरहरिदास बारठ	१८६५	३१x२४	१-४३२	लि क ब्राह्मण गगाविष्णु, ज्ञाति गुर्जरगौड, गौत्र सुरतान्या जोशी । वास्तव्य—लोचनपुर ।
२३५७	८५८४ (३)	अवतारमाला नी गरबी	जीवनलाल नागर	२० वी श०	२२x१७ ५	४०-४२	र का १९१४ र स्था बूँदी समकालीन प्रति है । पत्र त्रुटित ।
*२३५८	७८६०	अलकार-कलानिधि	श्रीकृष्णभट्ट-कवि कलानिधि	१९ वी श०	२१ ५x१६	१-१९२	पत्र सख्या १३३-१३८ तक अप्राप्त । प्रारभ मे 'गीत-प्रबन्धाध्याय' के ८ पत्र हैं । कवि लाल के आग्रह से सवाई-जयसिह के समय मे निर्मित ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि सं मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
*२३५६	१०६८५ (१)	अलकार-रत्नाकर	दलपतिराय एव बशीधर	२० वी श०	२५ ५x१६	१-६६	र का १७६८ पत्र सख्या ५६ - ६६ पर 'भापाभूषण' नाम से अलकारो के मूल-लक्षण दिये गये है।
२३६०	६२६० (४)	अश्वलक्षण		१६ वी श०	२०x१४	३४७-३६८	प्रारभ के २६ छन्द अप्राप्त। पत्र सख्या ३४६ - ३५२ व ३६४ वा अप्राप्त।
२३६१	८४०४ (२)	अष्टप्रकारी-पूजा	मुनि देवचद	१६ वी श०	२०x१३	७-११	पत्र चिपके हुए है।
२३६२	८४०० (३६)	आदिजिन-गीत	मुनि देवचद	१६ वी श०	१६x१३ ५	८३-८५	
२३६३	८४०० (३४)	आदिजिन-गीत	करमसिंह	गु० १८६४	१५x१३ ५	७३ वा	
२३६४	८४०० (४३)	आदिजिन-गीत	मुनि देवचद	गु० १८६४	१५x१३ ५	८५-८६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३६५	८४२२ (१४)१-२	आदिजिन-स्तोत्र	गुणसागर	गु० १७७६	२३x२०	७७-८०	
२३६६	८४२२ (१, ५)	आदित्यवार कथा (जैन)		गु० १७७६	२३x२०	१८-२०	अपूर्ण—प्रारभ के १७ पत्र अप्राप्त ।
		आदित्यहृदय स्तोत्र		,,	,,	२८-३७	कृति सस्कृत मे है ।
२३६७	८६२८ (१-१२)	आरती-सग्रह (१२ आरतिया)		२० वी श०	२३x१४	१-१४	पत्र सख्या १४ - २२ पर सस्कृत मे जैन स्तोत्र है ।
२३६८	८८५७ (२)	इतिहाससार-समुच्चय-भापा	गुसाई जुगतानन्द शिष्य चरणदास	१६ वी श०	१६x१४	१-१८३	
*२३६६	८२३६	इतिहाससार-समुच्चय-भापा	लालदास पुत्र ऊधोदास	१८५५	२५ ६x१३	१-४२	र का १६४३ लि क रामजीदास लि स्था नागपुर(नागोर) बखततडाग तीरे । कश्मीरी पत्र ।
२३७०	६६४१	इतिहाससार-समुच्चय-भापा	लालदास	१८ वी श०	२५x१३	१-५६	र का १६४३, किंचित अपूर्ण । ३२ वे अध्याय के २५ व श्लोक तक ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३७१	१०१९६	इन्द्रजाल-भाषा		१९०९	३८x१८ ५	१–४८	चौरासी तन्त्रो के आधार पर मत्र-तत्र सग्रह है। प्रथम दो पत्र खण्डित है।
२३७२	८४२२ (३१)	इलापुत्र-सज्झाय	लब्धिविजय	गु० १७७९	२३x२०	६८ वा	
२३७३	९६८१ (२)	इश्कचमन रा छुटकर दूहा		१८९६	२४x११ ५	८–९	लि स्था. फलवर्धिका (फलोदी) अत मे सुभाषित दोहा-सग्रह है।
२३७४	९३१५ (१-२)	इश्कलता	कवि भोलानाथ	१९ वी श०	१८x१३	६+६=१२	कृति पजाबी मिश्रित भाषा मे है। र का १८२७ महाराजकुंवर गोपालसिंह हित रचित।
२३७५	९७२० (५)	इश्कलता	रसराशि	१९ वी श०	२०x१५ ५	१४-१६	अपूर्ण।
२३७६	८४२७ (४)	उपदेश-चितावणी	सुन्दरदास	१९ वी श०	१० ५x७	२९–४५	पत्र सख्या ४५ से ५४ तक दादू, सेवादास के स्फुट-पद, साखी, सवैया आदि है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३७७	९०८८ (५)	उपदेश-छत्तीसी	जिनहर्ष	१९५६	२२ ७x१४	१६-२९	लि क मोहनकीर्त्ति लि स्था लाखोला ग्राम र. का १७१३ 'सवत गुण शशि भक्ष'
२३७८	८५६२ (१३)३	ऐतिहासिक टीप (विगत)		गु० १७९९	२९ ५x१५ ५	७ वा (ब)	सवत् १७९९ मे किसन-विलास मे शक्तावत सूरत-सिहजी के पुत्र प्रतापसिहजी की हत्या की विगत है ।
२३७९	८४०० (३९)	ऋपभदेव-गीत	समरचन्द सूरि	गु० १८६४	१५x१३ ५	८१–८२	
२३८०	८४२२ (२३)	ऋपभदेव-स्तवन	गुणसागर सूरि	गु० १७७६	२३x२०	८९-९०	
२३८१	९३२७ (३)	कठाभरण की वचनिका	भोलानाथ	१९ वी श०	२८x१८ ५	३२-३४	स्फुट पत्र ।
२३८२	९२२८ (७)	कबीर-गोरख-गोष्ठी		१८४१	२६ ५x१४ ५	४०-४३	पत्र सख्या ४४ पर पट्-शास्त्र सम्मत पद्य है । पत्र सख्या ४५ पर कबीरदास की वाणी का अश है ।

क्रमाङ्क	गन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३८३	८५६१ (१)	कबीरदासजी री परची	अनन्तदास	१७५४	२१ ५x१६	९–१४	पत्र संख्या १ से ८ अप्राप्त। प्रारभ के पत्र त्रुटित।
२३८४	८५६१ (२)	कबीरदासजी की वाणी	कबीरदास	१७५४	२१ ५x१६	१५-६६	३३ वा पत्र अप्राप्त। लि क रूपदास लि स्था करवर ग्राम (बूँदी) पत्र जीर्ण।
२३८५	९७३२ (१)	कबीरदासजी की वाणी	कबीरदास	१९ वी श०	१७x१२ ५	१-२०	काया की, द्वादशपथ की, करम की, प्रबोध की, अक्षर-खड की रमेनी है।
२३८६	८००३	कबीरदासजी का सबद एव पद-सग्रह	कबीरदास	१९ वी श०	२८x१४ ५	१-१०४	प्रति मे दो प्रकार के पत्र हैं। लि क किसनदास लि स्था जोधपुर
२३८७	९२२८ (६)	कबीरदासजी की साखी (कबीर-धर्मदास-सवाद)	कबीरदास	गु० १८४१	२५ ५x१४ ५	३३-४०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३८८	८५६२ (५)११	कबीरदासजी की साखी	कबीर	गु० १७६५	२४ ५x१५.५	७४ वा (ब)	
२३८९	८५६२ (५)८	कमलकु वर बाईसा रो गीत		गु० १७६५	२४ ५x१५.५	६३ वा (अ)	महाराणा अमरसिंह द्वितीय के साथ सवत् १७६७ वि मे सती होने का गीत ।
२३९०	८४२२ (३९)	कर्म-सज्झाय	हीरानन्द सूरि	गु० १७७६	२३x२०	१०४-१०५	
२३९१	९०८८ (३)	कल्याणमदिर स्तोत्र भाषा	बनारसीदास	१९५६	२२ ८x१३ ५	३-८	लि क मोहनकीर्त्ति लि स्था लाखोला ग्राम
२३९२	८४०४ (६)१	कल्याण-राग रा दूहा		१९ वी श०	२०x१३	५७ वा	
२३९३	८४०४ (६)२	कल्याण-स्तवन	कुशालराय	१९ वी श०	२०x१३	५७ वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि सं. मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३९४	९८३४ (२) १-७	कवित्त ग्रमरसिह का आदि	कविगद मोहन केहरि नयन	१८४५	१२x१५	२-३ ६ ठा ७ वा ८-२० २१ वा	पत्र सख्या ४ पर गिरधर कविराय के कुण्डलिया है। पत्र सख्या ५ पर मीरा के पद है। पत्र सख्या ४-५ पर रेखा-चित्र हैं।
२३९५	९२६० (३)२	कवित्त गुजरात की रसोई को		१९ वी श०	२२x१४	२८७ वा	
२३९६	९२६० (१)१२-१४	कवित्त जयसिंहजी को तथा कुण्डलिया आदि सग्रह	कविनोने गिरधर कवि गगकवि	१९ वी श०	२२x१४	२९२-२९४	पत्र सख्या २९४-२९७ पर दोहा-सग्रह है।
२३९७	९२६० (१)१-६	कवित्त, दोहा-सग्रह	मुरलीदास बनारसीदास सुन्दरदास ग्रज्ञात ग्र१बरशाह गि॰धर कविराय	१९ वी श०	२२x१४	२८१-२८७	पत्र सख्या २८४ पर 'गणेश जी की स्तुति' हे।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३९८	९७२८ (४, ६)	कवित्त, दोहा-सग्रह	हरलाल	१९ वी श०	२१x१७	१७-१९ २१-२२	७ दोहे हैं। महाराजा तखत-सिंहजी रा कवित्त।
२३९९	९८३४ (७)	कवित्त, दोहा-सग्रह	वे हरि	गु० १८४५	१२x१५	३३-६०	पत्र सख्या ३२ - ३३ पर पुराणो की सख्या का विवरण है।
२४००	१०२४७ (२) ३	कवित्त नायिका री बोहतर कला रो	कविग्यान	गु० १८८३	१६x१२	२६-२९	पत्र सख्या २९ पर ही कवि गद कृत कवित्त है।
२४०१	९२६० (१) १५	कवित्त-पद्य-सग्रह	कवि केसो	१९ वी श०	२२x१४	२९७-२९८	सूरजमलजी आदि के कवित्त।
२४०२	९२६० (१) १६	कवित्त बरसाना की राड को	कवि केसो	१९ वी श०	२०x१४	२९९-३००	नवलसिंह जाट को।
२४०३	७८७६	कवित्त राजनीति रा	देवीदास	२० वी श०	३४ ५x२२	१-९	कवित्त सख्या ७६ है। अत मे १२५ उपदेशात्मक वाक्य है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४०४	९७२८ (२)	कवित्त राजनीति रा	देवीदास	१९ वी श०	२१x१७	७-१४	पत्र सख्या १-७ पर 'मदनाष्टक' है।
२४०५	१०२४७ (२)१	कवित्त रामसिहजी रो		गु० १८८२	१६x१२	७-८	पत्र सख्या ७ पर 'जोगीगीत' है।
२४०६	९८८९	कवित्त-रामायण	कवि चन्द	२० वी श०	२३ ५x१४	१४	
२४०७	९२६० (१)७-११	कवित्त-पद्य-सग्रह	केसोदास, बुधराव, काशीराम, कवि गोकुल	१९ वी श०	२२x१४	२८८-२९२	राग-रागिनियो के नाम आदि के कवित्त ।
२४०८	८८५७ (१)४	कवित्त-सग्रह	जुगतानन्द	१९ वी श०	१९x१४	१५०-१६३	६८ कवित्त हे ।
२४०९	९८८९ (२)	कवित्त-सग्रह	भूपण, भोलानाथ, रघुराय आदि	१९ वी श०	१५x१०	९-२०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	गन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि. स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४१०	९२९८	कवित्त-सग्रह	बद्रीजन	१८ वी श०	१७x१२	१-२६	कुल ६० कवित्त है । कवि का नाम अतिम पत्रो के कवित्त-सवैयो मे दिया गया है ।
२४११	१०६७९ (१)	कवित्त-सग्रह	रामलाल जोशी	२० वी श०	१५ ५x११	१-७	इस गुटके मे इन्ही की कृतिया सगृहीत हैं ।
२४१२	१०२४७ (२)२	कवित्त-सगह		गु० १८८२	१६x१२	२३-२४	कवित्त मे जयपुर राज्य का रजाई से व मुगल बादशाही का चादर से रूपक बाधा गया है ।
२४१३	९७२८ (५)	कवित्त-सग्रह	पद्माकर	१९ वी श०	२१x१७	१९-२१	
२४१४	९३३७ (४)	कवित्त, सवैया-सग्रह	शोभाराम तिवारी, हरिवल्लभ	१८ वी श.	१९ ५x१३	२३-२८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४१५	९४३१ (२)	कवित्त, सवैया-सग्रह	घनानन्द	१७८६	२१x१५ ५	१-३७	अतिम पत्र मे स्फुट सुजान हित कवित्त-छन्द है।
२४१६	९७२८ (७)	कवित्त, सवैया-सग्रह		१९ वी श०	२१x१७	२३-२६	
२४१७	१०१४६ (१)१-१२	कवित्त, सवैया-सग्रह	कृपाराम, घनानन्द, उधोराम, कासे राम, देवीदास विहारी, सुन्दरदास, भूपण, सूरजमल, लालकवि, नाथकवि, जसराज	१९ वी श०	२१x१२ ५	१-३४	कुल २८० कवित्त हैं। छत्रसाल, शिवाजी, मानसिहजी, बुधसिह हाडा, आदि के प्रशस्तिपरक कवित्तो के साथ - साथ शृङ्गारिक कवित्त भी है। पत्र सख्या ३५ - ३६ पर सस्कृत मे 'जगन्नाष्टक' है।
२४१८	९२३६	कवित्त, सवैया-सग्रह	राय अमृतराम	१९ वी श०	२७x१९	१-२५	र का १८६९ कुल ३४ कवित्त है।
२४१९	९२९० (१).१६	कवित्त सिक्खा की लडाई फतै करी जी को	कवि केसो	१९ वी श०	२२x१४	१९९-३००	नवलसिंह जाट को कवित्त।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (सें.मी. में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४२०	८५६२ (१३)२	कवित्त (स्फुट)		गु० १७६५	२४ ५x१५ ५	५ वा(ब)	
२४२१	१०५६३	कविप्रिया	केशवदास	१९ वी श०	२२x११	१-२६	६३ वे छन्द पर्यन्त ।
*२४२२	१०१५० (१)	कविप्रिया	केशवदास	गु० १७८५	२१x१६	१-१८	र का १६५८ छन्द संख्या ७६ से प्रारंभ ।
२४२३	१००५९ (४)	कलिजुग-पच्चीसी	नन्दराम पुत्र बलराम	१८११	२६ ५x१८	१०७-१०९	र का १७८४ लि क बखतराम चाटसूका लि स्था बुपोई
२४२४	८००८	कार्तिक माहात्म्य भाषा-टीका	भगवानदास निरंजनी	२० वी श०	२५x१५	६१	र का १७४३
२४२५	८४२७ (३)	कालचिनावणी को अंग	सुन्दरदास	१९ वी श०	१० ५x७	१९-२८	
२४२६	६२६४ (४)	कालीनाथन-लीला	चरणदास	१८ वी श०	१६ ५x११	६४-६८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४२७	७८५७ (३)	कुण्डलिया-संग्रह	गिरधर कविराय	१९ वी श०	२७ ७x१८	१-६७	४० कुण्डलिया है । गुटके के अन्तिम ६ पत्रो मे बालचन्द कायस्थ का वश वर्णन एव ऐतिहासिक टीप है । बूंदी मे बालचन्द कायस्थ के नाम से 'बालचन्द पाडा' आज भी प्रसिद्ध है । ये वहा के कामदार थे ।
२४२८	९७२८ (३)	कुण्डलिया	गिरधर कविराय	१९ वी श०	२१x१७	१५-१७	
२४२९	९३२७ (४)	कुवलयानन्द-भाषा	भोलानाथ	१९ वी श०	२८x१८ ५	३६३८	स्फुट-पत्र मात्र ।
२४३०	८६९३ (२)	कृष्ण-बावनी (उपदेश-बावनी)	किशन वाचक	१९ वी श०	१९x१३ ५	३६-५२	र का. १७६७
२४३१	९२५२ (२)	कृष्ण-रुक्मिणी री वेली	पृथ्वीराज राठोड	गु० १७७४	२१ ५x१४	१-१९	र का १६३८

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४३२	६२३६ (३)	कृष्ण-रुक्मिणी री वेली सटीक (गद्य)	पृथ्वीराज राठौड	१७२७	१६ ५x१४	३६-७०	लि. क आनन्दराम मिश्र पत्र सख्या ७१ से ८२ तक 'आदित्यहृदय-स्तोत्र' सस्कृत मे है।
२४३३	६३२७ (२)	कृष्ण-लीला पद्य-सग्रह	कवि भोलानाथ	१६ वी श०	२८x१८ ५	२४-३२, ३६-५१	इसमे 'जुगल विलास' एव 'कठाभरण की वचनिका' आदि के भी स्फुट-पत्र है।
२४३४	८८५८	कृष्णावतार-भाषा (अवतारचरित्र गत)	नरहरिदास बारठ	१६ वी श०	३६x२१	१-४५	
२४३५	६२२८ (२)	कृष्णोत्पत्ति भाषा (पद्य)	चतुरदास शिष्य सतदास	१६ वी श०	२५ ५x१४ ५	१४४-१५४	र का १६६२ आगे के पत्र गुटके मे से कटे हुए हे।
२४३६	६७२८ (८)	केवाट सरवहिया रा सोरठा	जोगीदास	१६ वी श०	२१x१६ ५	२७-३५	अगले पत्र पर 'पन्ना वीरम-दे की वात' का प्रारम्भ मात्र है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४३७	९५०६	कोकसार-भाषा	आनन्द कवि	१८५३	२४x१० ५	१-१३	लि स्था बीकानेर
२४३८	९७३० (१)	कोकसार-भापा	आनन्द कवि	१८२१	१५x११	१-४५	लि क ऋषि दयाराम प्रारम्भ के तीन पत्रो पर 'शनिश्चरजी की कथा' का अन्तिमाश है।
२४३९	९२५४ (४)	कोकसार-भापा	आनन्द कवि	१८१०	१६ ५x१३.५	१-२१	
२४४०	८४२२ (१५)	क्षमा-बत्तीसी	समयसुन्दर	गु० १७७६	२३x२०	८०-८२	र स्था नागोर
२४४१	९६८२ (१)	गगाजी रो सिलोको (श्लोक)		२० वी श०	२५.५x१२ ५	२ रा	
*२४४२	९५९४ (६)	गगा शतक	जीवनलाल नागर	२० वी श०	२२x१७ ५	७१-८०	र का. १९२० र स्था बूँदी समकालीन प्रति। पत्र त्रुटित।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४४३	९२६० (२)	गणेशजी की स्तुति		२० वी श०	२२x१४	२८४ वा	पजाबी मिश्रित भाषा मे ।
२४४४	८५६२ (१३)१	गीत (मन रो)	पहाडखा	गु० १७९५	२४ ५x१५ ५	४(ब) वा	गुटके के पत्रो के पृष्ठीय भाग बाद मे लिखे गये है ।
२४४५	८२५२	गीता-माहात्म्य (आनन्द-विलास)	आनन्दराम नाजर	१९ वी श०	२६x११	१-२८	र का १७६१, अनूपसिह राज्ये, बीकानेर ।
२४४६	८४१७ (४)	गीता-माहात्म्य-भाषा (पद्मपुराण गत)	तुलसीदास	१८ वी श०	१६x१३	२-६६	आदि के १७ श्लोक अप्राप्त । इस गुटके के प्रारंभिक पत्रो मे (१) पुरुषोत्तम सहस्रनाम (२) यमुनाष्टक (३) चतु-श्लोकी आदि है । लि क जोशी पीथा नाम हस्तेडा । 'राज, महाराजा श्री जैसिघ को' ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४४७	८५६१ (३)	गीता-माहात्म्य-भाषा (गद्य) (पद्मपुराणगत)		गु० १७५४	२१ ५x१६	६७-१०४	लि क रूपदास पत्र सख्या ७५ वा अप्राप्त
२४४८	१०५६६	गीता-माहात्म्य-भाषा (गद्य) (पद्मपुराणगत)		१८७४	२१x१५ ५	१–५३	लि क. हिम्मतराम लि स्था अलवर
२४४९	८४००	गुरु-गीत	पद्मनन्द सूरि	गु० १८६४	१५x१३ ५	३७-३८	र का १७१५ र स्था माडल
२४५०	१०१३९	गुरुचार, कालज्ञान, राशि-फल आदि		१८०४	१४x१३	१–४६ ६०-७२	पत्र सख्या ७३-७९ पर स्फु-मत्र है।
२४५१	८८५७ (३)	गुरु-चेला गोष्ठी (पद्मपुराणगत)	जुगतानन्द	१९ वी श०	१९x१४	१८३–२२१	पत्र जीर्ण।
२४५२	८५६२ (५) ३	गूढार्थ (पहेलियाँ)		गु० १७९५	२४ ५x१५ ५	६९ वा	
२४५३	९४२५ (१)	गोकुलचन्द्रमाजी की सेवा, उत्सव-विधि	द्वारकेश	१९ वी श०	२१ ५x१० ५	१-१११	पत्र सख्या १०६ से १११ खडित।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४५४	६५७४ (७)	गोपीगीत		२० वी श०	२२x१७ ५	८०-८२	अपूर्ण ।
२४५५	६४२५ (२)	गोवर्द्धननाथजी की स्तुति-पद-संग्रह	चतुर्भुजदास	१८१४	२१ ५x१७ ५	१-५	
२४५६	१०६६२	गोविन्दचन्द्रिका	[इच्छाराम]	२० वी श०	२२ ५x१६	५०-३०१	१४ वे अध्याय के ७० वे छन्द से ८५ वे अध्याय के १८ वे छन्द तक । बीच-बीच मे पत्र अस्त-व्यस्त है । कर्त्ता का नाम अप्राप्त ।
२४५७	८४०० (४४)	गौडी-पार्श्वनाथ-गीत	देवचद	गु० १८६४	१५x१३ ५	८६-८७	
२४५८	८४०० (१५)	गौडी-पार्श्वनाथ-स्तवन	प्रीतिविमल	गु० १८६४	१५x१३ ५	४५-५२	
२४५९	८५६३ (२)	गौतमपृच्छा-रास	लावण्यसमय	गु० १७५३	१७x१०	१-११	र का १५५४ पत्र जीर्ण है ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४६०	८४२२ (१२)	गौतम-रासो	विनयप्रभ	गु० १७७६	२३x२०	६८-७२	
२४६१	८४२२ (४७)	गौतम-सज्झाय	लावण्यसमय	गु० १७७२	२३x२०	१-१२५	पत्र सख्या ११७ - १२४ अप्राप्त । लि क ऋषि रामचन्द्र चौधरी उदेभाण वाचनार्थं ।
२४६२	८४०० (४)	गौतमस्वामी-अष्टक	समयसुन्दर	गु० १८६४	१५x१३ ५	१०-११	१० वा पत्र दो-बार ।
२४६३	८४०० (२)	गौतमस्वामी-अष्टक	लावण्यसमय	गु० १८६४	१५x१३ ५	१-२	प्रारम्भ मे 'नवकार मत्र' है ।
२४६४	८४०० (५०)	गौतमस्वामी-स्तवन		गु० १८६४	१५x१३ ५	९५-९८	अपूर्ण ।
२४६५	९२६० (३) १०	घोडा-घोडी री परख रा दोहा		१९ वी श०	२०x१४	३०५-३०६	अपूर्ण । पत्र सख्या ३०१ से ३०४ तथा ३०७ से ३४६ अप्राप्त ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेप ज्ञातव्य
२४६६	९३३२	चतुर-मुकट रानी चन्द्रकिरन री वात री कथा		१८८१	२१ ५x१५	१-२३	लि क पुष्कर मिश्र लि स्था रोसी नगर
२४६७	८५६२ (९)	चन्दन-मलयागिरी रा दूहा	भद्रसेन	गु० १७९५	२४ ५x१५ ५	११८–१३१	१८२ दोहे हैं । लि क पचोली गुलावराय हरीदासोत । मामाजी वगसीरामजी री पोथी सू उतारी ।
२४६८	७९६९	चाणक्यसूत्र-भापा	विष्णुगिरि शिष्य ब्रह्मानन्द	१९०५	२५x१० ५	१-१४	र का १७७९ लि क त्रिजयचन्द लि स्था -उन्दोर 'कोविद यतिवर विष्णुगिरि, सुगम रीति रचि राप । गोविददास पवास हित, कवर गुमानी भाप ॥'
२४६९	८४१५	चितावणी को अग	रामचरणदास	२० वी श०	१० ५x६ ५	१-५६	
२४७०	९५५६ (५)	चितावणी को अग	तुलसीदास	१९ वी श०	२२ ५x१० ५	१-८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४७१	९८३६ (९)	चितावणी को अंग	रामचरण	गु० १८२८	१२x१०	१००-११५	ग्रन्त मे 'चौथ माता एव गणेशजी की कथा' का प्रारंभ मात्र है।
२४७२	८३३२	चेतनचरित	भगवतीदास	१९ वी श०	२४ ५x११	१-७	र का. १७३६
२४७३	८४२२ (२९)	चैत्य-वदन	खीमो	गु० १७७६	२३x२०	९६-९७	
२४७४	९२४५	चौपड-हुलास	राय अमृतराम	१९ वी श०	२७x१९ ५	१-५	र का. १८६९
२४७५	८६९१	चौवीस-एकादशी कथा (ब्रह्माण्ड पुराणगत)		१८४०	२१x१५	१-५३	लि. क नन्दकिशोर मिश्र श्री सौनियाजू भण्डारी पठनार्थ।
२४७६	१२१९५	चोवीस-जिन-स्तुति	मोहनविजय शिष्य रूपविजय	१८७४	२६ ५x१० ५	१-८	लि क क्षमासागर लि स्था वडलू

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि सं. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४७७	८४२२ (२८)	चौवीस-तीर्थङ्कर-स्तवन	आणद शिष्य कमलमुनि	गु० १७७६	२३x२०	६५-६६	र का १५६२ 'इदु वाण रस नयण'
२४७८	८८५७ (१)५	चौमासा	जुगतानन्द	१९ वी श०	१९x१४	१६४–१६५	
२४७९	८००५ (१)	चौरासी पद	हितहरिवश स्वामी	१८७४	२६x१६	२-२५	चौरासी पदो के आगे सस्कृत मे 'विष्णु सहस्र नामावली' ११ पत्रो मे है।
२४८०	१०६६९ (१४)	चौरासी-वैष्णव को धोल		१९ वी श०	२२ ५x१७ ५	११९–१२२	
२४८१	९४२५ (६)	चौरासी-वैष्णव बोल		१९ वी श०	२१ ५x१७	३४-४०	पत्र सख्या ४० पर गोकुलचन्द का पद है।
२४८२	९७२५	चौरासी-वैष्णवो की वार्ता		१९ वी श०	२२x१६	३८–२२५	अपूर्ण — पत्र सख्या ३८, ३९, ४७-६० ७२, ७४-८८, १४७-१६०, १६२-१६३, १७०-१९९ व २२४-२२५ ही है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४८३	१०६७१ (३)	चोरासी-शिक्षा (अष्ट-उपाधि, आदि)		१९ वी श०	२४x१३ ५	४-२०	पुष्टिमार्गीय ग्रन्थ।
२४८४	८४२२ (३)	चौसठ-देवी-स्तोत्र		गु० १७७६	२२x२४	२२-२४	इसी के आगे 'क्षेत्रपाल-स्तोत्र' भी है। दोनो कृतिया सस्कृत मे हैं।
२४८५	६१७१	छन्द-रत्नावली	हरीरामदास निरजनी	१९ वी श०	३०५ x१५ ५	१-१२	र का १७९५ लि. क साधु जैतराम
२४८६	१०२४७ (१)१-५	छन्द-सग्रह—अमल रो भाग रो जलधरजी रो सूरजदेव रो चामुण्डा रो	कविराजो नरवद कानड	१८८२	१६x१२	१-३ ४-६ ८-१० ११-१२ २१ वा	लि क मेघराज मु ता लि. स्था जोधपुर मेवग थानजी की प्रति से प्रतिलिपि कृत।
२४८७	८६४६	छन्दसार सटिप्पण (पिङ्गल ग्रन्थ)	सूरति मिश्र	१९४७	२६x११ ५	१-१४	लि क. सुखलाल पुत्र टेक-चन्द ज्योतिषी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. में)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
#२४८८	९२७०	छन्द-सुधाधर	कवि चन्द पुत्र बखतावर	१९११	२३x१६	१-१३९	र का १८९८ 'वसु निधि वसु ससि' लि क. भूथालाल दाहिमा ब्राह्मण । लक्ष्मणसिह नरेश की आज्ञा से । पत्र सख्या ५१ से ६२ तक अप्राप्त । प्रारम्भ की प्रशस्ति ऐतिहासिक दृष्टि से महत्व-पूर्ण है ।
२४८९	९७२० (३)	छन्दाष्टक	रसराशि	१९ वी श०	२०x१५ ५	११-१२	पत्र सख्या १० से ११ पर स्फुट कवित्त है ।
#२४९०	१०१८५	जगत-विनोद	कवि पद्माकर	१९०६	१६ ५x१२ ५	१-१२६	लि क नागरभट्ट कुबेर लि. स्था रत्नावती इसके वाद के १८ पत्रो मे ५+४५ कवित्त-सवैये है ।
२४९१	९२५४ (५)	जगदम्बा री निसानी आदि	कवि मण्डन	गु० १८१०	१६ ५x१३ ५	२२-२४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४९२	१०१४६ (२)	जगन्नाथाष्टक		२० वी श०	२१x१२ ५	३५-३६	
२४९३	१०२४७ (४)	जतीरासो	भीखमचन्द	गु० १८८२	१६x१२	१७-२१	
२४९४	८५६२ (६)	जनम-बत्तीसी (कृष्ण-जन्म-बत्तीसी)	भगतराम पञ्चोली	१७९५	२४ ५x१५ ५	७९-९०	र का १७९५ लि क गुलाबराय हरिदासोत गुटका लिखने वाले के परिवार के ही व्यक्ति द्वारा रचित। मूल प्रति।
२४९५	८४०८ (१-२)	जन्मपत्री पद्धति भाषा तथा लघुचाणक्यादि		१९ वी श०	२३ ५x१४	१२ !-३	वर्ष तथा जन्म-पत्र निर्माण का गणितादि प्रकार भाषा में बताया गया है। कुछ संस्कृत पत्रों का प्रारम्भ मे भाषार्थ भी किया है। गुटके के अन्तिम तीन पत्रों मे वर्णपाटी (वर्णमाला-बोध) तथा लघु-चाणक्य-नीति के दो अध्याय लिखे है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (विस मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४९६	८७३६	जलवय-शहनशाह-इश्क	जवानसिंह (महाराजा)	१९०५	२१x१६ ५	१-२	र का १९४५ लि. क कवि जय लि. स्था कृष्णगढ स्वलिखित प्रति।
२४९७	९७३६ (३)	जसामृतसागर-भापा	मू० हरिव्यास भा० रूपरसिक	१९ वी श०	३० ५x२१ ५	२०५-२६६	छन्द सख्या १६०९
२४९८	९२९४ (२)	जागरण-माहात्म्य	चरणदास	१९ वी श०	१६ ५x११	८५-९०	
२४९९	१०१३८ (४)	जानकीमङ्गल	गो० तुलसीदास	१९ वी श०	१४ ५x१३ ५	२८-३५	पत्र सख्या ३६ पर दो कवित्त हैं।
२५००	८४०० (१०)	जिनकुशलसूरि-गीत	लालचन्द	गु० १८६४	१५x१३ ५	३८-४०	पत्र सख्या ३९ अप्राप्त।
२५०१	८४०० (३८)	जिन-गीत		१९ वी श०	१६x१३ ५	८३ वा	२३ वे तीर्थङ्कर सम्बन्धी।
२५०२	८४०० (४५)	जिन-चोवीसी	ऋषि देवीचद	गु० १८६४	१५x१३ ५	८७-८९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२५१०	८३५४	ज्यौतिष-सार (लघुजातक भाषा टीका पद्यानुवाद)	कृपाराम पुत्र तुलाराम	१८६७	२४x१२	१-५१	र. का. १७९२ लि.क ओकार दायमा ब्राह्मण लि स्था देवदुर्ग यह ग्रन्थ 'लघुजातक' का दोहानुवाद है।
२५११	९५५६ (१)	ज्ञान-तिलक	कवीरदास	१९ वी श०	२२ ५x१० ५	७-११	अपूर्ण—पत्र सख्या ११-१२ पर कबीरदासजी के पद हैं। पत्र सख्या १-६ अप्राप्त।
२५१२	९०८८ (६)	ज्ञान-पच्चीसी	वनारसीदास	१९५६	२२ ५x१४	२९-३१	लि क मोहनकीर्त्ति लि स्था. लाखोला ग्राम
२५१३	८७०५ (५)	ज्ञानवोध		गु० १८९१	१४x८ ५	८३-८७	अन्त मे पत्र संख्या ८७ से ९० तक स्फुट-नुस्खे एव मत्र है।
२५१४	९३३८ (४)	ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास	१९ वी श०	१० ५x६ ५	५६-६९	प्रथम उल्हास मात्र।
२५१५	८५०७ (३)	ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास	१९०४	१६x१२	१-३६	लि. क रामदास कबीरपथी लि स्था पूरनगर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२५२२	६११५ (२)	तरक-चितावणी	सुन्दरदास	१९ वी श०	१५x११	२६६–२८१	
२५२३	८४२७ (२)	तरक-चितावणी	सुन्दरदास	१९ वी श०	१०x६ ५	७-२०	
*२५२४	७९६८	तिलशतक	जुगनराय	१९ वी श०	२५x१० ५	१-४	
२५२५	८४०० (२७)	तीर्थमाला-स्तवन	समयसुन्दर	गु० १८६४	१५x१३ ५	६५-६६	
२५२६	८५६१ (६)	तुरसी-पद-सग्रह	जनतुरसी	१७५४	२१.५x१६	१-४४	अपूर्ण । रागबद्ध । पत्र सख्या १५ अप्राप्त ।
२५२७	८५६२ (१)	त्रिया-विनोद	मुरली कवि	१७९४	२४ ५x१५ ५	३-९	र का १७२६ अपूर्ण—३० छन्द मात्र । कोठारया के ऊदा चौहान की आज्ञा से रचित । प्रति पत्रो के एक तरफ ही लिखी गई है । प्रथम पत्र अप्राप्त । इसकी एक सचित्र एव पूर्ण प्रति उदयपुर शाखा कार्यालय मे विद्यमान है ।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि. स. में)	माप (सें.मी. में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२५२८	८४३८ (३०)	दशमन-पार्श्वनाथ-स्तवन (स्तवार्थ)		गु० १७७६	२३x२०	८७ वा	
२५२९	८४०० (३८)	दशमण-पार्श्वनाथ-स्तवन	विजयदेव सूरि	गु० १८६४	१५x१३ ५	८०-८१	
२५३०	१०१८३	दत्तात्रयजी को छन्दो	दत्तलाल	२० वीं श०	१६x११	१-२४	
२५३१	६२५४ (८)	दम्पत्तिरङ्ग	लछीराम	१९ वीं श०	१६ ५x१३ ५	१-१२	अपूर्ण। नायिका भेद है।
२५३२	६१९९ (१)	दयासुरजी की बावनी	दयासागर	१८२४	२५x११	१-६	र का १७४९ १ ७ ४ ९ संवत चन्द्र समुद्र कथा निधि फागुण वदी तीज
२५३३	६७२६	दश-महाविद्या के रेखा-चित्र		२० वीं श०	१५ ५x१२ ५	१-७	पत्र संख्या ८-११ पर मीरा के पद है।
२५३४	८४२२ (३५)	दसाणभद्र राजा री सज्झाय	लालविजय शिष्य विजय पंडित	गु० १७७६	२३x२०	१००-१०१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२५३५	८४०० (१३)	दादा-गुरु-गीत	समयसुन्दर	गु० १८६४	१५x१३.५	६३ वा	
२५३६	८४०० (२५)	दादा-गुरु-गीत	सुमतिरङ्ग	गु० १८६४	१५x१३.५	६३ वा	
२५३७	९३३८ (१)	दादूदयालजी की वाणी (लय को अङ्ग)	दादूदयाल	१९ वी श०	१० ५x६ ५	४-११	प्रारम्भ मे सुन्दरदास कृत 'विश्वास को अग' के ३ छन्द है।
२५३८	८४०० (२८)	दानगीत	जयन्तीदास	गु० १८६४	१५x१३ ५	६६-६७	
२५३९	८६२८ (३)	दानलीला	कृष्णदास	१९२९	१७x१२ ५	१३५-१४३	लि क मुकन्द ब्राह्मण लि स्था कल्याणपुरी
२५४०	९१०० (२)	दानलीला	कृष्णदास	१९ वी श०	१७ ५x११ ५	१६-२१	
२५४१	९२९४ (३)	दानलीला	चरणदास (स्वामी)	१९ वी श०	१६ ५x११	९१-९४	गुटके मे इन्ही की ६ कृतियों का सग्रह है।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं. में)	आकार (सें.मी. में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२५४२	१०१३८ (१)	दानलीला		१६ वीं श०	१४ ५x१३ ५	१-६	
२५४३	१०१४८	दानलीला	कृष्णदास	१८४०	१८x१०	१-६	लि क श्री वृन्दावनवासी वैष्णव हरिप्रसाद लि स्था नषली (लखनऊ)
२५४४	१०१८३ (२)	दानलीला		२० वीं श०	२ ४५x१७	६४-६७	अपूर्ण—३५ छंद हैं।
२५४५	१०३३९ (२)	दानलीला		१६ वीं श०	२२ ५x१७ ५	७-१४	
२५४६	१०५६९ (८)	दानलीला	कुंभनदास	१६ वीं श०	२२ ५x१७ ५	६६-७२	
२५४७	६८२५ (५)	दानलीला के पद	हरिदास, मदादास	१६ वीं श०	२१ ५x१७	२७-३३	
२५४८	७८६१ (१०)	दुर्गा-आरती	सांवला	गु० १६१५	१७x१३	४४-४५	लि क भज्जूराम लि स्था बामनवास

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२५४९	१०६७९ (४)	देवचितावणी एव रतन पचीसी	पनालाल जोशी	२० वी श०	१५.५x११	१-२	अपूर्ण—मात्र १० दोहे हैं।
२५५०	८६९४	देवी आरती व भैरव आरती	मगनीराम सेवक	१९ वी श०	१९ ५x११	१ ला	
२५५१	९४३१ (४)	देहदशा	नागरीदास	गु० १७८६	२१x१५ ५	५-८	अतिम पत्र मे ज्ञात-यौवना, मुग्धा आदि के लक्षण है।
२५५२	८५६२ (५) १५	दोहा, कवित्त अक्षर चितवणी रो		गु० १७९९	२४ ५x१५ ५	७९ वा	
२५५३	८७०५ (३)	दोहावली	गो० तुलसीदास	गु० १८९१	१८x१८ ५	५४-७८	कुल १७१ दोहे हैं।
२५५४	१०६७९ (३)	दोहा-सग्रह	रामलाल जोशी	२० वी श०	१५ ५x११	१-२४	१२८ दोहे है।
२५५५	८५६२ (१)२	दोहा-सग्रह	पञ्चोली नीलकण्ठ अतोपचन्दोत	१७९१	२४ ५x१५ ५	१ ला	लि क गुलाबचन्द

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (विक्रम में)	माप (सें.मी. में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२५५६	८२६० (३)४	दोहा-संग्रह		१९ वी श०	२२x१४	२६४–२९९	
२५५७	८५६२ (१२)	दोहा-सोरठा-संग्रह		गु० १७९५	२४ ५x१५ ५	१३६–१४३	कुल ६२ दोहे-सोरठे हैं। अन्तिम पत्र पर 'तत्वसार' ग्रन्थ' के १२ दोहे हैं।
२५५८	१२४२१ (८)	द्विजपुरी कन्या-माहात्म्य		गु० १८९३	१७x१२	१२९–१५०	
२५५९	८८४३	द्रव्य-गुण पर्याय विचार सार्थ		१८ वी श०	२३ ५x१४	२२-७८	अपूर्ण— पत्र जीर्ण एवं त्रुटित। पत्र सख्या १-२१ अप्राप्त।
२५६०	८४२२ (३१)	वस्त्रारिपि-सज्झाय	सेवक सीवो	गु० १७७६	२३x२०	९९-१००	
२५६१	७९१३	धर्म-परीक्षा-भाषा	मनोहरदास (जैन)	१८४५	३० ५x१३ ५	१-९९	र. का १७०७ र स्था नगर धामपुरी लि. क लालचन्द्र भट्ट पत्र सख्या ७७-७९ के स्थान पर ८० से पत्राङ्क प्रारभ। पाठ पूरा है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२५६२	८४२२ (३७)	धर्मी-सज्झाय	चारुदत्त वाचक	गु० १७७६	२३x२०	१०२-१०३	
२५६३	८१९० (१)	ध्रुव-चरित्र	जनगोपाल	१८ वी श०	१२ ५x१	२-१६	पत्र सख्या १, ४, ५, ६-११ अप्राप्त ।
२५६४	८३८२	ध्रुव-चरित्र	जनगोपाल	१८७७	१७x९ ५	१-३१	लि क. परमसुन्दर लि स्था पितावरी
२५६५	८५६१ (५)	ध्रुव-चरित्र	जनगोपाल	१७५४	२१ ५x१६	१२४-१३७	प्रारम्भ के १५ छन्द अप्राप्त । पत्र सख्या १३७ से १३८ तक दादू, जनहरिदास तथा जनतुरसी के पद है ।
२५६६	९८३६ (५)	ध्रुव-चरित्र	परमानन्द	गु० १८२२	१२x१०	७६-८६	
२५६७	९८३६ (३)	ध्रुव-चरित	जनगोपाल	१८२२	१२x१०	२५-५७	लि. क तछीराम
२५६८	८८२४	नख-शिख-वर्णन	वलभद्र	१७८४	२५x११	१-३	लि स्था योगनिपुर अत मे स्फुट औषधि-सग्रह है ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेप ज्ञातव्य
२५६९	८८२५	नख शिख-वर्णन	केशवदास	१८ वी श०	२६ ५x११	१-७	
२५७०	९२५४ (२)	नख-शिख-वर्णन	बलभद्र	१९ वी श०	१६ ५x१३ ५	११२–१४३	
२५७१	९३१९ (१-२)	नख-शिख-वर्णन	कवि भोलानाथ	१९ वी श०	२३x१४ ५	१-७ १-१२	दो प्रतिया। कुल ५३ दोहे है।
२५७२	८४११	नरसीजी को मायरो (मीरा-मिथुला-सवाद)	मीरादास (मीरा)	२० वी श०	२० ५x१४ ५	१-४५	अन्तिम पत्र मे सदानन्द कृत 'अम्बाजी की आरती' लिखी हुई है।
२५७३	९८३६ (६)	नरसीजी रो मायरो	पेमभगत (प्रेमानन्द)	गु० १८२२	१२x१०	६६-७६	
२५७४	७८७३	नल राजा दमन का किस्सा		२० वी श०	२३x१६ ५	१-२८	अपूर्ण—फारसी भाषा, नागरी लिपि मे लिखित।
२५७५	८४०४ (३)	नवपद-पूजा	जसविजय	१९ वी श०	२०x१३	११-२२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२५७६	९७३५ (२)	नवरतन		गु० १९०२	१७x११	४१-४४	नीति-परक कृति । अन्तिम चार पत्रो पर स्फुट कवित्त पद्य हैं ।
२५७७	१०६८५ (२)	नवरतन रा छप्पय		२० वी श०	२५.५x१६	६७-६८	१६ छप्पय है । पत्र सख्या ६९ पर 'दारू रा दूहा, 'शकुन रा कवित्त', 'छीक विचार' तथा शृङ्गारिक कवित्त छप्पय हे ।
२५७८	९३१८	नवलानुराग	कवि भोलानाथ	१९ वी श०	२१x१३ ५	१-१८	
२५७९	१०६७१ (७)	नवहुलास (गद्य)		१९ वी श०	२४x१३ ५	६५-११५	७ वे हुलास के २४ वे प्रसङ्ग तक । पत्र सख्या १०१-११४ अप्राप्त ।
२५८०	१०१३८ (३)	नाग-छन्द (नागलीला)		१९ वी श०	१४ ५x१३.५	१८-२८	
२५८१	९८३४ (१)	नागदमन	सायाजी झूला	१८४५	१२x१५	१-२	प्रारम्भ मात्र ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२५८२	८४०५ (२)	नागदमन राग	गोकुल कवीश्वर	१९ वी श०	२१ ५x१४	४६-५२	
२५८३	९०५४ (२)	नाम-मञ्जरी	रघुनाथकवि	२० वी श०	२० ५x१६	१-८	अपूर्ण— ९१ दोहे है।
२५८४	९३१४	नायिका-भेद	कवि भोलानाथ	१९ वी श०	१७x११ ५	१-३६	र का १८२८ महाराजा नवलसिह प्रीत्यर्थ। कुल २४७ छन्द है।
२५८५	९५९६ (२)	नारद-गीता		१९ वी श०	२२ ५x१० ५	१-५	
२५८६	९१०४	नारायण-लीला	माधोदास गुसाई	१९ वी श०	२०x११	२-३२	लि क सर्वदास वैष्णव प्रथम पत्र अप्राप्त।
२५८७	९२९४ (१)	नासिकेतोपाख्यान	चरनदास स्वामी (गुसाई रनजीत)	१९ वी श०	१६ ५x११	२-८४	प्रथम पत्र अप्राप्त।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२५८८	९७३६ (२)	नित्यविहार पदावली	रूपरसिक	१९ वी श०	३० ५x२१ ५	१९६–२०५	रागबद्ध । १२० पदो का सार ७२ पदो मे है ।
२५८९	९६८४	नित्यविहारी युगलध्यान	भगवतरसिक	१९ वी श०	२२ ५x१०	२–१२	लि क भक्तिसनेह पथम पत्र अप्राप्त ।
२५९०	१२६१२ (१४)	निर्वाण-काण्ड भापा	भगोतीदास	१८१९	२५x१५	५५-५७	र का. १७४१ लि क सिघवी हिम्मतराम लि स्था जयपुर
२५९१	८५०७ (१)	नीतिशतक	भर्तृहरि	१९०५	१६x१२	१–४२	सस्कृत मे है । लि क रामदास लि स्था पुरनगर पत्र सख्या ४३ पर 'गणेश तुष्टि-तन्त्र' है ।
२५९२	८५६२ (११)	नीसाणी भाग री	कवि हरिचन्द	गु० १७९५	२४ ५x१५ ५	१३६–१३९	
२५९३	८४०० (२९)	नेमराजमती-गीत	अजीतसागर	गु० १८६४	१५x१३	६७-६९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२५६४	८४०० (२४)	नेमिनाथ गीत	हर्षचन्द	गु० १८६४	१५x१३ ५	६२-६३	
२५६५	१०८४६ (१६)१६	नेमिनाथजी री लावणी		गु० १६३१	१७x११	१२८-१२६	
२५६६	८४०४ (६)३२	नेमिनाथजी रो बारहमासो		१६ वी श०	२०x१३	६७-६८	
२५६७	८४२२ (८०)	नेमिनाथ-स्तवन	कल्याणसागर सूरि	गु० १७७२	२३x२०	१०५-१०६	
२५६८	६२८०	नेह-समर	राय अमृतराम	१६ वी श०	२७ ५x१६	१-१३	र का १८६६
२५६६	६३२२ (२)	नैषध-महाकाव्य भाषा	कवि भोलानाथ	१६ वी श०	२३ ५x१७	१-२२	र का १८४० अपूर्ण । प्रथम सर्ग के १२४ वें छन्द पर्यन्त । कवि के वशजो से प्राप्त प्रति ।
२६००	८४२२ (१७)	पञ्च-तीर्थ-स्तवन	मुनि लावण्यसमय	गु० १७७६	२३x२०	८३-८४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स में)	माप (सें मी में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६०१	८५६० (३)	पन्नमहेली रा दूहा	छीहल	१७६५	२४ ५x१५ ५	३७-४५	र. का. १५७५ लि क. पचोली गुलाबराय हरिदासोत । लि स्था उदयपुर
२६०२	७८७० (१)	पञ्चाख्यान सटीक (हितोपदेश)	मू० विष्णुशर्मा	१८६४	२७ ५x१८	१-६३	लि क. कृष्णराम लि स्था बूँदी
२६०३	६५५६ (८)	पञ्चाक्षणबोध	कबीरदास	१९ वीं श०	२२ ५x१० ५	१०-२२	पत्र संख्या २३ - २४ पर 'नवकार मंत्र' एवं तीर्थङ्करो के नामादि हैं ।
२६०४	८४२२ (१६)	पदमावती-सज्झाय	समयसुन्दर	गु० १७७६	२३x२०	८२-८३	
२६०५	८३२६ (६)	पद-पैंतालीसी	रूपरसिक	१९ वीं श०	३० ५x२१ ५	६१-७२	
२६०६	१०१६७	पद-मुक्तावली	नागरीदास (महाराजा सावंतसिंह)	१९ वीं श०	३३ ५x२२ ५	१-६३	राग, तालबद्ध ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६०७	६२४६	पद-रत्नावली	राय अमृतराम	१६ वी श०	२७x१६	१-१०७	रागवद्ध । २५६ पद्य है । पत्र सख्या १८ से ७५ तक के पद्य सख्या ४३ से १८६ अप्राप्त ।
२६०८	८७०४ (२)	पद-सग्रह एव आरती	सूरदास, कबीर	१८४६	१५x१०	१ ला	लि क भोजजी पोकरणा लि स्था जोधपुर
२६०९	८४०४ (६)३६	पद-सग्रह एव लावणी	जिनदास	१६ वी श०	२०x१३	७१-७३	
२६१०	१०१६५	पद-सग्रह	रसराज (महाराजा मानसिंह)	१६ वी श०	१६x१३ ५	१-११३	राग-तालवद्ध । पजावी शब्दो का पुट है । पत्र सख्या १, १५, २७, ४७, ५३-५५, ५७, ५६-६२, ६४-११३ मात्र है । अन्तिम पत्र पर स्फुट कवित्त हैं ।
२६११	८४०४ (६)३३-३८	पद-सग्रह	जिनदास, जिनचन्द, किशनगुलाब, सज्जन, कीरतसागर, धर्मचन्द	१६ वी श०	२०x१३	६८-७१	धर्मचन्द कृत 'नेमिजी की लावणी' है ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६१२	८४०४ (६)६-१५	पद-सग्रह	उदयप्रभु, शिवदास, लालचन्द, केशरीचद, सेवाराम, नयविमल, सेवग	१६ वी श०	२०x१३	५६-६१	
२६१३	८४०४ (६)१६-२४	पद-सग्रह	रूपचन्द, लालचन्द, भूधर, सेवग, नवलदास, कीरतसागर, देवचद, आनन्दरत्न, हर्षचन्द	१६ वी श०	२०x१३	६२-६४	
२६१४	८४०४ (६)२५-३१	पद-सग्रह	जिनदास, भूधर, रामचन्द्र, क्षमाकल्याण, दौलत, सेवग, रूपचन्द	१६ वी श०	२०x१३	६५-६७	पत्र सख्या ६६ पर 'सोरठ राग रा दूहा' है।
२६१५	६२४६ (२)	पद-सग्रह	मीरा, माधोदास, रामदास, सूरदास, तुलसीदास आदि	१६ वी श०	२७x१६	१-६२	पत्र अस्तव्यस्त— दो ग्रन्थो के पत्र सम्मिलित है।
२६१६	८४०० (३३)	पद-सग्रह	जिनहर्ष	गु० १८६४	१५x१३ ५	७२-७३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६१७	८४०४ (६) ३-८	पद-सग्रह	शिवचन्द, भद्रगुलाव, लालचन्द, वालह, चैनविजय, केशरीचद	१९ वी श०	२०x१३	५७-५९	
२६१८	८४०० (१९)	पद-सग्रह	अनुगमचन्द शिष्य जिनलाभ	गु० १८६४	१५x१३ ५	५८-५९	
२६१९	८८०० (१७) १-८	पद-सग्रह	जिनराज, अज्ञात, सुखविलास, आणन्द, समयसुन्दर, जिनचद, सेवग, धर्मसी	गु० १८६४	१५x१३ ५	५३-५७	
२६२०	९२९४ (६)	पद-सग्रह (मटकी, हेली, रास)	चरणदास स्वामी	१८ वी श०	१६ ५x११	९९-१११	लि क. मीठाराम शिष्य भक्तिसनेह
२६२१	१०६६९ (१२) १-७	पद-सग्रह	परमानन्द गोविन्दप्रभु कृष्णदास विट्ठलदारा सूरदास विष्णुदास, वल्लभ	१९ वी श०	२२ ५x१७ ५	९७, ९८, ९९ ९७, ९९ १००, ११०-१११ १०० वा ११२-११३ ११३-११६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६२२	८००५ (२)	पद-सग्रह	चदलाल, दशासखी, किशोरग्रलि, हीरालाल ग्रलि	गु० १८७४	२६x१६	३७-४०	सखी सम्प्रदाय के पद है।
२६२३	६५५६ (८)	पद-सग्रह	कवीरदास	१६ वी श०	२२.५x१० ५	३३-४४	रागवद्ध।
२६२४	६५५६ (६)४-६	पद-सग्रह	कवीरदास, सूरदास, रैदास	१६ वी श०	२२ ५x१० ५	२०-२५	रागवद्ध।
२६२५	६५५६ (६)१-३	पद-सग्रह	कवीरदास, दासकमाल, माधोदास		२२.५x१० ५	४-२८	रागवद्ध। पत्र सख्या २६ पर वायु रोग का स्फुट नुस्खा है। पत्र सख्या ३० पर तान्त्रिक मत्र है। पत्र सख्या ३० के वाद पत्राङ्क २० से प्रारभ है।
२६२६	१०६६७ (११) १-२	पद-सग्रह	तुलसीदास, मीरा	गु० १८४१	१२x६	८४६-८५०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६२७	१०६६७ (३)	पद-सग्रह	[illegible], [illegible], रामचरण	गु० १८४१	१२x६	६९-७२	
२६२८	१०६७१ (२)१	पद-सग्रह	विष्णुदास	१९ वी श०	२४x१३ ५	१-४	राग बिलावल के १० पद है।
२६२९	१०६७१ (१)१-३	पद-सग्रह	चत्रभुजदास, सूरदास, छीतस्वामी	१८२९	२४x१३ ५	४९-५०	लि क व्रजमोहनदास पत्र सख्या ५० - ५१ पर 'हरिलीला' के १८ छन्द है। प्रारम्भ के पत्र सख्या १ पर 'मानसी सेवा' का प्रारम्भ मात्र है।
२६३०	१०६८३	पद-सग्रह	गोविन्दस्वामी	१९ वी श०	२३x१३ ५	४३-७०	रागवद्ध, अपूर्ण। जलाभिषिक्त।
२६३१	१०१५२	पद-सगह	सूरदास	१९ वी श०	२० ५x१५	१-२१	रागवद्ध, अपूर्ण— गुटके के बीच के पत्र है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६३२	६४२१ (३)	पद-सग्रह	तुलसीदास, चन्द्रसखी, वृजनिधि	१६ वी श०	१५x१३ ५	४७-६७	रागबद्ध ।
२६३३	६२६२	पद-सग्रह	देवादास, तानसेन, सूरज, आनन्दघन, चन्द्रसखी, बसीधर, भगवान, परमानन्द, नन्ददास, श्रीभट्ट, चत्रभुजदास, गोविन्दप्रभु, लछीराम, छीतस्वामी	१६ वी श०	१७x१४	१-६५	रागबद्ध । पत्र अस्तव्यस्त हैं ।
२६३४	६२४७	पद-सग्रह	राय अमृतराम	१६ वी श०	२७x१६ ५	६-२००	रागबद्ध । पत्र सख्या २ से ८, १७ से २३, ३६ से १०७, एव १२५ वा अप्राप्त । अन्तिम पद्य सख्या ४६५ ।
२६३५	६३३७ (६)	पद-सग्रह	तुलसीदास, शोभाराम तिवारी, नन्ददास, आनन्दघन	२० वी श०	१६ ५x१३	४४ वा ४६-५४	अन्तिम पत्रो पर सस्कृत मे स्फुट श्लोक एव 'दसामृत हारीत' की भाषा तथा स्फुट पद्य है ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६३६	८४०७	पद-सग्रह	लछमणदास	१८८६	२०x१५	१-६८	रागवद्ध । लि क मेहनावराय गुटका कर्त्ता के शिष्य जैरामदास का हे । इसमे रामभक्तिपरक, बाल-लीला, होली आदि के पद है। कर्त्ता अप्रसिद्ध ज्ञात होता है।
२६३७	९०८८ (२)	पद-सग्रह	कबीरदास	१९५६	२२ ५x१३ ५	२-३	लि क मोहनकीर्त्ति लि स्था लाखौला ग्राम
२६३८	९७३६ (५)	पद-सग्रह (आचार्य जन्मोत्सव-बधाई के एव परचुनी पद)	रूपरसिक	१९ वी श०	३० ५x२१ ५	१-१७	रागवद्ध । ४२ पद है।
२६३९	१०६७२ (५) १-२	पद सग्रह (गारनी के)	छीतस्वामी, गोपाल	१९ वी श०	२२x१५ ५	४६, ४७वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि. स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र संख्या
२६४०	१०६७२ (८) १-१४	पद-सग्रह (उत्थापन के कीर्तन)	परमानन्द गोविंदप्रभु, कुंभनदास सूरदास, छीतस्वामी आसकरन, द्वारिकेश चत्रभुजदास रसिकदास, कृष्णदास नन्ददास, रामदास जनभगवान, अज्ञात	१९ वी श०	२२x१५ ५	५२, ५३, ५५, ५६, ५९, ६०-६१ ५२, ५३ से ५६, ५३, ५५, ५८-५९ ५३, ५४, ५७, ६०, ६४, ५४, ६१ ५५ वा ५५, ५६, ५७, ५९, ६२, ६३, ६४-६५ ५६ वा, ५७, ६१-६२ ५८ वा, ५९, ६० ६५ वा, ६६-६७
२६४१	१०६७२ (७) १-४	पद-सग्रह (कुञ्ज के)	परमानद, कुम्भनदास, नददास, कृष्णदास	१९ वी श०	१५x१३ ५	४९-५०, ५१ ५१ वा
२६४२	६५६४ (४)	पद-सग्रह (कृष्ण चरित्र)	जीवनलाल नागर	२० वी श०	२२x१७ ५	४२-४५
२६४३	१०६६९ (१)	पद-सग्रह (गरबी)	अज्ञात	१९ वी श०	२२ ५x१७ ५	१-६
२६४४	१०६६९ (१३)	पद-सग्रह (गुसाईजी की जन्म-बधाई के)	मानिकचन्द छीतस्वामी	१९ वी श०	२२ ५x१७ ५	११७ वा ११८ वा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या
२६४५	१०६७२ (१०) १–१३	पद-सग्रह (गो-दोहन, सभा को-ग्वालभोग के)	परमानन्द रसिकदास, कुम्भनदास चत्रभुजदास, रामदास गोविंदप्रभु, छीतस्वामी सूरदास, विठ्ठलदास नन्ददास कृष्णदास, जगजीवन ग्रासकरन	१६ वी श०	२२x१५ ५	६६, ७१, ७३, ७४, ७७-७६, ८३, ८५, ८६-८७ ६६, ७०, ८१, ८३, ८४, ७०, ७२ ७०, ८७, ७१ वा ७१, ७२-७३, ७५-७६, ८०, ८४, ७२वा ७३-७४, ८१, ८२, ७४, ८३ ७४-७५, ७६, ७७, ८०-८१, ८५-८६ ७६ वा, ८१-८२ ८३ वाँ
२६४६	१०६६६ (१६) १–४	पद-सग्रह (गोवर्द्धन के एव फुटकर)	चत्रभुजदास, मोतीलाल गदाधर, गोपालदास	१६ वी श०	२२ ५x१७ ५	१२६–१३०, १३०–१३१ १३२, १३३ वा १३४ वे पर 'धमार' है।
२६४७	१०६६६ (७) १-४	पद-सग्रह (जन्मोत्सव के)	सूरदास विठ्ठलदास, चत्रभुजदास कृष्णदास	१६ वी श०	२२ ५x१७ ५	६५-६६ ६७ वा ६८ वा
२६४८	६७२६	पद-सग्रह	विठ्ठल, नागरीदास, ग्रानन्दघन, हरिदास, गोविन्दप्रभु, विद्यापति ग्रादि	१६ वी श०	२६ ५x१४	१-३६ राग ३६। प्रारम्भ के तीन पत्रो मे रागनियो एव पदो की सूची दी है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या
२६४९	१०६७२ (१-२) १-१२	पद-सग्रह (जमुनाजी के, मगला भोग के)	चत्रभुजदास, वल्लभ नन्ददास जनभगवान हरिदास, परमानन्द गोविन्दप्रभु, सूरदास छीतस्वामी, रसिकदास कृष्णदास, गदाधर	१९ वी श०	२२x१५ ५	३-४, ७, ११, १६, २१, ३, ४ ४-५, ६, १२, १७, १८ ५, १३, १४, २१ ५वा, ६, ७, ९, १५-१६, २०, २२ ६, ८, ११, १७, ६ से ११, १८ से २२ ७, २० वे, ८, ११ ११-१२, १३ वा
२६५०	९०८७ (१) ९७-१०३	पद-सग्रह (डोल के)	विठ्ठल, व्यास, चतुर्भुजदास, परमानन्द, सूरदास, रामदास, गोविन्दप्रभु	१९ वी श०	२१ ५x१२ ५	१४५ से १५१ कुल १० पद है।
२६५१	९०८७ (१) १०७-११३	पद-सग्रह (डोल के)	आसकरण, कृष्णदास परमानन्द, नन्ददास, माधोदास, हरिदास, कुम्भनदास	१९ वी श०	२१ ५x१२ ५	१६० से १६३ कुल ९ पद है।
२६५२	९४२७	पद-सग्रह (नित्य के)	सूरदास, परमानन्द	१९४०	१९ ५x१६ ५	१-५६

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६५३	९०८७ (१) १०४-१०६	पद-सग्रह (फाग एव स्फुट)	चतभुंजदास, कृष्णदास, जनहरिदास	१९ वी श०	२१ ५x१२ ५	१५२-१६०	
२६५४	१०९९९ (९) १-३	पद-सग्रह (फाग के)	माधोदास मुरारिदास गोविन्दस्वामी	१९ वी श०	२२.५x१७ ५	७२ वा ७३-८२ ८३ वाँ	
२६५५	९५९४ (१)	पद-सग्रह (रामचरित्र) (वसन्त-वर्णन)	जीवनलाल नागर	२० वी श०	२२x१७ ५	१-५	समकालीन प्रति है। गुटके मे बूँदी के महाराजा राम-सिंह के मत्री-परिवार द्वारा निर्मित कृतियो का सकलन है।
२६५६	९०८७ (१)(१)(१) १-७	पद-सग्रह (वसन्त के)	परमानद, स्यामदास, सूरदास, चतुर्भुजदास, कुम्भनदास, कृष्णदास, श्रीभट्ट	१९ वी श०	२१ ५x१२ १	५-१०	प्रथम दो पत्रो पर 'गीत गोविन्द' के पद्य है। पत्राङ्क १-४ अप्राप्त।
२६५७	९०८७ (१) २-९	पद-सग्रह (वसन्त के)	मानकचद, परमानद, रघुनाथदास, सूरदास, कृष्णदास, नन्ददास, छीतस्वामी, गदाधर, जनहरिया, हरिदास	१९ वी श०	२१ ५x१२ ५	१०-१५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६५८	६०८७ (१)१०-१५	पद-सग्रह (बसन्त के)	छीतस्वामी, कृष्णदास, कल्याणराय, लघुगोपाल, सूरदास, कुम्भनदास	१६ वी श०	२१ ५x१२ ५	१५-१६	कुल ३८ पद है।
२६५६	१०६६६ (४) १-६	पद-सग्रह (बसन्त, फाग, धमार)	चत्रभुज गोविन्दस्वामी सूरदास गोविन्दप्रभु कृष्णदास परमानन्द	१६ वी श०	२३.५x१७ ५	२०, २५, २७-२६ २१-२२ २३-२४ ४८-४६ ५०, ४६ २६,४०-४१	
२६६०	१०६७२ (६) १-३	पद-सग्रह (मान के)	परमानन्द, छीतस्वामी सूरदास	१६ वी श०	२२x१५ ५	४७-४८ ४८ वा	
२६६१	६०८७ (१) *१६-२५	पद-सग्रह (धमार के)	केवलराम, लछीराम, माणकचद, माधवदास, चतुरविहारी, सूरदास, वल्लभ, जनहरिया, गजाधर, विचित्रविहारी	१६ वी श०	२१ ५x१२ ५	१६-३४	*१६-६६ तक धमार के कुल १४६ पद है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६६२	६०८७ (१) २६-३५	पद-सग्रह (धमार के)	व ग, जिन रति, गोकुलचन्द, नन्ददास, कुम्भनदास, विट्ठल, सूरदास, परमानन्द, कृष्णदास, धोधी	१९ वी श०	२१ ५x१२ ५	३४-४२	
२६६३	६०८७ (१) ३६-४५	पद-सग्रह (धमार के)	ग्रासकरण,गोकुलचद, जनगोविन्द, चतुर्भुज, गोविदप्रभु,छीतस्वामी, रसिकदास,दामगोपाल, सूरदास, हरिदास	१९ वी श०	२१ ५x१२ ५	४२-५५	
२६६४	६०८७ (१) ४६-५५	पद-सग्रह (धमार के)	माधवदास,हितहरिवश परमानन्द, विट्ठल, कृष्णदास, हरिवल्लभ, कुम्भनदास, चतुर्भुज, ताजखान, गोपीदास,	१९ वी श०	२१ ५x१२ ५	५५-६४	
२६६५	६०८७ (१) ५६-६५	पद-सग्रह (धमार के)	गोकुलचन्द, सूरदास, गोविन्दप्रभु, नन्ददास, गदाधर, परमानन्द, गोवर्द्धन, स्यामदास, गजाधर, नारायण	१९ वी श०	२१ ५x१२ ५	६४-७६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या
२६६६	९०८७ (१)६६-७५	पद-सग्रह (धमार के)	सूरदास, नन्ददास, स्यामदास, जसुदास, लछीराम, जगन्नाथ, हरिदास, रघुवीर, कुम्भनदास, जनगोविद	१९ वी श०	२१ ५x१२ ५	७७-१००
२६६७	९०८७ (१)७६-८५	पद-सग्रह (धमार के)	चतुर्भुज, सूरदास, विष्णुदास,लघुगोपाल, मोहनदास, छीतस्वामी, हरिदास, गोविन्दप्रभु, रामदास, कुम्भनदास	१९ वी श०	२१ ५x१२ ५	१००-१२४
२६६८	९०८७ (१)८६-९६	पद-सग्रह (धमार के)	गोकुलचन्द, नन्ददास, गदाधर, कृष्णदास, चतर्भुज, विट्ठल, मुरारिदास, जगन्नाथ, गोपालदास, वल्लभ, परमानन्द	१९ वी श०	२१ ५x१२ ५	१२४-१४५
२६६९	१०६६६ (६)१-९	पद-सग्रह (धमार के)	अज्ञात, माधवदास जनहरिया, सूरदास गोविंदप्रभु, मुरारिदास गोपालदास, हरीदास छीतस्वामी	१९ वी श०	२२ ५x१७ ५	३०-३१, ३७, ३८, ३१-३४, ३६-३७ ३४-३५, ३८-३९ ३९-४३, ४३ वा ४४-४५, ४६ वा ४६-४८

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या
२६७०	१०६६९ (१५)	पद-सग्रह (धवल पद)	हरिदास	१९ वी श०	२२ ५x१७ ५	१२३ से १२६
२६७१	१०६६९ (३)१-४	पद-सग्रह (धोल के)	कुम्भनदास, दामनुदास	१९ वी श०	२२ ५x१७ ५	१४, १६-१७
			हरिदास, माधवदास			१८, १९ वा
२६७२	७८५८ (२)१-१०	पद-सग्रह (धोल, सुखपाल, सोहिलो एव रास के)	भगवानदास, परमानन्द, कृष्णदास, कल्याण, हितहरिवश, सूरदास गोविदप्रभु, कुम्भनदास, मुरारिदास, चत्रभुजदास	१९ वी श०	१८ ५x१५ ५	४६ से ५९
२६७३	१०६७२ (४)१-१३	पद-सग्रह (वेणी के)	सूरदास	१९ वी श०	२२ ५x१५ ५	२६, २७-२८, ३०, ३१, ३३-३४, ३७, ३८, ४१, ४२
			परमानन्द			२६-२७, २८, २९-३०, ३१-३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७-३८, ३९ ४०, ४१, ४३-४४, ४५, ४६
			विट्ठल, छीतस्वामी			२७, ३५, ३८, ३९-४०, २७, ४४, ४५-४६
			रसिकदास, चत्रभुज			२८-२९, ३२, ३०, ३२, ३३, ४२-४३
			आसकरन, नददास			३२-३३, ४२, ३६, ३८-३९
			कुम्भनदास, रिपिकेश			३६ वा, ४० वा
			जनभगवान, रामदास			४१ वा, ४२ वा
			जगजीवन			४५ वा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या
२६७४	१०६७२ (३) १-६	पद-सग्रह (शृङ्गार के)	विष्णुदास, चत्रभुजदास छीतस्वामी परमानद, गोविन्दप्रभु नन्ददास	१६ वी श०	२२x१५ ५	२२-२३, २४, २३, २४-२५ २३ वा २४वा २५ वा
२६७५	१०६७२ (६) १-४	पद-सग्रह (सभा की आरती के)	परमानद, छीतस्वामी सूरदास, चत्रभुजदास	१६ वी श०	२२x१५ ५	६७ वा, ६७-६८, ६६ वे ६८ वा; ६६ वा
२६७६	१०६७१ (४) १-३	पद-सग्रह (सेवापद)	सूरदास, चत्रभुज, छीतस्वामी	१६ वी श०	२४x१३ ५	२१ से २३
२६७७	६४२६ १-२	पद-सग्रह (हिंडोरा के)	कृष्णदास, नददास	१८ वी श०	२७ ५x१३	१ से ६० पत्र अस्तव्यस्त है।
२६७८	८३३७ (५) १-४	पद-सग्रह (हिंडोरा के)	तुलसीदास, कृष्णदास, शोभाराम तिवारी	२० वी श०	१६ ५x१८	२७ से ३४ पत्र सख्या ३४-३५ पर 'मानस पूजा विधि' भी है।
२६७९	१०६६६ (५) १-८	पद-सग्रह (होरी)	जसुदास, अज्ञात कनीलाल, स्यामदास गोविन्दप्रभु, वल्लभ परमानद, मानिकचद	१६ वी श०	२३ ५x१७ ५	४६-५०, ५१-५२, ५८, ६०-६८ ५२ वा, ५२-५४ ५५-५६, ५६-५७ ५७ वा, ५६ वा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स में)	माप (सें.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६८०	९४३२ (२)	पद-सग्रह (होरी)	किशोरीदास	१९ वी श०	२२ ५x१७	१-८	५१ पद हैं।
२६८१	९३३७ (२)	पद-सग्रह (होरी)	शोभाराम तिवारी, जगन्नाथ कविराय, तानसेन, उदयराज, गदाधर, सूरदास, तुलसीदास, ठाकुर, काशीराम	१९ वी श०	१९ ५x१३	१-१७, ३६-३७	
२६८२	९७२० (११)	पन्नावीरमदे री वात		१९ वी श०	२०x१० ५	९०-१६२	
२६८३	९९७२	पवनविजय स्वरोदय (सभापा टीका गद्य)		१८९१	३२ ५x१६	१-१०	कुल २८९ छन्द हैं।
२६८४	८७०८	पवित्रामण्डल व्रजलीला		१८७५	२९x१८ ५	१-६५	
२६८५	८६९३ (४)	पहेली और मुकरियाँ		१९ वी श०	१९x१३ ५	६९-७४	
२६८६	९२९६ (२)	पाण्डवगीता		गु० १७३५	१६ ५x१५	२९-३७	लि क आनन्दराम मिश्र कृति सस्कृत मे है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि सं मे)	माप (सें मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६८७	६२२१ (१)	पाण्डवगीता स्तोत्र		१९ वी श०	१५x१३.५	१-१६	कृति संस्कृत मे है।
२६८८	८८२३	पाबूजी रा दूहा	नथराज	१९ वी श०	२५x१०.५	१-५	कुल ३०१ दोहे है। र का १७७८
२६८९	८४०० (२१)	पार्श्वनाथ-गीत	धर्मसी	मु० १८६८	१५x१३.५	५९-६०	
२६९०	८४०० (११)	पार्श्वनाथ-गीत	समयसुन्दर	मु० १८६८	१५x१३.५	६०-६१	
२६९१	८४०० (२०)	पार्श्वनाथ-गीत	जिननन्द	मु० १८६८	१५x१३.५	५९ वा	
२६९२	८४०० (३१)	पार्श्वनाथ-गीत	जिननन्द	मु० १८६८	१५x१३.५	७०-७१	
२६९३	८४०० (४१)	पार्श्वनाथ-गीत	लालचन्द	मु० १८६८	१५x१३.५	८३ वा	
२६९४	९०८८ (१)	पार्श्वनाथ-छन्द	प्रमोद	१९५६	२२.५x१३.५	१-२	लि. क मोहनकीर्त्ति लि स्था लाम्बोला ग्राम

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि० सं० में)	आकार (सें० मी० में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
[illegible]	[illegible]	पार्श्वनाथजी री नीसाणी	जिनहर्ष	पु० १८६४	१५x१३.५	११-१६	
[illegible]	[illegible]	पार्श्वनाथ-रास	धर्मेन्द्रसूरि	१६ वीं श०	२०x१३	६१-६२	
[illegible]	[illegible]	पार्श्वनाथ स्तवन	आनन्दसूरि	पु० १८६४	१५x१०.५	७३-७५	
[illegible]	[illegible]	पार्श्वनाथ-स्तोत्र	मितानिराम	पु० १७७६	२३x२०	८७-८८	कर्त्ता का नाम स्पष्ट नहीं है।
२६९९	८५६२ (१०)	पीपाजी री चितावणी		पु० १७९५	२४.५x१५.५	१३१-१३४	पत्र संख्या १३५ पर स्फुट कवित्त-सवैया है।
२७००	८१६० (४)	पीपाजी री परचई	रतनगोपाल	१८ वीं श०	१२.५x१६	४०-६०	किञ्चित अपूर्ण। अन्त मे छीतमजी की 'जखडी' भी है।
२७०१	९२५१	पूर्णमासी री कथा		१६ वीं श०	२०x१४.५	१-४१	अपूर्ण।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेप ज्ञातव्य
२७०२	८५६२ (५)२	पृथ्वीराज चहुआण रा कवित्त सवैयादि	कवि चन्द, कवि गद	गु० १७९५	२४ ५x१५.५	६७-६८	
२७०३	८५६२ (५)१३	पृथ्वीराज चहुआण रो छन्द		गु० १७९७	२४ ५x१५ ५	७६-७८	कृति मे पृथ्वीराज के बंदी-काल का वर्णन है। लि क. पचोली गुलाबराय हरिदासोत
२७०४	९३३४	पृथ्वीराजरासो (महुवो खण्ड)	कवि चन्द	१८२६	'२० ५x१४	१-४३	अन्तिम पत्र पर उम्मेद-सिहजी का कवित्त है। गुटके के अन्दर चार पत्रो मे (नवीन प्रतिलिपि) रासो के कुछ छन्द हैं।
२७०५	९३३५	पृथ्वीराजरासो	चन्दवरदाई	१८१२	२६x१६	१३-३२९	लि क राधाकृष्ण—ठाकुर हमीरसिंह पठनार्थ। पत्र सख्या १-१२ अप्राप्त। 'कनवज खण्ड से शहाबुद्दीन युद्ध वर्णन खण्ड' पर्यन्त।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
[illegible]	[illegible]	चन्द्रहंस-चरित	जनगोपाल	१८ वी श०	१३\७	१-६३	प्रथम ५ पत्र अप्राप्त। पत्र संख्या ६४ से ६७ पर 'सप्त श्लोकी गीता' । पत्र संख्या ६७ से १२१ पर 'गीता माहात्म्य' वराह-पुराणगत, संस्कृत मे तथा पत्र संख्या १२१-१२४ पर 'रामाष्टक' संस्कृत मे और पत्र संख्या १२४-१२५ पर 'चतु श्लोकी भागवत' संस्कृत मे है।
२३०७	६५६२ (८)	प्रह्लाद-चरित	जनगोपाल	सं० १७६५	२४ ५x१५ ५	६७-११७	लि क पचोली गुलाबराय हरिदासोत ने अपने मामा बगसीराम की पोथी मे उतारा। अंत मे पत्र संख्या ११७ पर शृङ्गारिक कवित्त है।
२३०८	६२५४ (६)	सात्त्विक छन्द	कुशलेन	सं० १८१०	१६ ५x१३ ५	२५-२६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि सं. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२७०६	१०१८५	प्रीति-चौवनी	ध्रुवदास	१६ वी श०	१६.५x११	१-६	
२७१०	६२४२	प्रीतिबेल	राय अमृतराम	१६ वी श०	२७.५x१६.५	१-१८	र का १८६६ (रचनाकालीन प्रति)
२७११	६३१७	प्रेम-पच्चीसी	कवि भोलानाथ	१६ वी श०	१७x१०.५	१-८	महाराजा माधवसिंह प्रीत्यर्थ। अक्षर धुधले हो गए है।
२७१२	६७२० (४)	प्रेम-पत्रिका	रसराशि	१६ वी श०	२०x१५.५	१२-१३	
२७१३	६२३७	प्रेम-बहार	राय अमृतराम	१६ वी श०	२७x१६	१-१३	र का १८६६ (रचनाकालीन प्रति)
२७१४	६४३१ (६)	प्रेम-मञ्जरी (रूप मञ्जरी)	जनवद्रीश्रलि	गु० १८७६	२१x१५.५	१-४	अतिम ५ पत्रो पर 'कामदकीय नीति शास्त्र' भाषा है।
२७१५	७८७८	फुटकर किस्से		१८६६	२३.५x१८	१-३५	अन्त मे हाजरों का एक कवित्त और अन्तिम पत्र मे 'राधिका स्तोत्र' (अपूर्ण) है।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं. में)	माप (सें.मी. में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
[illegible]	[illegible] ([illegible])	[illegible]		गु० १७७४	२१.५x१४	१-३	
[illegible]	[illegible] ([illegible])	[illegible]	[illegible]सूरि शिष्य	गु० १७७६	२३x२०	८८-८६	
२३१८	[illegible] ([illegible])	बारहमासा	जुगतानन्द	१६ वी श०	१६x१४	१६५-१६७	पत्र जीर्ण । पत्र सख्या १६७ से १६८ पर ८ कवित्तादि हैं ।
२३१६	[illegible] (२)	बारहमासा	सुन्दरदास	१७६१	२५x१०	३१-३४	
२३२०	६२६० (१)	बारहमासा रा दोहा	मुरलीदास	१६ वी श०	२२x१४	२८२-२८३	प्रारम्भ के २८१ पत्र अप्राप्त ।
२३२१	६१६६ (३)	बालचन्द बत्तीसी	बालचन्द	१८२४	२५x११	६-१२	
२३२२	८४२२ (३६)	बाहुबलि सज्झाय	समयसुन्दर	गु० १७९६	२३x२०	१०१-१०२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२७२३	६२२८ (३)	विचारमाला	अनाथदास	१६ वी श०	२५ ५x१४ ८	२-१२	र. का. १७२६ प्रथम पत्र अप्राप्त।
२७२४	६०४६	विहारी सतसई	विहारीलाल	१६ वी श०	२१ ५x१४ ५	१-५६	अपूर्ण— पत्र संख्या १ से ४ के प्रथम ५३ दोहे अप्राप्त। पत्र संख्या ४५ के बाद दोहा संख्या ७५ से ६८ अप्राप्त।
२७२५	६२६६ (६)	विहारी सतसई (सटिप्पण)	विहारीलाल	१७३५	१६ ५x१४	१३६-१७३	लि क ऋषि दीपचन्द लि. स्था. श्री राघवपुर
२७२६	८९६१	विहारी सतसई	विहारीलाल (विहारीदास माथुर)	१८ ीं श०	२५ ५x१० ५	१-१६	जीर्ण प्रति।
२७२७	८२२७	विहारी सतसई	विहारीलाल	१८३६	२७ ५x१२ ५	१-२५	लि स्था प्रतापगढ इसमे ७०४ दोहे हैं। अन्त मे कुछ अन्य कवियो के सूक्तिपरक कवित्त सङ्कलित है।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि. सं. में)	माप (सें. मी. में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
[illegible]	[illegible]	बिहारी सतसई	बिहारीलाल	२० वीं श०	२४x१४	१-८	सम्पूर्ण—२०२ दोहों तक।
[illegible]	[illegible]	बिहारी सतसई	बिहारीलाल	१७८६	२१x१५ ५	१-३६	पत्र संख्या १३ पर तथा अन्तिम ८ पत्रों पर कवित्त-संग्रह है।
[illegible]	[illegible]	बिहारी सतसई	बिहारीलाल	१९ वीं श०	२४ ५x२० ५	१-६७	कुल ७०६ दोहे हैं। लिपि सुडौल एवं सुन्दर है।
[illegible]	[illegible]	[illegible] आदि	कबीरदास	१९ वीं श०	२२ ५x१० ५	४४-७१	पत्र संख्या ७२ से ७५ पर 'शाबर-मन्त्रादि' हैं। पत्र संख्या ७६-७७ पर स्फुट पद हैं।
[illegible]	[illegible]	[illegible]-गीता	जनमोहन	१९ वीं श०	१२x१०	१२-१८	पत्र संख्या १-११ अप्राप्त।
[illegible]	[illegible]	[illegible]		२० वीं श०	१५ ५x११	८-१०	१७ दोहे ही हैं।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२७३४	८८५७ (१)	भक्त-प्रबोध	गुसाई जुगतानन्द शिष्य चरणदास	१९ वी श०	१९x१४	१-८४	पत्र वडकने है। पत्र सख्या १६७ पर दिए गए कवित्तो मे रचना काल १८२४ दिया है।
२७३५	८६२७	भक्तमाल (भक्तिरस-बोधिनी टीका)	मू० नाभादास टी० प्रियादास	१९१२	२५ ५x१३ ५	१-१५९	टी र का १७६९ लि स्था पजाब (पटियाला) अत मे लालदास कृत टीका की प्रशस्ति मे पद्य हैं।
२७३६	९०८८ (४)	भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	१९५६	२२ ५x१३ ५	८-१६	लि क मोहनकीर्ति लि स्था लाखोला ग्राम
२७३७	८१६१ (४)	भक्तिभावती	प्रपन्नरामानन्द	१७५८	२१ ५x१६	१०५-१२३	र का १६०९ लि क रूपदास र स्था मथुरा
२७३८	९७३६ (४)	भक्तिसदाचार सागरी	रूपरसिक	१९ वी श०	३० ५x२१ ५	२६९-२७१	कुल १४० छन्द है।
२७३९	९३२४ (२)	भगवद्गीता-भाषा	भोलानाथ	२० वी श०	२२ ५x१७ ५	१-३३	१८ वे अध्याय पर्यन्त— नवीन प्रति।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
[illegible]	[illegible]	भगवद्गीता भाषा-पद्यानुवाद	श्री भोलानाथ	१८ वी श०	२२x१५	१-५८	र का १८२० नवलसिंह भूपाल की आज्ञा से वाघसिंह हित रचित। भोलानाथ के वंशजों से प्राप्त संग्रह की प्रति।
२५५१	६२६६ (५)	भगवद्गीता		१७३२	१६ ५x१४	८३-१३८	संस्कृत में है। लि क आनन्दराम मिश्र लि स्था रामपुरा
२५५२	८६६८ (२)	भगवद्गीता भाषा-पद्यानुवाद	हरिवल्लभ	गु० १६२६	१७x१२	१-११५	प्रारम्भ के चार पृष्ठों पर 'विनियोगध्यानादि' है।
२५५३	८५६२	भगवती सार	हरिदास	१६०४	२०x१५	१-६६	र का १६६६ लि क प० गणेश लि स्था गोपाचल
२५५४	७८६२ (१५)	भवानी अष्टक		गु० १६१५	१७x१३	८१-८२	लि क भज्जूराम लि स्था वामनवास

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२७४५	६२२८ (१)	भागवत एकादश स्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१६ वी श०	२५ ५x१४ ५	१-१४४	
२७४६	६३२५	भागवत दशम स्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	कवि भोलानाथ	१६ वी श०	२५x१७	१-१०७	र का १८२६ महाराज नवलसिह प्रीत्यर्थं। कवि वशजों से प्राप्त प्रति। ४६ वें अ०याय पर्यन्त।
२७४७	६४३३	भागवत दशमस्कन्ध भाषा	वेणीदास	१८५३	२४x१७	१-६५३	र. का १७२३ लि क सदाशिवलाल
२७४८	६५६४ (२)	भागवत द्वादश स्कन्ध भाषा सक्षेप	शभुराम पुत्र जीवनलाल	२० वी श०	२२x१७ ५	५-३६	पत्रो के किनारे टूटे हुए हैं। बूँदी के महाराजा बिशनसिंह के पुत्र रामसिंह के मत्री तुलाराम नागर के लघुभ्राता शभुराम द्वारा निर्मित।
२७४९	८१६० (३)	भागवत द्वितीय स्कन्ध चतुर्थाध्याय भाषा		१८ वी श०	१२ ५x६	२६-३६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२७५०	६४२८	भागवत महापुराण पञ्चम स्कन्ध भाषा		१९ वी श०	२३x१६ ५	२-६९	पुष्पिका अपूर्ण। कीटविद्ध। पत्र सख्या १, ३, ५, ६, ८ अप्राप्त।
२७५१	६७२० (२)	भावना-पच्चीसी		१९ वी श०	२०x१५ ५	६-१०	
२७५२	७८७१	भाषा-भूषण	महाराजा जसवतसिंह	१९ वी श०	१६x११ ५	१-२१	
२७५३	९३३१	भूपतीन्द्रविलास		१९ वी श०	२२x१४ ५	१-५७	अपूर्ण—खण्डित प्रति। दिल्ली के चहुआन राजा भूपतीन्द्र प्रीत्यर्थं।
२७५४	९०९३	भेद-भास्कर		१९ वी श०	२२ ५x११ ५	१-८	गुरु-शिष्य-सवाद रूप मे है। पत्र सख्या ८ पर 'चतु-श्लोकी भागवत' है।
२७५५	८५६२ (२)	भोगलपुराण		१७९४	२४ ५x१५ ५	१-३६	लि क अर्जुनराम—गुलाबजी की पोथी मे प्रतिलिपि कृत। लि स्था. उदयपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२७५६	१०१३६ (२)	भोगलपुराण		१८१६	१४x१३	४७-५६	
२७५७	६४२५ (७)	भ्रमर-गीत		१८१८	२१ ५x१७	४१-५०	महाजनी लिपि मे । पत्र सख्या ५० - ५१ पर स्फुट पद्य-सग्रह है ।
२७५८	६२४६ (१)	भ्रमर गीत (भागवत दशम अध्यायगत)		१८६६	२६.५x१८ ५	२-२६	प्रथम पत्र अप्राप्त । ११७ छन्द हैं ।
२७५६	८४२२ (४१)	मगसी पार्श्वनाथ स्तवन	पद्मरूप शिष्य जीवविजय	गु० १७७६	२३x२०	१०७-१०८	लि. क मुनि अमरसागर
२७६०	८४२२ (२६)	मगसी पार्श्वनाथ-स्तवन	गुणसागर सूरि शिष्य पद्मसागर सूरि	गु० १७३६	२३x२०	६०-६१	
२७६१	६७२८ (१)	मदनाष्टक		१६ वी श०	२१x१६ ५	१-७	कृति सस्कृत मे है ।
२७६२	८५०७ (४)	महादेव गोरख-सवाद		१६०६	१६x१२	१-३	लि. क रामदास कबीरपथी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२७६३	६३२४ (१)	महाभारत-भाषानुवाद (भीष्म पर्व)	कवि भोलानाथ	१६ वी श०	२२ ५x१८	१-३०८	र का १८३२ कवि वशजो मे प्राप्त प्रति।
२७६४	८५६२ (५)१०	महाराणा अमरसिहजी रो गीत	तेजसिंह बारठ	गु० १७६५	२४ ५x१५ ५	७४ वा (अ)	
२७६५	८४०० (४८)	महावीर पारणा-स्तवन	देवीचन्द	गु० १८६४	१५x१३ ५	६०-६२	यह गुटका भोजराज पुत्र अखैराज का है।
२७६६	८४२२ (१०)	महावीर-स्तवन	सेवक लक्ष्मण	गु० १७७६	२३x२०	५१-६३	र. का १५२१
२७६७	८४०४ (६)४०	महावीर-स्तुति	समयसुन्दर	१६ वी श०	२०x१३	७३-७५	
२७६८	८४०० (३६)	महावीर स्वामीजी रा पारणा	मुनिमात	गु० १८६४	१५x१३ ५	७५-७८	३१ छद हैं।
२७६९	१०६६७ (७)	महिमासमुद्र	रामचरण	१८६१	१२x६	३६१-३६७	'चोहद्द कृत' बालकराम

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२७७०	९७३६ (७)	माँझ बत्तीसी	रूपरसिक	१९ वी श०	३० ५x२१ ५	७२-७४	अपूर्ण—२७ पद मात्र ।
२७७१	९२९४ (५)	माखन चोरी-लीला	चरणदास	१८ वी श०	१६ ५x११	९८-९९	
#२७७२	९३३३	माधवानल कामकन्दला कथा-चउपई	आलम	१८८१	२२x१५	१-५०	र का हि सवत् ९९१—अकबर के शासनकाल मे । लि क मिश्र पोहैकर लि स्था. रोसी नगर
२७७३	१०२४७ (६)	मारवाड री पीढियाँ री विगत		गु० १८८२	१६x१२	२५ वाँ	सेतराम से मानसिहजी तक ।
२७७४	१०६६७ (९)	मुरलीरामजी की अणभै वाणी, कृति-सग्रह एव पद-सग्रह	जनमुरली स क नानजी	१८४१		४०९-८१० ८१०-८४१ ८५१-८५४	स. का १८४० ८ ग्रन्थ हैं । स स्था बालाखेडा (हाड़ौती प्रदेश) लि क. टैलदास लि स्था बालोतरा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२७७५	९११७ (२)	मूलपुरुप	द्वारिकेश	२० वी श०	१६x१२ ५	२२-३०	इसमे वल्लभाचार्यजी की वशावली है जो मूल पुरुष भगवान नारायण से प्रारभ होती है।
२७७६	१०६६९ (११)	मूलपुरुप	द्वारिकेश	१९ वी श०	२२ ५x१७ ५	९०-९६	पुष्टिमार्गीय ग्रन्थ।
२७७७	६४२५ (४)	मूलपुरुप	द्वारिकेश	१९ वी श०	२१ ५x१७	२२-२७	
२७७८	८५५८ (२)	मृगकपोत-चौपई	चतुर्भुजदास	१९ वी श०	१५x११ ५	१-१९	पत्र सख्या २० व २१ पर 'नरसिहजी की आरती' है।
२७७९	८५६२ (५)५	मोकमसिहजी शक्तावत रो गीत	भीमजी आढा	गु० १७९५	२४.५x१५ ५	७१ वा (अ)	भीडर ठिकाने के।
२७८०	१०६६७ (१२)	मोरधजरी लावणी		गु० १८१४	१२x९	८५४-८७४	
२७८१	८१९० (२)	मोहमरद राजा की कथा	जन जगन्नाथ	१८ वी श०	१२ ५x९	१९-२९	पत्र बडकने हैं।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२७८२	६३२६	मोहविवेक	रामदास कायस्थ (टोडा निवासी)	२० वी श०	१५x१०.५	१-२७	र का १६२३
२७८३	६३२०	युगलविलास	कवि भोलानाथ	१६ वी श०	१६x११	१-२६	र का १८२८ के लगभग। भोलानाथ के वशजो से प्राप्त संग्रह की प्रति।
२७८४	६३२७ (१)	युगलविलास	कवि भोलानाथ	१६ वी श०	२८x१८.५	१३-२७	कवि के वशजों से प्राप्त प्रति। पत्र अस्तव्यस्त—दो प्रतियां। प्रारम्भ मे राज-वशावली प्रशस्तिपरक एक पत्र है। सभी पत्र रफ लिखे हुए ज्ञात होते हैं।
२७८५	६३२६	युगलविलास (अष्टयाम)	कवि लाला हरसहाय	१८१३	२१x१४	१-१८	सभवत समकालीन प्रति।
२७८६	६६६६	यमन के वादशाह निहायत साहब का किस्सा		२० वी श०	२८x१८.५	१-२६८	कथा उर्दू भाषा मे है। नवीन प्रतिलिपि।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
•२७८७	८०८२	रसप्रबोध	दौलत कवि	१८६६	१५ ५x११ १	१-२९	र का १८६६ लि क कल्याणदास कुंभट, मुहणोत सौभाग्यसिंहजी की परत से प्रतिलिपि कृत। लि. स्था किशनगढ आद्य दो पत्रो के १८ छन्द अप्राप्त।
२७८८	९७३५ (१)	रत्न-परीक्षा	रत्नसागर	१९०२	१७x११	१-४१	र का १७५५ लि क. कनीराम लि स्था सवाई माधोपुर ठाकुर श्री भोपालसिंहजी को 'नजर' करने के लिए लिखी गई प्रति।
२७८९	९२५४ (७)	रसमञ्जरी	नन्ददास	१९ वी श०	१६ ५x१३.५	१-१८	अन्त मे चन्द कवि कृत स्फुट कवित्त है।
२७९०	१०१७९	रसमञ्जरी भाषा	मू० भानुदत्त भा० छज्जूमल्ल	१७३२	२५x११	१-१२	लि क प० अमरविजय नायिका भेद के ८२ छन्द है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें.मी. में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२७९१	९३३०	रसमञ्जरी भाषा	कवि आनन्द	१७०८	१२x१४	१-२३	लि क शिरोमणि
२७९२	१०१३७	रसमुक्तावली	ध्रुवदास	१८४६	१७.५x११	१-२१	प्रथम पत्र अप्राप्त। कुल ८९ छन्द है।
२७९३	९०५४ (१)	रसराज	मतिराम	२० वी श०	२० ५x१६	१–५४	आधुनिक नीले लेजर पर काली और लाल स्याही से सुलिखित प्रति।
२७९४	९२५४ (३)	रसराज	मतिराम	१८१०	१६ ५x१२ ५	१३२–२४१	पत्रो मे पृष्ठाङ्क लगे हैं।
२७९५	९७२० (६)	रसराज	मतिराम	१९ वी श०	२०.५x१५ ५	१-४०	अन्त मे 'शुक्लाभिसारिका' के कवित्त है।
२७९६	९८५८	रसराज	मतिराम	१९ वी श०	१६ ५x१४	८४-१२२	अपूर्ण—३८२ छन्द पर्यन्त। पत्र सख्या १ से ८३ एव ८५ वा अप्राप्त।
२७९७	१०१५० (२)	रसराज	मतिराम	१७८५	२१x१६	४८-५२	अपूर्ण—पत्र सख्या १से ४७ अप्राप्त, छन्द सख्या ३७६ से ४१९ पर्यन्त।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
[illegible]	[illegible]	रसिकगोविन्द		१९ वी श०	२०x१५	१-२०	अपूर्ण— १२५ वे छन्द पर्यन्त ।
[illegible]	[illegible] (१)	[illegible]	रसरासि	१९ वी श०	२०x१५ ५	१-५	महाराजा सवाई प्रतापसिंह की आज्ञा से रचित । अन्त मे स्फुट सवैया है ।
२८००	[illegible]	रसिकप्रिया	केशवदास	१९ वी श०	२२x१४	३-६६	आदि व अन्त के पत्र अप्राप्त ।
२८०१	८४४१	रसिकप्रिया	केशवदास	१७८५	२५ ५x११ ५	१-१००	लि क. मुनि जगराज शिष्य ज्ञानराज
२८०२	८६१६	रसिकप्रिया	केशवदास	१८ वी श०	२३ ५x१३	१-९७	जीर्ण प्रति ।
२८०३	९२५४ (१)	रसिकप्रिया	केशवदास	१८०९	१६ ५x१३ ५	६-१११	लि स्था जोधपुर प्रथम प्रभाव अप्राप्त, प्रथम ५ पत्र अप्राप्त ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८०४	१०२२२	रसिकप्रिया सटीक	केशवदास	१९ वी श०	२५x१० ५	१–४०	अर्थ गद्य मे किया गया है। गुजराती भाषा का पुट है।
*२८०५	६४३१ (३)	रसिकरत्नावली	नागरीदास (महाराजा सावतसिंह)	१७८६	२१x१५.५	१-५	र. का. १७८२
२८०६	६४२६	रसोई पातस्याही की (पोथी)		१९ वी श०	२१ ५x१६ ५	१–१२६	फारसी के ग्रन्थ 'नुस्ख-ए-शाहजानी' का जयपुरी भाषा मे अनुवाद।
२८०७	८७०५ (४)	राजजोग ग्रन्थ		गु० १८६१	१४x८ ५	५८-८३	
२८०८	८६६३ (६)	राजनीति रा दोहा	जसराम	१९ वी श०	१६x१३ ५	८२-१११	र का १८१४ सोढा जगमाल सुत उदयसिह के लिए रचित।
२८०९	८४०० (२३)	राणकपुर गीत	समयसुन्दर	गु० १८६४	१५x१३ ५	६१-६२	र का १६७६
२८१०	८४२२ (४४)	राणपुरा (राणकपुर) रो स्तवन	शिवसुन्दर शिष्य देवसुन्दर	गु० १७७२	२३x२०	११३–११४	र का १७१५ कर्त्ता–साडेराव गच्छ का है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८११	९२००	राम आरती-शकुनविचार	तुलसीदास	१९ वी श०	२२x१०	१-२४	अन्तिम पत्र खण्डित । सात सर्गो मे ।
२८१२	८२०९	रामगीता सभाषा टीका	केशवदास वैष्णव	१८९९	२५x१४	१-२९	टी र का १८६१ लि क श्रीगौड रघुनाथ अध्यात्मरामायण के उत्तर-काण्डान्तर्गत ।
२८१३	८६१९	रामगीता सभापा टीका	केशवदास वैष्णव	१८६५	२७x१४	१-३०	टी र का १८६१ 'भू रस वसू विश्रमभरु' लि क मोकमरामं प्रथम पत्र अप्राप्त ।
२८१४	८६६७	रामगीतावली	गो० तुलसीदास	१८५७	२४ ५x१०.५	१-११९	लि क सनमुखराम
२८१५	८४८९	रामचन्द्रिका	केशवदास	१८५४	२५x१९	१-१४३	लि क महात्मा शभुराम लि स्था सवाई जयपुर
२८१६	८१९३	रामचन्द्रिका	केशवदास	१९ वी श०	२४x१५ ५	१७-१७४	अन्तिम पत्र खण्डित ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८१७	१०६६७ (४)	रामचरणजी की अणभै वाणी एव कृति-संग्रह	रामचरण शिष्य कृपाराम	गु० १८४१	१२x६	३-३५०	स. का १८२७ स क नवलराम स स्था शाहपुरा(भीलवाड़ा) लि क टैलदास लि स्था पाली
२८१८	१०६६७ (८)	रामचरणजी की महिमा का सबद	द्वारकादास, मालिदास जनभगवान, तुलछी सेवादास	१८४१	१२x६	३९७-४०६	विभिन्न संतो के सबदो का संग्रह है।
२८१९	१०६६७ (१०)	रामचरणजी की लावणी (बारामासी)	दासकरन	गु० १८४१	१२x६	८८१-८४८	
२८२०	७८६४	रामचरितमानस (बाल-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१९ वी श०	३० ५x१४	१-११८	प्रारम्भ व अन्तिम पत्र खडित।
२८२१	७८६५	रामचरितमानस (अयोध्या-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१९ वी श०	३०x१४	१-९१	
२८२२	७८६६	रामचरितमानस (अरण्य-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८४०	३०x१४	१-२५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८२३	७८६७	रामचरितमानस (किष्किन्धा-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८४०	३०x१४	१-१२	
२८२४	७८६८	रामचरितमानस (सुन्दर-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८४०	३०x१४	१-२०	केवल इसी काण्ड की पुष्पिका मे लिपिकाल दिया गया है।
२८२५	७८६९	रामचरितमानस (लङ्का-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८४०	३०x१४	१-४६	
२८२६	७८७०	रामचरितमानस (उत्तर-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८४०	३०x१४	१-४७	ग्रन्थाङ्क ७८६४ से ७८७० पर एक ही प्रति के विभिन्न काण्ड हैं।
२८२७	७८८८	रामचरितमानस (बाल-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१९ वी श०	३२x१५	१-६४	अपूर्ण।
२८२८	८१४९	रामचरितमानस (बाल-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१९१४	२६x१६ ५	२-९९	प्रथम पत्र अप्राप्त। लि क बगसूराम गुर्जरगौड लि स्था उणियारा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८२९	८२२३	रामचरितमानस (अयोध्या, अरण्य, सुन्दर और लङ्का-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१७८८	२७x१२	१-१८०	लि क. पीताम्बरदास लि. स्था. काशी
२८३०	८४०९	रामचरितमानस (अयोध्या-काण्ड अरण्य-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१९ वी श०	२६x१६ ५	२-१९८ १-५३	अपूर्ण— जिल्दयुक्त गुटका। प्रथम पत्र एव पत्र सख्या ८९ अप्राप्त। पत्र अस्तव्यस्त।
२८३१	८६४८	रामचरितमानस (अयोध्या-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१९ वी श०	२३ ५x१४ ५	१-११५	
२८३२	९०७७	रामचरितमानस (बाल-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८७०	२२ ५x१२ ७	१-२६	लि क गपरराम लि स्था कोटा, नीलकण्ठ समीपे, चरमण्वती(चम्वल)तीरे ठाकुर वैजूसिहजी पठनार्थ।
२८३३	९०७८	रामचरितमानस (अयोध्या-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८८७	२१ ५x१४	१-२३४	
२८३४	९०७९	रामचरितमानस (सुन्दर-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८९३	२३x१३	१-२३५	लि क हीरालाल खण्डेलवाल लि स्था कृष्णगढ सुलिखित प्रति।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८३५	६०८०	रामचरितमानस (ग्ररण्य-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८८७	२३x१३	१-५९	लि क रूपदास वैष्णव लि स्था कृष्णगढ
२८३६	६०८१	रामचरितमानस (लङ्का-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८९२	२३x१३	१-११९	लि क ललितादास ब्राह्मण लि स्था कृष्णगढ
२८३७	६०८२	रामचरितमानस (उत्तर-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८२२	२२ ५x१३	१-५७	लि क राममङ्गल वैष्णव लि स्था दक्षिण देशे, गोदावरी तीरे, जेथर मध्ये
२८३८	६३२८	रामचरितमानस	गो० तुलसीदास	१८६८	२१ ५x१८	१-४३५	किनारे त्रुटित ।
२८३९	६५५३	रामचरितमानस (वाल-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१९ वी श०	३३ ५x१५	१-१५९	ग्रपूर्ण — छन्द सख्या २९५ पर्यन्त ।
२८४०	६६६५	रामचरितमानस (सचित्र) (लङ्का एव उत्तर-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८९३	३३ ५x१७	१-७१	दोनों काण्डो की समग्र चित्र सख्या १०० है ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८४१	६७२१ (२)	रामचरितमानस (सुन्दर-काण्ड)	गो० तुलसीदास	गु० १६१७	२०x११	१-३७	अपूर्ण ।
२८४२	६७२१ (३)	रामचरितमानस (अरण्य-काण्ड)	गो० तुलसीदास	गु० १६१७	२०x११	१-६	अपूर्ण ।
२८४३	१०६८१	रामचरितमानस (किष्किन्धा-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१६८८	१७x१०	१-२८	सुलिखित । काश्मीरी पत्र । पत्रो के चारो ओर रगीन बॉर्डर है ।
२८४४	८८५६	रामचरित्र (लङ्का-काण्ड) (अवतारचरित्रान्तर्ग०)	नरहरिदास बारठ	१८६७	३६x२१	७५-११५	लि क रामावतार चतुर्वेदी एक ही ग्रन्थ तीन हिस्सो मे गन्थाङ्क ८८५८ से ८८६० पर उपलब्ध ।
२८४५	१०६७०	राम-नामावली	गुसाई जगन्नाथ पुत्र वेणीदत्त	१८८२	२३x१०	१-१०	लि क देवीदास
२८४६	६८३६ (२)	रामरक्षा(रामरिछ्या)स्तोत्र	रामानन्द	१६ वी श०	१२x१०	१६-२४	अन्त मे 'चतु श्लोकी भागवत' है ।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८४७	१०६६३	रामविनोद	रामचन्द्र	१९०७	२६.५x१७.५	३-१२७	प्रति कीटविद्ध । लि क श्रवणदास दादूपथी लि स्था गाव नूलेट, श्रीनाथजी की वस्ती मे ।
२८४८	९११८	रामायण-सार	हरिचरणदास	१९ वी श०	१५x१३	१-३६	अन्तिम पत्र त्रुटित ।
२८४९	९२३४	रास को रेखतो	राय अमृतराम	१९ वी श०	२७x१९	१-९	र का १८६९ २७ पद्य है ।
२८५०	८९१४	रासपञ्चाध्यायी भाषा	नन्ददास	१९ वी श०	२६.५x१६	१-१८	लि क गगाराम
२८५१	९५९४ (५)	रासपञ्चाध्यायी भाषा (भागवत दशमस्कन्धगत)	शभुराम	२० वी श०	२२x१७.५	४५-७१	र का १९१५ र स्था बूँदी समकालीन प्रति । पत्र त्रुटित ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८५२	८४०५ (१)	रासविलास	गोकुल कवीश्वर	१६ वी श०	२२x१४	३३-४६	रागबद्ध। इस गुटके का प्रारम्भ लिपि-कर्त्ता द्वारा विन्यस्त पत्र सख्या ३३ से होता है।
२८५३	८४०० (२२)	रिषभदेव-गीत	अज्ञात	गु० १८६४	१५x१३ ५	६०-६१	
२८५४	८६३३	रूपदीप-पिङ्गल	जयकृष्ण भोजगपुत्र भवानीदास	१८८३	२६x१३	१-५	र का १७७६ लि क चम्पाराम
२८५५	६२३५	रेखता (भक्ति के)	राय अमृतराम	१६ वी श०	२७x१६	८४-६१	रागबद्ध। पत्र सख्या ८७-८८ अप्राप्त। र का १८६६
२८५६	६२३८	रैन-रङ्ग	राय अमृतराम	१६ वी श०	२७x१६ ५	१-५	र का १८६६

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८५७	१०६६७ (२)	लावणी	लवलीनराम	गु० १८४१	१२x९	६३-६६	
२८५८	९३१३	लीला-पच्चीसी	कवि भोलानाथ	१८२०	२०x१३ ५	१-७	लि क नन्दराम महाराजकुमार नाहरसिह पुत्र सूरजमल्ल प्रीत्यर्थं । १०७ छन्द है ।
२८५९	९७२० (१०)	लुकमानी नसीहत	हकीम लुकमान	१९ वी श०	२०x१५ ५	८६-९०	
२८६०	१०१८८ (२)	लूहर		१९१०	१५ २x११	२०९-२१३	लि क प्रोहित मानमल राजकवार फोजसिघजी पठनार्थ । १५ छन्द है ।
२८६१	९२३९	वशी-बहार	राय अमृतराम	१९ वी श०	२७x१९ ५	१-६	
२८६२	८४२२ (९)	वडो-नवकार		गु० १७७६	२३x२०	४२-५०	र का १८६९
२८६३	१०१८३ (१)	वन-यात्रा परिक्रमा वार्त्ता (८४ कोस परिक्रमा री वार्त्ता)	गोकुलनाथ	२० वी श०	२४ ५x१७	१-५३	पत्र सख्या ४९-५३ पर वन के प्रकार का वर्णन है ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८६४	८४२२ (४३)	वरकाणा पार्श्वनाथ-स्तवन	सेवक	गु० १७७२	२३x२०	११३ वा	
२८६५	६४२५ (३)	वल्लभाख्यान		१८१९	२१ ५x१७ ५	६-२१	पुष्टिमार्गीय ग्रन्थ ।
२८६६	९११७ (१)	वल्लभाख्यान		२० वी श०	१६x१२ ५	१-२२	
२८६७	१०६६९ (१०)	वल्लभाख्यान		१९ वी श०	२२ ५x१७ ५	८४-८९, १०१-११०	तीजा कडखा से ।
२८६८	८८५७ (४)	विचार-बोध	जुगतानन्द	१९ वी श०	१८x१४	२२१-२२७	र का १८३२ गुटका जीर्ण है।
२८६९	८०६१	विचारमाला	अनाथदास	१९३८	२४.५x१६	१-१५	र का. १७२६ लि क कोमलदास लि स्था कपासन अष्टम विश्राम तक ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८७०	६१६८	विचारसागर भाषा	निश्चलदास	१८ वी श०	३० ५x१३ ५	१-२८९	पत्र अस्तव्यस्त हैं। प्रारम्भ के पत्र सख्या १ से ३ अप्राप्त। र स्था 'किहिडोली' ग्राम जो दिल्ली से पश्चिम दिशा मे १८ कोस की दूरी पर स्थित है।
२८७१	१०६७६	विचारसागर भाषा	निश्चलदास	१९१७	६x७ २	१-१३४	र स्था किहिडोली ग्राम लि क देवकृष्ण दरजी लि स्था जोधपुर
२८७२	८४०० (३०)	विनती	कनककीर्ति	गु० १८६४	१५x१३ ५	६९-७०	
२८७३	८६८५	विनयपत्रिका	गो० तुलसीदास	१९०६	२३ ५x१७	१-१५०	पत्राङ्क ७४, ७५, ७६ एक ही पत्र पर। १४० वा पत्र अप्राप्त।
२८७४	८४२२ (४२)	विमलसाह रो सरलोको (श्लोक)	प० विनयविमल	गु० १७७२	२३x२०	१०८–११३	लि क अमरसागर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८७५	६२४४	विरहतरङ्ग	राय अमृतराम	१६ वी श०	२७x१६	१-६	र का १८६६
२८७६	६११५ (२)	विवेक-चितावणी	सुन्दरदास	१६०१	१५x११	२५६-२६३	
२८७७	८६६३ (१)	विवेकसागर-सतसई		१६ वी श०	१६x१२	१-३६	कामदारी लिपि में। ४५२ दोहे मात्र। विभिन्न कवियो के दोहो का सकलन है।
२८७८	६८३६ (५)	विष्णुपजर-स्तोत्र-भाषा		गु० १८२२	१२x१०	५६-६१	पत्र सख्या ६२ पर स्फुट पद्य एव पत्र सख्या ६३-६५ पर 'शकुनविचारादि' है।
२८७९	६२६६ (१)	विष्णुसहस्रनाम-स्तोत्र		१७२७	१६ ५x१४	१-२८	लि क आनन्दराम मिश्र कृति सस्कृत मे है।
२८८०	८४०४ (५)	वीस-थानक पूजा	जिनहर्ष सूरि	१६ वी श०	२०x१३	३५-५६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (सें मी में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८८१	८४१७	वृन्दसतसई	वृन्दकवि	१८८२	१५ ५x१० ५	१-७६	र का १७६१ र स्था ढाका शहर लि क अमीचन्द पत्र संख्या २, ३ अप्राप्त ।
२८८२	१०१८७ (१)	वृन्दसतसई	वृन्दकवि	१९१०	१५x११	१-२०९	र का १७६१ र स्था ढाका लि क प्रोहित मानमल महाराजकुमार फोजसिहजी पठनार्थ । कुल ७१५ दोहे है ।
२८८३	८७०३	वृन्दावनसत (शतक)	ध्रुवदास	१८२८	१४x१	१-१७	र का १६८६ प्रथम पत्र अप्राप्त ।
२८८४	९४३१ (५)	वृन्दावनसत (शतक)	भगवन्त शिष्य हरिदास	१७८६	१२x१७ ५	१-२५	र का १७०७ लि स्था शाहजहानाबाद अंत मे 'गङ्गाजी' के कवित्त है ।
२८८५	९७३६ (१)	वृहदुत्सवमणिमाला	रूपरसिक	१९ वी श०	३० ५x१२ ५	७५-१९५	रागबद्ध । पूरे गुटके मे रूपरसिक की कृतियो का सग्रह है ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८८६	८४३५	वेद्यमनोत्सव (आयुर्वेद)	नयनसुख पुत्र केशवदास	१८६१	१६.५x११	१-५९	लि. क. ईसुरीदास लि. स्था भाट के गॉव में अन्तिम ६ पत्रो मे औषधी-संग्रह है।
२८८७	६२०१	वैद्यमनोत्सव	नयनसुख पुत्र केशवदास	१६ वी श०	२२x१५	१-१३	
२८८८	६६११	वैद्यमनोत्सव (सप्तमोद्देश पर्यन्त)	नयनसुख पुत्र केशवदास	१७६६	२५.५x१०.५	१-८	लि क प० अमरमूर्ति मुनि लि. स्था. सुद्धदती
२८८९	६८०४	वैद्यमनोत्सव	नयनसुख पुत्र केशवदास	१७४९	२५x१०.५	१-१४	लि क भाग्यविजय
२८९०	६२६८	वैराग्यप्रकरण भाषा		१८९१	२०x१४	१-७८	लि क ज्ञान ब्राह्मण
२८९१	८५०७ (२)	वैराग्यशतक सटीक	मू० भर्तृहरि	१९०४	१६x१२	१-२५	टी क अज्ञात लि क रामदास

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८६२	६७३२ (४)	वैराटपुराण		१६ वी श०	१७x१२ ५	७४–६५	कृति सस्कृत मे है ।
२८६३	१०६७१ (६)	व्रजविहार-लीला		१६ वी श०	२४x१३ ५	५७-६५	८५ छन्द हैं ।
२८६४	१००५६ (२)	व्यास कथा		१८११	२६ ५x१८	११६–१२१	पडितो पर व्यग्य है । पत्र सख्या १६१ पर रेवादास का पद है ।
२८६५	८३८३	शकुनावलि (शकुन, स्वप्न, दिशा, पशु, अग फुरकनादि)		१८३२	१७x१० ५	३–२२	अपूर्ण । महाराणा भीमसिहजी के समय मे लिखित । प्रथम दो पत्र अप्राप्त । लि क माणकचन्द लि स्था उदयपुर पत्र सख्या २३ - २४ पर रामयसुन्दर, साधुकीर्त्ति एव अगरचन्द के पद है ।
२८६६	८४२२ (२६)	शत्रुञ्जय-स्तवन	कवियण	गु० १७७६	२३x२०	६२-६४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८९७	८४२२ (११)	शत्रुञ्जय-रास	समयसुन्दर	गु० १७७६	२३x२०	६३-६८	र का १६८२
२८९८	८१०४	शनिश्चरजी की कथा	जोरा (जोरावर) पुत्र हुकमराय	१९४३	२१.२x११ ३	१-१६	र का. १८२० कवि ने अपना परिचय इस प्रकार दिया है— कायस्थ माथुर जात भिनानी। नगर नागपुर वाली जानो ।। हुकमराय सुत जोरो जानो। जीवणदास की गोद बखानो ।। निसदिन ध्यान शनिको ध्यावे। दुख-कष्ट कदे नही पावे ।। लि स्था लक्ष्मणपुर
२८९९	८४१९	शनिश्चरजी की कथा	जोरा पुत्र हुकमराय	१९०३	१६ ५x११ ५	१-२५	लि स्था मन्दसौर
२९००	८४२०	शनिश्चरजी की कथा	जोरा पुत्र हुकमराय	१९३८	१६ ५x१६ ५	३-४०	लि क विश्वनाथ गौड नुन्नीलाल हलवाई पठनार्थ। प्रथम २ पत्र अप्राप्त।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६०१	६३३८ (३)	शनिश्चरजी की कथा (सचित्र)	ग्रासकरण	१६ वी श०	१० ५x६	२१-५६	शिव, राम - सीता - लक्ष्मण एव हनुमानजी के ३ चित्र है।
२६०२	१०१४२ (२)	शनिश्चरजी की कथा (गद्य)		१६ वी श०	२२ ५x१६	५-११	पत्र सख्या ११ - १२ पर 'विसभरा को सोण' शकुन विचार है।
२६०३	१०५६७	शनिश्चरजी की कथा (पद्य)		१६ वी श०	१६ ५x१४	१-८७	वि स १८१३ की प्रति से प्रतिलिपि कृत। महाजनी लिपि मे। लि क चैनसुख श्रीवास्तव लि स्था जावली
२६०४	८५५८ (३)	शनिश्चर-स्तोत्र (थावर-रास)	कपूरविजय(तपागच्छी)	१६ वी श०	१५x११ ५	१-८	र का १८४३ 'भुवन वेद सिद्धि चन्द' रचनाकालीन प्रति।
२६०५	६३३८ (२)	शनिश्चर-स्तोत्र		१७ वी श०	१० ५x६	११-१४	कृति सस्कृत मे है। पत्र सख्या १५ से २० तक जिन्स खरीदने की विगत है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२९०६	८८५७ (९)२	शब्दवर्णन (सबद)	जुगानन्द शिष्य चरणदास	१९ वी श०	१८x१४	८५-१४९	रागबद्ध । गुटका जीर्ण ।
२९०७	९४२२	शरणमन्त्र एवं समर्पण श्लोक की भाषा टीका (गद्य)	गो० गिरिधर	१९ वी श०	१६x१२	१-१०	
२९०८	८४०० (२६)	शान्तिनाथ-स्तवन	पाशचन्द्रसूरि	गु० १८६४	१५x१३ ५	६३-६५	
२९०९	८४२२ (४५)	शान्तिनाथ-स्तवन	सहजसागर	गु० १७७०	२३x२०	११८-११५	
२९१०	८४२२ (१८)	शान्तिनाथ-स्तवन	गुणसागर शिष्य पद्मसूरि	गु० १७७६	२३x२०	८४-८५	
२९११	८४२२ (४८)	शालिभद्र महामुनी चौपई	जिनराज शिष्य जिनसिंह सूरि	१७७२	२३x२०	१२५-१५४	र का १६७८ लि क ऋषि गागजी पत्र सख्या १५५-१५७ पर 'गौतमस्वामी रास' के ४२ छन्द मात्र है ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२९१२	८४२२ (१७)	शालिभद्र-सज्झाय	सहजसुन्दर	सु० १७७५	२३x२०	६४-६५	
२९१३	९३३६	शालिहोत्र-भाषा टीका	मू० नकुल	१८९२	३१x२० ५	१-३९	
२९१४	९४२५ (८)	शिक्षापत्री-भाषा	हरिराय	१९वी श०	२१ ५x१७	१-६९	
२९१५	७८६१ (९)	शिव-आरती	साँवता	१९१५	१७x१३	४३-४४	लि क. भज्जूराम लि स्था बामनवास
२९१६	८५६२ (४)	सुक-सवाद	खेमदास	१७९५	२४ ५x१५ ५	४५-६६	अपूर्ण— छन्द सख्या १३० पर्यन्त। लि क पचोली गुलावराय हरिदासोत लि स्था उदयपुर
२९१७	८५६२ (१)	श्यामबत्तीसी या (कृष्णध्यान चतुराष्टक)	श्याम सखी	१९वी श०	१५x११ ५	१-११	पत्र सख्या १२ से २० तक विविध औषधियो के नुस्खे एव वशीकरणादि मन्त्र लिखे हुए है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२९१८	८४०० (१४)	श्रावकरी-करणी-सज्झाय	जिनहर्ष	गु० १८६४	१५x१३ ५	४२-४५	
२९१९	८४०० (३)	श्रीनक्र-स्तवन		गु० १८६४	१५x१३ ५	२-१०	कृति प्राकृत मे है।
२९२०	८४२२ (२५)	श्रीमन्-गुणतीसी	गुणसागर सूरि	गु० १७७६	२३x२०	६१-६२	
२९२१	८४०० (३२)	सखेश्वर-पार्श्वनाथ-स्तवन	जिनचन्द	गु० १८६४	१५x१३ ५	७१-७२	
*९२२२	८७५९	सग्राम-सार	कुलपति मिश्र	१७९४	२५x१६ ५	१-२४१	र का १७३३ लि क कवि पूरण लि स्था सवाई जयपुर किनारे खण्डित। पत्र सख्या २४० वा खण्डित।
२९२३	१०६६७ (१)	सतदासजी की वाणी	सतदास	१८४१	१२x९	१-६३	स का १८३० स क नवलराम स स्था शाहपुरा लि क टैलदास लि स्था भीलवाडा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२९२४	९८८९ (१)	सभरि-युद्ध	कविकलानिधि कृष्णभट्ट	१९ वी श०	१५x१०	१-८	
२९२५	९१९९ (२)	सवेग-बत्तीसी (मान बत्तीसी)	मानकवि	१८२४	२५x११	६-९	
२९२६	८४०४ (४)	सतरहभेदी-पूजा	साधुकीर्ति	१९ वी श०	२०x१३	२३-३२	र का १६१८
२९२७	८४२२ (१०)	सत्यां-सज्झाय		१८ वी श०	२३x२० ५	५१-५३	
२९२८	८४०० (८)	सद्गुरु-भास	मुनि मेघराज	गु० १८६४	१५x१३ ५	३६-३७	
२९२९	१०१८३ (२)	सनेह-लीला	जगमोहन	२० वी श०	२४ ५x१७	५३-६३	
२९३०	८८५७ (१)३	सप्तश्लोकी-गीता-भाषा	जुगतानन्द	१९ वी श०	१९x१४	१४९ वा	
२९३१	९८३६ (४)	सप्तश्लोकी-गीता		गु० १८२२	१२x१०	५८ वॉ	कृति सस्कृत मे है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि. स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२९३२	०८३४ (३-५)	सप्तश्लोकी-गीता		मु० १८४५	१२x१५	२२-२४	पत्र सख्या २२ (ब) पर शिव-पार्वती एव २७ (ब) पर कृष्ण व गणेश के रेखा-चित्र है। पत्र सख्या २५ पर 'एकश्लोकी भागवत' एव पत्र संख्या २५-२६ पर 'एकश्लोकी महाभारत' है।
२९३३	१०६६७ (६)	सबद-माणिक-बोध	रामचरण	१८४१	१२x९	३८१-३९१	चोहट्ट कृत बालकराम
*२९३४	९७२० (९)	सभाभूषण-भाषा	गगाराम	१९ वी श०	२०x१५	७४-८५	र का १७४० र स्था सागानेर (जयपुर) सङ्गीत-शास्त्र का ग्रन्थ है।
२९३५	७८५७ (२)	सभाविलास	तुलसीदास	१९ वी श०	२७ ५x१८	९३-९७	इस कृति मे ९९ दोहे हैं।
*२९३६	१०११९	सभा-विनोद (रागमाला-भाषा)	पायदाबेग पुत्र सगीबेग पुत्र शेरबेग	२० वी श०	२३ ५x१५	१-१६	शाहजहाँ के शासन-काल मे रचित।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२९३७	८३६३	समासार नाटक	कवि रघुराम	१८४३	२३ ५x१२	१-२४	र का १७५७ लि क छजमल
२९३८	८५३७	समासार नाटक	कवि रघुराम	१९०४	२४ ५x१३ ७	१-६७	लि क लक्ष्मीराम श्रीमाली लि स्था लाडणु
२९३९	९७२० (७)	समासार नाटक	कवि रघुराम	१९ वी श०	२०x१५ ५	१-४२	र का १७५७
२९४०	१०१४७	समन रा दोहा आदि	समन	२० वी श०	२०x१५ ५	२-६२	पत्र सख्या १, ३ से ५ एव २५ से ५७ अप्राप्त। स्फुट पत्र।
२९४१	९५१७	समयसार नाटक	बनारसीदास	१७४८	२७x२१	१६५-१९५	र का १६९३ र स्था आगरा लि क ऋषि हेमराज लि स्था सादडी पत्र जीर्ण। अन्त मे एक पद है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२९४२	६२२८ (४)	समयसार नाटक	बनारसीदास	१६ वी श०	२५ ५x१४ ५	१-१६	छाटमा ५० कवित्त है।
२९४३	८५६३ (१)	समयसार नाटक	बनारसीदास	१७५३	१७x१०	१-४८	र. का १६९३ लि. क जयचन्द्र
२९४४	८४०० (४६)	समेतशिखर-स्तवन	देवीचन्द	गु० १८६४	१५x१३ ५	८९-९०	
*२९४५	१०६८४	समै-सु-प्यार-सतसई	वसन्तराम	१८४१	२२ २x१६ ७	१-३६	र. का १८३३ लि स्था जोधपुर प्रति कीटविद्ध। पत्र सख्या ३७ - ३८ पर मतिराम कृत 'रसराज' का प्रारभिक अश है। पत्र सख्या ३९-४१ पर रामदास के पद है।
२९४६	८४२२ (४)	सरस्वतीजी रो छन्द	शातिकुशल	गु० १७७६	२३x१०	२५-२७	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. में)	माप (सें.मी. में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२९४७	८५६२ (७)२	सवैया देश-देशरी भाषा रा		१७९५	२४.५x१५.५	९३-९५	पंजाबी, ब्रज, गुजराती, मारवाड़ी, हाड़ौती एवं दक्षिणी आदि प्रान्तिक भाषाओं में सवैये हैं।
२९४८	१०२४७ (५)	सात सखिया रा दूहा		सु० १८८२	१६x१२	२२-२३	
२९४९	१०२४७ (३)	सादांगी अर अमलीरी स्त्री रो संवाद		सु० १८८२	१६x१२	१३-१७	
२९५०	१०६६७ (५)	साध-परख्या	रामचरण	१८९१	१२x९	३५१-३८१	चोहट्ट कृत मुरलीराम
२९५१	८४०० (७)	साध-वन्दना	पाशचन्द मुनि	१८६४	१५x१३.५	२२-३५	७ ढालो युक्त।
२९५२	८४०० (४९)	सारस्वत-पंचिका		सु० १८६४	१५x१३.५	९२-९४	कृति संस्कृत में है। अपूर्ण—प्रारम्भ मात्र।
२९५३	९७४५	सिंहासन-बत्तीसी, बेताल पच्चीसी एवं हितोपदेश तथा चन्दनमलियागिरी रो वात (सचित्र)		१९ वीं श०	२६.५x१८	१५२ कुल	चित्र संख्या-३२१ अपूर्ण। पत्र अस्तव्यस्त एवं मिश्रित।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२९५४	९७८७ (१)	सिंहासन-बत्तीसी	महादेव पुत्र विट्ठलदास	१८५६	२३.५x१६.५	१-६४	लि.क जती मयाचन्द लि स्था कल्याणपुरी वादशाह अकबर की आज्ञा से निर्मित । प्रारम्भ मे चगत्ताई पातशाह बाबर आदि की कीर्ति वर्णित है ।
	(२)						इस कृति के बाद ८ पत्रो मे 'रामसहस्रनाम' (लिंगपुराण-गत) संस्कृत मे है ।
२९५५	९०५३	सिख-नख-वर्णन (तिलक टीका सहित)	मू० बलभद्र टी० मनीराम	१८९२	२१.५x१६	१-६४	टी र का. १८४२ उणियारा के राजा महासिंह की आज्ञा से रचित । पत्र सख्या ३ से ६ तक अप्राप्त ।
२९५६	८४०० (१८)	सिद्धाचल-स्तवन	जिनचन्द	मु० १८६८	१५x१३.५	५७-५८	
२९५७	९६८२ (३)	सीख का सवैया आदि		२० वी श०	२५.५x१२.५	८-११	७ वा पत्र अप्राप्त । कविगद आदि के २८ छन्द है ।
२९५८	८३११	सीताजी की आलोयणा		२० वी श०	२६x१२.५	१-१०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६५६	८४२२ (१३)	सीमधर-आयोयणा-स्तवन	मल्लिदास शिष्य देवराज	गु० १७७६	२३x२०	७२-७७	
२६६०	८४२२ (१६)	सीमधर-पार्श्वनाथ-स्तवन	भक्तिलाभ	गु० १७७६	२३x२०	८५-८७	
२६६१	८४०४ (६)४१	सीमधर-स्तुति	भक्तिलाभ	१६ वी श०	२०x१३	७५-७६	गुटके के अन्तिम २ पत्रों पर कृतियों की सूची है।
२६६२	६२४१	सुखकरन-लता	राय अमृतराम	१६ वी श०	२७x१६ ३	१-६	र का १८६६
२६६३	६२२८ (५)	सुखनिधान (मन्त्रादात्मक)		१८४१	२५ ५x१४ ५	१-३३	कुल २७० छन्द है।
२६६४	६३१६	सुखनिवास	रवि भोलानाथ	१६ वी श०	२० ५x१३ ५	१-३८	र का १८३० 'नभ वैश्वानर नाग भू' ठाकुर चतुरसिंह प्रीत्यर्थ। सम्पूर्ण सग्रह रवि के वशजों से प्राप्त हुआ है पर मग-[illegible] जा सकता है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२९६५	९३०७	सुदामा-चरित्र		१९ वी श०	१७ ५x११	१-१२	लि क अग्निहोत्री भाउमुनि कुल ७३ छन्द है। इस कृति के पूर्व के ५ पत्रो पर हिन्दी के पदादि एवं पश्चात् कुछ संस्कृत के श्लोक संगृहीत है।
२९६६	१०१३८ (२)	सुदामाजी की बारखडी		१९ वी श०	१४ ५x१३ ५	१०-१८	
२९६७	९८३६ (८)	सुदामा-सार (चरित्र)		गु० १८२२	१२x१०	८६-१००	लि क लछीराम
२९६८	८४२२ (४६)	सुनक्षत्रसाधु-सज्झाय	सहजसुन्दर	गु० १७७२	२३x२०	११५-११६	लि क अमरसागर
२९६९	९०४८	सुन्दरदासजी का अष्टक	सुन्दरदास शिष्य दादूदयाल	१९ वी श०	२५x१४ ५	१-११	१३ अष्टक है।
२९७०	९११५ (१)	सुन्दरदासजी की वाणी (सवैयाबद्ध)	सुन्दरदास	१९०१	१५x११	२-२५५	प्रथम पत्र अप्राप्त। लि क जयदेव लि स्था मागरोल

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२९७१	९३३८ (५)	सुन्दरदासजी का सवैया (विश्वास को अग)	सुन्दरदास	१९ वी श०	१० ५x१६	६९-७५	अपूर्ण ।
२९७२	९५१८	सुन्दरदासजी का सवैया (वेदान्त प्रकरण)	सुन्दरदास	१९ वी श०	२६ ५x२१	७-२२	प्रज्ञावत् । अपूर्ण । पत्र जीर्ण ।
२९७३	९५५६ (३)	सुन्दरदासजी का सवैया	सुन्दरदास	१९ वी श०	२२ ५x१० ५	६-१०	
२९७४	९७४४	सुन्दरदासजी का सवैया	सुन्दरदास	१८३९	१६x१२ ५	१-१४७	लि स्था सनेहडी पत्र सख्या ६-७ अप्राप्त । पत्र जीर्ण एव कीटविद्ध ।
२९७५	८०१२ (२)	सुन्दरशृङ्गार	कविराज सुन्दरदास	१९ वी श०	२२x१४	९-२७	१०९ वे छन्द से प्रारम्भ ।
२९७६	९०२६ (१)	सुन्दरशृङ्गार	कविराज सुन्दरदास	१७९२	२३x१०	१-११	र का. १६८८ कवि ग्वालियर निवासी है। शाहजहाँ की आज्ञा से रचित ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
*२९७७	९२५२ (३)	सुन्दर-शृङ्गार	कविराज सुन्दरदास	१७७४	२१ ५x१४	१–३२	र का १६८८— लि स्था. राणा सग्रामसिह राज्ये । कवि ग्वालियर निवासी है ।
२९७८	९७३० (२)	सुन्दर-शृङ्गार	कविराज सुन्दरदास	१८८१	१५x११	४६-१४८	र का १६८८ र. स्था आगरा बादशाह शाहजहाँ की आज्ञा से रचित । लि क ऋषि दयाराम
२९७९	९८३०	सुन्दर-शृङ्गार	कविराज सुन्दरदास	१९ वी श०	२३x१२ ५	८-७६	प्रारम्भ अपूर्ण । पत्र सख्या ७६ से ७८ पर 'द्वादशमास वर्णन' के ९ छन्द है ।
२९८०	१०६८२	सुन्दर-शृङ्गार	कविराज सुन्दरदास	१९ वी श०	२४ ५x११	१-१५	र का १६८८ २७१ वे छन्द पर्यन्त ।
२९८१	८४०० (४०)	सुमतिनाथ-स्तवन	पाशचन्द सूरि	गु० १८६४	१५x१३ ५	८२-८३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२९८२	८४०० (४२)	सुमतिनाथ गीत	पाशचन्दसूरि	गु० १८६४	१५x१३ ५	८४ वा	
२९८३	९३२३	सुमन्तप्रकाश (सुमनप्रकाश)	कवि भोलानाथ	१९ वी श०	२३x१७	१-३	र का १८३७ कवि के वशजो मे प्राप्त प्रति। अपूर्ण — ३० पद्य मात्र। अगले ६ पत्रो पर स्फुट पद्य है।
२९८४	९३३७ (३)	सूर्य-स्तव		१९ वी श०	१९ ५x१३	१८-२३	कृति सस्कृत मे है।
२९८५	८४०० (६)	सूरज रो श्लोक	मेघक	गु० १८६४	१५x१३ ५	१९-२१	
२९८६	९३३७ (१)	सूर-पदावली (रागबद्ध)	सूरदास	१९ वी श०	१९ ५x१३	१-१९६	अपूर्ण। ६३६ पद्य है।
२९८७	८४२२ (३८)	सोलह-स्वप्न-सज्झाय	अज्ञात	गु० १७७६	२३x२०	१०३-१०४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२९८८	८४०४ (१)	स्नात्र-पूजा		१९ वी श०	२०X१३	१-७	
२९८९	८६२८ (२)	स्नेह-लीला	नन्ददास	गु० १९२९	१७X१२ ३	११६-१३५	
२९९०	९१०० (१)	स्नेह-लीला	जन मोहनदास	१९ वी श०	१७.५X११ ५	१-१५	प्रथम पत्र अप्राप्त।
२९९१	८५६२ (५)१	स्फुट-कवित्त	कासीराम	१७९५	२४ ५X१५ ५	६७ वा	
२९९२	८५६२ (५)४	स्फुट-कवित्त	कविसार	गु० १७९५	२४ ५X१५ ५	६९-७०	
२९९३	८५६२ (५)७	स्फुट-कवित्त	अज्ञात	गु० १७९५	२४ ५X१५ ५	७२ वा	
२९९४	८५६२ (५)१४	स्फुट-कवित्त	अज्ञात	गु० १७९५	२४ ५X१५ ५	७८ वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२९९५	८६६३ (३)	स्फुट-कवित्त (अरिल, छप्पय आदि)		१९ वी श०	१९ × १३ ५	५२-६८	
२९९६	८५६२ (५)९	स्फुट-कवित्त (छत्तीत राग का)		गु० १७९५	२४ ५ × १५ ५	७३ वा	
२९९७	९२५२ (९)	स्फुट-कवित्त, दोहा-सग्रह		गु० १७७४	२१ ५ × १४	१-६	
२९९८	८५६२ (७)३	स्फुट-कवित्त (शृङ्गारिक)		गु० १७९५	२४ ५ × १५ ५	६५-६६	
२९९९	९७२० (८)	स्फुट-कवित्त-सग्रह	राधावल्लाल पुत्र गोस्वामी दयालाल	१९ वी श०	२० × १५ ५	४३-७३	१५४ छन्द है। अन्त मे महाराणा भीमसिंह के युग की प्रशस्ति परक छन्द है।
३०००	९२५४ (९)	स्फुट-कवित्त-सग्रह		१९ वी श०	१६ ५ × १३ ५	१३-१७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
३००१	८५६२ (७)१	स्फुट-कवित्त, सवैया	कविराम	गु० १७६५	२४ ५x१५ ५	६१-६३	
३००२	८५६२ (५)१२	स्फुट-गीत, दोहा		गु० १७६५	२४ ५x१५.५	७५ वा	
३००३	६६८१ (१)	स्फुट-दोहा, कवित्त, सवैया, कुण्डलियादि-सग्रह	देवीदास, कविगद, उदयराज, ईसरदास, गुमान, तुलसीदास, गिरधर कविराय, बुधराय, वृन्द, जमाल	१६ वी श०	२५x११ ५	१-७	लि क भक्तिसुन्दर
३००४	६७६८	स्फुट-दोहा-सग्रह		१६ वी श०	२३x१२	१-६	विपयवार दोहो का सग्रह है— तत्वसार, हीर-राभा, पत्री रा, बरसात रा एव वारामारा रा ।
३००५	६२५२ (५)	स्फुट-दोहा, सोरठा	किसना	१६ वी श०	२१ ५x१४	३-४	ग्रन्न मे श्रालम कृत सवैया है ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
३००६	९२४३	स्फुट-पद	राय अमृतराम	१९ वी श०	२७x१९	१-१०	र॰ का १८६९
३००७	९२९० (५)	स्फुट रसायन-विधि		१९ वी श०	२०x१४	३६८-३६९	पत्र सख्या २८३ पर भी रसायनविधि के साथ सवत् १८१६ मे सदाशिवराव भाऊ साहब के साथ लूट मे जो धन माल गया उसकी विगत दी गई है।
३००८	८५६२ (१)१	स्फुट-सवैया	वृजनाथ	१७८५	२४ ५x१५ ५	१ ला	लि क गुलाबचन्द प्रारम्भ मे 'प्रश्न शकुनावली' के १० प्रश्न है।
३००९	८५६२ (१३)४	स्फुट-साखी		१७९८	२४.५x१५.५	१६ वा	लि क पनोनी नीलकण्ठ प्रनोपनदोत
३०१०	१०१४२ (१)१-६	स्फुट-स्तुति-सग्रह	कविचन्द	२० वी श०	२२ ५x१६	१-५	इसमे राम, बावन अवतार, विष्णु, गणेश, सूर्य, भवानी, हनुमान, शिव, प्रभु आदि की स्तुतिया है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ – नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
३०११	१०६७१ (५)	स्वरूप-निर्णय		१९ वी श०	२४x१३ ५	२३-५७	पुष्टिमार्गीय ग्रन्थ ।
३०१२	८३७२	स्वरोदय-विचार	चरणदास	२० वी श०	२१ ५x११ ५		लि क दलीचन्द
३०१३	९६८२ (२)	हसादे राया रो सिलोको, आदि		२० वी श०	२५ ५x१२ ५	२-६	७ वा पत्र अप्राप्त ।
३०१४	९७३२ (२)	हठ-प्रदीपिका (सिद्धान्त मुक्तावली)	आत्माराम योगिन्द्र	१८९९	१७x१२ ५	१-२९	कृति सस्कृत मे है । लि क रामदास पत्र सख्या ३० पर सेवादास कृत पद्य है ।
३०१५	९७३२ (३)	हठ-प्रदीपिका (सिद्धान्त मुक्तावली)	आत्माराम योगिन्द्र	१८८९	१७x१२ ५	१-७३	कृति सस्कृत मे है । लि स्था लाव्या
३०१६	९८९६	हमीर-रासो	महेश कवि	१९ वी श०	२०x१६	२-३८	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
*३०१७	९४३२ (१)	हमीर-रासो	महेश कवि	१९ वी श०	२२ ५x१७	१-२७	लि क नाजर नैनसुख

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
३०१८	८४२७ (१)	हरबोल चितावणी	सुन्दरदास	१९ वी श०	१०x६ ५	३-६	प्रथम ७ छन्द अप्राप्त ।
३०१९	९११५ (३)	हरबोल चितावणी	सुन्दरदास	१९ वी श०	१५x११	२६४-२६८	
३०२०	८६९३ (५)	हीयहुलास रा दोहा		१९ वी श०	१९x१३ ५	७५-८१	गगचन्द्र । कुल ७० दोहे हैं ।

ग्रन्थाङ्क ७८५६ से १०६८८ तक का विवरण समाप्त ।

परिशिष्ट १

कतिपय विशिष्ट चिह्नित * ग्रन्थों के उद्धरण

५६ १२६०३ [1] अवतारचरित्र

प्रारम्भ — श्री गणेशाय नम. । श्री सरस्वत्यै नम । श्री कृष्णाय नम । श्री गुरुभ्यो नम । अथ श्री अवतारगीता अवतारचरित्र भाषा वारहट नरहरदासेन विरचित गणेश स्तुति ।

गुण साटक

मु डा दड प्रचड मेक डसन, मद गध गल्लस्थल ।
सिंदूरारुण तु ड मडिन मुख, अ गेस गु जारव ।।
यपुर सकर श्वार सार सगण, प्रारभ अग्रे स्वर ।
त सतत सदन सफल सकल, वरदाय लबोदर ।। १ ।।
(सरस्वती एव गुरुदेव स्तुति के वाद . . .)

आरया (आर्या)

गणपति ग्यानी ज्ञान गु न अप्यन ।
सरसति सुदति सुमति समप्यन ।।
गुर परसाद पाइ बर्दों धन ।
भूत भाव जुग जुगति वखान ।। ४ ।।
इति चतुर असतुति सपूरणं ।

कविरुवाच

दूहा

कवि परिचय — चारन जाति जु वारहट, नरहर मति अनुसार ।
मैं सागर पैर न लयौ, कहन चरित अवतार ।।१।।
रुद्रस पचम विरचि चव, सेष सहस मुख सग ।
नित्य रसना जस कहत नव, ओर न लहत अभग ।।२।।

---

१ प्रथम सख्या क्रमाङ्क और द्वितीय सख्या ग्रन्थाङ्क-सूचक है।

रसना एक सुस्वाद रस, सब दिन रहत सभेद ।
कितोक तिहि हरजस कहू, वरनत नेति नमेद ।।३।।

जो आपन असमत्थ ह्वै, कहियै मति अनुसार ।
पावन दीन दयाल प्रभु, कृत मानत करतार ।।४।।

जथा सुमति नरहर सुकवि कहि अवतार रस रूप ।
जिहि जिहि ग्रथनि जे सुने, तिय प्रनीत अनूप ।।५।।

नरहर प्रभु वाराह भौ, अवनि उधारन हेत ।

निरमूल निदिन जात कुल, देह सत्य मम सेत ।।६।।

इती कवि लघुता वरननो नाम ।। (पत्राङ्क ३ ख (ग)

अन्त :— चौवीस अवतार नाम ।

कवित

त्रिसद आदि वाराह, भग सनकादिक स्वांगी ।
जथा जग्य अवतार, नर जु नारायण नामी ।।
कपिल सु दत्तात्रेय, रिषभ ध्रुव प्रथु हयग्रीवा ।
कुरम मकर नरसिंघ, द्विज सु वामन हरि दीना ।।
हूअ हस मन्वन्तरि धन्वतरिहि, जामदग्नि जय व्यास जय ।
रघुनाथ कृष्ण अर वोध प्रभु, भुव ऐते अवतार भय ।।१।।

विदित तीन अर वीस, लऐ अवतार अग जीय ।
सत त्रेता द्वापर सजोग, कारुण्य रूप कीय ।।
अव कलिजुग के अत, हेत अवतार जु ह्वै हैं ।
धर्म कर्म मख ध्यान, जवै निरमूल नसै हैं ।।
भवनव्य पुन्य विस्तार भुव, हठि अनेक जवनेस हनि ।
अखिलेस स्वेत अरु हय विहित, प्रभु कलंक त्रयलोकपति ।।२।।

यह जु प्रकार अवतार, भऐ भवतव्य अभय भूव ।
चिदानद चौवीस, हेत अदभूत देह हूव ।।
दुष्ट दान दम दया, रूप रस रोष जु रजीय ।
भई भूअ भाराक्राति, तव ही भुव भार सु भजीय ।।

द्विज वेद सहाइक धर्म दृढ, हित त्रिलोक वंदित हरे।
सुभ साव सुखद आगम सहति, कवि नरहर वदन करे ॥३॥

रचना काल – सतरह सै तेतीस, नियत सवत उत्तरायन।
रितु ग्रीषम आषाढ, मास पख कृष्ण सुगावन ॥
वनि आठम तिथि भौम, वार सिधि जोग समगल।
पहुकररन्य प्रसिद्ध, मध्य पूजित भुव मडल ॥
अवतार चरित्र चौवीस ऐ, विजय सुजस जग विस्तर्यौ।
कवि दास दास नरहर सु कवि, कृत उधार अपनो कर्यौ ॥४॥

छंद झपताल

ग्रन्थ माहात्म्य :—
अवतार गीता ईस्वरी। भक्ति कवि नरहर करी॥
मख मुक्ति मारग मानियै। सोपान स्वर्ग सु जानियै॥
यह सहित सरवा ऊचरै। पुनि सो न भव बधन परै॥
सम साव जौ वाचै सुनै। अति प्रेम नेमहि आपनै॥
सोइ सत जोति समाइ है। पुनि पुनर्जन्म न पाइ हैं॥

दूहा

छद सख्या– सतर सहस अरु आठ सै, इकसठ ऊपर आंन ।
छद अनुष्टुप करि सकल, पूरन ग्रन्थ प्रमान ॥१॥
मैं जोइ सुन्यौ पुरान मह, क्रम सोइ वर्णन कीन ।
श्रोता पाठक हेत सौ, पावै मुक्ति प्रवीन ॥२॥

पुष्पिका– इति श्री भागवते महापुराणे चतुर्विंसति अवतार चरित्रे सपूर्ण । भाषा बारहट नरहरदासेन विरचित । सवत १९१७ श्रावण शुद्ध १३ चद्रवासरे ग्राम धवोला मध्ये पड्या वेणीराम सुत वशीधरेण लिखितं । गांम नवागाम नाम इयारी आडा कोर-उदेसिघजी तत्पुत्र चडीदानजी पठनार्थं । शुभं ।छ।

५६ १२३०३ अवतारचरित्र सचित्र

गुटका सजिल्द । हाथ के बने मोटे कागज पर सुडौल एवं सुवाच्य लिपि में लिखित । चित्रो की सुरक्षार्थ पत्रो के मध्य मलमल का कपड़ा रखा गया है ।

चित्रो का विवरण निम्न प्रकार है —

शीर्षक/भाव	माप सें मी मे	पत्र सख्या
१ चतुर्भुज गणेश मय ऋद्धि-सिद्धि एव गणादि के	२६ ५x२८	प्रथम पत्र से पूर्व
२ ब्रह्मा एवं सनकादिक अवतार	२३x११ ५	४ वी
३ राजा परीक्षित, सुखदेव ऋषि एव दोनो ओर ऋषिगण	२३x११	४ वी
४ यज्ञ-अवतार	२३x१६ ५	५ ए
५ नर-नारायण अवतार	२३x१३	५ वी
६ कपिल अवतार एव माता देवहुती	२३x१४	७ वी
७ दत्तात्रेय अवतार— दत्तात्रेय, अप्सरा एव कामदेव	२३x१० ५	८ वी
८ ऋषभदेव अवतार	२३x१२	९ ए
९ भक्त ध्रुव एव गरुडवाही भगवान विष्णु	२३x१४	१२ ए
१० राजा पृथु मय रानी के एव गो-स्वरूपा पृथ्वी	२३x१५ ५	१५ वी
११ हयग्रीव अवतार एव हयग्रीव दानव युद्धमुद्रा मे	२३x११	१६ वी
१२. कूर्म अवतार मय चौदह रत्नो के	२३x१३	१८ वी
१३ मत्स्य-अवतार मय सखासुर के युद्धमुद्रा मे	२३x१२	२० ए
१४ नरसिंहा अवतार	२३x१६	३४ वी

	शीर्षक/भाव	माप सें मी. मे	पत्र सख्या
१५	वामन अवतार मय वचावली–रानी, राजा वली एव शुक्राचार्य के	२३x१८ ५	३७ ए
१६	हरि अवतार गज को ग्राह के फदे से छुडाते हुए	२३x१४ ५	३९ बी
१७	हसा अवतार मय ब्रह्मा के	२३x१३	४० बी
१८	मनुअवतार मय स्वयम्भू मनु के	२३x१३ ५	४२ ए
१९	धन्वतरि अवतार, नाडी परीक्षा करते हुए	२३x१३	४२ बी
२०	परशुराम अवतार मय कामधेनु, जमदग्नि ऋषि तथा रेणुका के। राजा सहस्त्रार्जुन एव परशुराम युद्धमुद्रा मे	२३x१९ ५	४६ बी
२१	वेदव्यास अवतार व्यासजी, सुखदेव (शुकदेव) तथा व्यास के कोप से सुखदेव वृक्ष मे समाते हुए	२३x१४ ५	४८ ए
२२	रामचन्द्र जन्म (चतुर्भुजस्वरूप) मय माता कौशल्या के	२३x१८.५	६१ ए
२३	वाली वध— वाली-सुग्रीव युद्ध करते हुए, राम का तीर मारना तथा वाली की मृत्यु पर शोकाकुल तारा केश नोचती हुई।	२३x१८	१३३ बी
२४	गिद्धराज सपाति द्वारा वानरो को सीता का पता बताना, अशोक वन मे हनुमान द्वारा सीताजी के सम्मुख मुद्रिका गिराना तथा लौटने से पूर्व आज्ञा मागते हुए।	२३x१६ ५	१४७ बी

	शीर्षक/भाव	माप सें मी में	पत्र संख्या
२५	राम-लक्ष्मण रावण से युद्ध करते हुए ।	२३x२०.५	१६७ ए
२६	राम के अयोध्या आगमन पर स्वागत समारोह की झांकी ।	२३x२०	२१४ ए
२७	श्रीकृष्ण बाल-लीला— पूतना, अघासुर, केशी, वणासुर, धेनुकासुर आदि असुरों का वध तथा वसुदेव द्वारा कृष्ण को उफनती कालिंदी से गोकुल मे लाना आदि ।	२३x१२ ५	२४४ बी
२८	रामचन्द्र राज्याभिषेक की झांकी ।	२३x१५	२४८ बी
२९	श्री कृष्ण का स्वधाम गमन— मृगाकार चरणार्विद देखकर व्याध्र का बाण मारना तथा आकाश मे (ब्रह्मा एव शिव) देवताओं द्वारा स्तुति करने का भाव	२३x१८ ५	
३०	बुद्धा अवतार	२७x२७ ५	३२५ ए
३१	कल्कि अवतार	२३x२० ५	३२७ बी
३२	वराह अवतार	२९x२८ ५	३२९ ए
३३	शेषशायि आदिनारायण (विष्णु) सय लक्ष्मी एव नाभिनाल पर ब्रह्मा तथा समुद्र मे मत्स्य, कच्छप, मकरादि स्वछन्द विचरण करते हुए चित्रित किए गए हैं ।	२९ ५x२५	३३० ए

सभी चित्र एक ही व्यक्ति द्वारा जोधपुरी कलम मे बनाए गये है । चित्रो मे भावो के अनुरूप ही रगो का चयन कर चित्रकार ने चित्रो को अधिक प्रभावोत्पादक बना दिया है । चित्रकार के सम्बन्ध मे ग्रन्थ मे कुछ भी ज्ञातव्य नही दिया गया है ।

१५३ १०६८३ उपदेशी ढाल संग्रह (पत्रवार विवरण)

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकडी)	कर्त्ता	पत्रांक/ छन्द संख्या	र.का एवं र.स्था
१	पञ्चजिन स्तवन	लावण्यसमय	१/६	
२	उपदेशी पद– जोबनीया री मोजा फोजा जाय नगारा देती रे	दयारत्न	१/५	
३	धर्मरुचि सज्झाय— चम्पानगर निरोम सुन्दर	रत्नचन्द	२/१५	१८६५ जोधपुर
४	समतारस नी सज्झाय	रत्नचन्द	२/५	
५	विषैम्म उपदेशक पद– किउ विषया रस निजर भरे तेरो पलक पलक आउ जाय रे	लालचन्द	२/४	
६	चवदै-स्थानक सज्झाय		२/१०	
७	नववाडि को स्तवन	हरिसिंघ	२/६	१८७६ मायपुर
८	पचतीर्थ नो स्तवन		२-३/६	
९	धर्मरुचि स्तवन		३/६	
१०	ढाल—अमोला भमरजी हो सायवा झाला द्यु घर आव (दे०)	चोथमल	३/२	
११	ढाल—इम धन्नो धण ने परचावें (दे०)		३/२१	
१२	बातपचवीसी— दुर्लभ मनुष जमारो पाय	ऋषि जैमल	३-४/२८	
१३	दृष्टान्त—वसतपुर नामे नगर जित सत्रुसिंहा राय		४/१४	
१४.	सील रा कडा— अपूर्व जीव जिण धर्म पाम्यो	ऋषि रायचद	४-५/२५	१८३३ मेडता

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकडी)	कर्त्ता	पत्राङ्क/ छन्द संख्या	र. का. एवं र. स्था.
१५	सामायक नी सज्झाय	कुशालचन्द	५/१६	१८६४ करेडा
१६	मेतारज री लावणी	हीराचन्द शिष्य रूपजी	५-६/६	१६१४
१७	पाचमा-आरा नो स्तवन	जैमल	६/१३	
१८	सोले सत्या रो स्तवन		६/५	
१९	विजेकु मरजी री लावणी	ऋषि लालचन्द शिष्य दौलतराम	६-७/१६	१८६१ कोटा(रामपुरा)
२०	नेमजी री लावणी गाफल मति रहरे मेरी ज्याण	विनैचन्द	७-८/४२	
२१	धन्नाजी री लावणो	विनैचन्द	८-६/२०	
२२	उपदेशी पद— कर गुदरान गरीबी सैं, तन धर सुखिया कोई न दीठा, सतो भाई कूए भाग पडी, माया के मजूर को कहा जाणै वदगी, चावडा री पूतली रे चावै बीडा पान, तू माहरो वावो रे वावो, थारो मिल्यां न आवो जावो।	कबीरदास	६-१०, १४-१५	
२३	उपदेशी पद	रूपचन्द	१०	
२४	,,	आनन्दघन	१०-११, १५	
२५	,,	नवल	१२	
२६	,,	बनारसी	१२	
२७	,,	लालचन्द	१२	
२८	,,	मान	१२	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकड़ी)	कर्त्ता	पत्रांक/ छन्द संख्या	र. का. एवं र. स्था.
२९	उपदेशी पद–	समयसुन्दर	१२, १४	
३०	,,	रूपविजय	१२-१३	
३१	ढाल १ ली अलवेली (दे०) पहिलो दडक नर्कनो रे लाल	ऋषि जैमल	१३/११	
३२	ढाल · अलवेली (दे०) आज एकादशी है नणदल मून करी मुख रहियै।	उदैरत्न वाचक	१३/७	
३३	ढाल रे माधव इम बोलै (दे०) दया रणसीगो वाजियो रे		१३-१४/३७	
३४	ढाल . सोना केरो वेहडो (दे०) जिनस्तवन	पद्मविजय	१४/७	
३५	उपदेशी पद (रागवद्ध)	रामजन	१४-१५	
३६	,,	आनन्दघन	१५	
३७	,,	गरीबदास	१५	
३८	,,	लालचंद	१५	
३९	,,	शाहहुसेन फकीर	१६	
४०	ढाल १ ली · विछीयानी (दे०) अहो सिध सिला मगला सीरे	रायचंद शिष्य जैमल	१६/१७	१८३० फलोदी
४१	ढाल २ री हमीरीयानी (दे०) श्री गोतम स्वामी पूछा करे	,,	१७/१६	
४२	ढाल ३ री : अजितनाथजी रावा रानी (दे०) प्यारो मोह नगारो राज	,,	१७/१३	१८४० पीपाड़
४३	ढाल ४ थी अर्णक मुनिवर (दे०) पाचू इद्री हो अहि निस वस करे	विजेदेव सूनी	१७/८	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकडी)	कर्ता	पत्रांक/ छन्द संख्या	र. का. ग्र. र. स्था.
४४	ढाल ५ वी एक दिन घोडा हाथीया रे	लावण्यसमय	१८/१३	
४५	ढाल ६ ठी रङ्गारी (दे०) म कर हो जीव पर वात दिन रात तु		१८/९	
४६	ढाल ७ वी हमीरीयानी (दे०) चावत म करो पर तणी		१८/५	
४७	ढाल ८ वी इण स्वारथ सिद्ध रे चंदरवे० (दे०) साध पणा को मारग लेने	रामकरण	१८/१३	१८७२ जोधाणे
४८	ढाल ९ वी अलबेल्या री (दे०) च्यार पोहर रो दिन हुवे रे	रायचन्द	१८-१९/११	
४९	ढाल १० वी रसीयानी (दे०) सुगण सनेही रे सामळ सीखडी	आनन्द मुनि	१९/१०	
५०	ढाल ११ वी नणदल री (दे०) मत कोई रमजो जुवटे चतुर तिके नर नार हो	कुशालचंद	१९/११	१८७१ पाली
५१	ढाल १२ वी नवकार मंत्र नो ध्यान धरो (दे०)		१९/११	
५२.	ढाल १३ वी करो दान सीयल ने तप भावे (दे०) देवगुरु धर्म री पारख करो		१९-२०/१३	
५३	ढाल १४ वी (सारङ्ग राग) देव तणो आचार न जाणे		२०/९	
५४	ढाल १५ वी धमाल मात पिता सुत बधवा हो		२०/८	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं साकडी)	कर्त्ता	पत्राक/ छन्द संख्या	र.का एवं र.स्था
५५	ढाल १६ वी जिनवर गणि मुनिवर ने केहरे (दे०) आउखो टुटा ने साधो को नहि रे		२०/८	
५६	ढाल १७ वी मिनख जनम दूल हो लह्यो	जैमल	२०-२१/२७	
५७	ढाल १८ वी : ताणा कोन तणावे रेजा कोन वणेगा (दे०) गुर का कह्या मान ले रे		२१/६	
५८	ढाल १९ वी नवकार मत्र रो ध्यान० (दे०) गुर अमृत जीम लागे मीठा	रायचन्द	२१/१९	१८४० खेडा साडियेगाव
५९	ढाल २० वी पुन्य जोगे म्यॉनी मोने गुर मिलिया	रायचन्द	२१-२२/१४	१८४२ गगडाणा
६०	ढाल २१ वी ते गुर मेरे उर वसे, ते भव जलधि जिहाज		२२/१३	
६१	ढाल २२ वी हरयसरी (दे०) वोहोत निहाल किया हो परम गुरु	रायचन्द	२२/१३	
६२	ढाल २३ वी गयोरो जोवन (दे०) गुरु समभाय ने सजम दीनो	,,	२२/२१	१८४१ जेनारण
६३.	ढाल २४ वी जोर वण्योजी आजरो नेमीश्वर (दे०) सवर रो सिणगार धर्मप्रेम पीठीजी	,,	२२-२३/१३	१८४१ पीपाड
६४	ढाल २५ वी मोटा थे तो चतुर सुजाण	गोरधन	२३/८	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकडी)	कर्त्ता	पत्रांक/ छन्द संख्या	र.का. एवं र. स्था
६५	ढाल २६ वी चौपई सूधे मन सुणजो नर नार	आणंदविमल	२३/२२	
६६	ढाल २७ वी नवकार मंत्र री (दे०) दुलहो मिनख जनम लाधो	रायचन्द	२३/१२	
६७	ढाल २८ वी कुड कपट कर माया मेली		२३-२४/१२	
६८	ढाल २९ वी देवर पूर खडा रे रेलो काम धर्म धरेगा (देशी)		२४/१०	
६९	ढाल ३० वी मेरा साहब सगुण सोभागी	नयविमल	२४/९	
७०	ढाल ३१ (३२) वी आदर जीव खिम्या गुण आदर (दे०) किण सुं वाद विवाद न कीजे	रायचन्द	२४/१८	१८३३ मेडता
७१	ढाल ३३ वी मन मेला रे तन क्या धोया		२४/७	
७२	ढाल ३४ वी श्री कल्याण गुरु सीम री सार	ऋषभदास	२४-२५/९	
७३	ढाल ३५ वी प्रथम नमुं सद्गुरु नाम	लालविजय शिष्य शुभविजय	२५/५	
७४	ढाल ३६ वी ओल्हणो ३ नी आजरी (दे०) भेद माठा या दोष भाख्या		२५/६	
७५	ढाल ३७ वी छोटो बालो मोटो थावे		२५/७	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकडी)	कर्त्ता	पत्रांक/ छन्द सख्या	र का एवं र स्था.
७६	ढाल ३८ वी चेतन छांडो यह रीत	विनोदीलाल	२५/२१	
७७	ढाल ३६ वी नर माया काये कु जोडी रे(दे०) समकृत ने चोखी आराये	जैमल	२५-२६/६	
७८	ढाल ४०(४१) वी . नाह लीया विहूणी (दे०) प्रीतडी न कीजे हे नारी परदेशीया रे	समयसुन्दर	२६/५	
७६	ढाल ४२ वी चेडो महाराज रे (दे०) एक कनक अरु कामणी परदेशी रे		२६/१०	
८०	ढाल ४३(४४) वी वीर जिणेसर गोतम ने कहे		२६/६	
८१	ढाल ४५ वी . सुण वहिनी प्रिऊडो परदेशी (दे०) इम सतगुरु जीव ने समझावे		२६-२७/२१	
८२	ढाल ४६ वी चन्द्रायणा नववाटी उलगने रे पायो नरभव सारो	हीरो	२७/७	
८३	ढाल ४७ वी तु गीया गिर सिखर सोहे (दे०) मोह मद की नीद सुतो जाग वदे जाग वे	सेवग	२७/१३	
८४	ढाल ४८ वी वीर मती कहे रे वहू(दे०) सुण २ सुगण तू जीवडा	पद्मविजय	२७/१४	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एव आकडी)	कर्त्ता	पत्राक/ छन्द सख्या	र का एव र स्था
८५.	ढाल ४९ वी कर्म ममो नही कोई (दे०) चैत्य मदिर माहे वृक्षज उगो	पासचदसूरि	२७-२८/१६	
८६	ढाल ५० वी दुल हो नर भव भवे भमता	,,	२८/१५	
८७	ढाल ५१ वी अरिहत सिद्ध आचारज मोटा	जैमल	२८/१९	
८८	ढाल ५२ वी भला पधारचा मेरे पूज जी (दे०) रतन चितामण जेहवो	ऋषि आसकरण	२९/२१	१८६३ नागोर
८९.	ढाल ५३ वी नित करू साधूजी ने वनणा (दे०) इण काळ रो भरोसो भाईरे को नही		२९/१४	
९०	ढाल ५४ वी पोते पुन्य हूवे जेहने, दुख नेडो नही आवे तेहने	रायचन्द	२९-३०/२८	१८३५ जोधपुर
९१	ढाल ५५ वी राणी कहे नटराज आ० (दे०) बेठी साधा रे पासक	मोतीचन्द	३०/३०	१८५३
९२	ढाल ५६ वी मामीजी साहब सुणो विनती	रायचन्द	३०-३१/१८	१८४२ पीपाड
९३	ढाल ५७ वी नवकार मत्र नो ध्यान धरो (दे०) सूत्र मे दस सुख दाख्या दसमे ठाणे ज्यारा नाम भाख्या	रायचन्द	३१/१२	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकडी)	कर्त्ता	पत्रांक/ छन्द सख्या	र का एवं र स्था
९४	ढाल ५८ वी आदनाथ रो ननणजी (दे०) धर्म पावे तो कोई पुनवन्त पावे		३१/९	
९५	ढाल ५९ वी म्हारो गुर दीठा दोल हूवे (दे०) तिर्थकर चोवीसे ध्यावो	रायचन्द	३१/१०	
९६	ढाल ६० वी . तृष्णा तुरणी हे तु व्यापार हि जग माय (दे०) जब ही उसकी बात वणावे		३१-३२/१७	
९७	ढाल ६१ वी चौपई री अस्त्री ने दुःख कह्या अनेक	रायचन्द	३२/३५	१८४८ रायपुर
९८	ढाल ६२ वी केल करावे रे हाथीयो (दे०) एक एक मानवी एहनी		३२-३३/२१	
९९	ढाल ६३ वी भूलडा स्याने (दे०) इण ससार मे थिर नहि कोइ	चोथमल	३३/८	
१००	ढाल ६४ वी एतो जुग छै प्रतक कारमो		३३/७	
१०१	ढाल ६५ वी भूलडा स्याने फिरो (दे०) दिन उगे तू धवे लागो		३३/६	
१०२	ढाल ६६ वी पाडली पूररी सेरीया भमता (दे०) वीस सखी री टोली मील ने	गोरधन	३३-३४/२३	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी(तर्ज)एवं आकड़ी)	कर्त्ता	पत्रांक/ छन्द सख्या	र का एवं र स्था
१०३	ढाल ६७ वी काची कली अनार की रे हा० (दे०) इयर माणस रो आउखो रे हा		३४/६	
१०४	ढाल ६८ वी अलवेल्यारी (दे०) आद अनाद रो जीवड़ो रे लाल		३४-३५/२५	१८३५ जोधाणे
१०५	ढाल ६९ वी नवकार मत्र रो ध्यान धरो (दे०) इन्द्र ने वले इद्राणी, ज्याने ही काल लपेटे आणी	रायचन्द	३५/१५	
१०६	ढाल ७० वी नवकार मत्र (दे०) पुन जोगे नर भव लह्यो ढाणो	,,	३५/२४	
१०७	ढाल ७१ वी गुर विन ग्यान नही (दे०) पुन जोगे गुरु मिलीया भारी	,,	३५-३६/२०	फलोदी
१०८	ढाल ७२ वी गुर विन० (दे०) मात पिता वहू ने भाई जाणो स्वारथ री सव सगाई		३६/११	
१०९	ढाल ७३ वी कलमी री जोड री (दे०) मोह मिथ्या नरी नींद मे- जीवा सुतो काल अनन्त	जैमल	३६-३७/२३	
११०	ढाल ७४ वी नीलावटीवारी तथा पनारी (दे०) सतगुरु मानो सीख		३७/१५	
१११	ढाल ७५ वी तुम पर वारी २ (दे०) अलगी रेहनी हे रेहनी		३७/६	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी(तर्ज)एवं ग्राकडी)	कर्ता	पत्रांक/ छन्द संख्या	र का एवं र स्था
११२	टाल ७५ वी आवे काल न्पेटा लेतो(दे०) कदे हूवो गीजदर ऱ्हाहो रे	जैमल	३७-३८/२६	
११३.	ढाल ७६ वी नायक मोह नचावीयो	जिनराज	३८/५	
११४.	ढाल ७७ वी . मारा स्वामी हो सुण सीतलनाथ (दे०) थें सुणजो हे ग्रारजीया एम	रायचन्द	३८/२२	१८३२ ग्रहिपुर
११५	ढाल ७८ वी दोपा सडली श्रुत ग्रति भलो सिंघ सकल ग्राधार		३८-३९/७	
११६	टाल ७९ वी होली री—राग वसत ऐसे मुनी राज छउ काय के पीहर खेलत होरी सदइया	विनेचन्द	३९/१४ 'जबू विच जोरी'	
११७	ढाल ८० वी : वोलो २ जी म्हारी सगी नणदरा वीर(दे०) सुमत सखी इम वीनवे रे		३९/७	
११८.	ढाल ८१ वी चतु विचार करी ने देषो (दे०) नेम सरीखा वादण ग्रावे	रायचन्द	३९/१५	१८३३ वीसलपुर
११९	ढाल ८२ वी ते मुझ मिच्छामि दुक्कड(दे०) भूलो मन भमरा काइ भमे	महमद	३९/१२	
१२०	ढाल ८३ वी खटमलीयो मेवासी(दे०) ग्रभिमान म करजो कोइ		३९-४०/७	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकडी)	कर्त्ता	पत्रांक/ छन्द संख्या	र. का. एवं र. स्था.
१२१	ढाल ८४ वी साधू निर्वद भाषा बोलजो (दे०) साधू धन ते जीता मोहणी	आसकरण	४०/२०	१८३२ नागोर
१२२	ढाल ८५ वी ऋषभ जिणसर प्रीतम माहरो (दे०) मूरख जीवडा रे गाफल मत रहे		४०/१२	
१२३	ढाल ८६ वी ऋषभ जिणेसर तुमने ध्याऊ (दे०) मम कर जीवडा रे महारो महारो	जमल	४०-४१/१३	
१२४	टाल ८७ वी नदी जमुना के तीर उडे दोय पषीया प्रीउ चाल्या परदेस (दे०) आ देही असारक हाड ने चर्म री	सीयल	४१/२१	
१२५	ढाल ८८ वी कोयल पर्वत घू धलो रे लाल (दे०) सूतर भगोनी सतक पै लडे रे लाल	रायचन्द	४१-४२/१७	
१२६	ढाल ८९ वी हिंडो हाले रे (दे०) ओ जीव काल अनादी रुलीयो	लालचन्द	४२/६	१८७६ अजमेर
१२७	ढाल ९० वी गोरी दिल वसे जीदवो (दे०) जेन धर्म पायो दोहिलो		४२/६	
१२८	टाल ९१ वी निहालदे रा गीत री (दे०) समकृतधारी सुध मति साधू गुणारी माल	चन्द्रभाण	४२/१६	१८६३ फतेपुर
१२९	ढाल ९२ वी कमखारी (दे०) जोवन वय माहे जोर जालम वण्यौ	रायचन्द	४२-४३/९	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं प्राकडी)	कर्त्ता	पत्रांक/ छन्द संख्या	रचना एवं रचना स्थान
१३०	ढाल ९३ वी . तेमुज मिच्छामि दुक्कड (दे०) काया रे वाडी करमी सीचता सूके	रतनतिलक	४३/६	
१३१	ढाल ९४ वी . सूत्र भगोती शतक (दे०) पुन्य जोगे नर भव लह्यौ	रायचन्द	४३/१९	१८३१ पाली
१३२	ढाल ९५ वी : वाहा वणायो रे वीजणो (दे०) इण विषय थकी डूवा घणा		४३/१३	
१३३	ढाल ९७ वी नवकार मत्र रो घ्यान धरो (दे०) सतगुरु उपदेस घणो ही देवे		४३ ४४/१४	
१३४	ढाल ९८ वी श्रावका चित चोपी करो (दे०) जिण जल माहे माछली ज्याइ	कवीर	४४/७	
१३५	ढाल ९९ वीं डोगी मोरी आवे रे रसीया कर तले (दे०) साधूजी रो मारग रे कठण कह्यो केवली	रूपचन्द	४४-४५/४३	
१३६	ढाल १०१ वी · कूसल मुनिवर देवे देसणा जी		४५/१२	
१३७	ढाल १०२ वी . चेत चेत मन गाफल मत रहे		४५/६	
१३८	ढाल १०३ वी · आतम राम सयाणा	माणकदेव	४५/८	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकडी)	कर्त्ता	पत्रांक/ छन्द संख्या	र का एवं र. स्था.
१३९	ढाल १०४ वी नवकार मत्र गे ध्यान धरो (दे०) इण जग माहे केइ नर नारी, जोगी जती ने वले भेख धारी	रायचन्द	४५-४६/१०	१८४० पीपाड
१४०	ढाल १०५ वी सुण रे भाई तेरा कीया तें पावेगा	जालम	४६/६	
१४१	ढाल १०६ वी आघा आप पधारो पूज्य (दे०) जुग मे जोर मुरगी रे लाल	ऋषि रायचद	४६/१४	१८५२ कूचेरा
१४२	ढाल १०७ वी सघ आयो रे सेत्रु जाजी को (दे०) होरी खेलो रे भविक मन थिर करके	रुपचन्द	४६/५	
१४३	ढाल १०८ वी लेखो वेठो लोभे लागे		४६/६	
१४४	ढाल १०९ वी अब मन मेरा है सुन सुन सीख सयांणी		४६-४७/५	
१४५	ढाल ११० वी चालो सहेल्या आपा भेरू ने मनास्या है (दे०) भाव पचीसी जोडू भारी आगम ने अनुसारी	चन्द्रभाण	४७/२५	१८१८ फतेहपुर
१४६	ढाल १११ वी प्यारो मोहण गारो राज (दे०) भवसागर मे भटकत २	रामचन्द	४७/१३	
१४७	ढाल ११२ वी चउपईनी पोते पाप हुवै जेहने	रायचन्द	४७-४८/२५	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकडी)	कर्त्ता	पत्राक/छन्द सख्या	र का एव र स्था
१४८	ढाल ११३ वी गढ सुरत को कारीगर आयो		४८/११	
१४९	ढाल ११४ वी एक सुणजो हे मारी बाई वेनडीया		४८/१५	
१५०	ढाल ११५ वी चीतोडी राजा रे(दे०) केइ खोल उतारे रे		४८-४९/३०	
१५१	ढाल ११६ वी सुण चतुर सुजाण परनारी सु प्रीत कछू नही कीजीये		४९/१०	
१५२	ढाल ११७ वी सीहल नृप कहे चद ने (दे०) हा रे मारा प्राणीया	रतनसागर	४९/८	
१५३	ढाल ११८ वी चीणजा रानी०(दे०) जीवा चेतो रे दे मुनिवर उपदेश	जैमल	५०/१७	
१५४	ढाल ११९ वी अवको चोमासो प्रभुजी अठै करो(दे०) सासण नायक दीयो उपदेस	चोथमल	५०/१६	१८६० जयपुर
१५५	ढाल १२० वी सुगर पचीसी साध म जाणो इण चल गत सु(दे०) सुगुरु पीछाणो इण आचारे	जिनहर्ष	५०-५१/२४	
१५६	ढाल १२१ वी साध म जाणो इण चल गत सु(दे०) इण आरा मे निन्नव वीगड्या	रायचन्द	५१-५२/३९	१८३३ पाली
१५७	ढाल १२२ वी छत्तीसी नित करु साधुजी ने वनण,(दे०) निखरो माणस निंदक हूवे	"	५२/२५	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकडी)	कर्त्ता	पत्रांक/ छन्द संख्या	र. दा. एवं र. स्था
१५८	ढाल १२३ वी मान न कीजे रे मानवी (दे०) सतगुरु आगम सीख थी	जैमल	५२-५३/३७	
१५९	टाल १२४ वी कहो नी चतुर नर कुण (दे०) चाखो रे नर समता रस चाखो	रायचन्द	५३/२१	१८३३ मेडता
१६०	ढाल १२५ वी कर्म न छूटे रे प्राणीया (दे०) मान न कीजे रे मानवी		५३-५४/४१	
१६१	ढाल १२६ वी. पुन्य जोगे नर भव पामीयो	रायचन्द	५४/१८	१८४३ वीकानेर
१६२	ढाल १२७ वी (नारी स्वभाव पर) सुवे सवेली उठे अवेली देफारा दळ रावे		५५/१४	
१६३	ढाल १२८ वी लोभ पच्चीसी एक सदा जिन धर्म आराधो (दे०) लोभी मिनख सु प्रीत न कीजे	रायचन्द	५५/२५	१८३४ वीकानेर
१६४	ढाल १२९ वी चेतन्य पचीसी नणदल री (दे०) नीठ नीठ नर भव लह्यो	"	५५-५६/२५	जोधाणे
१६५	ढाल १३० वी दान पचीसी अलवेल्या री (दे०) पुन्य जोगे नर भव पामीयो रे लाल	रायचन्द	५६/२५	१८३५ जोधपुर
१६६	ढाल १३१ वी विरला इसडा ब्रह्म (दे०) रात दिवस ते माया मेली कर २ देही दोरी रे		५६-५७/१५	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकडी)	कर्त्ता	पत्रांक/ छन्द सख्या	र का एव र स्था
१६७	ढाल १३२ वी अर्णक मुनिवर चाल्या गोचरी (दे०) चचल जीवडा रे मे तोने वरजीयौ		५७/११	
१६८	ढाल १३३ वी नयण निहाले राणी देवकी (दे०) साधूजी नगगी मै आव्या सदा भला रे		५७-५८/३०	
१६९	ढाल १३४ वी भूलो मन भवरा काई भमै (दे०) हटवाडा मेळो जिसो जुग जाणौ एह		५८/१६	
१७०	ढाल १३५ वी जीव दया व्रत पाळो रे (दे०) प्राणी कर्म समो नही कोई		५८-५९/२२	
१७१.	ढाल १३६ वी कवरो बोलावे रे (दे०) समकृत षरो अराधो रे	जैमल	५९/३४	
१७२	ढाल १३७ वी नवकार मत्र रो ध्यान धरो (दे०) एक दिन निश्चय करने मरणो	रायचन्द	५९/११	
१७३	ढाल १३८ वी सुग्यानी उजल राषै हो मनरी भावना	चोथमल	५९-६०/१३	१८६५ चण्डावल
१७४	ढाल १३९ वी वय-पचीसी मन रे तु जीव ने समझाय	रायचन्द	६०/२३	१८२१ डीडवाणा

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकडी)	कर्त्ता	पत्रांक/ छन्द संख्या	र. का. एवं र. स्था.
१७५	ढाल १४० वी इम मत गुरु जीव ने समझावे (दे०) पाचमा आरा रा भावज एहवा	रायचन्द	६०-६१/३०	१८१७
१७६	ढाल १४१ वी कपटी मनुष्य रो विश्वास न कीजै (दे०) कु गुरु तणे उपदेसे भूला	जैमल	६१-६२/४५	
१७७	ढाल १४२ वी थारे नेणा रो पाणी लागणो मारुजी (दे०) गुराजी मे दरसण दीठो नयण, भलो दिन आज रो	रायचन्द	६२/२५	१८३२ नागोर
१७८	ढाल १४३ वी गुणवन-पचीसी हुँ मुरली ए (दे०) निप मुवनी नज देपने ठरे गुरा रा नेण	,,	६२-६३/२४	१८२५ नागोर
१७९	ढाल १४४ वी थारे नेणा रो पाणी लागणो (दे०) गुरुजीजी माग हिवडा रे माहि माला थाग जाव री	,,	६३/२१	पाली
१८०	ढाल १४५ वी नागो नाह नो (दे०) मिरगी नामो जोव दे रे मुरली धोवे बोलर	,,	६३-६४/२०	
१८१	ढाल १४६ वी. [illegible] ने जिनवर शासना (दे०) तुम [illegible] मुख सोहिलो	,	६४/१४	१८५२ जोधपुर

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकडी)	कर्त्ता	पत्राक/ छन्द संख्या	र. का. एवं र. स्था
१८२.	ढाल १४७ वी ·			
	वदु सोले जिन सोवन वर्णा (दे०)	रायचन्द	६४-६५/५४	१८१८
	निन्नव नीकलीया पांचमे आरे			पाली
१८३	ढाल १४८ वी टलोकड पचीसी	,,		
	टोला रा अवगुण बोलै टलोकडे		६५-६६/२५	
१८४.	ढाल १४९ वी			
	निन्नव पदावली (सारङ्ग राग)	,,	६६/२०	१८३१
	निन्नव माहे कला न काइ			पाली
१८५.	ढाल १५० वी निंदक पचीसी			
	दोहिलो मानव भव काई नु हारे (दे०)	,,	६६-६७/२७	,,
	इण दुक्म आरा माहि उघाडा			
	निन्नव पापी जीव रे			
१८६.	ढाल १५१ वी ·			
	हमची हेली हे सागरीयो विष नी वेली		६७/३१	
१८७	ढाल १५२ वी			
	सहेल्या हे आवो मोरीयो (दे०)			
	निंदडली वैरण हूय रही	जैमल	६७-६८/२२	
१८८	ढाल १५३ वी ·			
	चेतन चेतजो रे	,,	६८/२२	
	मनुष्य जमारो पायो रे			
१८९	ढाल १५४ वी			
	ऋषभ जीनेसर प्रीतम माहरा (दे०)			
	जीवडा ने मेले रे अो मन मोकळो		६८-६९/२७	
१९०	ढाल १५५ वी .			
	समजणी बाई रा थे गुण मुणो	मोतीचन्द	६९/१२	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी,(तर्ज) एवं आंकड़ी)	कर्त्ता	पत्रांक/ छन्द संख्या	र का एवं र स्थान
१९१	ढाल १५६ वी मुणजो रे ब्रह्मचारी	विजेदेव सूरि	६९/१३	
१९२	ढाल १५७ वी चेतोरे प्राणी चेतो, मति राचो रे रमणी रे रग		७०/१६	
१९३	ढाल १५८ वी सकर वसै रे केलास मे (दे०) तप वडो रे ससार मे	आसकरण	७०/१५	१८५३ जोधपुर
१९४	ढाल १५९ वी . साध सगत नित कीजिये रे लाल	धर्मदास शिष्य समरचन्द	७०/७	
१९५	ढाल १६० वी . ते तीरीयारे भाई ते तीरीया (दे०) मान ले रे सतगुरु तु सीखडली	रायचन्द	७०-७१/१५	१८५४ जोधपुर
१९६	ढाल १६१ वी . श्रावक धर्म करो सुखदाई (दे०) दोषण टाली ने करो समाई	आसकरण	७१/१७	१८३७ रीया ग्राम
१९७	ढाल १६२ वी रमीया री-(दे०) मारो मन लागो हो जीनजी रा ध्यान सु	रायचन्द	७१/१३	१८५५ मेड़ता
१९८	ढाल १६३ वी एक दिवस लका गढ केरो (दे०) नारक वचन विचारी ने जोइजो	रत्नचन्द शिष्य लालचन्द	७१-७२/२०	१८०३ रीया
१९९	ढाल १६४ वी मुनि तणो मगल तीमणो (दे०) मम करो काया माया कारमी जी	जैमल	७२-७३/३३	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकड़ी)	कर्त्ता	पत्रांक/ छन्द संख्या	र.का एवं र.स्था.
२००	ढाल १६५ वी . दीक्षा पचीसी नणदल री (दे०) दीक्षा मत दीजो अयोग नें	रायचन्द	७३/२४	१८३६ नागोर
२०१	ढाल १६८ वी इण समकृत मन थिर करो (दे०) सुण गोतम पचखाण विधि		७३/१३	
२०२	ढाल १६९ वी कुलक्षणी वोले तु रेहनी ३ वरज्यो रेहनी	गोरवन	७३-७४/१२	१८३८ खेजडला
२०३	ढाल १६९ वी इण कोड पूर्व लग पामी (दे०) इम स्वार्थ सिद्ध रे चदरवे कांई मोती जु वक सोहेजी		७४/१५	
२०४	ढाल १७० वी स्वामी जी थासु वानवू	लालचन्द	७४/१४	रतलाम
२०५.	ढाल १७१ वी श्री भव रतन चितामण सरिखो	अखैराम	७४-७५/१०	
२०६.	ढाल १७२ वी आवे काळ लपेटा लेतो (दे०) ए तो हथी कर्म से वेजाण रे	रायचन्द	७५/८	
२०७.	ढाल १७३ वी सूक्ष्म पचात्रनी निम्नव जाणो इण चल गत सु (दे०) सूक्ष्म छत्तीसी साभल प्राणी	उदय ऋषि	७५-७६/५४	औरगाबाद
२०८.	ढाल १७४ वी नगरी खूब वणी छै (दे०) काड तु गरभ रही छे हे श्री घर माहरो ने हू घर की	जसरूप	७६/१२	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकड़ी)	कर्त्ता	पत्रांक/ छन्द संख्या	र. का एवं र. स्था.
२०९	ढाल १७५ वी समदृष्टी पर्चासी उपजे आणद (दे०) अपूर्व जीव जिन धर्म पामीयो	रायचन्द	७६-७७/१३	१८३३ मेटता
२१०	ढाल १७६ वी वात म काढो जी व्रत तणी(दे०) इम समकृत मन थिर करो		७७-७७/५३	
२११	ढाल १७७ वी नव वाड सहि जिन राज कही मुनि राज लहो हे हितकारी		७८/११	
२१२.	ढाल १७८ वी तुम तो भले विराजे जी सावलीया गिरधारी(दे०) जोयजो अैसी दुनीया भोरी धर्म करंती लाज करै ले परतख खेलै होरी	चैनसुख	७८-७९/९	
२१३	ढाल १७९ वी तत मारग एक मुगत छै	रायचन्द	७९/९	१८३७
२१४.	ढाल १८० वी लालन लील करूंगी रे (दे०) भवीयण ग्यान विचारो रे	माणकचन्द	७९/१४	१८७८ जालोर
२१५	श्री रामजी री लावणी हा रे काळ सु डरे रे	जसकीर्ति शिष्य रत्नचन्द	७९-८१/६७	१९२१ आगरा
२१६	ढाल मोटी जग मै मोहणी	रत्नचन्द	८१/११	१८७२ देवगढ
२१७.	ढाल महावीरजी रो स्तवन आयो २ मारूजी विणजारा रो पीठ	मनोहर विजय	८१/६	
२१८	ढाल रमो २ हे चेलकड्यौ फूदा री डोरी (दे०) मीठी इम्रत सारषी सत गुर की वाणी	रत्नचन्द	८१/१०	१८७३ रूपनगर

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी(तर्ज) एवं आकडी)	कर्त्ता	पत्रांक/ छन्द संख्या	र का एवं र स्था
२१९ ढाल	ढढण ऋषजी री ढढण ऋषजी ने वनणा हू वारी	जिनहर्ष	८२/१०	
२२० ढाल	लालन लील करु गी आछो (दे०) नगरी खूब वणी छै जी	रत्नचन्द	८२/१२	
२२१ ढाल	कोप्यो देव पापुर धणी (दे०) वे वधव वन मे थका रे वात करे कुरणाय		८२/१५	
२२२ ढाल	मिनख जनम दोहलौ कह्यौ लाधो आरज खेत रे (दे०) दुलहो मानव भव काय तु हारे		८२-८३/२२	
२२३. ढाल	मे सरनी रा गीत नी (दे०) सीख सुध मांनो रे सतगुर री	रत्नचन्द	८३/२५	१८७८ नागोर
२२४. पद	किसका छोरु छोकरा रे		८३/४ (राग पजावी)	
२२५ पद	नेमनाथजी री जव रथ दूर गयो तव चेनी	रूपचन्द	८४/४	
२२६ पद	जिन मेरो रे पारसनाथ आधार	सेवक	८४/२ (राग भैरवी अजमेरी)	
२२७ ढाल	नीबूडा ना गीत नी (दे०) सुखकारी हो जिनजी	रत्नचन्द	८४/७	
२२८. पद	भव जीवा हो वादो भगवत नै	,,	८४/१३	१८७१ अजमेर
२२९ पद	जिनराज हाजी थाने कोणक वादण जाय	,,	८४/१०	वडलू ग्राम

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी(तर्ज) एवं आंकड़ी)	कर्त्ता	पत्रांक/छन्द संख्या	र. का. एवं र. स्था.
२३०	पद वीर वखाण्यो श्रावक एहवौ रे	रत्नचन्द	८४-८५/७	१८८४ पाली
२३१	ढाल नेणा री भकोळो हे गवालण मोह्यौ (दे०) तुम पर वारीजी वीर वखाणी हो	,,	८५/७	-
२३२	पद म्हारा मोडा राणा मेलो रे माझळ रात री (दे०) माहरा ग्यानी गुर री वाणी हो इम्रत सारखी	,,	८५/६	१८४२ जोधाणे
२३३	ढाल आधी तो नीरु कर हा एलची (दे०) समुद्र विजेजी रा लाडला हो	,,	८५/५	
२३४	ढाल पना मारू हिवडे रा हार (दे०) प्रभु म्हारा हो— हे दरसण देखी ने हिवडो उमगेजी	,,	८५/५	
२३५	ढाल गुल गुल रही नीद हो नयणा लोभी आलीजा मारू नै नीद (दे०) मनडौ उमायौ हो दरसण देखवा	,,	८५-८६/६	१८७३ कृष्णदुर्ग
२३६	ढाल सु वर सोहनी (दे०) मनडो उमायौ हो दरसण देखवा	,,	८६/६	१८६० पीपाड
२३७	ढाल सावणीया रे पेलडे मामजी (दे०) हा हे दरसण देव रो हे हीया नौ सेहरो हे पार्श्वनाथ	,,	८६/६	१८७४ पाली
२३८	ढाल सोनल नै वाधेली परण पधारीया (दे०) ऋषभदत्त नैं देवा नदा नार	,,	८६/७	१८८० पाली

क्रमांक	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकडी)	कर्त्ता	पत्रांक/छन्द संख्या	र. का एवं र. स्था
२३९ ढाल	जचारी (दे०) श्री ऋषभ जिनद ऋषभ मारा मन में वसीया हो		८६/६	
२४०. ढाल	रावण राय आगारे ऊच की थाय (दे०) सेणक रे वाडि सचरयौ रे	समयसुन्दर	८६/८	
२४१. ढाल	अब घर आवो हो आवो जी मारा मन ममता माराज (दे०) हू तौ अलादी होय रही रे	रतनचन्द	८७/९	
२४२ पद	अब घर आवो हो (दे०) चेतन चेतो रे चेतो थारी छिन छिन छीजे आव	विनेचन्द	८७/५	
२४३. ढाल	दुर्लभ लाधो मानव नो भव थे किउं जाउ हार		८७/६	
२४४ ढाल	चतुर नर अर्थ विचारो रे ग्यानी जतन करो छकाय	कुशल	८७/११	
२४५ ढाल	गिरधारी रा गीत री (दे०) मातपिता सुत बधवा हो सगा सनेही मित्त	रतनचन्द	८७/८	
२४६ पद	तूं काइ चाळे लागो रे लोभीडा आयो छे बूटापो		८७/८	
२४७ पद	वडे घर ताली लागी रे		८७-८८/६	
२४८ ढाल	माने एक आपरो आधार (दे०) जीव रे तू सील रो कर सग		८८/१०	

क्रमाङ्क		कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकडी)	कर्त्ता	पत्रांक/छन्द संख्या	र.का. एवं र. स्था
२४९	पद	राग निहालदे री अब मति छोडो हो मान महिपतिजी		८८/११	
२५०	पद	मुनिवर मन नें पाछो घेर		८८/६	
२५१	पद	साधु री आचार छत्तीसी साधू ते सूत्र भणि स्यू कीधो	रत्नचंद शिष्य गुमानचन्द	८८-८९/३७	पाली
२५२	पद	निठुर थयो गोकुल मथुरा विचे (दे०) आज नेण भर गुरु मुष निरख्यौ	,,	८९/१०	
२५३	पद	स्तवन मिलीया गुर ग्यान तणा दरिया	,,	८९/५	
२५४	पद	मन मनगुरु सीख कहा भूले	,,	८९/४	
२५५	पद	गुरु सम कुण जग में उपगारी	,,	८९/६	
२५६	पद	सतगुर मन भूलो एक घडी	,,	८९/४	
२५७	पद	कठन लगन की पीर		८९-९०/३	
२५८	पद	पथीडा रे पथ चलेगो	रूपचन्द	९०/५	
२५९	पद	घ्राणेन्द्री के वस नहि पडियै	विनेचन्द	९०/५	
२६०	पद	नाम धरायो फकीर वेटुक लाज न आई	हुसेन फकीर	९०/४	
२६१	पद	जोगारम को मारग वाको रे		९०/५	
२६२	पद	मत कर मान गुमान	लालचन्द	९०/५	
२६३		हेरी काया मत सग छाड हमारी	कबीर	९०/४	(राग काफी)
२६४	पद	मत कोई करियौ प्रीत दुख के फद पडोगे		९०/३	,,
२६५	पद	मुसापर चोकस रेणा ठग लागा तेरी लार	कबीर	९०/३	,,

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकडी)	कर्त्ता	पत्राक/ छन्द सख्या	र.का एवं र.स्था
	पद-सग्रह—			
२६६.	भावै सोड करो मे तो तेरे हाथ विकांना	रसकनाथ	९०/२	(राग काफी)
२६७	तू क्या ढूढे वन वन मे, तेरा नाथ वसै नेनन मे		९०/४	,,
२६८	एक आस भली जिनवर की		९०/५	,,
२६९	मत ताकौ नार विराणी		९१/६	,, १८८६, जोधपुर
२७०	निंदा मोरी कोइय करो रे दोष विना सोच न कोय		९१/३	(राग काफी)
२७१	श्री जिन मेटो विरथा हमारी		९१/४	(राग विहाग)
२७२	जीवडला यू ही जनम गमायो	रतनचन्द	९१/६	,,
२७३	चदा ने विच मे वेच लियो रे	कवीर	९१/४	,,
२७४	राज सुणौ सीखडली		९१/७	(राग भागडली)
२७५	विनवै सुमता नारी घर आवोनी पियारा	रतनचन्द	९१/७	(राग खभायच)
२७६	मानव कौ भव पायकै मत जाय रे निरागा	,,	९१/७	,,
२७७	कर्म तणी गत न्यारी कोई पार न पावै	,,	९१/५	,,
२७८	काया पिंड काचो राज	,,	९१/४	(अलिया वेलावल)
२७९	श्रोतो गढ वाको राज	,,	९१-९२/४	,,
२८०	आटो कर्मा को राज	,,	९२/४	,,
२८१	पिंडत पूछ पिया किम पाणं	कवीर	९२/५	(राग आसावरी)
२८२.	मन रे अगम तीरथ कु चलणा	,,	९२/४	,,
२८३.	फिर गई राम दुवाइ रे	तुलसीदास	९२/५	,,
२८४	पगला थिर रे नही तेरी काया		९२/३	,,

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकड़ी)	कर्त्ता	पत्रांक/ पद संख्या	रचना पूर्ण र काल
	पद संग्रह—			
२८५	मना रे तोनें कौतक वेर कही		९२/८	(राग कल्याण)
२८६	हेरि मोरी अखियन हरख भरी		९२/३	,,
२८७	अब मोरी साद करो जिनराज	रत्नचन्द	९२/८	,,
२८८	मेरे घट ग्यान भानु भयो भोर	आनन्दघन	९२/३	,,
२८९	तू जासी में जाणी रे जीवडा		९२/५	,,
२९०	तू किणरो कुण थारो रे चेतनिया	रत्नचन्द	९२/२	,,
२९१	ते मेरा दरद न पाया रे नग्यानि		९२-९३/६	,,
२९२	रसना विगर विचारी म बोल	रत्नचन्द	९३/४	(राग धनाश्री)
२९३	जाण्यो थारो भाव प्रभुजी हो		९३/४	,,
२९४	वादु नित गज सुकमाल मुनीस	,	९३/५	,,
२९५	भोला मन कब सिवरे प्रभु नाम	सूरदास	९३/४	,,
२९६	भजन बिन वेल विराना भयो	कबीर	९३/४	,,
२९७	देख्या दुनियां बीच रे कोइ अजब तमासा		९३/८	,,
२९८	क्या नेणा समझावै हे ठगणी	कबीर	९३/२	,,
२९९	तन वस्त्र के रग लगायो मन के रग न लागो रे	जिनदास	९३/२	,,
३००.	कुटल मजारी तोतो ले गइ	कबीर	९३/३	,,
३०१	हा रे नगरी पेम की	,,	९३/६	,,
३०२	वटाउडा वीत गई हो सारी रेण	,,	९३/४	(राग जगलो)
३०३	जीवत मार मुवा मति लाइयो	,,	९४/४	(राग ठुमरी)
३०४	किन गुन भयो रे उदासी भवरा	आनन्दघन	९४/३	,,
३०५	किण वन ढूढु गी माई	तुलसीदास	९४/५	,,
३०६	हा रे तेरा तन का तनक भरोसा नाहि		९४/३	,,

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आवदी)	कर्त्ता	पत्राक/छन्द सख्या	र का एव र स्था
३०७	पद . धम आया रे नहि आया		६४/४	(राग बगाली)
३०८	पद 'ऐसी होरी खेलो जामे हुरमत लाज रहो री	कबीर	६४/५	(राग कालिगडो)
३०९	पद हमारे कुण खेले ऐसी होरी	सोभाचन्द	६४/१०	(होरी काफी) १८८६, जावरा
३१०	पद होरिया रग खेलण आवो		६४/४	(होरी काफी)
३११	पद होरी खेलण की रुत भारी		६४/४	,,
३१२	पद सखी तोय केती थी काने से प्रीत लगाय मती		६४-६५/५	
३१३	पद हे मारे स्याम सुन्दर दिल मे वसियो		६५/४	
३१४	पद . अवर देवो मुरारि हमरो	चन्द्रसखि	६५/४	
३१५	पद आज स्याम के मे अग लगू गी		६४/२	
३१६	पद जलम थारो वाता मे वीत गयो रे	कवीर	६४/४	
३१७	पद जोबन धन पावणो पावणो दिन च्यारा	,,	६५/४	
३१८	पद सात वीसन छोडो भाव सु ससारी लोका	रामचन्द्र	६५/५	
३१९	ढाल नेमनाथजी रो तवन संकर वसे रे केलास मे (दे०) श्री नेमीसर वसे रे वेराग मे	चोथमल	६५/१४	
३२०	ढाल कहा रे अग्यानी जीव कु गुर ग्यान वतावे	जिनराज	६५/३	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकडी)	कर्त्ता	पत्राङ्क / छन्द संख्या	र. का. एवं र. स्था.
३२१	ढाल क्षमा छत्तीसी आदर जीव खिम्या गुण आदर	समयसुन्दर शिष्य सकलचन्द	९४-९६/३६	
३२२	ढाल पुन्य छत्तीसी पुण्य तणा फल परतख देखो	,,	९६-९७/३६	१६९९ सिद्धपुर
३२३	ढाल त्रुटकनी जाति परनारी(दे०) सुणि सुणि कंता सीख सुहावणी		९७-९८/१०	
३२४	ढाल सरसति सुजरे माता द्यो बहु मान रे		९८/१०	
३२५	ढाल . सात व्यसन री पर उपगारी साधु सुद्ध गुरु इम उपदेसे	पुण्यकलससूरि शिष्य [रंगे]	९८/६	
३२६.	ढाल · तमाखु री प्रीतम सेती वीनवे	आनन्द मुनि	९८-९९/१५	
३२७.	ढाल चित सभूत री ऊधव बोल मानो हो	कवियण	९९/२३	
३२८	ढाल : इण काळ रो भरोसो भाई रे को नही	रत्नचन्द	९९/१२	१८६७ किसनगढ
३२९.	ढाल · अजित शाति जिण थुइ मगल कमला कदुए सुख सागर पुनम चदुए	मेरुनन्दन	९९-१००/३२	
३३०	ढाल · भूलो मन भमरा काइ भमइ(दे०) जागरे सुग्यानी जीवडा सूतो बहू काल	रत्नसमुद्र	१००/१९	
३३१	ढाल वीर वखाणी राणी चेलणाजी	समयसुन्दर	१००/७	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकड़ी)	कर्त्ता	पत्रांक/ छन्द सख्या	र का एव र स्था
३३२	ढाल दया धरम दिल धार मुगत की करणी	हीर	१००-१०१/७	
३३३	ढाल : ग्रोलवडे मत कीजो जिणदजी	मोहनचन्द शिष्य रूपचन्द	१०१/५	
३३४	ढाल : आज सु दीन मे बाईजी मे जिनजी जुहारया		१०१/६	
३३५	पद : समुद्रविजे सुत नेम विराजे		१०१/६	
३३६	ढाल : घोडी तो आई थारा देस मे मारूजी (दे०) सांवलडी सुरत मन मोहियो साहिवजी	रामविजय शिष्य विमलविजय	१०१/५	
३३७	ढाल : मेडतिया भमरजी रो करहलो (दे०) मारी वदणा प्रभूजी अवधारजो	रूपसेवक	१०१/७	
३३८.	ढाल सोकडली री साळ माने दोरी लागे जी (दे०) कोहोनी किस विध आउजी साधुजी रो वखाण सुणवा		१०२/१७	
३३९.	ढाल तु गीयापुर री इण नगरी मे वाजा वाजे (दे०) आया सुग्यानी साध मन मोयो रे तु गीयापुर नगर सुहामणो रे		१०२/१७	
३४०	ढाल : झुकजाय भमरजी रा करहा (दे०) भवीया सकल मनोरथ सिद्ध	प्रधानसागर	१०२/७	
३४१	ढाल आज ऊछव छेरे अधिको		१०२/७	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकडी)	कर्त्ता	पत्रांक/छन्द संख्या	र. का. एवं ले. स्था
३४२ ढाल	वादळ दह दिस उनम्यो (दे०) वीरखा रुत आई मोहना	मानसागर	१०२-१०३/१२	
३४३ ढाल	पूण्ये सुपना ए देखे, मन माहे हरख विसेखे		१०३/६	
३४४ ढाल	मगल कमला कदुए (दे०) सोहमपती आसण कंपीयो		१०३/१३	
३४५ ढाल	जिन रयणीजी दशदिसी उजळता घरे		१०३-१०४/१५	
३४६ ढाल	पच कल्याणक तीर्थ कमल उदक भरीने पुसकर सागर आवे	देवचन्द	१०४/६	
३४७ ढाल	कोटारे कोपे कागरा (दे०) द्ना अगोछो पूटरो किण ही दीठो हुवे तो दीजो रे लाला	डोकरो ?	१०४/६	१८३६, सिरोही
३४८ ढाल	सफल ससार अवतार एहु गिगु	भक्तिलाभ	१०४-१०५/१६	
३४९ ढाल	निंडलीनाहनी(दे०)वर्द्धमानस्तवन वीर सुणो मोरी वीनती	समयसुन्दर	१०५/१६	जेसलमेर
३५० ढाल	सिद्दारथ कुल दीपक चद	रायचन्द	१०५/१२	१८३७, मेडता
३५१ पद	विधना तू तो गेहली भइये		१०५/४	
३५२ ढाल	सीमधर स्तवन श्री मिंदरजी सुणजो मारी वीनती	लालचन्द	१०५-१०६/७	
३५३ ढाल	आदिनाथ आदि जिनवर वदि सफल मनोरथ कीजिए	उदयरतन	१०६/१७	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकडी)	कर्त्ता	पत्राक/ छन्द सख्या	रचना एवं र स्था
३५४	पद पडित वाद वदे ते झूठा	कबीर	१०६/५	
३५५	पद सूरज सू उतपन्न पुरस ने अस्त्री हुवा		१०६/	
३५६	ममत मत कीजो राज मन मे	पेम	१०६/४	
३५७	जबू कुवर रो तवन जबू कवर वेरागीया		१०६/१२	
३५८	पूज्य गुणमाल सामी वास वेराड मे थे वसो काकरीया कुल जात जी	कीरतमल	१०६–१०७/११	१८७८, पीपाड
३५९	ढाल वाणी श्री जिनराज तणी काने सुणी रे माइ		१०७/१५	
३६०	ढाल धारणी मनावे हो मेघ कवार ने रे	प्रीतविजय	१०७/५	
३६१	ढाल सात वारो की अदितवार दिन दुनियां भूली		१०७-१०८/८	
३६२	ढाल श्री सखेसर पास जिनेसर भेटीये	जिनचन्द	१०८/५	
३६३	ढाल श्रावक तु उठे परभात	जिनहर्ष	१०८/२३	
३६४	ढाल थूलभद्र मुनीसर आवो नी	सीलविजय शिष्य सिद्धविजय	१०८-१०९/१७	
३६५	ढाल लाख चोरासी घोडा पायदल छितु कोड (दे०) श्रेणक राय तिर्थंकर पद पासी	रायचन्द	१०९/१६	१८८६, मेडता
३६६	ढाल मास खमण ने पारणे मुनी आया वामण गेह	मुनि रामचन्द	१०९/७	
३६७	ढाल पिणहारी री (दे०) जबू द्वीप राची देह मे जिनवर जी हो राज	रामचन्द शिष्य विरधीचन्द	१०९-११०/१३	१९०९, वीसलपुर

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकडी)	कर्त्ता	पत्रांक/ छन्द संख्या	र का एवं र स्था
३६८	ढाल कलाली रे गीत री (दे०) त्रिभुवन सामीजी हा तो विराजे श्री जग नायकु हो राज	मुनि रामचन्द	११०/८	
३६९	लावणी लाज मेरी रखले भवानी (दे०) प्रभुजी प्रगट फुरमावे सुर नर सुणवाकु आवे	,,	११०/६	
३७०	लावणी सिख साभळ लो सतगुर की जिण सु होय भव पार लारलो	जिनदास	११०/४	
३७१	ढाल उग्रसेण की लली, नेमजी वंदण गिरनार चली		११०/६	
३७२	ढाल · आनन्दघन जिनदास गावे, सीस चरणा से निमावे		११०-१११/५	
३७३	लावणी तुम तज कर राजुल नार तज्या सब घर रे	,,	१११/५	
३७४	ढाल खबर नही है जुग मे पल की	अनेमल	१११/६	
३७५	लावणी हलाहल कलजुग चल आयो रे	मुनि राम	१११/६	
३७६	लावणी · मन सुणरे थारी सफल घडी सरावती हाथ सु जावे	जिनदास	१११/५	
३७७	लावणी सुनत की वात तेरे हाथ रली न रही रे	,,	१११-११२/५	
३७८	लावणी · रीसो री खोटी नही करीये रे	,,	११२/५	
३७९	पद · तेरी पुन्न नी देह पलक मे पलटे ज्या सगरी गले रे	रतनचन्द	११२/५	
३८०	पद नि ड निर्पीया रूप निजर भरे तेरो पतर पलक प्राड जाय	लालचन्द	११२/४	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकडी)	कर्त्ता	पत्रांक/छन्द संख्या	र का एवं र स्था
३८१ पद	देखी रे सुरत पारस की मारो जनम सफल भयो आज	रूपचन्द	११२/४	
३८२. पद .	विराजे बगला मे मारो सावलीयो	,,	११२/५	
३८३. पद :	विषीया वस जनम गयो रे	रतनचन्द	११२/४	
३८४ पद .	प्रभुजी के पाए लाग रे मे कयो तोकूं	आनन्दघन	११२/४	
३८५ ढाल .	नवकार मंत्रजी रो ध्यान धरो	रायचन्द	११२-११३/१३	बीकानेर
३८६. ढाल .	घोडी तो आई थारे बाग मे मारूजी (दे०) साहेबजी अजित सभव भगवत हो	भांनीराम शिष्य भगवानदास	११३/८	
३८७. पद	श्रीमिंदर क्या जांणु मुज करम कटक दल केवा	रामचन्द	११३/८	
३८८. पद :	जिनराज रो मेरे इतनो चाहियें नित उठ दरसण पावुं	आनन्दघन	११३/३	
३८९. पद .	काहारे अग्यानी जीव कुं गुर ग्यान बतावे		११३/३	
३९०. ढाल	सीता सती री सुजाण सीता जाणे केसूला फूलीया रे लाल	जिनहर्ष	११३/९	
३९१ ढाल :	पदमावती (राग वेराडी) हिव रांणी पदमावती जीव रास खमावें	समयसुन्दर	११३-११४/३४	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एव आकडी)		कर्त्ता	पत्राक/ छन्द सख्या	र.का. एव र.स्था.
३९२	ढाल	मूरख लखजा रे कनक ने कामण जग मे पास है	रामचन्द	११४/३५	१९१८ जोधपुर
३९३	ढाल	भव जीवा आद जिनेसर वीनवु	रायचन्द	११४-११५/२१	
३९४	स्तवन	चेतन तेरी रसना वस कर रे	त्रिनेचन्द	११५/५	
३९५	वात	डोकरी री वात (गद्य)		११५/६	
३९६.	ढाल	चउपई– भगवती भारती चरणन सेवी सद गुरु नाम सदा समरेवी	प० लखमी	११६/१६	
३९७	ढाल	जीव री उतपत उतपत जोय जीव आपणी मन माहि विमास	रत्नहर्ष शिष्य [रंगे]	११६-११७/६१	
३९८	ढाल	माहावीरजी आवी समो सरया राजग्रही नगरी माहि		११७/५	
३९९	ढाल	सुण चेतन रे तुम गु णवत मुनि कु सेवो	रामचन्द	११७/५	
४००	ढाल	धन धन वीर जिणद हो सुखकारी हो प्रभुजी	भानीराम	११७-११८/८	१९३३ जालोर
४०१	ढाल	नाथ केसे गज को पाय छुडायो (दे०) ऋषभ जिन मे तो शरण तिहारी वारी हु वार हजारी	सूर्यमल	११८/७	
४०२	ढाल	किण डारी पिचकारी गोरी के किण डारी (दे०) काम क्रोध से न्यारा रे गुरदेव हमारा	"	११८/७	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकडी)	कर्त्ता	पत्रांक/ छन्द संख्या	र. का एवं र स्था
४०३.	ढाल . मे डरू एकेली वादल मे चमके वीजळी (दे०) आद्यो भोजन रात नो सरे निण माहे अति दोष	,	११८/९	१९२४ डेहू नगरी
४०४	पद · अब तोरी सरण मे विरद सभाल	जसरूप	११८/४	
४०५	ढाल · एक दिवस वसे नेमकवर निज (दे०) अहो सर्व गुणी मुनि, सुव्रत माहाराज काज मुज सारो	सूर्यमल शिष्य कुशालचन्द	११८-११९/७	१९१ डेहू ग्राम
४०६	ढाल . मत ताको नार विराणी है (दे०) अरजी सुणो नेम हमारी कहे इम राजुल नारी	,,	११९/१५	१९०९
४०७	ढाल . हा रे काई भरवा गई जल जमुना तीर (दे०) हा रे काइ रजपुर सोहे	,,	११९/९	१९०४ अहिपुर
४०८	ढाल . कु जन मे ले चालो कान मोने (दे०) सुविध जिन तुम चरणे चित दीनो	,,	११९/६	
४०९	ढाल सीमधर स्तुति पूरव पुखलावती विजय मे जनमीयाजी नगरी पु डकरी कणी नाम	जैमल	११९-१२०/११	
४१०	ढाल घमके रे घमके गवादे रो गागरो (दे०) ऋषभानदन वदीये प्रभूजी पोह उठी प्रभातो रे	आसकरण	१२०/७	१८३८ वूसी गाँव

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी(तर्ज) एव ग्राकडी)	कर्त्ता	पत्रांक/ छन्द सख्या	र. का. एच र स्था
४११	ढाल कीर्त थारी हे माता जुग माहे भारी	गोरधन	१२०/५	
४१२	ढाल . नाम एला पुत्र जाणीये धनदत्त सेठ नो पूत	लब्धिविजय	१२०/८	
४१३	पद पहिले पद अरिहत जाणी, ज्यारो भजन करो भवियण प्राणी	जैमल	१२०/७	
४१४.	ढाल वीरा मोरा गज थकी उतरो गज चढ्या केवल न होसी रे	समयमुन्दर	१२०-१२१/७	
४१५	ढाल · रे जीव जिन धर्म कीजीये	समयमुन्दर	१२१/६	
४१६	ढाल . पाच पचास छोकरा घर में कयो कोई न माने	मगल	१२१/५	
४१७	ढाल · जोबन धन प्रावणो दिन च्यारा इण रो गर्भ करे सो गिवारा	मांणकदास	१२१/५	
४१८.	दूहा : नमो सिद्ध निरजण, नमु सतगुरु पाय धिन वाणी जिनराज री, सुणता पातक जाए		१२१/३१	
४१९	ढाल : मोने भाखो नी माहावीर (दे०) चोमासी ईग्यारमीजी विचरत साहस वीर	मुनिमाल	१२१-१२२/२५	
४२०.	लावणी । कब देखु जिनेसर देव जगत गुरु ग्यांनी	जिनदास	१२२/५	
४२१	लावणी : दे गया दगा दिलदार सुणो मेरी माई लग रही नेम दरषण की सरम ग्रासनाइ	जिनदास	१२२/५	
४२२.	लावणी · मन सुण रे थारी सफल घडी श्रावकों हाथ सु जावे		१२२/५	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकडी)	कर्त्ता	पत्रांक/ छन्द संख्या	र. का. एवं र. स्था.
४२३.	ढाल प्रणमु श्रीजिनराय मनवच काय करीए		१२२-१२३/१८+११	
४२४	ढाल ताम हुवो प्रभात मोछव मांड्यो तात	देवराज शिष्य ज्ञानचन्द	१२३/१०	१८२३ गगरांणा
४२५.	ढाल चोवीसे जिनवर करूंज जाप नाम ठाम लछण माय तात	"	१२३-१२४/२८ (इषु रस अग्व रवि)	
४२६	ढाल. प्रणमी जिनवर भाखु आयु प्रमांण	देवराज	१२४/५	
४२७	ढाल. रतन कुंवर की रतन कुमर गुण आगलो रे आगला मुख ना वोल		१२४-१२५/४२	
४२८	ढाल· सफल दीहाडो जी भलाई सूरज ऊगीयो	हीराचन्द	१२५/१३	१८९९ नागोर
४२९.	ढाल· चंगरण रंग मगल हुवा घणा		१२५-१२६/१६	
४३०.	ढाल: कागलीयो कीरतार भणी सी पर लिखु रे	जिनराज	१२६/५	
४३१.	ढाल समाइक सुखदाइ जी चित लाइ कीजो		१२६/९	
४३२.	ढाल. तेवीसमा हो प्रभू पास जिणद के चरण करण मधु मोहीयो	मनरूप शिष्य हीराचन्द	१२६-१२७/१६	
४३३	ढाल. मोरा साहिब हो मुझ वीनती एक के सुणोजी कहुं सुख कारणे	हीराचन्द	१२७/२३	१८८९ जोधपुर
४३४	ढाल· सिखामण हो तुमे सुणियो सार के एक मना चित धारजो	"	१२७-१२८/२५	१८९८ वीसलपुर

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी(तर्ज) एवं आकडी)	कर्त्ता	पत्रांक/ छन्द संख्या	र.का. एवं र.स्था
४३५	ढाल श्री ऋषभ अजीत संभव अभिनंदन सुमत पदम सुपारख मन रंजन		१२८/	
४३६	ढाल प्रह उठी ने समरीजे हो भवीयण मंगलीक सरणा च्यार	चोथमल	१२८/११	१८५२ पाली
४३७	ढाल साधूजी ने वंदणा नित कीजे पोह ऊगते सूरजी	आसकरण	१२८-१२६/८	१८३८ बूसी गांव
४३८	ढाल पास जिणेसर पूरण आसा गावत मंगल लील विलासा	जिनराज	१२६/१३	जैतपुर
४३६	ढाल एक कुवो ने पांच पीणीहारी नीर भरे हो न्यारी न्यारी	कवीर	१२६/४	
४४०	ढाल घडा एक सो आठ सहेली रस सु भरिया नीका	नथमल	१२६/६	
४४१	ढाल मुणीयो रे वावू कुटल मंजरी लारे लग रही	कबीर	१२६/३	
४४२	ढाल हाथ जोडी काली इम वोले ऊभी सनमुख तीर	आसकरण	१२६/१७	
४४३	ढाल . काइ रे गुमान करे आपणो, मान करेगो गुमान करेगो तो नीची रे गत मे जाय पडेगो	रामचन्द	१२६-१३०/१०	
४४४	ढाल प्रह उठी गोतम प्रणमीजे मन वंछित फल नो दातार	समयसुन्दर	१३०/७	
४४५	ढाल नव वाड सही जिनराज कही मुनि राज लही अति हित कारी		१३०/११	
४४६	ढाल आरंभ करतो रे जीव डरे नही		१३०/५	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकडी)	कर्त्ता	पत्रांक/ छन्द सख्या	र का एवं र स्था
४४७ ढाल	निरखण दो असवारी (दे०) धना मुनी धन मानव भव पायो श्रीमुख ईउ फुरमायो	रामचन्द	१३०-१३१/७	
४४८ ढाल	घुमर रमवा मे जासा (दे०) गुणधरजी रा गुण मे गासा ज्यासु परम आणद हूय जासा हो राज	भगवानदास	१३१/६	
४४९ ढाल	जाग हो जाग हो जाग होजीव तू, काइ तू मोहनी नीद सूतो	कुसालचन्द शिष्य जिनराज	१३१/११	१८८०, जोधाणे
४५० ढाल	सीतल जिन सहज सुरगा तुज दरसण थी दिल चगा रे		१३१/६	

अतिम ढाल अपूर्ण है। ढाल की पक्तियो से ज्ञात होता है कि इसकी रचना उदयपुर मे तपागच्छाचार्य विजयक्षेमसूरि के चातुर्मास के समय मे की गई थी।

सकलन मे लिपिकर्त्ता तथा लिपि-स्थान का कही भी उल्लेख नही किया गया है। (पत्राङ्क ७६ पर लिपिकाल १९३७ दिया गया है।) सग्रह मे सवत् १९३३ तक रचित ढालो का समावेश किया गया है जिसमे प्रस्तुत सग्रह मे अनेक अप्रकाशित ढाल-पदो की विद्यमानता स्पष्ट है।

सग्रह मे प्रमुख रूप से १९ वी एव २० वी सदी के मारवाड एव गुजरात मे कार्यरत लु कागच्छीय ऋषि जैमल, रायचन्द, चोथमल, रूपचन्द, रत्नचन्द तथा इनके शिष्य प्रशिष्यो द्वारा रचित ढाल-पदो का सकलन किया गया है।

लु कागच्छ के बाद तपागच्छीय तथा खरतरगच्छीय मुनियो एव आचार्यों के औपदेशिक पदो एव ढालो को भी स्थान दिया गया है। जैनेतर कवियो मे कबीर एव हुसैनफकीर के पदो का समावेश इन कवियो के सार्वभौम प्रभाव का द्योतक है।

प्रस्तुत सूची-पत्र मे अनेक जैन पदो एव ढालो का उल्लेख किया गया है। उनके स्वरूप परिचय की दृष्टि से 'देशियो' की बानगी उपर्युक्त विवरण मे दी गई है। समस्त 'देशियो' का सकलन व उनका अनुसधान अपने आप मे शोध कार्य का एक स्वतन्त्र एव मौलिक विषय हो सकता है। 'देशियो' के साथ ही साथ रागो का भी उल्लेख सकलन मे किया गया है किन्तु स्थानाभाव के कारण उनके उल्लेख के लोभ का सवरण करना पडा।

१५६. ११००८ (२) उपमासंग्रह

प्रारम्भ —

॥ अथ उपमा सग्रह लिख्यते ॥

मगलाचरन— दोहा

उपमान रु उपमेय नहि, तह उपमा का होय ।
अनुपम पद मे गन वचन, आदि न पहुचे कोय ॥१॥

करन अनुग्रह जीव पर, विग्रह धरत मुरारि ।
तसु सुमिरत मे ऊपमा, सग्रह करो विचारि ॥२॥

उपोद्घात— दोहा

जहा वरन आकार श्री, आदि एकही तुल्य ।
तहा कहत उपमान कवि, पावत हर्ष अमुल्य ॥३॥

उपमान रु उपमेय मे, चमत्कार दरसाइ ।
अधिक न्यून मे मिल्न रहे, तह उपमा ठहराइ ॥४॥

अति रूपवती स्त्री रूपोपमा

मुख पर पकज चद्रमा, द्दग पर मृग द्दग मीन ।
कमल कमल की पखुरी, खजन की कवि कीन ॥५॥

तारक द्दग तारेन पर, अरु कटाछ पर बान ।
भोहन पर भोरावली, धनुष लता हू मान ॥६॥

अलक ऊपर चामर अही, जाल त्रिवेनी पास ।
अर्द्ध चद्र है भाल पर, पट्ट पटल हू तास ॥७॥

टेडि भोह दो को कहत, पख सवारत भोर ।
जावक भीने मीन सम, लोचन लाल सुठोर ॥८॥

नासा पर सुक तिलकु सम, दीपक नथ झक हर्न ।
मधुक वदर जु कपोल पर, सूक्ति पान पुट कर्न ॥९॥

ओठन पर वधूक अरु, विंव प्रवालहु मान ।
दातुन पर दार्यो विजुल, वीज कु दकली जान ॥१०॥

अन्त – ग्रन्थ प्रयोजन

यो उपमा वहु विध कही, कवि नै ग्रंथनि माहि ।
सो सब सग्रह क्यो वने, कछुक कही मे ताहि ।।६६।।

एक देश ते ऊपमा, लगी रहत सब ठोर ।
ओर देश को छोडिकै, वरनत नर शिरमोर ।।६७।।

कछुक अवुध के हित अरथ, उपमा सग्रह कीन ।
पढहि विचारहिं सोइ नर, होहिं अति परवीन ।।६८।।

रचनाकाल सवत वाइस उन्निशो, पोष कृष्ण हरि द्योस ।
कीनो हीराचद ने, उपमा सग्रह घोष ।।६९।।

पुष्पिका – इति कवि हीराचद कानजी कृत उपमा सग्रह समाप्त ।

प्रारम्भ – अथ लुप्तोपमा विलास[1]

जहा दोऊ वस्तु की शोभा को चमत्कार समान दिखत होइ तहा उपमालकार होत है। तामे हु अधिक गुन उपमान अरु हीन गुण उपमेय सो दोउ को सवध करन हारी उपमा है। तहा उपमान अरु उपमेय मे काव्य की भावना करकै परिपक्व बुद्धि वारे रसिक पुरुष के हृदय को आनद होय, ऐसो जो व्यजना विन स्पष्ट समानता को प्रकाश होत हैं, तहा उपमालकार जानियै ।

उदाहरन— चन्द्रमुख । चन्द्र सो अधिक-गुन उपमान है। मुख सो हीन गुन उपमेय है। सो दोउ की समानता करावन हारी तीसरी वस्तु एक उपमा प्रगट होत है। चन्द्रमा मे उज्वलता, गोलता अरु आह्लादकता है सो सव साधारण धर्म है। ए सर्व साधारण धर्म का धरनहार जो चन्द्रमा है सो धर्मी है। सो इहा धर्म - धर्मी मे अभेद उपचार मान्यो है। क्यो जो धर्मी, जो चन्द्रमा है ताको नाम कहते हैं, धर्म को गृहण होत है, तातै चन्द्रमुख यो कह्यो सो मुख मे उज्वलता, गोलता और आह्लादकता असे सर्व धर्म रहे है। तातै चन्द्र जेसो मुख कह्यो है ।

---

१ उपमा सग्रह नामक मूल ग्रन्थ से पूर्व हीराचन्द कानजी कृत "लुप्तोपमा विलास" शीर्षक से पृथक् कृति लिखी गई है। जिसका आद्यन्त भी यहाँ उद्धृत किया जा रहा है।

अन्त - दोहा

"कनक लता पर चद्रमा, धरे धनुष द्वै वान ।"

देखो, सोने की लता पर चद्रमा ता पर द्वै धनुष और वानन सो कछु एक दूसरे पर धरे जात नाहि । यह तो सोने की वेल जेसी स्त्री कही और ताके मुख को चद्रमा कह्यो, और ताकी भोह को दो धनुष कहे, और ताके कटाछन को वान कहे । एसे केवल उपमानन के नाम लेके उपमेय को वर्णन कियो है ; ताते यहु रुपकातिशयोक्त्यलकार भयो है । और जो लुप्तोपमा सो तो आगे वर्नन कियो है ताते समुझनों ।

पुष्पिका - इति प्राचीनोदाहरण पूर्वक कवि हीराचद कानजी कृत लुप्तोपमा विलास संपूर्णम् ।। शुभम् ।।

३११ १२१५३ कोकशास्त्र

[प्रति अशुद्ध लिखी गई हे]

प्रारम्भ - ।। दं० ।। ॐ नम ।। दूहा

मातगी मति आपीई, कवींत करू रसाल ।
कोक कला गुण वर्णवौ, जे प्रीछे वाल गोपाल ।।१।।

श्री सारद तुझ्झ ध्याइई, अक्षर आपो माय ।
कृपा करी मुख अवतरे, जिम गुण आवे ठाय ।।२।।

जे नर पेहेला कवी हूंआ, ते ताहरो प्रसाद ।
नाम जपता सरस्वती, भाजें दुख विष वाद ।।३।।

कवित करेवा मन घणो, खनि करू दिनराति ।
वाचा अवीचल आपीइ, कीजे कवित सु जाति ।।४।।

पिंगल जोइ वाधिस्यू, उतम कवीत प्रमाण ।
लघू दीर्घ गुण भला, चोपै चगलि वखाणि ।।५।।

कोक शास्त्र कोके कीऊ, ते जोई सु वचन ।
कवीत छद इम उचरे, वाधू कवीत कथन ।।६।।

चौपाई

श्री शारद दिघु वरदान। मातगी आप्यां सनमांन ॥
श्री गुरे कृपा कीवाज घणो। करू चोपै कोकज तणी ॥७॥

पहिला ग्रथ अनेकज हूआ। मति एक ने प्रवध जू-जूआ ॥
छे आनद कवीश्वर तणी। कांम शास्त्रनी मति छे घणी ॥८॥

कोक देवे कीधु कोक। ते उपरे रजे सवी लोक ॥
तेहनो मत जोइ ने सही। कोक कला वाधु चोपैं ॥९॥

जे नर होसें चतुर सुजाण। नारी प्रेम विलूधा प्राण ॥
भोग तणा गुण जे जाणस्यै। ते नर सुणता उल्हस्ये ॥१०॥

कोक कला कुसम मालनी। अर्थ सुगध ने राते चालनी ॥
भमरो नर भोगी जेहस्ये। ते सास्त्र ले वाचि न वस्ये ॥११॥

दश प्रकार जे कोके कह्या। तेहना अर्थ विशेषे लह्या ॥
विगते करी कहू वेगला। प्रीछे नाह्लो मोटा भला ॥१२॥

गाहा दुहा अने चोपै। श्लोक सूभाषित बोलीश सही ॥
मति सारू हूं करु कवीत। साभलयो सहू एके चीत ॥१३॥

कविता कवीत करे सु रसाल। साभलयो नर चित्त वीसाल ॥
वक्ता करि विचार अनेक। कथा तणो रस उपजे विवेक ॥१४॥

श्लोक

शृङ्गार गायन नृत्यं वाद्यं तालौ(ल) रतिक्रिया।
साहित्य पट(द) लालित्यं पट(द) बाव्यो(वन्धो) गतिस्तथा ॥१५॥
कटाक्ष लक्ष नरभो(सरम्भो) वरसे मृदु भाषण।
वशीकर्णतायानि कथया(कथिता) षोडसी कला ॥१६॥

अन्तिमाश –

कवि-परिचय – पत्राङ्क ८२-८४

हवे नर्वद बोले कथा। नांम ठांम पोतानु यथा ॥
कवण वंस माहि उपना। ते संखेपे बोलु अधुन ॥९८॥

गुजर देस माहि अभिराम । धर्म ध्यान नो उतम ठाम ।।
यती सती तप आगम गनान । सर्व लोक वस्ये सावधान ।।६६।।

कलीयुग गंगा साबरमती । उतम नीर वहे सरस्वती ।।
सदा काल जल पूर्ण वहे । स्नाने पाप सवेने दहे ।।६००।।

काठे नगर वसे अभीराम । अहमदावाद श्री उतम ठाम ।।
सर्व वस्तु पामीजे जिहा । जंबू द्वीप मा न मलि कही ।।१।।

श्री श्रीमाल तिहा व्यवहार । देवराज नामि उपचार ।।
मान दिइ महिमुद सुरताण । महिता माहि वडो ववाण ।।२।।

तेहनि घरि कुलवंती सात । वे पखि पूर्ण कुल विख्यात ।।
माता का नाम — राजलदे नामे उचरो । तेहनी कुखें हु अवतरयो ।।३।।

कर्म सयोगें मारू देश । नगर शीरोही कीध प्रवेश ।।
तिहा रहिवानो कीधो ठाम । योगि थया लह्या गुणग्राम ।।४।।

नवमे वर्ष श्री गुरु तणा । पाम्या चरण मनोरथ घणा ।।
दीक्षा लीधी श्री गुरु पास । भव बंधन थी छोड्यो तास ।।५।।

गच्छ वर्णन — श्रीगुरु तपगछ माहि जसवंत । कमलकलस साखा वोलंत ।।
गछ नायक श्रीपूज्य प्रमाण । जाणे गगन उगतो भाण ।।६।।

धर्म धोरधर श्री गुरु नाम । कमलकलस साखा अभीराम ।।
महा गुणवंत गंभीर । पंच महाव्रत यती सुधीर ।।७।।

ओढा भटार्क पदवा धणी । जेहनी कीरति जग माहि घणी ।।
महा गुणवंत महानुभाव । पंडित श्री मनिलाव्यणभाव ।।८।।

बीजा सुमतिकलस पन्यास । श्री गणधर कहे सुखवास ।।
त्रीजा गणि मतिपन्यास । कल्याण भाव प्रते प्रकास ।।९।।

सूरिसर ना गणधर एह । केतला नाम कहु वहुतेह ।।
गण माहि गुणवंत गभीर । जती सकल माहि ते धीर ।।१०।।

एहवा गुरु भट्टारक जेह । कहु उपमा सवाई तेह ।।
शिष्य नर्बद ने कृपा करी । दीधो पद ते करुणा करी ।।११।।

देइ दिक्षा ने दीधा मत्र । श्री सरस्वती इ वांच्यो तत्र ॥
घणा दिवस मे सेवा करी । श्री सारद सेवा आदरी ॥१२॥

वर्ष तेरमे दीधो मान । मातगी दोधो वरदान ॥
श्रीगुरु स्तवना कवीजने करी । मति नर्वद नी ए चा(आ)चरी ॥१३॥

घणा दीवस मि गुरु सेवीया । भणी गुणी ने पोढा थया ॥
विहार कर्म वली तिहा थी कीव । श्रीगुरु नी अनु ज्ञा लीध ॥१४॥

दक्षिण देग प्रति कियो विहार । कउतक जोया देश अपार ॥
वोध पमाड्या वहु जीव ने । कवि सदगति पामी देश ने ॥१५॥

देवयोगि चालता सही । खानदेश मा आया वही ॥
गाढ आसेर तिहां अभिराम । बुरहानपुर नगर नो नाम ॥१६॥

राज्य करि वर्त्मवत सुजाण । वेरी ना भाजे भड ठाण ॥
महा अभग तरवारहि तेग । जाति फारक कला वीवेक ॥१७॥

मीरह दल्लसाह सुजाण । तास पुत्र वलवत वखाण ॥
मीरा वाहादुर साह फकीर । कीरति सर्व न जाणे लखीर ॥१८॥

रचना काल–

सवत सोल छपन्ना(१६५६) सार । शाक पन्नर एकवीस(१५२१) ॥
वीया – दशमी दने आणद । वुध वासरि वहु प्रमाणद ॥१६॥

उतराषाढी नक्षत्रे मु विचार । मकर चद्र भोगवि तिण वार ॥
कर्क रासि ग्रह गुरु भोगवि । तुलि शनि आवण चितवि ॥२०॥

अन्य मुहुरत सुभ वेला सार । उतम लक्षण तणो विचार ॥
श्री नर्वद वोले कवीराज । करी चोपई सपूरण आज ॥२१॥

श्री गुरुदेवे करुणा करी । कोक चोपाई सपूर्ण करी ॥
जे नर होस्ये चतुर सुजाण । नारी प्रेम विलुधा प्राण ॥२२॥

जे ए कथा मुणस्ये सही । अथवा भणस्ये सरसी जही ॥
सुणतां चित हास्ये आणद । परम सुख पामि मति मद ॥२३॥

कोक तणो मत लेइ करी । चालीश चोपाई कवी उचरी ॥
रस्था वूरहानपुर नगर मा थई । कोक देव नामे चोपाई ॥२४॥

दश प्रकार सपूर्ण थया। विगते करी कथा जू-जूया ।।
श्री मातगी ने वरदान। करी चोपाई अमृत समान ।।२५।।

जे नर रसलुब्धा हुस्ये। तेहना मन इणे ग्रथे वस्ये ।।
जिम कमल माहि भमरो रमे। गध केतकी छाडी किमे ।।२६।।

जेग जाने वरि नहि शास्त्र। कामकला किम प्रीछे पात्र ।।
कामशास्त्र नो जे हुई जाण। तेरा जानु जीवित प्रमाण ।।२७।।

जेह नर सुणस्ये श्रवणे सही। बुद्धि विस्तार न होस्ये लही ।।
विरही नणा भजे दूख। भोगी जन के प्रेम दा सुख ।।२८।।

जिहा लगे रवी गगने तपे। जिहा लगे मेरु मही मध्य जत्रे ।।
जिहा लगे कथा रहस्ये पुराण। कवि नर्वद कहे कथा वखाण ।।३०।।

कामशास्त्र मा उतम एह। देइ चित ने श्रुणस्ये जेह ।।
अनत सुख पामे सदा। श्री नर्वद कहे श्रुख सपदा ।।३१।।

पुष्पिका – इति श्री मज्जिनाचार्य कवी श्री नर्वद विरचिते कोकशास्त्रे आसन आग्रहन कौतक भेषया ज्ञान वर्णनोनाम दशमो प्रकार ।।१०।।

ल० ठकरलालजी गवजी।

५२३ ११५८५ (८) चंदकुंवर री वात

प्रारम्भ – ।। ई० ।। अथ चदकुवर री वात लिखतै।

समरु सारद माय, गणपति दे कै लागु पाय।
कर्त्तानाम परतापसिघ की अगाज, कीनी कथा रसिक(क)विराज ।।१।।

प्रतापसिघ खुमाण तै, हुकम कीयो कर चाव।
हस कवि[1] एसो कहौ, कुछीयक वात सुणाय ।।२।।

---

१ प्रस्तुत वार्ता के कर्त्ता का नाम प्रतिष्ठान से प्रकाशित पूर्व सूची-पत्रो मे 'हसकवि' दिया गया है, उसी के अनुरूप प्रस्तुत सूचीपत्र मे भी कर्त्ता का नामोल्लेख 'हसकवि' के रूप मे किया गया है। वार्ता के आद्यन्त का अध्ययन करते समय अनायास यह विचार आया कि "हस कवि सू असे कह्यौ" का सीधा अर्थ "प्रसन्न होकर कवि से ऐसा कहा"

सबकू लगै सुहावणी, रस सजोग सिंगार।
मूरख कै मन हरै, सब रसीयन को सार ॥३॥

रचनाकाल सतरै सै चालीस[२] समै, तेरस पोसज मास।
गुण कीनौ कर चाव कै, भोगो पूरण आस ॥४॥

कथा-प्रारंभ – नगर नाम अमरापुरी, पच कोस लवाय।
अमरसेन राजा तिहा, राज करै वैठाय ॥५॥

चदकुमर ताकै भयो, मानु काम अवतार।
चल्यौ सैहर सिकार कु, रहि विमोहित नार ॥६॥

अधिक लगता है क्योकि 'हस' पद 'विहसि' के समीप एवं उपसर्ग रहित है। प्राचीन प्रतियों मे प्रतिलिपिकर्त्ताओ द्वारा प्राय सर्वत्र चन्द्रविन्दु का प्रयोग नहीं मिलता एवं यह पाठानुसन्धान की प्रवृत्ति पर ही निर्भर करता है अतः इसके कर्त्ता का नाम जैसा कि प्रारभ की पक्तियो मे "कीनी कथा रसककवीराय" तथा अन्त मे भी 'चदकुमर की वारता, करि रसककवीराय" स्पष्टत उल्लिखित है इसलिये कर्त्ता का नाम 'रसिक कविराय' अथवा 'रसिकराय' कवि मानना ही सर्वथा उपयुक्त है। प्रस्तुत सग्रह की तीनो वार्त्ताए एक ही कवि की हैं किन्तु ग्रन्थाङ्क ११५८५ (७) वाली प्रति अपूर्ण है।

२ सवत् १७४० मे जोधपुर के पाट पर प्रतापसिंह पुत्र सूरतसिंह नामक किसी राजा के होने का इतिहास ग्रन्थो मे उल्लेख नहीं है। 'जोधवंश' मे दूसरा राज्य बीकानेर का है। वहाँ चाचा-भतीजे के रूप मे उक्त दोनो नाम मिलते हैं किन्तु प्रतापसिंह के गद्दी पर वैठने के दो वर्षों के अल्पकाल ही मे उनके चाचा एव सरक्षक सूरतसिंह ने उनकी हत्या करवा दी थी। उक्त घटना सवत् १८४४ के बाद की है। सभी प्रतियो मे रचनाकाल सवत् १७४० उपलब्ध होता है अत उक्त कवि को वार्ता की रचना का आदेश देने वाले प्रतापसिंह जोधपुर और बीकानेर के महाराजाओ से भिन्न कोई और व्यक्ति होने चाहिए। उक्त प्रतापसिंह कहाँ के राजा थे ? यह अनुसधान का विषय है।

* [वार्त्ता के अनेक पाठभेद प्राप्त होते हैं अत उक्त दोनो विषयो को स्पष्ट करने के लिए ग्रन्थाङ्क १०६५४ (१५) वाली प्रति का भी आद्यन्त इसी के साथ दिया जा रहा है।]

चद्रायणा

एक दिन चदकुमर आहैडै चालियौ ।
राजाजी को साथ सबै हालीयो ॥
उठीयो एक वाराह तास पै लगीयो ।
परिहा कुमर लागो पूठ कै सूवर भगीयो ॥७॥

साथ कवर रो भूलकै चूको वटडी ।
दन खड हैवा नवौ तरवर वटडी ॥
कोस वत्रीसा उपर सूर मारीयो ।
परिहा साथ न आयो कोयक निहारीयो ॥८॥

दुहा

पडीयो कुमर उजार मैं, आथमीयो तिहा भाण ।
तपसी वेठो तप करै, तिहा आयो राजान ॥८९॥

अन्त – वारता

कु वरजी घरै आया । सगलाइनु मुख हुवो । साहुकार री वहू नै, राजा री वेटी परणाइ, तिणने पिण लेता आया । पिण साहुकार री वहू सु प्रीत सनेह घणी ।९०।

दूहा

मो मन प्यारी सु वस्यौ, प्यारी को मन पीव ।
मै प्यारी का जीवडा, प्यारी मेरा जीव ॥९१॥

प्रतापसिंघ मुरनाण है, जिहा की वात सुणाय ।
कविनाम चदकुमर की वारता, करि रसककविराय ॥९२॥

जोत(ध) वस जुग जुग जीवो, घणा हेत परवार ।
नाम धरचौ प्रताप तै, या गुण को गुण सार ॥३००॥(९३)

पुष्पिका – इति श्री चदकुवर री वात संपूरन । ग्रथाग्रथ तिनसै । लिखत प० लालविजै वीकानेयर मध्यै । सवत १८५७ वर्षे । मिति मिगसर वदि ६ शुक्रवारै को मु० लछमणजी वाचनार्थ ।

दूहा

पोथी प्यारि प्राण थी, हर हीया को हार।
लाख जतन करि राखज्यो, पोथि सेति प्यार ॥१॥

श्री गणेशदेव शाहाय छै जी। श्री।

५२१- १०६५४ (१५) ॥ दं० ॥ **अथ श्री चंदकुंवर री वात लिख्यते**

प्रारम्भ – समरूं सरसति सामणी, गणपत देव कु लागुं पाय।
कर्त्तानाम परतापसिंघ की आग्या पाय, कीनी कथा रसककविराय ॥१॥

परतापसिंघ कु माण लै, हुंकम कीयो कग वाच।
हस कवि सू असै कह्यौ, कछु ईक वात सुणाय ॥२॥

सत्र कुं लगे सुहामणी, रच सजोग सिणगार।
मुरखहु को मन हरे, सरव रय(स)न को सार ॥३॥

सतरह सै चालीस मे, तेरस पोसज मास।
गुण कीनो कर वाच कै, भोगी पुरण आस ॥४॥

अन्त – परतापसिंघ सुरतसिंघरो, वसत सदा सुहाय।
चंद वात पूरी हुई, कर(रि) सकलकविराय ॥६३॥

जोव वछ जुग २ जीवो, घणो होत परिवार।
नाम धरचो परतापसी, या गुण को गुण सार ॥६४॥

पुष्पिका – ईति श्री चंदकुमर री वात सपुरण ॥
उपरली पोथी तण माफक लखी छै। खोटी खरी तो श्री परमेसर जाणे ॥ सवत् १८७४ शाके १७३६ माह वद ८ श्रुक्रवासरे।

६२४ १२३५६ **छन्दसार**

प्रारम्भ – ॥ श्री गणेशाय नम ॥ अथ छदसार ॥

दोहा

कृष्ण चरन चित आन, कहु सुमति पिंगल कछु।
जिहतै छदै हि जान, प्रभु गुन जामैं वरनियै ॥१

पोडस कर्म चौपई

प्रथमहि सख्या करम बताय। प्रस्तारह सूची चित लाय।।
पुनउ दष्टि नष्टि सुख खान। मेर पताका मरकट जान।।१।।

अष्ट कर्म ए मत्त के पुन वरनन के जान।
इह विध पोडस कर्म ए कहे सुकवि सुख दान।।३।।

अन्त .– ।। अथ वर्ण मर्कटी ।।

छप्पै

वर्ण सख कोठार, करहु सूरत गठ पकत।
वृत पकत भर आदि, एक ते अंक क्रमहि गत।
दूजी पंकत भेद, दोय घर दुगने ठानहु।
इन दोहूवन गुण, चतुर वर्ण पंकत मे आनहु।
इह अर्ध अक गुरु लघु पंकत, पच छठइ भरि सु पुन।
गुरु अक वर्ण अक सम मत्त, फक्त त्रई वर्ण मर्कट सुगुन।।५८।।

इति वर्ण मर्कटी। टीका —

वर्ण मर्कटारी वर्ण जितरा री मर्कटी करणी व्है तितरा कोठा उभा कीजै। तिरछा ६ कोठा कीजैं, सदैव उणा रै आगै इसी सख्या माडीजै। व्रत १, भेद २, मात्रा ३, वर्ण ४, गुरु ५, लघु ६, इण तरै ६ नाम लिखीजै। अठै वर्ण ३ री मर्कटी करणी है। प्रथम व्रत पंक्ति १ सु अनुक्रमे आक भरीजे (१) दूजी पक्ति भेद री प्रथम २ घर ने दूणा करने आगै जितरा कोठा हुवै सो भरीजै। २।४।८।१६। ३२।६४। इण रीत भरीजै (२) हमे चोथी वर्ण पक्ति। इण ने पहिली पक्ति ने दूजी पक्ति रा आक गुणाय ने भरीजै। २।८।२४।६४। इण रीत भरीजै (४) हमे गुरु लघु री ५।६। पक्ति भरीजै। तठै वर्ण पंक्ति रा आक आधा करने दोनु ५।६। पक्ति भरीजै। १।४।१२।३२। इणरी ५।६ पक्ति गुरु लघु री भरीजै। (५-६) अब ३ मात्रा पक्ति भरीजैं। अठै वर्ण पक्ति ने गुरु पक्ति रा आंक भेला करने भरीजे। ३।१२।३६।९६। इण रीत मात्रा पक्ति प्रस्तार १२ मात्रा, ८ अक्षर, ४ लघु, ४ गुरु। तीन वर्ण रा ८ प्रस्तार, ३६ मात्रा, २४ वर्ण, १२ गुरु, १२ लघु। च्यार वर्ण रा १६ प्रस्तार, मात्रा ९६, वर्ण ६४, गुरु ३२, लघु ३२, इण रीत उत्तर दीजै।

वर्ण ३ री मर्कटी यत्र

१	२	३	४	५	व्रत
२	४	८	१६	३२	भेद
३	१२	३६	६६	२४०	मात्रा
२	८	२४	६४	१६०	वर्ण
१	४	१२	३२	८०	गुरु
१	४	१२	३२	८०	लघु

पुष्पिका – इति षोडस कर्म सूरत मिश्र कृत छदसारे सपूर्णम् ।। इति श्री पुष्करणा ज्ञातौ पुरोहित वैणावत भवानीरामात्मज इद्रभानु कृत टीका समाप्त ।।

श्लोक·

एकोनविंशे पचदशोपि वर्षे कार्तिकमासे शुक्लदले च पक्षे ।
करौतिथोना च अर्केपिवासरे लिखत च साधुरुदेरामकेन ।।१।।
फलोधीनगरे श्रीहरमदिरे लिखित च साधु निरजनी
श्री भागवतीदाशजी तस्य शिष्योदेरामकेन स्ववचनार्थम् ।।२।।

(सवत) १६१५ का० शु० २ । श्रीरस्तु । शुभ भूयात् ।

६६० ११२८३ (२) **जसवन्तसिहजी के दोहे**[1]

प्रारम्भ – जसवत गरव न किजीयै, तज दीजीयै अभमौन ।
षट दरसण वेठा रहा, अ(उ)डगन चढी वीमौन ।।

कविनाम कला रहै कालु कहै, मुठी चीणा चवाय ।
सत जाय पत छाडियै, घैवर खाय बलाय ।।

---

१ कालू द्वारा महाराजा से यथोचित सम्मान प्राप्त न होने के कारण क्षुब्ध होकर लिखे गये ज्ञात होते हैं। महाजनी लिपि मे, अनेक अशुद्धियो से पूर्ण, विषहर कोटि के दोहे आदि स्फुट छन्द हैं।

सौ कवत न एकै दुहरो. नावक कैसे तीर ।
लागत ही छिक जात है, नैक न होत अधीर ॥

वदूक वीन गुणोण अड, नैणन वीण दुरस ।
सो लगै छै लोण उर, क्रोड जीवौ न तुरस ॥

गात सुरगी गौरडी, ऊभी अग लगाड ।
सीर कु रयण मही तणौ, फल पौमीयो कीवाड ॥

जा घर कु तू कहै अपणा घर,
ता घर मै घर केऊ वसे है ।
नील वियाल विलाव विली,
विल मुसह भीतन मौह घुसे है ॥

भुछ छछुदरी छपगो छपगी,
मंकरा मंकरी तिण मौहै पसै हे ।
नै ज कियौ अपने रस कु,
अपने अपने रस सवे ई विरसै है ॥

६६१ ११६८३ **जादवरास**

प्रारम्भ :- ॥ श्री ६० ॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

दुहा

समरु रिषभ जिनेसरु, मन वंछित दातार ।
अलिय विघन दुरै हरै, वर्त्ते मंगल चार ॥१॥

सासण नायक वीर नै, नमतां नवनिध होय ।
उतपति कहु जादव तणी, सांभल ज्यौ सहु कोय ॥२॥

ढाल चौपाइनी देसी

एहीज जवू द्वीप वखाण । भरत खेत्र कोसवि जांण ॥
गढ मढिदर पोल पागारि । वन वाडी कुठाठ विचारि ॥
धन धान करि पुरण भरी । लाभै जाणै इंद्रनी पुरी ॥
सुखीया लोक वसे तिण माय । विद्दावति नामै तिहा राय ॥

हय गय रथ पायक दल पुर । वारणी राणी नित रहै हजुर ॥
सुख विलसै करै लील विलास । आयो वसत खेलणनो मास ॥
एक समै राजा नीसरचौ । निज सेन्या सेती परवरचौ ॥
वीर कुविंदक केरी नारि । राजा देखी मैहल मझारि ॥
रुपै रज्यो भुप विशेश । नयणन खडे वनमाला देख ॥
रामति रमनै आयो राय । निज मत्रीसर नै तेडाय ॥
वात कही वनमाला तणी । ल्यावो नारी मुज सुख भणी ॥
रिप चोथमलजी कहै पैहली ढाल । आगै सुणज्यौ वात रसाल ॥

अन्त – दुहा

संजम लीधो मनरली, परजन संव कुमार ।
थिवरा पासै सीखीया, द्वादसी अग वीसतार ॥१॥

सीह ज्यु सजम पालता, सुर वीर नै धीर ।
गुणरतन छवछर करै, तपीत खीयौ जिन सीर ॥२॥

तीर्थ ते नमुरे ए देसी

मुनीवर मोटा वेजण गुण गिर वारे ।
पालै पाच अचार साध गुण गिर वारे ॥
करणी करता निरमली गुण गिर वारे ।
नवकोटी धर है विहार साध गुण गिर वारे ॥१॥

जादव वंस उजवालीयौ गुण गिर वारे ।
सहै परीसा घोर साध गुण गिर वारे ॥
अत समै केवल लही गुण गिर वारे ।
मुक्त गया करम तोर साध गुण गिर वारे ॥२॥

सोलै वरस लगै पालीयौ गुण गिर वारे ।
चारत्र खडानी धार साध गुण गिर वारे ॥
अत गढ मै चालीयौ गुण गिर वारे ।
एक मास नो सथार साध गुण गिर वारे ॥३॥

मुनवर ना गुण गावता गुण गिर वारे ।
तुटै करमारी कोड साध गुण गिर वारे ।।
रिष चोथमलजी कहै साधना गुण गिर वारे ।
पाय वदु वेकर जोड साध गुण गिर वारे ।।४।।

उतपत कही जादवा तणी गुण गिर वारे ।
काइ सुत्र कथा कार साध गुण गिर वारे ।।
साचा करनैं सरद जौ गुण गिर वारे ।
पछै गानी वदै ततसार साध गुण गिर वारे ।।५।।

सुणीयौ धारचौ ज्यु दाखीयौ गुण गिर वारे ।
फेर क्यु हीक चोज लगाय साध गुण गिर वारे ।।
मारी मत सारु कह्या गुण गिर वारे ।
वले सुत्र वदै सौ न्याय साध गुण गिर वारे ।।६।।

रचनाकाल सवत १८७८ गुण गिर वारे ।
काती वद तेरम दिन जोय साथ गुण गिर वारे ।।
इणमै इधकौ उछौ हुवै गुण गिर वारे ।
तो मिछामदुक्कड मोय साध गुण गिर वारे ।।७।।

रचनास्थान नगर नगीनौ नित नवौ गुण गिर वारे ।
लोक कहै छै वाण साध गुण गिर वारे ।।
सुण सुगण नर चेतज्यौ गुण गिर वारे ।
काइ काजौ व्रत पचखाण साध गुण गिर वारे ।।८।।

पुष्पिका – इती जादवरास सपुर्ण । पुजजी श्री चोथमलजी तथ सीष बुधमलजी । लीखतु सरुपचन्द जोधपुर मधे काती वद १२ सपुर्ण ११११

७२६ १०८४७ (२८) **झगडो – पनघट को**

प्रारम्भ – । अथ झगडौ ।

कूप चडी पिणहार, दोन्यू झगड पडी ।
हरजन सागट नार, वाता वोहोत अडी ।। टेक ।।

बोली हरजन नार मोहि भर लेणं दे-री ।
लागैगी तेरी छांट जायगी गगरी मेरी ।।
तू पीछै भर लीजे ऐ कहा होत है वारि ।
ए तो जब सुगरी कह्यौ जल उठी नुगरी नारि ।।१।।

बोली सागट नारि बैसन् कब होइ आई ।
अंत हमारी जात काहा तेरै चतुराई ।।
तू पीछै भरि लीजीऐ हे सब दुनीया भरि जाइ ।
जे तू भगत राम की हे तो न्यारो कूप खिणाइ ।।२।।

तू तो सागट नारि धरम की बात न जाणै ।
हिरदै नहीं हरि नाम आपणी बुधि वखाणै ।।
सगी जीवा जूण की हे चौरासी की देह ।
मोसूं झगड्या काहा होवै हे तूं पहली भरि लेह ।।३।।

देखी तोमी नार नवा नित पाखड करती ।
पांणी पीती छाणि न्हाइ-क रोटी करती ।।
बाळी सू बूढी भई हे पाखड कीया नाहि ।
यो कुल अब ही डीगड्यो न्हाइ न्हाइ रोटी खाइ(हि) ।।४।।

मै पूज्यू राजा रांम सकल देवन कौ देवा ।
मनसा वाचा लाइ करू मैं हरि की सेवा ।।
मेरे तौ पत व्रत रांम को हे मै नही पूजू आन ।।५।।[1]

मैं धोकूं देवी देव पावू गोगा को ध्याऊं ।
करू कडाई लाफसी सदा लूंदा गटकाऊं ।।
गगा जाऊं न गोमती हे पोकर कदे न न्हाइ ।
पूजू देवी चंडका हे तन भर खाइ अघाइ ।।६।।

हरि तजि पूजै आन अन्याई उनकू कहीऐ ।
नीचन सू महानीच सग वाकै नही बहीऐ ।।
आन चडाओ खान है ऐ जान मडा को अग ।
जा घरि हरि की भगत नही हे तजीऐ वाको सग ।।७।।

---

१ तीन चरण ही हैं ।

तेरौ तो मोडीयौ बुरो नित उठ मूंड मुडावै ।
करि ऊपर जल लेह वैठ करि तिलक वणावै ।।
सिर पतर सो लीया फिरे हे सव कुल मारचो लाज ।
भाई वध कुटव को खोई हे वळती कहू मैं आज ।।८।।

कठी माला तिलक प्रभु को उजल वांनू ।
राम नाम को तेज नही कोई जग मैं छानू ।।
राव रक सवही निवै हे तिरलोकी को ईस ।
जम भी दावो ना करे हे सिर ऊपर जगदीस ।।९।।

मेरे तो घर को भलो नित कह्यौ मेरो मानै ।
राखै मेरा वाळ ऊठ कर पाणी आणै ।।
पीसै पोवै करि धरै हे मने खवाइ खाइ ।
गोवर कचरा डार कै हे कहू जव वाहिर जाइ ।।१०।।

तू तो नुगरी नार आपकै नर कू वस कीयौ ।
स्वान टूकडौ खाइ ध्रक है वाकौ जीयौ ।।
कैतो तोनै छाड दे हे कै कहू ऊठर जाइ ।
तोसी नुगरी नार को हे दरसण करे वलाइ ।।११।।

ऐक दिना कलीया को वाबो माला ले करि आयौ ।
जव ले वदी मुसल चरखलीयौ विखरायौ ।।
पाणी जाऊ न पीसणै रे चूलै करू न आगि ।
दई मारचा माला फैंक दै रे नही तो पीहर जाऊली भागी ।।१२।।

तू तो सागट नार नाव हरि को नही लीनो ।
साध सगत मै वैठ राम रस कदे न पीनो ।।
मुत हीणी वुध वाहरी हे माहा मूढ अजाण ।
जा घर साध न पूजीया हे सो घर सदा मसाण ।।१३

वोली व्याहित नार नुगरी को कीनी झूठी ।
सो वोली सोनार राम राम करि उठी ।।
रीछ भील वानर तिरचा हे राम नाम गुण गाइ ।
तेरा आन देव सू कुण तिरचौ है ऐकही देह वताइ ।।१४।।

जीती हरजन नार नुगरी कू दिष्या दीनी।
जा जैसी उनिमान आप जैसी करि लीनी ।।
गुरु - सिख भेला भया यो कर ग्यान विचार।
राम नाम परताप सू रे जीती हरजन नार ।।१६।।

।। इति सपूरण ।।

८३२ १०६२४ (७) **देवादासजी की वाणी**

प्रारम्भ – अथ साध श्री देवादासजी की वाणी अणभै लिख्यते।
प्रथम स्तुनि का – किवत – लिख्यते।

नमो अखडत राम, नमो सतगुर सुखदाता।
नमो अनतही कोटि, राम रस पीइ पिलाता।
जिनको गही-ज वोट, रहो सिर सदा हमारु।
अठ पहरचों मन मेल, सुरत धर नू रति न टारू।
देवादास बदन करै, बारू बारज जोइ।
राम गरु अर सत जन, हिरदै राखू योइ ।।१।।

इती प्रथम स्तुति को किवत।

---

१ देवादासजी की अनुभव-वाणी विभिन्न छन्दो मे अङ्कबद्ध की गई है। यथा · साखी, कुण्डलिया, रेखता, नीसाणी, चन्द्रायणा आदि। इनके अतिरिक्त कुछ कृतियो को ग्रन्थ नाम से भी अभिहित किया गया है, यथा : 'भगति भेद', पत्र सख्या ४८४ से ४८७; 'सार-असार जोगग्रन्थ', ४८७ से ४६०। इसके बाद गावा का पद शीर्षक से विभिन्न रागो मे निवद्ध १०५ पद हैं। इन रागो के नाम इस प्रकार दिये गये हैं —
राग भैरू, राग लिलत, राग विभास, राग देवगधार, राग रामगिरि, राग विलावल, अल्हीया विलावल, राग जैंजैवन्ती, राग आसा, राग गौड, राग सारग, राग गौडी, राग वसन्त, राग काफी, राग जैतश्री, राग आसासींधू, राग हींडोल, राग मगल, राग कल्याण, राग कनडौ, राग कनडी, राग धूनी, राग बिहगडौ, राग टोडी, राग पजाव, राग सोरठि, राग गिरनारी सोरठि, राग सुवासोरठि, राग मलार, तोयग मलार, राग जगली, राग मारू, राग धनाश्री, राग केदारो, राग वधावा, राग जोग-धनाश्री, राग आरती।

प्रथम गुरदेव को अग लिख्यते ॥ *

स्तुति

राम गरू सब सत कूं, देवो नावै सीस ।
वार बार परनाम है, मेरी विसवावीस ॥१॥

अग

गुरनाम

रामचरणजी गुर सही, मेरै सिरि सोधत ।
देवादास सरणै रह्या, दुवध्या सब खोवत ॥१॥

देवा दुवध्या दूरि करि, मेटै तीनू ताप ।
रामचरण पद परसता, नास होइ सब पाप ॥२॥

देवा ग्यान भगति वैराग का, आठ पहर ओदार ।
रामचरणजी बोध दे, बौहौत उतारचा पार ॥३॥

रामचरण म्हाराजि दे, गरक ध्यान अर ध्यान ।
लोभ कामना मेटि करि, निरभै करै निधान ॥४॥

रामचरणजी रचि रह्या, ब्रह्म बिछ कै माहि ।
जै कोई बैठै छांहा तलि, सो इम्रत फल खाहि ॥५॥

सतगुर का दीदार मैं, मिलै पदारथ च्यारि ।
देवादास दिल सुध सू, धारण लेवै धारि ॥६॥

अन्त – आरती ३

आरति अखड राम की कीजे । राम राम रसनां सू पीजे ॥टेक०॥
प्रथम आरति मन मतवाला । घट मैं दीपग ग्यान उजाला ॥१॥
दूसरी आरति दीरघ देख्यां । निस दिन हिरदै हरि कू पेख्या ॥२॥
तीसरी आरति तिरपति पाया । निरभै गिगनि निसाण वजाया ॥३॥
चवथी आरति चहू दिसि फूल्या । पेम पहोय परि भवरा भूल्या ॥४॥
पचवी आरति पूरण दरस्या । आतम मिलि परमातम परस्या ॥५॥
जन देवादास रे, गुर्ण म गावै । सत गुर सरणि बौहौत सुख पावै ॥६॥

---

* निरजन स्तुति एव गुरुदेव स्तुति के बाद गुरुदेव का अंग प्रारम्भ किया गया है ।

आरती ४

आरति उभै निरतरि कीजे । ऐक गर ऐक राम ही पीजे ।टेक।

मन इद्री परकति निरवाल्या । आतम देव निरतरि भाल्या ।।१।।
सतगुर सवद अधिक अधिकारा । देवादास ऐ मोखि दवारा ।।२।।

पुष्पिका – इती राग आरती सपूर्ण ।
राग ३४, पद १०५ । इति गावा का पद सपूर्ण ।

अथ वाणी की सख्या को व्योरो । स्तूति का कवित ३, अस्तूति की साखी ८२, साखी २२२६ । अग २४, चन्द्रायणा १३३ । [अन्तिम पत्र फट जाने के कारण उस पर कागज चिपका दिया गया है अत' पूरा व्यौरा पढने मे नही आता है] अग १४, सवैया आदि ६६ । अग १४, झूलणा ५२ । अग ४२, कवित २०३ । अग ४४, कुडल्या ४८२ । अग १६, रेखता ४७ । नीसाणी २ । ग्रन्थ २ (भगति-भेद, सार असार जोग ग्रन्थ), पद १०५, राग ३४ ।

देवादास दयाल की वाणी ..
सासै जाइ सब हरीराम कहै दास
। इति अस्तुति को किवत ।

दुहा

सकलन-कर्त्ता हरीराम हरि गुर दया, सत जह का हेत ।
अग लिखे अ(छी)तरैह, अतर होइ सु चेत ।।१।।

सकलन-स्थान भीलाडै मधि भावसू, सुख सति सगति धाम ।
अग वनाऐ जुगतिकरि, वाणी का विसराम ।।२।।

सकलन-काल सवत् अठारा सै सही, सैतीसा व्रतमान ।
मगिसर सूदि जू दोइज ऐह, वार शनीसर जानि ।।३।।

किवत

देवादास का परिचय
देस ढुढाहड माहि, प्रगनू वाहातरि जानू (नो) ।
कसवा मधि ऐक गाव, नाम गूटौ सौ मानौ ।
ताहा प्रगट भऐ आइ, जन जो देवादासा ।
लीया ग्यान अर भगति, वैराग धरि वौहौत उदासा ।।

जगत डरत है दूरि, निकटि नही ग्रावै कोई।
ब्रह्म देस की वात, सवद कहै वाहा वताई।
समत ग्रठारा पूरि, ऊपरि हु ग्रठाईस विलाऐ।
गिरा उचारी तव, रांम जव हिरदै ग्राऐ।
रामचरण गुर देव, जास का सिर परि राजै।
रामति देसाज च्यारि, खुसी होइ ताहा बिराजै ।।
खानाजाद गुलाम है, हरीराम तुम दासजू।
भौ वूडत मौहि राखीयौ, सतगुर देवादासजू ।।१।।

इनी वाणी सर्ब सपूरण। राम राम राम रांम*

१३४१ ११५८४ प्रत्युत्तरा (मुकरिया)

प्रारम्भ –छानउ ग्रायउ मन ऊल्हस्यउ। राति दिवस मन-माहे वस्यउ ।।
ग्राठ पुहर राखइ मुहि ग्रागल। किउ प्रभु सयण नही सखि–कागल ।।१।।

ग्राठ पुहर घण विचि सचरइ। मन रगई तसु ग्रादर करइ ।।
निस-वासर गल राखइ नारि। किउ सखि सयण नही प्रभु–हार ।।२।।

एक पलक तिण विण न विरहई। निण दीठइ स्त्री ग्रति गह-गहइ ।।
वाँह विलूधउ नही छइ कूडउ। किउ प्रभु सयण नही सखि–चूडउ ।।३।।

देखता सव जग मन मोहइ। कस-मस करन धरत तनु सोहइ ।।
रग रस रहइ मदा ग्रग लागउ। किउ प्रभु सयण नही सखि–वागउ ।।४।।

साकडी सेरी साम्हउ मिलीयउ। मुझ टालंता किमइ न टलीयउ ।।
मा-मा करता पाडी माड। सखि ए सज्जन ना वाई–साड ।।५।।

उण मो फाटी मइ श्रो फाड्यउ। सारी रातइ सेज रमाड्यउ ।।
पर उपगारी ग्रम्हसु वेवडउ। सखि ए सज्जन ना वाई–केवडउ ।।६।।

एक सरस ग्रनइ स-सवादउ। जो वन माहि जोवती लाधउ ।।
रूप रूडउ नइ मुहडइ मीठउ। सखि ए वालभ ना वाई–साठउ ।।७।।

---

* गुटके मे ग्रन्थ का लेखन-काल ग्रन्यत्र संवत् १८४८ दिया गया है।

एक अचु कउ न रहइ वारिउ । लाजिउ लोके घणु टपारयउ ।।
जण देखता आवइ निरासउ । सखी ए वालभ ना वाई–हासउ ।।८।।

एक पाडोसी मो घरि आवइ । उअइ लाभ मो विणज करावइ ।।
लाहइ विणज करतउ जाण्यउ । सखि ए वालभ ना वाई–वाणिउ ।।६।।

जिण मो चावी सो मइ चाविउ । मुझ चावती भावइ आविउ ।।
सहीज सुन्दर कुकु रोल । सखि ए सज्जन ना वाई–तबोळ ।।१०।।

जिण हु मोडी सो मइ मोड्यउ । सो मइ रयणी परहउ छोड्यउ ।।
कउ विलगउ न करइ चाचू । सखि ए वालभ ना वाई–काचू ।।११।।

जिण मोनइ पहिरी सो मइ पहिरयउ ।
उण पहिर्या मोनइ किण ही न वहीरयउ ।
कंठ विलंब्यउ न करइ भार । सखी ए वालभ ना वाई–हार ।।१२।।

जिण मोनइ चूसी सो मइ चूस्यउ । तिह चूस्यइ मेरउ कछु न मूस्यउ ।।
अति न छोटउ अति न लाबउ । सखी ए वालभ ना वाई–आबउ ।।१३।।

सरस सकोमल घणु सुहावउ । चतुरग माहे दीसइ चावउ ।।
होठ कठ मुझ लागइ मीठउ । का सखि वालभ ना वाई–साठउ ।।१४।।

छानइ पगि छमकतउ आवइ । निस भरि सूनी मोहि जगावइ ।।
पाड्यउ चटकउ खलक्यउ काकण । का सखि वालभ ना सखि-माकण ।।१५।।

प्रीत त्रिहूणउ मुझ प्रकासइ । हसइ जवुक विहूणइ हासइ ।।
अण वतलायउ झखइ इलोलउ । कह सखि सज्जन ना वाई–भोलउ ।।१६।।

प्रीत नही नइ प्रीतज मडइ । लोक सहूना चित्तज खडइ ।।
आवइ जावइ नित प्रति सवउ । कहउ सखि सज्जन ना सखि-जपउ ।।१८।।

उज्जल धवल अनइ-स सनेहउ । तेण पुरष मु लागउ नेहउ ।।
देव जोग थी गमीउ जोती । का सखि वालभ ना सखि–मोती ।।१६।।

अण तेड्यउ केडइ हुवउ आवइ । मिलवा कारण मन मइ भावइ ।।
जण देखता पाडइ आटउ । सखि ए वालभ ना वाई–काटउ ।।१६।।

एक सखी मेरइ सज्जन आयउ । आवत ही मउ अग लगायउ ।।
गत दिवस मेरइ उणमु खेल । कहउ सखि सज्जन ना सखि–तेल ।।२०।।

एक सखी मेरइ सज्जन आयउ । आवत ही मइ मुख लगायउ ॥
मुख लागत ही दिद्धउ मान । कहउ सखि वालभ ना सखि-पान ॥२१॥

पुष्पिका – सवत १७०२ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे प्रतिपदा तिथौ श्री उपकेश गच्छे कुकुदाचार्य सताने भट्टारक प्रभु श्री कक्कसूरिजी विजयराज्ये विनेय मुनि हर्षसुन्दरेण लेखि लावीया मध्ये लिपि कृत ।

१३४३ ११५८२ **प्रबोध चन्द्रोदय नाटक** *

प्रारम्भ – श्रीरामाय नम । श्रीगणेसाय नम ।
॥ ग्रन्थ चन्द्रोदय लिखित ॥

अभिनद नु परमार्थ कियौ । अरु ह्वै गलित ज्ञान रस पियो ॥
नाटक नग चित मै वस्यौ । ताहि देखि तन-मन उल्हस्यौ ॥१॥

कृष्णभट करता है तहा । गगा सागर भेटी जहा ॥
अनभे कौ घर जानै सोई । ना सम नही ववेकी कोई ॥२॥

तिन प्रवोधचन्द्रउदै कियौ । जनु घट दीप हाथ कर लियौ ॥
करणी सू रमु पावहि स्वाद । कायर और करहि प्रतिवाद ॥३॥

इन्द्री उदार पराइण होई । कवहु पै न रीभै है सोई ॥
पच तत्व अव्यक्त मन धरचौ । तिहि महि नाटक विस्तरचौ ॥४॥

---

* इस नाटक मे सुमति, विवेक, श्रद्धा एव शान्ति धारण करने मे ससार के मायाजाल से मुक्त होने का मार्ग बतलाया गया है । नाटक मे काम, रति, विवेक, मोह, माया, अहकार, लोभ, तथा सुमति, करुणा, क्षमा, सतोष, श्रद्धा आदि गुणो को पात्रो के रूप मे प्रस्तुत कर रूपक बाधा गया है ।

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित 'हस्तलिखित हिन्दी पुस्तको का सक्षिप्त विवरण, भाग १' मे प्रवोधचन्द्रोदय के कोई आठ कर्त्ताओ के नाम दिए गए हैं, किन्तु मल्हकवि अथवा मथुरादास का उल्लेख नहीं है । प्रस्तुत कथा बहु चर्चित होने के कारण जैन एव अजैन दोनो ही वर्ग के कवियो ने इसे अपनाया है । कवि मल्ह ने कृष्णभट्ट की कृति के आधार पर ही प्रस्तुत कृति की रचना करने का स्पष्ट उल्लेख प्रारम्भ मे ही किया है ।

अतर नाडी सोखै वाइ । अरु आनद समुद्र समाइ ॥
विस्व चक्र महपति तन होई । पंडित नाम कहावै सोई ॥५॥

गुरुनाम जब वर खेमचन्द्र गुर दियौ । तब आरभ ग्र थ कौ कियौ ॥
वह प्रवोध उपतिष्ट्यौ आय । अतक्ार तिनि द्यात्यौ खाय ॥६॥

भितर वाहर कहि समुझावै । होइ चतुर तापहि लखि आवै ॥
जो या रस कौ वेता होई । या महि खोजे पावै सोई ॥७॥

कविनाम मथुरादास नाम निस्तारचौ । देवीदास पिता को धरचौ ॥
अतरवेद कोल मै रह्यौ । तीजो नाम मल्ह कवि कह्यौ ॥८॥

ताहि सुनत अदभुत रुचि भई । निश्चै मन की दुविधा गई ॥
जितनै पुस्तक प्रिथ्वी आहि । यह श्री कथा सरोवनि ताहि ॥९॥

यह निज वात जानियौ सही । परचै प्रगट मल्ह कवि कही ॥
पोथी एक पहूची आनि । ज्यू ह्वा त्यू इह्वा राखी वानि ॥१०॥

रचनाकाल सोरसै सवत जव लागा । ताकौ करत वरस एक अर्ध भागा ॥
कार्तिक कृष्ण पछि द्वादसी । ता दिन कथा चित्त महि वसी ॥११॥

जै हु कृष्ण भगति नित करौ । वासुदेव गुर मन महि धरौ ॥
तौ यह मोपहि ह्वै जो तिसी । कृष्णभट भाखी है जिसी ॥१२॥

दोहा

मथुरादास विलास यह, जै रमि जानै कोई ॥
इस रस वीधौ मल्ह कहि, वगदनि वहुरि न होई ॥१३॥

जव ज्यू चन्द्र अवासा होइ । तव त्यू तिमर न देखै कोई ॥
तैसै ज्ञान चन्द्र परकासै । ज्यू अज्ञान अधेरौ नासै ॥१४॥

पर्मात्मा प्रकट हे जाही । जानो उहै महादेव आही ॥
ज्ञान नेत्र* तीजौ तव होई । मृग त्रिष्णा देखै जग सोई ॥१५॥

---

* प्रथम पत्र के उपर्युक्त छन्द वाद मे नवीन पत्र पर लिख कर पाठ पूरा करने की दृष्टि से जोडे गये हैं ।

अनभै ध्यान धारना करै । समिता सील माहि मन धरै ।।
इहि विधि रमि जौ जानै सही । महादेव मन वचन कर्म कही ।।१६।।

कथा सनवध

राय गोपाल चद्र व्रत लीयौ । तिन सव राज सखा कूं दीयौ ।।
क्रित क्रित ब्रह्मह सौ कह्यो । आपु निरारभ ह्वै रह्यौ ।।१७।।

परमात्मा गुपालहि मानि । क्रित ब्रह्म जिय आत्मा जानि ।।
राजा क्रित ब्रह्म है जैसौ । अव हौ वरनि सुनाऊ तैसौ ।।१८।।

नव द्वारा सरवगी देस । तिहु लोक ग्रामी त्रु नरेस ।।
महा ऋग्र कछू कह्यौ न जाइ । दिदि मान नट लीयौ वुला(इ) ।।१९।।

तन आयस भूपाल हि दीयौ । नौ रस नाच सवै तुम कीयौ ।।
साति निरति दिखावैहि जैसै । अनभै ना दिखावेहि तैसै ।।२०।।

नट ऊवाच

जो गुन देख्यौ सुनौ न होइ । सो रसना चिन सकई कोइ ।।
सुनत वात राजा रिस भयौ । क्यू रे यहु रस पृथ्वी गयौ ।।२१।।

कै तू नाचि दिखावहि ताहि । कै तू दूरि दैस त्याग लै जाहि ।।
तव नट डरचौ वीनवै ऐव । कछु अवधि हम दीजै देव ।।२२।।

राजा जवहि अवधि दिन दीयौ । नटनि पयानौ दक्षण कू कीयौ ।।
गगासागर पहुच्यौ जाइ । तहा कोऊ रह्यौ समाधि लगाइ ।।२३।।

अन्त – तव आकाश भयौ जैकारु । अरे वछ मिलि गयौ विकारु ।।
पुरप प्रगट परमेस्वर आही । वछ विवेक जानिये ताही ।।६६।।

अव प्रभ ये सुखि तुम धरीयौ । चद्र प्रवोध उदै तव करीयौ ।।
सुमति विवेक रु सरवा साति । कामादिक काट नजु भ्रात ।।६७।।

इनकी क्रिपा पवल मन भयौ । जो हौ आदि सोई फिरि ठयौ ।।
विष्ण भगति तै पहुची आई । (पक्ति छूट गई है)
तेरै परमादा । कृति कृति भयौ मिट्यौ अनवादा ।।६८।।

अवनि हि सग रहौगो एही । हू भयौ ब्रह्म भूजिहौं देही ।।
विष्ण भगति तू पहूची आइ । कियौ आनन्दज सदा सहाई ।।६९।।

अरु चिरकाल मनोर्थ पूजे। गए सत्र साल हे दूजे॥
जैं नर बरति बासना होई। ताते पर और नही कोई॥७०॥

अद्वीत राज अभै पद लह्यौ। अच्युत चितवत अच्यित भयौ॥
जिम रस ईस्वर सनक सनदा। अरु वासिष्ट भेद ताहि बदा॥७१॥

कृष्णभट सोई रस गाता। मथुरादास कहै सोई बाता॥
वदे गुर गोविंद का पाई। मति उनमान कथा सो गाई॥७२॥
[४७२]

पुष्पिका :- इति श्री मल्ह कवि विरचिते पठते हरते पाप। श्रुत्वा मोक्षि दाईक जोगारभभवेसिधा आवागमन न वरतते। इतिश्री चद्रउदय प्रवोध पष्टमो अक सपूर्ण समापता।४७३। सवत् १७१७ मिति वैसाख वदि सात्यौ। लिखत खेमदास नागपुर मध्ये। पठनार्थं हरिरामदास। सुभ भवत् श्री श्री श्री श्री श्री

१३५३ १०८४८ (८) प्रश्नोत्तरी भाषा

प्रारम्भ - अथ ग्रन्थ प्रस्नोतरी लिख्यते॥ टीका सजुगत॥

दूहा

गुरू संत परब्रह्म कू, मम जु करत परनाम।
प्रस्न होइ दयौ प्रागि अति, वदत वचन अभिराम॥१॥

सदगुर दाइक सरब सुख, विघन हरन सब सत।
मंगल कारक ब्रह्म एह, तिहू ऐक भजि कत॥२॥

आचारज सकर तणू, ग्रन्थ प्रस्नौतर नाम।
तिनकी भाषा कहैत हू, हरि कवि पूरण काम॥३॥

राम नाम कलि पत्र है, सपति सरव तम झारि।
कविता सिधि निधि मुकति जू, सब भजता की लार॥४॥

प्रस्न उतर दोन्यू जुगल, सकर वचन रसाल।
ममोखी जन उरि धरो, मणि रतना की माल॥५॥

वदन वालकराम करि, उचरत गिरा ववेक।
समोधन अब होत है, सुणौ सकल चित टेक॥६॥

श्लोक

अपारससारसमुद्रमध्ये समभ्र(ज्ज)तो मे सरण किमस्ति ।
गुरो कृपालो कृपयावदैत(तवैव) विश्वेस पादाबुजदीर्घनौका ।।१।।

टीका

सिखो उकत – दुहा

अपार समुद्र ससार मै, डूबत नहचै ऐव ।
कू ण सरणि हम ऊवरू, को हो क्रिपाल गुर देव ।।१।।

गुरो उक्ति – अरेल

विस्व ईस ऐक राम ताम पद कवलजू ।
वड नौका एह जानि ध्याइ होइ न्रिमलजू ।।
या चढि उतरे पार समुद्र ससाररे ।
परिहा सिष्य सरणि एह तोहि सोही उर धाररे ।।१।।

अन्त – ग्रन्थो किवत

ग्रन्थ-माहात्म्य प्रस्नौतर एह ग्रन्थ ज्यौ उर धारत वड भाग ।
इनमै सब तत्व वुस्त(वसत) है ग्यान भगति वैराग ।।
ग्यान भगति वैराग और भी सति सति भाखी ।
नीति अनीति विवेक वदत बाधा नही राखी ।।
परम आनद वरतै मही ग्मै मनो अति लाग ।
प्रस्नौवर एह ग्र थ ज्यौ उरधारत वड भाग ।।२।।

दुहा

सकराचारज भाखीयौ, ग्र थ प्रस्नौतर नाम ।
वडौ अरम एह जानीऐ कलि जीवन विसराम ।।१।।

सकराचारज सकर कौ, भऐ अनभौ अवतार ।
पाखड वहड मै लोक मै, कीनौ आड पसार ।।२।।

जिन ए ग्र थ वखानीयौ, मित्र दाम जन काम ।
कछू कछू भाषा जास की, करी जू वालकराम ।।३।।

स्वामीजी श्री सतदास, ताप्रजि कृपाराम ।
जिनके रामचरण सिख, सहू नमम विसरांम ।।४।।

टीकाकार तिनकी अग्या भाखीयौ, टीका बालकराम ।
सतदाम की सरणि मैं, जपि करि रामो राम ।।५।।

सुणीयौ ग्यानी पिडना, पुनि जू सवही साध ।
एह भाषा लघु दीरघ जो, लीज्यौ कर समाध ।।६।।

छुदर मेरी बुधि जू, भाख्यौ घटि वधि एह ।
अरथ वचन वालक वदै, मात समझि सव लेह ।।७।।

सकर तुम भाषा तणू, तुमही जाणू भेव ।
जो मोकू तुम भाखियौ, सो मैं भाख्यौ एव ।।८।।

तुम सकर सरवगि हो, अतरजामी राम ।
ऐंही खम्या प्रभु कीजीयौ, घट वदि वचन विराम ।।९।।

ऐह ग्र थ प्रस्नोतरी, सकर भास अगाध ।
टीका वालराम कृत, गुर मीठाराम प्रसाद ।।१०।।

रचनाकाल एह ग्रंथ चित धारिया, नहचै होइ कारज ।
समत अठारासै मही, एक वीस व्रतमानज ।।११।।

फागण वदि एकादसी, वार सनीसर जान ।
(.. . .. ...) ।।१२।।

नग्र भीलाड़ा मधिजू, टीका भऐ प्रकास ।
सुभ मंगल आनंद करि, आत्मराम विलास ।।१३।।

पुष्पिका :– इतीश्री प्रस्नौतरी रत्नमाला ग्रथ सपूरण । सकाचारज व्रिरचिताई भापा कृत वालकराम स्वामीजी श्री रामचरणजी की अग्या सू । वाचै सुनै ज्यानै राम राम ।

१३७० १२०६९ (५) प्रिथीराज चहूआण रासउ रसाल
[बहुचर्चित धारणोज वाली प्रति]

प्रारम्भ – ।। ई० ।। श्रीसारायै नम ।।

प्रथम मगल मूल सुत, वीय सुतर एकु धर धम्म उभ्यो ।
त्रिप्त दुशामिय त्रिपुर वर्ण पत्त मुखा पत्तो श्रुम्यो ।।

कुसम रग भारहि सुफल, उकत्ति अलब अमीर।
रस दरसन पारस्सर मइ, श्री(ई)सग्र सम कवि कीर ।।१।।

भुजगी छद

प्रथम भुजगी सुधारि ग्रहण, जिणे नाम एक अनेक कहण।
दुतिय छभय देव ता जीत्र तेस, जिणे विश्व राख्यो वल मित्र सेस ।।२।।

त्रिनिय ता(भा)रथी व्यास भारत्थ भख्यो, जिणे उत्त पारत्थ सारत्थ सख्यो।
चवे सु केदेव परिच्छच्छ पाय, जिणे उद्धरे सव्व कुल वसराय।
नले रूव पचमति श्रीहप(र्ष) सार, नले राय कठ द नैषद हार।
कवे कालदास छ भाषा समुद्द, निय सेतुवधु सु भोज प्रवध।
सत दड मामाल लालिय कवित्त, जिणे वुत्तरग सुणग सरित्त।
गिरा शेष बा-(ण) कवी कव्व वध, जिणे शेष उचिष्ट कवि चद छद ।।३।।

अन्त – चद फुरमाण मागिवे कु जाइ। गोरी बादिसाहि प्रिथीराज फुरमाण मागइ। तव हि फुरमाण देवे कु बादिसाहि हजूर हुउ। तव चाद(चद) राजा सु कह्यो।। राजा प्रिथीराज सवदेश्वर सुरताण सुइ मुख फुरमाण देता हइ।

कवित्त

भयो इक्क फुरमाण इक्क बाण जि गुण मजिउ,
सुइ सवद्द अरु बान अग्र सु अविचल करि वजिउ।
भयो वीय फुरमाण ग्वचि रख्यो श्रवण वर,
तीय सबद सुणि निसुणि निमुणि मुण्यो सुलताणे परचो घर।
लइ दसण रसण दस रध्रि हुइ वहु कपाट विघग सघण,
मुलताण परचो खा(न) पुकारयो त दिन चद राजन मरण ।।४१५।।

परत भूमि सुलताण खान मिलि खलक पिट्टि सिर,
मइ वरजिउ वहु वार साहि दुसमन अ सभवर।
भोग छडि करि जोग भट्ट आसोजु सधि करि,
वचन विधि हक मय लियो गोरीह नरिद हरि ।।
टूक मझि टुट टुकरे करहु तव सु साहि गोरहि घरउ,
हजि जाण खान इम उच्चरिय अवक चित्त कोई कवि करउ ।।४१६।।

दूहा

सार विसि करि पलक खिजि, मरणहु चद नरिंद ।
रासेउ रसाल नव रस निवधि, अचरिजड दु फणिंद ।।४१७।।

पुष्पिका :– इतिश्री कविभट्ट चदवरदाई कृत राजा श्री प्रिथीराज चहूआण रासउ रसाल सपूर्ण ।। ग्र थाग्र (थ) १३०० सिलोक छड । श्रेयस्तु । लेखक वाचयो । यादृश पुस्तके दृष्ट तादृश लिखितमया । यदि शुद्धमंशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ।।१।। श्रीरस्तु ।। श्रीकल्याण ।। ।। सवत् १६६७ वर्षे शाके १८३२ प्रवर्त्तमाने आसातु मासे शुक्ल पक्षे पचमी तिथौ ।।

महाराजाधिराज महाराजा श्री श्री कल्याणमल्लजी तत्पुत्र राज्य श्री भाणजी तत्पुत्र राज्य श्री भगवानदासजी पठनार्थ । श्रेय कल्याण । श्री शुभ भवतु ।।

१४४४ १२५०३ भक्तरतन

(महाजनी लिपि मे)

आरम्भ – ।। श्री गणेशायन्म ।।

राग–अरज भावन

तुम सायव हु दास मैरै रामजी ।
तुमही करो नीरवार सुणो करतारजी ।।
पानी मु पैदा कीयो मेरा रामजी ।
नख सख सुज वनाय सुणो करतारजी ।।
गरभ माय रच्या करी जठर अगन सु वचाय ।
सुणो करतार जु ।।
जनम त(तैं)ही पै पाईया मैरै रामजी ।
दसन कीनै अनपान सुणो कीरतारजी ।।
लगी जगत की बाल मैरै रामजी ।
वाहर आके वीसरचा मैरै रामजी ।।

कर्त्तानाम जैदासी जैदास तैहारी । गुर मानदास वलीहारी ।
गुर अवगत सव गत धरै । गुर आप तरै पर तारै ।।

गुरु-महिमा गुर दयावंत उपगारी। समज्यावत नर अरु नारी ।।
गुर राम भगत करवावैं। गुर मारण आन चुडावैं ।।
गुरा ग्यान भाण दरसावैं। गुर तमर अग्यांन नमावैं ।।
गुर अै दान कै करता। गुर दुख दालीदर हरता ।।
गुर पारब्रम परमैसर। गुर सरब माय सरवैसुर ।।
गुर अधम उधार कहावैं। भव जल सु पार लगावैं ।।

अरल

सत गुर अेह सुभाव, करैं भो पार सु।
ग्यान नाव बैठाय, बचावैं धार सु ।।
मैटैं करम कलैस, रखैं जम मार सु।
हरीया अैसैं दीन, दयाल मीलावैं सार सु ।।२६।।

दुहा

फीता (गीता) मै ईच्या भई, अव्यक्त कैसोय।
अव्यक्त अभास मील, मह तत्व उपजाय ।।२७।।
x x x x ।
अह तत्व ऊकार है, भयै जु तीर गुण ताये ।।२८।।

त्रीगुण तै तीर दैव जो, ब्रमा त्रीसन महैस।
तीन लोक चवदै भवन, कीनै नाना भैस ।।२९।।

च्यार खान कै जीव सव, चोरासी लख जात।
जनम मरन डोरी लगी, जोन जोन भुगतात ।।३०।।

ब्रमा जो उतपत करैं, वीष्नु करैं प्रतपाल।
सकर करैं सीधारही, येह माया कौ ख्याल ।।३१।।

अन्त – चोपई

सतगुर मानदास वलीहारी। तुमरी सरन लह्यो सुख सारी ।।
जै जै सतगुर परम उदार। दरसायो मोही ब्रह्म अपार ।।२२५।।

कहा लग अस्तुत करु तुमारी। गुन गभीर मेहमा अत भारी ।।
मै वड मुरख कछु न जानु। अत लघु वुध जो कहा वखानु ।।२२६।।

कवी की रीत कछु मै नही जानु। घट वड अछ नाही पीचानु ।।
भक्तरतन की पोथी कीनी। सो सब कृपा तुमारी चीनी ।।२२७।।

जब तुमरै मन भयो हुलासा। मम हिरदै मै करयो प्रकासा ।।
नीतो कतीयक बुध हमारी। वानी सीक्षा जौ करत उचारी ।।२२८।।

दोहा

कवीजन सु अेह बीनती, करौ पुत्रवत नैह।
भुल चुक जो है कछु नीज कर सुध कर लैह ।।२२९।।

छप्पै

ग्रन्थ-माहात्म्य भक्तरतन सुख सार, सबन के सुख की दाता।
पढै सुनै चीत लाय, सो होय सबन मै ग्याता ।।
उपजै प्रेम प्रकास, रहै नीज आनद राता।
पावै परम हुलास, कृष्न कै ध्यान समाता ।।
होय लाल मिल लाल सु, रहै न दूजी आसा।
फीर नही आवै जगत मै, करै अमरपुर वासा ।।२३०।।

संकट पीडा सब नसै, आवा गवन जो खोय।
पढै सुनै जो प्रीत सो, धन्न सपत सुख होय ।।२३१।।

रचनाकाल जैठ महीनो सुकलपछ, मगलवार सु वार।
अेकादसी हरी बरत कु, भक्त रतन नीरधार ।।२३२।।

अष्टादस सेतीस को, समत सुध बीचार।
सतगुर कै परतापसो, वानी करी उचार ।।२३३।।

पुष्पिका – इती श्री भक्तरतन पोथी जैदास कृत सपुरण। स० १९३२ का मती मा० वद १२ दीतवार नै सपुरन करी। वाचै जीनै राम राम छै।

१४५६ १०८७२ (२) * भक्तमाल

प्रारम्भ – ।श्रीरामजी ।। अथ श्री श्री पूरणदासजी म्हाराज की भक्तमाल लिखते। स्तूत (स्तुति)

---

* इससे पूर्व रामसनेही सम्प्रदाय के सिंहथल खेडापा पीठ के पट्टधर तथा श्री पूरणदासजी के गुरु श्री दयालदास कृत 'भक्तमाल' है।

साखी

निमस्कार हरि गुरु जनां, आद अंत मध तास ।
तिनही कूं नित करत हैं पूरणदास प्रणाम ।।१।।

प्रणम करूं कर जोर कै, रांमदास गुरु द्याल ।
सब संता सिर न्याय हो, परब्रह्म प्रतिपाल ।।२।।

रिछक राम दयाल हो, अवर न जग मैं कोय ।
औठभण परमात्मा, सब कर्त्ता सिद्ध होय ।।३।।

अपनो विरद विचारजो, दया सिंधु माहाराज ।
कठिन कलू यह काल मैं, मेरी तुमको लाज ।।४।।

अरथ भेद वांणी वचन, जोड जुगत नहि काय ।
सिसु वाणी ज्यूं त्यूं कहै, नीकै समझै माहि ।।५।।

कठिन कली ओछी अवधि, होय विघन नहि पार ।
पिता धरम प्रति पाल कर, लीजौ आप सुधार ।।६।।

चौपई

विष्णु ब्रह्मा सिव आदहु कहियै । पोषण भरण जीव सोइ लहियै ।।
वेद व्यास बगता सोड नायक । सुख दे सर्व सिरोमण लायक ।।७।।

सेसनाग की आद न अंता । कुमेर बारद भक्ती पंथा ।।
सिनकादिक च्यारूं अवतारं । आदि श्रृष्टि मे आर न पारं ।।८।।

x x x x x

गुरु- अमीराम पुन रुखिया वाई । और अनंत जन सरणै आई ।।
द्वारा जन हरदेव पाट ता राजै । मोतीराम विमल सुख जाजै ।।४८।।

ता गादी रुघनाथ विराजे । ग्यान ध्यान जप तप सत साजै ।।
एक जीव मैंहैमा काहा गावै । हरि संतन कौ पार न पावै ।।४९।।

जन हरिराम परमपद पूगा । रामदास सिख रवि ज्यूं ऊगा ।।
तम अग्यान अघ भागे दूरा । विकसे जल सरोज उद सूरा ।।५०।।

तिन की साखा अति विस्तारू । गुर दयाल पद सिर पर धारू ।।
गादी दास दयाल विराजै । अनभव गिरा मेघ ज्यूं गाजै ।।५१।।
मेरा नाम सिरोमण सांई । डूबत तार लियौ भव मांई ।।
पच मात ज्यूं है वड भागी । माता सुंदर यूं अणरागी ।।५२।।

अन्त .- चौपई

पीथारांम सिख कहु भाई। कनीराम दूदा सुखदाई ।।
कोठारी गलतांन कहीजै। पीथल बहु परभाव लहीजै ।।१०३।।

परसरांम सिख सेवगरामहि। निरभै परमहस सिध कांमहि ।।
परिब्रह्म अस प्रगट मुख नूरा। सेवगराम परमहस पूरा ।।१०४।।

मेघोदास सिख सिवरांमा। त्याग वैराग परमहस नामा ।।
लालदास पट्टत सिख भारी। घ्यानदास जन धीरज धारी ।।१०५।।

मनीराम परसाद प्रभावा। क्रपाराम पाद्याराम सुभावा ।।
जनसोभा सिख साजूरामहि। कुल अभिमान त्याग सुख धामहि ।।१०६।।

निरमलदास कहू सिख सोई। वचन राम उर सीतल सोई ।।
बुधाराम धीरज परतापा। हेमदास गुण अधिक मिलापा ।।१०७।।

जन कालू सरणै विश्रामा। प्रागदास अरु कासीरामा ।।
कुशलदास अरु नरसिंघदासा। जगत जजाल छोड सब आसा ।।१०८।।

मनीराम मालवै अस्थाना। उरजन उदैराम सिख जाना ।।
राघोदास कहू सिख सोई। चैनराम ईम्रत भल जोई ।।१०९।।

सहजराम के साधूरामा। रूपा विजैराम सू लामा ।।
हरीदास सिख कहो सुइाई। लच्छीराम कुसला गुरु भाई ।।११०।।

गाव समदडी प्रेमदास जन। ता सिख लाडूराम जन ।।
ग्यानदास सिख दास कल्याना। दोलत को सिख धीरम माना ।।१११।।

दास संग्राम सिख रामहुचद। दयारांम पायो पर्मानंद ।।
गोविंद सिख चैन माहारामा। जग जल मज कवल ज्यू धामा ।।११२।।

वखतराम सिख तुलसीदासा। चतुरा आतमरांम विलासा ।।
वस्तराम सिख भाखूं तेही। तुरसीदास कल्याण वदेही ।।११३।।

साखा अनत अनत है भारी। सव वर्णो कहा बुध हमारी ।।
मोकू दोस न दीजो कोई। वाल विलास कियौ है सोई ।।११४ ।।

मेरा सतगुर कहियै सम्रत। अतग जान पिवायो इम्रत ।।
कहा अग्रज कहा भाग हमारो। पद रज पनी उठावण हारो।। १५१।।

दोहा

सतगुर द्याल प्रताप तैं, ग्रन्थ उचारन कीन ।
मेरै मन उपज्यो हरख, मो तुछ बुध मत हीन ।।११६।।

मैं तो कछु समझू नही, देस काल अनुसार ।
घट वद अक्षर मातरा, कविजन लहो सुधार ।।११७।

क० (कवित्त)

रामदास गुरु द्याल, सदा उर ध्यान हमारै ।
तीन काल के संत, राम निज मित्र उचारै ।।
पेमी नेमी सुवद, पर्महंस वृकत वदेही ।
परवृती निर्वृत, भजै नित रामसनेई ।।
के दीर्घ के अनुज लघु, सार सार गुण लीजीयै ।
पूर्णदास प्रणाम नित, मम उर वास वसीजीयै ।।११८।।

इति भक्तमाल सम्पूर्ण ।

अतिरिक्त सवैया

ता दिन तैं यह देह धरी, दिन ही दिन पाप कमावन हारो ।
नीच क्रिया बुध हीन मलीन, कुचाल अचार विचारवु हारो ।।
औगुन कोनहि ओर कहा लग, ऐक भरोसो है आस तुमारो ।
हो हरिया विनती इतनी, मुख सूं कहौ पूर्णदास हमारो ।।

१४६१ १२०२० भगवद्गीता सभाषा टीका

प्रारम्भ – ।। श्री गणेशाय नम ।। अथ श्री भगवदगीता भाषा टीका दोहा सहित आनदराम कृत परमानद प्रवोधो लिख्यते ।।

दोहा

हरि गोरीश गणेश गुरु, प्रनवौ सीस निवाई ।
गीता भापारथ करौ, दोहा सहित वनाय ।।१।।

सुथिर राज विक्रम नगर, नृपति नृपति अनूप ।
थिर थाप्यो परधान इह, राज सभा को रूप ।।२।।

कर्त्तानाम नाजर आनदराम के, इह उपज्यो चित चाउ ।
गीता की टीका करी, सुनि श्रीधर के भाउ ।।३।।

आनदराम अनूप को, नाजर अति परवीन ।
सुघर सुधीर विचार कै, जन हित करी नवीन ।।४।।

आपहि आनदराम यह, टीका रची वनाई ।
निस दिन हरि हिरदे रहै, गिरधर कृष्ण सहाई ।।५।।

गीता ग्यांन गभीर लखि, रचि जु आनंदराम ।
कृष्ण चरन चित लगि रह्यो, मन मै अति आराम ।।६।।

आनद मन उछव भयो, हरि गीता अविरेखि ।
दोहारथि भाषा लिखि, वानी व्यास विसेखि ।।७।।

जो इह गीता समझि कै, हिरदै धारै सौई ।
ब्रह्म मगन निस दिन रहै, कर्म लियै नहि कोई ।।८।।

। इति आदि दोहा सपूर्ण ।। अथ न्यास । . .

अन्त :– दोहा

जोगेश्वर श्री कृष्णजु, अर्जुन हैं या ठौर ।
तहा विजय अरु नित है, राज सपदा और ।।७८।।

कृष्ण कृपा तें होत हैं, भक्त युक्त को ज्ञान ।
तातै वंधन ते छुटै, यह गीतारथ जान ।।१।।

इहि अठारमैं ध्याय मैं, कह्यौ मोक्ष सन्यास ।
अर्जुन सौं श्रीकृष्णजु, जानि जानि अपनौ दास ।।२।।

कह्यौ मोक्ष संन्यास जो, कृष्ण कवल दल स्याम ।
उर मैं धरि गिरधरन कौं, वरन्यौ आनदराम ।।३।।

माहात्म्य यह गीता अद्भुत परम, श्री मुख कीयौ वखान ।
वार वार निरधार कि, यह परा भक्त कौ ज्ञान ।।४।।

भक्ति वस्य श्री कृष्ण जु, यहै करी निरधार ।
भक्ति करै वहु भाति सौं, यहै वेद को सार ।।५।।

भगवद्गीता कोऊ पढै, और सुनै चित लाइ ।
पावै भक्ति अखडि सौ, श्री हरि सदा सहाइ ।।६।।

गीता प्रति दिन उच्चरै, सद सुच्छर्यंग माहि ।
मनसा वाचा कर्मना, तिहि मम कौऊ नाहि ।।७।।

जो कोऊ चाहत भव निरचौ, कृष्ण चरण कौ पास ।
और सकल श्रम छाडि कै, गीता करै अभ्यास ।।८।।

लोक कृतार्थ कै लीये, सव ज्ञान कौ सोधि ।
आनदराम ही यह कर्यौ, परमानद प्रवोध ।।६।।

परमानद प्रवोध यह, कीनौ आनदराम ।
पढै गुनै याकौं सुनै, सो पावै प्रभु धाम ।।१०।।

नारायण निज नाम कौ, धरचौ देख कै ध्यांन ।
अपनी आनदराम कौ, भक्ति दइ भगवान ।।११।।

जव लगि रवि ससि मेरु महि, अगनि उदधि थिर होइ ।
परमानद प्रवोध यह, तव लगि जगि मैं जोइ ।।१२।।
तव – – – – – –

पुष्पिका – (इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु व्रह्म विद्याया योग शास्त्रे) श्री कृष्णार्जुन सवादे भाषा टीकाया (दोहा) आनदराम कृत परमानद प्रवोधे मोक्ष सन्यास नाम अष्टादशोऽध्याय ।।१८।। इति श्री भाषा सपूर्ण ।।

सवत् १६०६ रा मिति भाद्रवा दुतिय क . ७ मि सोम वारे, लिखित गुसाईजी श्री मानपुरीजी देवपुरी पठनार्थ गुसाईजी श्री शाक्षात् आनदपुरी सिष्य चिरजीवो सूर्यपुरीजी जोधपुर श्री चैनपुरीजी मध्ये, श्री राज राजेश्वर माहाराजाजी श्री तखतसिंघ . प्रताप ।

दोहा

जव लग मेरु अडग है, जब लग शशि ।
तव लग या रहज्यो सदा, पोथी गुण भरपूर ।।१।।
या दृश ता दृश लिखित मया
यदि शुद्धमशुद्ध वा मम दोसो न

१४७७. १०६३२ (१) **भगवानदासजी की वाणी**

प्रारम्भ – अथ स्वामीजी श्री भगवानदासजी की वाणी लिख्यते ।
प्रथम स्तूति का किवत लिख्यते ।

ब्रह्मस्तूति

नमो अलपता राम, गुरु गुणवता पूरा ।
नमो सत अर महत, कीऐ जिन तिरगुण चूरा ।।
मेरै मुखि अर सीस, हीरदा मै ऐही बिराजै ।
इनकौ मोहि प्रताप, विघन सब दूरा भाजै ।।
गरू सत अर राम कू, तन मन अरपू दोइ ।
भगवानदास की बदना, बारूबार ही होइ ।।१।। *

x x x x

अथ साखी, प्रथम गुरदेव कौ अग लिख्यते ।

सतूति (स्तुति)

रमता राम सत गुर, मो उर सीस निधान ।
ताकू बदन प्रेम जुत, करै दास भगवान ।।१।।

अग

गुरु-नाम सतगुर मेरा सूरिवा, रामचरण दरवेस ।
भगवांनदास परि महरि करि, जिन कीया ग्यान परवेस ।।२।।

भगवांनदास कै सिर सही, गुरु रामचरण का हाथ ।
दरसण कीयौ राम को, नर तन भयौ सुनाथ ।।३।।

भजन कीयौ भगवानदास, त्रिमल हुई देह ।
गुर रांमचरण प्रताप सू, मिटि गया भरम सनेह ।।४।।

सतगुर पूरण ब्रह्म है, रामचरण पद लीन ।
भगवानदास से पतित कू, आप उधारे दीन ।।५।।

---

* ब्रह्मस्तुति के चार कवित्तो के बाद गुरुदेव-स्तुति का एक और कवित्त है ।

अन्त – अथ वाणी की सख्या —स्तुति का किवत ५, साखी १०७४, सोरठा २, चौपई २। अग ३०, अरेल ११३। अग १३, सवईया ४३। भूलणा ११, अग ४। किवत ५३, अग १४। कूडल्या ३५, अग १०। मनहर २७०, अग ४०। रेखता १। पद ३७, राग १६। दुहा-साखी १०७४, सोरठा ३, चौपई २, अरिल ११३, सवईया ४३ होइ। भूलणा ११, किवत ५३ र कूडल्या ३५, मनहर २७०, रेखता १, पद ३७, सोरठा १।

ऐह वाणी सव सार है, भाखी गुर भगवान।
रैनि दिवस मम उरि रहो, सतगुरजी को ध्यान ॥२॥

भाखी वाणी सार ऐह, सतगुरजी भगवान।
रैनि दिवस मम उरि रही, उनके पद को ध्यान ॥३॥

भाखी वाणी सार ऐह, भगवानदासजी सत।
सकलन-कर्त्ता कासीराम कर जोडि कै, उनकी सरणि रहत ॥४॥

धरि उर माहि प्रीति जू, अग वनाया ऐह।
कासीराम तुम सरणि है, मुख सू भाखू केह ॥५॥

स स्थान भीलाडै मधि जाणीऐ, रामदुवारो धाम।
अग वणाया तास मधि, मुख सू उचरत राम ॥६॥

कासीराम बदन करै, भगवान गरू सिर नाइ।
सव साधा सू अरज ऐह, भूलि चूक वकसाइ ॥७॥

स काल समत सो ऐ जाणीऐ, अठारा सै अडतीस।
सावण सुधि चत्रदसी, वार-ज रवि बतीस ॥८॥

सोरठा

वेद तत्व रस चन्द्र जु, सरव ऐ जाणि। (१६५४)
सुणत ही सासो जात जु, भाखे गुर भगवान।
नमो नमो निति ताज जू – – –।

पुष्पिका – इती स्वामीजी श्री भगवानदासजी की वाणी सरव सपूरण। *

---

* गुटके मे इसके वाद रामचरणजी कृत 'गावा का पद' शीर्षक से १७ रागों मे निवद्ध ६२ पद हैं। गुटका जोधपुर मे महामदिर नामक स्थान पर सवत् १६२८ मे लिखा गया है।

१४६२. १०६२६(६) भर्तृहरि शतक - त्रय भाषा

(नीतिमंजरी भाषा)

प्रारम्भ :— ।। अथ नीति मजरी लिखते ।।

सोरठा

अमल प्रीति उर आनि, दामोदर पद कमल प्रति ।
भावन भर्तहि सु बानि, नीति सतक भाषा सु भलि ।।१।।

सवैया

जिनकौ हम प्रान प्रिया कही, चिंतत भिन्न सदा तिनकौ चिते है ।
जन औरन तै वहे प्रीति करै, जनसो पुनि औरहु तैं रत हैं ।।
अनुरागनता तिय कै तिन सौ, हम कौ प्रिय जानि चहैबित है ।
धिक है तिय कौ जन कौ रु मन कौं, याहि कौ मोहि कौ सो नित है ।।२।।

अन्त – जग सब होत सरोज विन, विधि वस तै केहि काल ।
कुक्कुट जिम कचनि कर, पर महि नहि खनत मराल ।।११५।।

दामोदर सुभ दृष्टि तें, मुख मडल सुख मूल ।
भावन पावन नीति सत, किये निज मनि अनुकूल ।।११६।।

पुष्पिका – इति श्री भरतरीसत भाषा भावनादासेन बिरचिता नीति मंजरी समाप्ता ।

प्रारम्भ – **।। श्री अथ सृंगार मंजरी लिख्यते ।।**

दोहा

विदुप विराग वढाविनी, रसिकन कौ रस रूप ।
भावन सत सृंगार की, प्राकृत रचहि अनूप ।।१।।

जेहि वस विधि हरि हर करहि, मृग लोचनि गृह काम ।
वचन अगोचर चरित तेहि, रति पति होहु प्रनाम ।।२।।

कवित्त

स्वेत चारु चूडन सी जिनतैं दिपाय मान,
कला कलानाथ की ललाट कमनीय मै ।

जरत पतग काम लीला तै परत तामैं,
श्रेय सुभ्र वर्त्तिका सु अग्र रमनीय मै ।।
करत्त निकदन सो मोह तम छदन कौ,
पूरन प्रकास मान अतर स्वकीय मै ।
बार बार ताकी नित विजय विसेप होहु,
ग्यान के प्रदीप हर जोगिन के हीय मैं ।।३।।

अन्त – सवैया

अलकै रलकै छवि खान सु आनन, चुवन तै सिसिकार धराही ।
घन पीन पयोधर कचुकि हीन, उरस्थल मै त्तिनकौ पुलकाही ।।
उरु कप उपावतु है मु छली, छलहूतै नितव दुकूल छिनाही ।
त्तिय के गन मै विटहू-से चरित्रन. काकरि सै सिर वायु वहाही ।।१०२।।

इति षट रितु बरनन ।

दोहा

केहि की राग विराग मै, नीति करत कोउ नेह ।
कौउ रत सत सृगार मै, रति रुचि भेद करेह ।।१०३।।

जदपि न रुचि रमनीय तोउ, गहत नही गुनवत ।
सुखद सुधाकर सब हितेहि, पकज देख दहत ।।१०४।।

पुष्पिका – इति श्री भरतरी सत भाषा भावनादासेन विरचिता सृगार मजरी समाप्त ।

प्रारम्भ – ।। अथ वैराग्य मजरी लिखते ।।

दोहा

गुरु हरि हर गनपति गिरा, वदि सहित अनुराग ।
भावन पावन करन हित, बरनू सतक विराग ।।१।।

कवित्त

दिसतै दिसतै अलिप्त देश काल हूतै,
अमल अनत ईस अज अविकारी है ।

करता सव विस्व की विभरता हरता पेखियत,
आप अविनासी माया पासी विसतारी है ।।
अनुभो पिछान ग्यान खान चिदानद जान,
तेज को निधाँन सात सुघ सुखकारी है ।
सरव सक्तिमान सरव ईस्वर कला निधान,
भावन भनत ताकौ वदन हमारी है ।।२।।

दोहा

वुद्धिवन्त मछर ग्रसे, धनी ग्रसे अभिमान ।
अपर ग्रसे अग्यान तैं, हिय जीरन भरा ग्यान ।।३।।

अन्त – दोहा

ग्यान अनल कौ अरनि सम, मुनि-जन जीवन मूरि ।
वरनी सतक विराग की, भावन भाषा भूरि ।।१११।।

रचनास्थान मरुधर नगर सु जोधपुर, वसिवौ सदा बखान ।
रांमसनेही साधु हम, खैरापा गुरु थान ।।११२।।

कवित्त

स्वछ रमनीय हिय अछर अनूप जाके,
नीति राग विमल विराग त्याग तै भरी ।
जरी गुन मानक तैं वानक विसेख वनी,
सिंधु भव भूरि ताके तरिवै कौ है तरी ।।
रसिक रिझाविनी विवेक की वढाविनी है,
जेते वुधिवत ताके जीवन की है जरी ।
रचनाकाल अक नैन अंक इदु मास सुचि राका कवि,
१९२९ भाषा मै वखांनी टीका भावन भरतरी ।।११३।।

पुष्पिका :– इति श्री भरतरीसत भाषा भावनादासेन विरचिताया वैराग मजरी समाप्त ।

गुटके की पुष्पिका :– सत सीरोमणी हैं सही प्रगट्या कलि माह, प्रगट्या कलि माहि प्रगट्या कलिजुग मै सोई, हमसे जीव निसर्ताकै गये उस देस जहाँ

सतन का वासा। राम नाम ल्यौ लाइकै, भये या जग मू ऊदास। प्रगट राम महाराज तीसैं तन त्याग कै मीनें राम कै माह, ३ कातीग बदी तीज तीसरै पहर तन परहरी, तीन के सीख जान चेनराम म्हाराज। तास दास पोथी लिखी दयाराम है नाम, गढ आगरै मध्य ठंडी सडक नाई कै मडी समत ३६ (१८३६)

१५१६. १०८४६ (१०) भागवत भाषा पद्यानुवाद

प्रारम्भ – श्री रामजी। श्री गुरुभ्योनम । श्री गणेशायनम ।
अथ द्विनीयोस्कद लिख्यते।

सोरठा

जै जै जै जदुनाथ, गुन आगर सागर कृपा।
नटनागर मुद गाथ, कीजै मोहि सनाथ प्रभु ।।१।।

दुहा

जै वानी जैं गजवदन, जै हरि गुरु पद कज।
जै सुक जै श्री व्यास मुनि, जै पितु पद मन रज ।।१।।

विरचहु आनँद अंबु निधि, दूजो यह स्कधु।
विघन रहित पुरन करौ, हे हरि दाया सिंधु ।।२।।

सोरठा

सुनि कुरुपति कै वैंन, व्यास सुवन शुकदेव मुनि।
लह्यो परम चित चैन, तेहि सराहि बोले वचन ।।३।।

श्री शुक उवाच चौपाई

नरपति उत्तम प्रश्न तुम्हारो। लोकन मगल प्रकटन हारो ।।१।।
ज्ञानिन कर सवत सव भाँती। कहत मोरि मति अति अधिकाती ।।२।।
पूछ्यौ जो तुम यह नृप नायक। सुनिवे महँ का सुनवे लायक ।।२।।
जे नहिँ आतम तत्व को जानै। सदा ग्रहन विषयन सुख सानै ।।४।।
तिनके सुनन जोग दुख कारन। हैं नरेंद्र जग कथा हजारन ।।५।।
दिन में धन हित वहु थल धावें। निज कुटव पालन मन लावैं ।।६।।

निद्रा रति करि रैन गमावैं। यहि विधि सिगरी उमर वितावैं ॥७॥
असत देहँ तिय सुन दल काहीं। नसत निरखि निरखत सठ नाहीं ॥८॥

दोहा

तातैं भारत जो चहै, यह जग मै कल्यान।
नाम सुजस वपु कृष्ण के, कहै सुनै धरि ध्यान ॥१॥

अन्त –(पत्राङ्क २९ वां) * चौपई

जव नृप पाप रह्यो कछु वाकीं। लहत कु-जोनि विबुध वसुधा की ॥१॥
तैंमहिँ पुन्य रही कछु वाची। तव सु-जोनि पावत सुख राची ॥२॥
जेहि विधि होत न पुनि अवतारा। सो प्रकार मै प्रथम उचारा ॥३॥
यह ब्रह्मांड माह मति माना। लोके चतुरदस कहै पुराना ॥४॥
थूल रूप नारायण केरो। यह सिगरो मै कियो निवेरो ॥५॥
हरि माया गुन मय यह जानो। प्रथमहि सुक्षम रूप वखानौ ॥६॥
पढै सुनै अरु जनन सुनावै। वैठिय कात आपही गावै ॥७॥
सो जदुपति सरूप कह जाने। जाहि उपनिषद करत वखानै ॥८॥
जदुपति चरन होइ जेहि प्रीती। जानहिँ सकल भक्ति की रीती ॥९॥

दुहा

हरि वपु सूक्षम थूल कहँ ध्याइ।
पुनि सुक्षम मे क्रमहि क्रम, निज मन देहि लगाइ ॥१॥

कवित्त

सातहूँ दीप नौ खंड मही, सर सिंधु औसैल हू सात पताला।
और दिसान के भाग सवै, नरकौ स्वरगौ औ नक्षत्रन माला ॥
कर्त्तानाम श्रीरघुराज हरि को अहै, यह थूल सरूप गुनौ महिपाला।
जीवन धाम सवै वरन्यौ, यहि को पति येक है नंद को लाला ॥१॥

---

* पञ्चम स्कन्ध की पुष्पिका के बाद मे किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अगले पत्र पर ७ वां स्कन्ध लिखना प्रारम्भ किया गया है। इस प्रकार से २९+२५=५४ पत्रों मे यह कृति उपलब्ध है।

दुहा

१० ६ १
रचनाकाल दिसि निधि ससि सवत सुभग, पौष कृष्ण बुधवार ।
१९१० त्रियोदसी तिथि कौ भयौ, ... ।।

पुष्पिका – इति श्री महाराजाधिराज श्री महाराज वाघवेस विश्वनाथसिहात्मज सिधि श्री महाराजा वहादुर श्री कृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकार श्री रघुराजसिहजू देव कृते आनन्दाम्वुनिधौ पचम स्कधे पट्विसस्तरग । सरब श्लोक मेव्या २०० घटत वढत गुनो माफ ।

प्रारम्भ – श्री रामाय नम *

शुकोवाच

नरहरि अरु प्रह्लाद की, सुन कै कथा नरेस ।
सभा मध्य मुनि सो कियो, पुनि कै प्रश्न सुवेस ।।१।।

युधिष्ठिर उवाच चौपाई

हे मुनीस दायक सव सर्मा । सुनन चहौं वरनाश्रम धर्मा ।।१।।
जाहि किये हरि कहैं जग जानत । कवहु गर्व नहि निज उर आनत ।।२।।
तुम हो नारद ब्रह्म कुमारे । तप वल सव पुत्रन मे प्यारे ।।३।।
तुम समान जो श्रीपति दासे । सात साधु करुनाकर खासे ।।४।।
तिन के दरस पाइ सुख धामा । पूरन होत आसुमन कामा ।।५।।
धर्म भूप के सुनि अस वैना । नारद कहत भये भरि चैना ।।६।।

अन्त – दोहा

धन्य धन्य हो धन्य तुम, पाचहु पाडु कुमार ।
जिनकै सग विचरत रहैं, नित प्रति नद कुमार ।।

चौपाई

कमला कैलासी करतारा । कहि न सकै जैहि रूप अपारा ।।१।।
करिकै भक्ति करै पद वदन । तव प्रसन्न होवै जदुनदन ।।२।।

---

* भागवत भाषा पद्यानुवाद का छठा स्कन्ध एवं ७ वें की दश तरग अप्राप्त । सातवें स्कन्ध की ११ वीं से १५ वीं तरग का आद्यन्त यहां उद्धृत किया जा रहा है । इसका रचना काल संवत् १९०९ दिया गया है ।

श्री शुक उवाच

सुनि नारद के वचन सुहाये। धर्म भूप अति आनद पाये ।।३।।
नारद को पूजन नृप कीन्हो। चरन पखार सलिल सिर लीन्हो ।।४।।
पुनि जदुपति को पूजन करिकै। विहवल भये प्रेम उर भरि कै ।।५।।
धर्म-भूप सौ पूजन पाई। नारद तिनसो मागि विदाई ।।६।।
जदुनदन को करि परनामा। मुनि मोदित गमने निज धामा ।।७।।
परब्रह्म सुनि कृष्ण हि काही। विसमित से भूपति मन माही ।।८।।

दोहा

बस पृथक दाक्ष'इनी, मै वरन्यौ कुरु राय।
देव असुर मनु जाद गन, यहि मे प्रगटत जाय ।।१।।
र का निधि नभ निधि ससि सवतै, भाद्र मास रविवार।
१९०९ सतयो यह स्कद को, सित छनि भो अवतार ।।२।।

पुष्पिका – इति श्री मद्भागवते महापुराण सप्तस्कधे पंचदसस्तरग ।।१५।।
श्री राम ।। श्री राम ।। श्री राम ।।

१५२४. १२३५० भारत-भाषा सारचन्द्रिका वचनिका *

प्रारम्भ – श्री गणेशाय नम । अथ भाषा भारथ सारचन्द्रिका लिख्यते। तहा प्रथम मगलाचर्ण

कवित्त

सनमुख होत जाके विघन विमुख होत,
नाम ही के लेत सब काम सुधरहत है।
रिद्धि सिद्ध दोऊ जाकै रहत सदा है,
साथि फरसा हथ्यार हाथ दुख कौं रहत है ।।
गवरि के नद सदा आनद के कद,
सुनौ देवन के देव यह अरज करत है।

---

* प्रस्तुत प्रति मे आदि पर्व, सभापर्व, वनपर्व, विराटपर्व तथा उद्योग पर्व का प्रथम अध्याय एव द्वितीय अध्याय का एक पृष्ठ मात्र है। अत ग्रन्थ का प्रारम्भिक अश इस प्रति से एव अत अन्य प्रति से उद्धृत किया जा रहा है।

दीजिये सुबुधि सुधि लीजिये सुमुख मेरी,
करुणानिधान ध्यान आपको धरत हैं ॥१॥

दोहा

गणपति चरण सरोज को, ध्यान हिये मधि धारि ।
बरनौ भारथ सार को, भाषा मति अनुसारि ॥२॥

अथ वसावली

दोहा

रघुकुल सूरज वस मै, गोगावत विख्यात ।
एक एक तै सव अधिक, सूर वीर सरसात ॥३॥

छपै

कू त्तल भयौ हमीर तासु सुत नाहर जानौं ।
डू गरसी श्रो राज तनय ता मानिक मानौ ॥
कु भो पाचौ जानि तासु गोगो बीठल भनि ।
ताकौ केसरिस्यध सुवन जाकौ सुजान गनि ॥
हुव पेमस्यध ताकौ तनय, जिह दिल्लीपति राव किय ।
रणधीर वीर सभू सुदं, दुजन दान हरि भक्ति लिय ॥४॥

यथा सवैया

सो महि सेस धरें निसि द्योस प्रथ्वी सथुनै निज नाम की कीनी ।
सो हरिनाक्षहरी हरि रूप वराह कै मारी तत्तक्षन छीनी ॥
सो पुनि वावन ह्वै वलि हार पै जाय अधीन ह्वै मागि कै लीनी ।
सो महि राव श्री सभु सुजान गुनी द्रुत्त दीन दान कै दीनी ॥१॥

यथा कवित्त

दपट पवन पूत झपट खगैस कै कैसी
चित्त तै चलाकी मैं सरस चलि जात हे ।
फेरत फुहारे की फुही पै थहराइ रहै
खुरीन थैक पै करत सरसात है ॥
गुन गहैं चगु नभ नचत पल चारु
मढे जरवाफन सौ सव सुभ गात है ।

ऐसे वाजी देत राव गोगावत राव सभु,
भान मघवान देखि देखि ललचात है ।।५।।

दोहा

चांदस्यघ ताको तनय, सूर वीर रणधीर ।
दाता ग्याता है महा, कवि कोविद को भीर ।।

कवित

आये जोम जी मैं लिये दक्षिनी फिरंगी,
जगी झगी सैद मुगल समूह सरसायो है ।
तिन्है देखि केते कूर कायर कचाये रहे,
सूर वीर तेवे महा मोद मन छायो है ।।
जहां हाका हाकी मारि खगान खपाये,
तहा तुपक तमचा तोप तीरौं झर लायौ है ।
ग्ग राव सभू के सपूत चादस्यघ,
तेरे दान कीरिवान कौं जहान जस गायो है ।।७।।

दोहा

सबही कौं वर्नन कियै, होत ग्रन्थ विस्तार ।
ताते इनके नाम ही, कहे समति अनुसार ।।८।।
रामायण की वचनिका, करी सभु श्री राव ।
त्यौंही भारथसार की, चादस्यघं चित चाव ।।९।।
हुकम चैन कवि कौं कियो, ऐसी भाषा होइ ।
जाके वाचत सुनत्त ही, समझि जाय सव कोइ ।।१०।।

अथ पर्वारभ । (आदि पर्व-प्रथमोऽध्याय)— कोईक समै के विष कृष्णद्वैपायन मुनि कौरवन कौ राजा जनमेजय ताके देखिवे कौं हस्तनापुर आवत भये । जहा जनमेजय हू गगा तीर विराजमान हौ । तहा वेदव्यास महामुनि कौ आये देखि राजा सन्मुख जाय चरणार्विदन मैं सिर धरि प्रणाम करि पाद्यार्घ आसन देय पूजन करि विनती करत भयौ । आज मेरो जन्म सफल भयौ । मैं कृत कत्य भयौ । मेरौ राज्य भी धन्य भयौ । अव आपके पधारिवे कौ कारण जाणिवे की वाछा है सो आग्या करियैं । तव वेदव्यास राजा की राज-समृद्धि

देखी । तीन जोजन लौ विसाल सभा है । तामैं तीन कोटि क्षत्रिय सर्व ही तरुण शूर शस्त्र-अस्त्र विद्या मैं निपुण । वस्त्र शस्त्र अलकारन करि मडित, तिन के वीच रत्न-सिंघासन पर राजा अैसो दीस्यो ज्यो देव सभा मध्य इद्र सोहै । ताकी विभूति देखि कै वेदव्यास वोले । हे राजा जनमेजय तेरौ प्रभाव देखि हमारो मन वहौत प्रसन्न भयौं । या समय मैं तेरे तुल्य और राजा धर्मात्मा-धीर-वीर-दाता है ही नही । तातै प्रजान कौ पालन करौ । नीति मार्ग मैं चलौ ज्यौ तेरो प्रताप वधैगो ।

१५२५. ,२५०७ भारतभाषा सारचन्द्रिका *

अन्त – हे पुत्र या जीव कै ससार कहियै । जामण मरण तामैं, मात-पिता हजारा भये है, अरु होइ है, और आगै हू होयेंगे । अरु तैसै ही स्त्री पुत्र सैकडा भये है, होय है, आगै होइगे ।।१।।

और दिन दिन प्रति याकौ हर्ष के स्थान हू हजारा है । अरु भय के स्थान हू सैकडा हैं । सो मूढ जीव कौं तौ व्यापै है । और पडित कौ नही व्यापै हैं ।।२।।

अरु धर्म कौ साधन क्यो नही करै हैं । जा धर्म सौं अर्थ सिद्धि होय वाछित सिद्धि होय है । यह मै ऊचे हाथ करि ऊचे सुर सौं पुकारि कै कहौ हौ । सो कोऊ हू नही सुणत है ।।३।।

और काम सौ भय सौं लोभ सौं कदाचित हू धर्म कौ त्याग नही करै, असै धर्म कौ त्याग करै जीव जातो हू बचै तौहू धर्म छोडै नही । सो यह धर्म तौ नित्य है । और सुख दुख्य अनित्य हैं । और यह जीव है सोहू नित्य है । अरु या जीव को कारण माया है सो अनित्य है ।।४।।

तातै हे पुत्र जो नर या भारत सावित्री कौं प्रात काल उठि पढै है, ताकौ सपूर्ण भारत कौ फल होय है अरु अत मै मोक्ष को जाय है ।।

---

* इसी कृति की अन्य प्रति ग्रन्थाङ्क १२५०७ की है । इस प्रति मे भी आश्रमपर्व, मोशल पर्व एवं महाप्रस्थान पर्व ही हैं । अन्तिम पर्व के वाद की पुष्पिका मे कृति का रचना काल दिया गया है अत अन्तिमाश एव पुष्पिका ग्रन्थाङ्क १२५०७ की दी जा रही है ।

छप्पै

रचनाकाल १८८५

सवत सत दस अष्ट वर्ष पच्चासी ता पर।
माधव मास सुमास अल्क जिग्रि तीजे उजागर ॥
लगन महूरत जोग सु दिन गुर वार जानि जिय।
भारत भाषा सार चन्द्रिका तव प्रकास किय ॥
सुत संभुराव श्री चाँदसिंघ, गोगावत कुल रवि उदित।
ता हुकम पाय कवि चैन यह, करी वचनिका जग विदित ॥१॥

पुष्पिका :— इति श्री गोगावत कुलावतस सभूस्यघात्मज राव चाद-स्यघाज्ञया कवि चैनराम कृत भारत सारचंद्रिका सपूर्ण।

१५२६. १०८३८ भाषाभारत

प्रारम्भ – ॥ श्री गणेशाय नम ॥ श्री विष्णुभ्यो नम ॥ श्री सारदायै नम ॥ श्री सद्गुरुभ्यो नम ॥ अथ भाषाभारत सदू खेतसी रो कह्यो लिख्यते ॥

गाथा

गवरी पुत्र गणेसो, गज वदनाय अग्र तेतीस।
मल सुघ सुतन महेसो, दे सदबुधि चित्र वा कैरव कुल ॥१॥

जोगणि जगत जनेवो, जग पाल गर विष्ण वाभगा।
दीजै उकति सदेवो, वाणि विथारी चित्रवा भारथ ॥२॥

गीरवरधर गोपालो, जग उधरण अनत अगमागम।
दीजै उकति दयालो, चालो कहण तुझ चक्राधर ॥३॥

जग जेता जट धारो, जोगारभ भाण जोगेसुर।
मम दे सुमति महेसो, भाखण वाणि पारथ भारथ ॥४॥

ब्रह्मा वुध विसालो, अविहित अखलि सिष्ट उपराजक।
वाणी समपि विचत्रो, कुर पडवा कहण कलि कारण ॥५॥

रवी करता जग रारो, जगत आधार मेटगर जाहर।
समपि सुवुधि विसालो, चालौ कहण कैरव सुघ चित ॥६॥

गुणदाता गुर देवो, गुर गम देअणहार उतम गति।
दे सदवुधी अदोषो, दाखण गति सति दई वाणी ॥७॥

दोहा

कुर दुरधार उधारिवा, मन मा धारि मुरारि ।
करवायो भारथ कठण, सो कवि कहि अनुसार ।।८।।
अकर्ण करण विचारीयो, मन चालो निरमोह ।
कवियण सो त्रिन धरि कीसन, कहियै वाणि विमोहि ।।६।।
अवनि भार उतारिवा, चित्त आरभीयो स्याम ।
सो किन हित सजूत सकल, कहि लै सुकवि मकाम ।।१०।।

अन्त –

कवित्त (छप्पय)

रचनाकाल १७६०

मनरमैं समत वरस नेउवैं वमेखण ।
कवि मुख रखेकरा कथ भारथ सपुरण ।।
वैसाख एक दिन तिथ ऐकम अलोकत भोमवार निरधार ।
।।*

रामाईण उपरा कवि माधव रासो कीय ।
फिर नरहर वारट वाणि अवतार चिरत लीय ।।
भागवत सिर विवरि कीव ईसर हरिरसह ।
कवि सीह जिम करी वले भाषा भारथह ।।
मति सार विचारि कुल करम, तन परमाद पूत जीयो ।
तीस दिवस वर षत्रीय चित, त्रिमल जीहकु राजसज जीयो ।।२।।

महाकथ भारथ सुणै सुज खत्रीस मगह ।
करै सार वापार अजै न लहै भरि जगह ।।
सुकवि श्रण इह सुणे भाख घट भेद सजाणै ।
सोतो वकता सकल चढै चाढे निरवाणै ।।
चत्र वरण वाणि भाषा चवे, जीवन मुगत सचित लहि ।
चत्र वाणि खाणि आश्रम चत्रह, कवि तिह कथ सभरि कहै ।।३।।

इद प्रसन आरभ कीध भारथ सु कथह ।
फेर राह साराह कवि मनि चहि समथह ।।

---

* पत्र चिपक जाने से अक्षर उडे हुए हैं ।

जोध थान सामान मास पच हवन कथै ।
वैराटह - प्रव कीयो वागस्याही पारथै ।।
अहिमुदावाद प्रव अवड तर, वसि मद्धे धर गुजरी ।
कवि सीह करत पुरण कीया, सेवा अभा निरदरी ।।४।।

दुहा

भारथ भाषा अखीयो, मति माफक कवि सीह ।
व्यासह क्रित अति चित विमल, सुणि श्रवणे निस दीह ।।१।।

वारता

कवैसुर भारथ की भाषा का आरम्भ तो माल विजावत कै भेलप दिली वीच कीधा, ता पाछै महीना दोइ नै राठोडा कै राव जोधपुर की गह लीधा । चत्रमास तो मडोवर कै माथ डेरु कीहु स राजु कीमु समारग हीज टार्‌यो । काती सुद वीज कै दीह राठका राव पखु के थानक पधारचा । चेत सुध दसमी ताइ तो नरसमाद की छात महीलु हीज रह्या । ता पाछै कविसुरु कै भाग सिरविलद की सेना कै आभा गुजर धर का गह अह्यो । उर्भा चत्रमास्ग तौ मारग हीज वीता । आसु सुदि दसमी कै सेरविलद का दल का वल जीता । ता पाछै पोस सुद माराज राजेसुर सहर दाखील हुआ । उवरावाकु डेगकु तजवीज वताइ कै जुवा जुवा । तठै कवैसुर हठीसीघ सुरसीवोत कै भेलप अतही आराम पाया । मति का पुरुग्कर रूपक करिवा कु दुगणा ही कथाया । तद वुध माफक भाषा करिकै जथा जोग अठारै ही परखेम पुरण कीधा ।*

कवित्त

तर भेलप . ।
पडित भेलप प्रगटि महा विद्या धन पावत ।
सन पुरषा सग कीया प्रीत हरि हुत लगावत ।।
महिमा समद जादव व्रिमल, देखन व्रन आणदीयो ।
कवि सीह हठी भेलप करे, भाषा दध पारह भयो ।।२।।

दुहो

सेवा आभा नरेस री, भेलप हठी सुरीद ।
कवि भाषा भारथ कीयो, आग्या आणद कद ।।१।।

* इसके वाद एक कवित्त और है । अक्षर उखडे हुए है ।

श्रवणे सहित सुध सुणे, प्रातह पाठ प्रमाण ।
करै जिक निहचै करै, पुहचै पद निरवाण ।।२।।

पुष्पिका – इति श्री भाषा भारथ सपूर्ण । सवत् १९०८ वर्षे शाके १७७१ प्र० दुतीक वैशाख सुदि ५ गुरौ सहर योधपुरे लिखित्वात् । परोपगाराय ।

१५६७. ११००४ **महादेवजी रो व्यावलो**
(शिवराम स्तोत्र भाषा)

प्रारम्भ – श्री गणेशाय नम । अथे महादेवजी रो व्यावलो लीख्यते ।

गणपत नाव उचार, विघवन पावक है (टेर)
सिष्ट करता ब्रह्म उचारचौ, शभु त्रिपुर जय काज ।
बल वाधते विष्णु उचारचौ, जग जीतन रतिराज ।।१।।

धरा धरेता सेष उचारचौ, महिष त्रिजय को अब ।
मन वस कारन रिषन उचारचौ, मगल विपिन कलव ।।२।।

जोई उचारचौ जाके सवही, काज सुधारै भारै ।
सदनमति कौ हेमवती को, नदन आपत टारै ।।३।।

सिव को व्याह भयो गिरिजा सो, जानत त्रिभवन मारै ।
करि प्रनाम गजमुख का बरन्यौ, गजमुख विघन विडारै ।।४।।

दुहा

लता अपर्ना सेईयें, जिनकी सगत पाय ।
थानु पुरानो फलत है, जो मागत मन चाय ।।१।।
माया ब्रह्म वीलास मे, बन्यो अखिल ससार ।
माया हिमगिरि कन्यका, ब्रह्म महेस नीहार ।।२।।
हे असार ससार मे, अै दोय सार अपार ।
असिव निवारन सिव-सीवा, भज उतरो भव पार ।।३।।
दोनु वीनी अर्थ ज्यौ, मिले एक अरु दोय ।
अरध अग नारी पुरुप, रूप अलौकिक कोय ।।४।।
जिनके गुन अनुवाद मे, सफल गिरा कु जान ।
तज बकवाद विवाद सब, गाओ गुन सप्रमान ।।५।।

गुन को पार नहु जुन को, कौ वरने कवि मुठ ।
थाके वेद सभेद करे, खेद ब्रह्म वैकुंठ ।।६।।
जग कथ वानी मलीनता, पूर करन कै हेत ।
उमा-शभु कीरत कथा, गगा परम सकेत ।।७।।
ए विसवास विसेस वग, वरनो व्याह विधान ।
वानी के कट जायगे, ओगुन गनस निदान ।।८।।

अन्त –

कर जोर सवि हवंचर वडे । मोहि ज्यानकीनाथ सुनाथ करौ ।।
हर सो पद पकज सो मग्ण । सीव सकर सकट को हरण ।।१।।
तुम नाथ स्वी विधि लाईक हो । गति ओ पत के मुख दाईक हो ।।
करता सवि पोखन हे भरन । सिव सकर सकट को हरण ।।२।।
तुम नाथ अनाथ सुनाथ हरे । प्रगटे त्रिय मूरत देह धरे ।।
गति ओ पत के तुम हो करण । सिव सकर सकट को हरण ।।३।।
पद अवुज सागर हु जलसा । किऊ आगम पुरन मा मनसा ।।
दर सो पद पंकज सो सरनं । सिव सकर सकट को हरण ।।४।।
जव जक्त र मोहन मोह थरे । वहु ताम वदे सव चूक पडे ।।
सव ही तुम नेम हो करन । सिव सकर सकट को हरण ।।५।।
हम ओगुन के अति आगममे । प्रभु बूडत हू भव सागर मे ।।
गह राख भुजा अपने चरन । सिव सकर सकट को हरण ।।६।।
जव राम दया नद कीन दया । कटि हे जम जाल की मोह मया ।।
नित लोल लोल हु तुमरे चरन । सिव सकर सकट के हरण ।।७।।

पुष्पिका – इति श्री राजा श्री हिमाचल विरचित शिवराम स्तौत्र सपूर्ण । इती श्री माहादेवजी रो व्यावलो जोसी शिभुराम कृत । जोधपुर को वासी, जोसी प्रभुलाल रो पीता, तीको सपूर्ण । स. १६०७ रा मी० भादवा सुद ८ शुक्र प्रभात समये लि० हीरविजै, लूणसरा मध्ये । चि० मगनमल पठन हेतवे ।

* आज दीन वायरो ठडो वाजै छै । ओर मेह मूलक मे थोडा

* तत्कालीन साख-वाडी भाव एव राजनैतिक दशा का उल्लेख भी प्रतिलिपिकर्त्ता द्वारा अन्त मे किया गया है ।

छै। माखा ग्रमामी छे पीण कठेई तो मेह घणा कठेई मे थोडा, येकसार-सो जमानो छे नही।

बाजरी रु० १ री ३१*(सेर), मोठ ३३, मुग ३२, गोहु २१, जवार ३२, जव ३३, तेल ६।।, घ्रत २ ≡), गुल १ ≡।।, चीणी ५, तीजारो १०, टका भाडसाही २०।।, ढबुसाही १८।। ईगतीसदारा ४।।। वटारा, ग्राज दीन ग्रो भाव छ।

ग्रोर भडारीजी श्रीचदजी मोतीचदजी जोशीजी मीरनारायणजी रो हल डेरा छै। भोमडो हली मायै छै। भडारीजी माह री पोथी मु भर्त्तरी सतक, सभासार नाटक, सीवजी रो व्यावलो ग्रोर फुटकर उतारया छे।

वाग मार हमीरमल बैठो छै। गाव ग्राधो तो श्री खालसै छै, ग्राधो ठा० सावतसीघ न छै। गाव मे हुकम जाटा रो छै। कु णी रो वयु ही न चाले। माहाराजाधिराज श्री तखतसीघजी राज्ये, राज रा डेरा वा रममद छै।

१५६८ ११०१३ (५०) महाराजा ग्रभैसिहजी रा कवित्त

प्रारम्भ: – ।। किवत ।। महाराजा श्री ग्रभैसिघजी रा गुजरात रे समै रा खडीया वगता रा कह्या।

(छप्पय)

ग्रादि सकत इश्वरी, मगल कारी चितामण।
कामधेन पोरसो, तु हीज पासा त्रिभामण।।
धण कण साहण सोह, पूत परवार वडाळी।
देवी देस विदेस, राजद्वारै रखवाळी।।
ग्राणद रूप ग्राणद मड, सबही वात सुधारणी।
रीझीउ गुणे राजा ग्रभो, तो प्रताप भव तारणी।।१।।

जग जिननी जोगणी, राय उमया परवेची।
भज दैत चालको, नाम तिण चाळक - रेची।।
भाले थळ उजळो, वले हरीया गहरा तर।
चाळक रो मढ जठै, रचै देवी ग्राधो फर।।

* सभी तोल सेर की दृष्टि से दिए गये हैं।

त्रिहु लोक जात आवै तठै, वाज छत्रीस वधावही ।
रीझीउ गुणं राजेस वर, पाउ रूपक पावही ।।२।।

पाय घुघर घम घमै, लगर काळा खरलकै ।
अहि काळो हिडळै, चोहर काळा भरळकै ।।
काळी सिगी करग, चीर काळा पाटवर ।
वाहण कालो विकट, रूप कालो राजेसर ।।
गरीवनिवाज काला गहर, कल् वीच चढती कला ।
आप सु अरज काला इती, आखर दीजै उजला ।।३।।

मेकदत भल लहै, मुडल लव लैस नुरा ।
उदर दराज आणद, सीस झक बोल सिंदुरा ।।
गवरनद सुख समद, सदा रता राजेसर ।
च्यार पण वोह जण, है अगवण विसभर ।।
एहा सरूप देव अगल, कहो इलोल उकतरा ।
सुध मन भाव धारै सुकव, पाव वदो गणपतरा ।।४।।

वप उजल वसतर, कन उजला सा कुडल ।
उजल मुख उपरा, नाक उजला निरमल ।।
उजल माला उवर, वेद उजलो विचारै ।
वात्रै यत्र उजलो, राग उजलो उचारै ।।
आवास विराजण उजला, विध उजला हस वाहणी ।
उजल अडोल गाउ अभो, दीजै मुझ वरदायणी ।।५।।

अडा भीड राठोड, हुयो सिर हर माहाराजा ।
गज ससण लख देयण, कीया न मा दधि पाजा ।।
जिण मारे मुगलण, अनड लीधो जाल धर ।
जिण दिखणी भजीया, थया नेजा लाल वर ।।
जीतो अनेक समहर जिको, भुज लाज दुनीय भिली ।
जोधपुर तखत जोधाहरो, तपीयो जन माहावली ।।६।।

गजन पाट सौहीयो, सकर अवतार सवाडो ।
ओरग सु मडीयो, जिकण पाधरै अखाडो ।।
गज धज मारीयो, जिकण धड चे खग धार ।
जिण खेलू लुटीया, सहित माल् सिणगार ।।

भागा अनेक सोवा भिडे, कमध खाग ग्रहीय कर ।
जोवीयो जितै रहीयो जसो, दावा मुदी दिलेसर ।।७।।

जिसो कमध आथमै, सुन न उगीयो अकारो ।
तेज जोर आगलो, इला भागो अधीयारो ।।
किरण जो सकल कलै, रूक जलहलै प्रगट ।
अरण रूप आखीय, वली करवा दह वट ।।
एको सरूप वद आहुडै, गैण रैण दुजो गजो ।
गालवा असुर पाल गिर, अरक रूप तपीयो अजो ।।८।।

इला थभ अवतार, अडर अण वीह अणकल ।
परम अस सत पुरस, अग रूपी विल उजल ।।
उदम दामणो, अनमन मणो सवाडो ।
अनथ नाथणो, उडड डडणो अखाडो ।।
नह फिरै पीठ नाकार नह, गह सरूप थह गलरै ।
होदुव भाग पैदास हुयो, अभो पाट अजमालरै ।।९।।

उवासै उससे, नड भाडै ववाडै ।
करै वल धुकल खल मुगल पछाडै ।।
खव कुभ वलहलै, दल वीटीय अकार ।
हुए सेस दल चल चल, मलेछ खलभलै अपार ।।
पै लगरे लाज खल हल प्रगट, वल चिहु जस वाहसो ।
आछट करै राजा अभो, सत्र सीस नव साहसो ।।१०।।

फिर नकीव वोलीया, चढो वाहादर ववाल ।
दरक भार भीडजै, धीह धड हडै त्रबाल ।।
मदमता खोलीया, धतधता पोतारे ।
कोड करै कोतल, साभ सोनै सिणगार ।।
चढीयो अभीह ढुलतै चमर, धजावध दल धारीयो ।
इण भत दिली राजा अभो, प्रथमीनाथ पधारीयो ।।११।।*

---

* महाराजा अभयसिंहजी के शौर्य और यशोगान के साथ ही गुजरात के सूवेदार सर-बुलदखान की वगावत से चिंतित होकर वादशाह द्वारा उसे दवाने का वर्णन २२ वें छन्द तक किया गया है ।

अन्त :- वखतसिंघ मेलीया, भडा थाप ले जीयारा।
वाज सोक कैमरां, अधुवै सावला दुधारां।।
खगा वुर उडीया, सुर थाभीया तमासै।
वह कटार डाडरा, पार फुटता प्रकासै।।
घुर तो वाह करता थको, खेध वेध लागा खिसै।
वाग सो चोल् कीवो वदन, जला वोल दूजो जसौ।।११४।।

भडा आड वीटीयो, कड ओरी आवखाणै।
वाड तोप नालीया, चाड मुग्लाण उराणै।।
किता पाड केवीया, सैहत वगतरा वरगा।
घाड घाड आखीयो, राडता हीर कुरगा।।
कुंजरा फाड मुरा कवल, हथ वजाड केवी हणा।
वारणा लीयैं जिण वार रा, मारवाड वेढी मणा।।११५।।

तें सताव मेन्नीया, वीच जाडा घमसाणा।
तें आडा ओसरा, वध चाडा कर वाणा।।
तें चढाय छातीया, वेढ वीजला वजाइ।
तौ हाथा उतरे, साथ सखरा सिपाइ।।
उडता रीठ कीनी उभै, जद रिण ताल् जुहारीयो।
दीठा नीवाव विरला दुनी, तो सीरखा तरवारीया।।११६।।

---

२३ वे छन्द मे वादशाह द्वारा महाराजा को सरवुलदखान को जीतने के आदेश का उल्लेख है। अगले छन्दों मे महाराजा की कीर्तिगाथा वर्णित है।

३५ वें छन्द मे महाराजा का ससैन्य आमेर आगमन, ४१ वें छन्द मे मेदपाट आगमन, ७६ वे छन्द से अर्वुद और पाल्हणपुर तथा सिद्धपुर आगमन और ८५ वे छन्द मे महाराजा का ससैन्य अहमदावाद आगमन का वर्णन है। वीच - वीच मे महाराजा के आतिथ्य-सत्कार तथा यशोगान के साथ ही शूरवीरो, सेना, घोडों और हाथियों आदि का पारंपरिक वर्णन है।

८५ वें छन्द के वाद मोर्चावन्दी और युद्ध का वर्णन प्रारम्भ होता है। गुटके मे केवल ११८ छन्द ही उपलव्ध हैं जो युद्ध-प्रसङ्ग तक का ही परिचय कराते हैं। आगे के छन्द इस गुटके मे अप्राप्त हैं, अत सभवत. कृति अपूर्ण है।

वादशाह द्वारा सरवुलदखान (मुवारिजुलमुल्क) से गुजरात छीनकर महाराजा अभयसिंह को देने का समय वि सं. १७८७ आषाढ मास (ई. सन् १७३० का जून मास) 'रेऊजी' ने लिखा है। विशेष विवरण के लिए कृपया विश्वेश्वरनाथ रेऊ कृत 'मारवाड़ राज्य का इतिहास' भाग २, पृ० ३३६ से ३४२ देखें।

वाज भाट बीजला, वला दोवटा सफजा ।
धडा कध वीछले, सहत पाग्गा भाडजा ॥
विकट हाथ वाहनो, सत्रा ढाह्तो सिगालो ।
तुरी राव गर रहे, सिधुर भरहरै छटालो ॥
सारा विहार माभी नहित, धरा श्रेव घरा थीया ।
वणीया धिराज जीण वारका, गज कमु वल माथीया ॥११७॥

क्थाव राड चाचरा, घटा डेडरा लटकै ।
कडा फूट फीफरा, पगा श्रानरा श्रटकै ॥
परचटा वावरै, किता खजग कटारा ।
चकावौ माछीयो, चिहु कानीया चदारा ॥
भड पडै किता केना भुकै, कीता स्का वाजै करा ।
श्रैमदा खेल मा-तो इसो, मुछाला मडोवरा ॥११८॥

१५६२. १०६५५ (५) मानसिंहजी रा मरसिया

प्रारम्भ – म्हाराज श्री मानसिंघजी रा मरसीया ।

कवित्त (छप्पय)

मृत्यु-समय १६०० समत श्रठारै साच, वरम सीको भादरवौ ।
देव भुलणी दिवस, कठण समीयो म्हा करवौ ॥
प्होर रात पाछलि, काळ त्रिप मान करायौ ।
नव-कोटा रो नाथ, साम परलोक सीधायो ॥
छत्रपती मान छत्र भग हुवौ, घरा पाल प्रथवी धणी ।
हुणहार वणीयो - हु - तव, वसु वीच माठी वणी ॥१॥

प्रजा भाग पळटीयो, साम परलोक सीधायो ।
वणी श्रवेष्ठी वार, प्रीथी रो डीगीयो पायौ ॥
मोटो राजा मान, धरा सारी रो ढाकण ।
पर दुख मेटण पीड, जपै प्रथमाद जणो जण ॥
नवकोट नाथ हुतो नीडर, धरा थभ प्रीथवी धणी ।
हुणहार वणीयो - हु - तव, वसु वीच माठा वणी ॥२॥

वणी अवेढी वार, प्रीथीपत धाम पधारे ।
ढोढी खवग दीध, सेग मेहला वीच सारै ।।
म्हाराणी मन मोट, देवडी उठी दाखा ।
चीत पडदायत च्यार, अेक फीर कीना आखा ।।
लुटाय दरव दीवा लीखा, रैणा जेज न करी रती ।
वईकुठ वास मडोवग, साम पास पुगी सती ।।३।।

अगर चनण आणीया, आण प्रीत राळ अपारा ।
वडा रचे अे वास, साम सतीया कज सारा ।।
होय कोळाहळ हाक, भाण रथ खाचे उभो ।
माठी कीधी मान, लोक सारो हुय लुभौ ।।
हुय प्रजा दुखी सारो होवै, हठ कारण लागो हीयो ।
दुनी आण दाग सोह मील दीयो, जरे कमध वास सतपुर कीयौ ।।४।।

सोनारा अे वास, कमध सोह ढीला कीधा ।
मेळ हुवो छीन माह, लार जस लाखा लीधा ।।
भजन अेक रै भाव, राज चोडै रजधानी ।
मेहमत छोडे मोह, कमध वैगे हेक कानी ।।
आपरो धरम खोयो अडग, नीरणो करे नीभावीयो ।
म्हाराज मान रहीयो जी - ते, गुणा नाथ अेक गावीयौ ।।५।।

ओ राजा अवतार, पुरस मोटो पुजाणो ।
ओ राजा अवतार, कलु मे सीध कहाणो ।।
ओ राजा अवतार, वडा री रखी वडाई ।
इण राजा अवतार, भेख री टेक नीभाई ।।
पुंनवत पुरस उजल पणे, जस नामो रखीयो जुगा ।
कलस गीरनाथ माठी करी, मेहपत न्ही रखीयो पगा ।।६।।

धरतौ थासे ध्यान, मान कमधज म्हाराजा ।
धणी नाथ जलधरी, लगी नही आई लाजा ।।
वणीयै विखमी वार, जाय छीपीयो कित जोगी ।
उपर न करी आय, हुणी होनी सो होगी ।।

आगा सु कुण मानेडला, त्रिजा इन्ह वुभमी।
अधपति काज देउ ओलवो, थने पात्र पथ कुण पुजमी ॥७॥

ते आगै तारीया, तीकै सोड कुग जोगी।
गोपीचद भरथरी, भेख मे कुडा भोगी॥
कानड वीरमजी के, मेही न्ही बात मनीजै।
सत विनोद गोगम, जिकै ही कुण गीणीजै॥
अवरकी वार रखतो अडग, इतरा लेखे आणतो।
अधपती मान करतो अमर, जोगी हु सीव जाणतो ॥८॥

मेही मान जग माह, केई परमारथ कीधा।
दान पुन दोवडा, दत वलख हाता दीधा॥
कि कमठाणा कीध, कीध सामण कव गावा।
वले अनोखो वात, राखीया सरणै गवा॥
गरीवानीवाज हुतो घणी, मेहला माया माणती।
अधपती मान करतो अमर, जोगी हु सिध जाणती ॥९॥

आस करै आवता, दुवार तिण रै अनदाता।
देसी कुण आधार, वेद वाणी वीख्याता॥
कवरावा रीभीत, कुण अव मुगी करसी।
सुणो सीधैश्वर साम, देस सारा मे दरसी॥
सासत्र अभ्यास करता सुकव याद घणा दीन आवसी।
म्हाराज मान थारा हमै, जाचग कीण गर जावसी ॥१०॥

रगीला रंगरेज, तबोली गाधी त्यारा।
सो विलखाणा सँग, पार वणस को अपारा॥
दरजी हुनरदार, काम कर चोवी करता।
सारा कीसवी सँग, तठै सोह पेट भरता॥
मरजाय गया द्रीग सोच मे, हारे वेठा हीमता।
म्हाराज मान तो वीन हमे, कहो करसी वुण कीमता ॥११॥

उर वसीया आगणे, तिकै पातस्या भगतण्या।
सभा रग साभती, सवद वोलती सुहावणा॥

गवईया गावता, राग छतीस अपारा।
कलावत कौक तासो, रीझ पावता हजारा ॥
मलीन मन हुवा अतरा, उमग झाखा पडीया जु-जुवा।
म्हाराज मान तो वीन हमे, वै माथा ढकीया हुवा ॥१२॥

वोह जाणा वाजर, पाण सारा लखपती।
साहुकार सेठीया, हार वैठा हीमता ॥
सारा भीभा छोड, छोड व्यौपार स-कोई।
हद ग्रह काठा हाथ, हुणी माठी सो होई ॥
उतपात म्हा प्रीथमी हुवी, कमध मान डीगीयो करा।
सो सुख खाप केओ-सक्यो, वीणज छोड देसावरा ॥१३॥

डोडीदार पडदार, ग्रैस करता अलवेला।
छडीदार चोपदार, सामी धरमी ग्रै वेला ॥
धणी पास ढालेत, रात दीन प्होरै रहता।
दुजा खीजमतदार, लाखा जस लेता ॥
अवतार मान तो विण अेता, मन माजा क्द माणसी।
आप वीण सको वीलखा हुवा, जोधाहर कुण जाणसी ॥१४॥

सोह सारा सीरदार, सग मुतसदी सारा।
करी जीका चाकरी, वीखा मे वारमवारा ॥
वे तीन घेरा वीच, कठण वणीया जग कीधा।
म्हाराज आपरा, देख सारा तन दीधा ॥
धणी आप धणी कुण जाणसी, न्वा लेखै कुण आणसी।
चाकरा तणी होव चाकरी, जोधाहर कुण जाणसी ॥१५॥

सारा सग सरूप, जीकै कीण रै घर जाई।
पाव आप पूजीया, कुण राखे ठकराई ॥
यारी इतरी आप, लगी न्ही अग्या लोपी।
गुर जाणे गढ पत, राज मरजादा रोपी ॥
नवकोट नाथ वुध नीरमली, पुजण गुर प्रथमी पता।
अवतार जोध गढ आवजो, मेहपत राखण मानता ॥१६॥

नव कोटा रे नाथ, दीप्ट भगवती ने दीधी।
राजा छोडै राज, केण सु मोह न कीधी।।
पुन तणे प्रभाव, सबद सासत्र कर साखी।
धणी हेक धारण, रखण सत चीत मे राखी।।
कमठाण कार मासो कीयो, नेह वाधीयो नाथ सु।
अप मान धर्म रखीओ नीभै, हरचद वालो हात सु।।१७।।

बावा खोटी वात, वसु मे भली वणाई।
त्यारी करतौ टहल, वडा री आही वडाई।।
भगती माहे भ्रात, जल धो कासु जरणी।
जोखमीयो म्हाराज, अेक न्ही नेखे आणी।।
गढ गढा मुलक होसी गलौ, अथपती न्ह आधारीयौ।
कहा चुक पड्यौ इण चाकरी, सु धणी आयौ नही धारीयौ।।१८।।

पुष्पिका – सवत १६०५ रा म्हा सुद अेकम वार गुरवार दी०। सि०। कुनणराज रा है।

१६०७. १०६८० **मुनिपति चरित्र**

प्रारम्भ – ।। र्द० ।। श्री सारदाय नम । वस्तु ।

गोयम गणधर गणधर पाय प्रणमेवि
नामे नव निद्ध सपजे, सयल सिद्ध सेवक कह थापे।
एक मना जेऊ लगे, धरे ध्यान तस लबद्धि अप्पे।।
वेकर जोडी वीनवू, द्यो मुझ वाणि वसेष।
वोली सराओ मुणिपति, चरी कथा बद्ध सुविसेष।।।१।।

जवु दीठह दीठह भरह मझमि,
मुणिपति की नगरी भली, करें राज मुनिपति सूरो।
कला वहुतरि ते कुसल, लक्षण अग बत्रीस पुरो।।
पटराणि प्रथिवी सुणु, रूपवत सु विचार।
वेटु बहु गुण आगलु, तस मुणि चद कुमार।।२।।

चउपई

राजा राज करे चिर वहु। नगर लोक ते सुखीया सहु ॥
राजा नीति पालें सुविचार। पुत्र तणे सिर सुप्यो भार ॥३॥

देखी पत्नी थयु वैराग। अथिर ससार नही अम्ह लाग ॥
श्री दमघोख मुनिवर सुणी। चाल्यो साधु वादवा भणी ॥४॥

त्रिण पदक्षणा देई राय। करी तत्रासण लागु पाई ॥
धरी ध्यान वेठो महाराज। फल्यो मनोरथ माहरु आज ॥५॥

देख्न लाभ दीधु उपदेस। सूणी वाणी वूझीउ नरेस ॥
छाडी राज ऋद्धि परिवार। राजा लीधुं सजम भार ॥६॥

अन्त :—

कुचि कथा सुणि सु विसाल। पारिव्राजिकाइ चढाव्यो आल ॥
तिणि सू णि वरि परि कीधी जेह। अम्हे हठे परि करि स्यु तेह ॥५९७॥

श्रावक जाणे द्रव्य ताहरु लीयु। तेता क्षय पाम्यो पापीयो ॥
इसउ कहता लागी वार। थयो मुनिवर नै कोप अपार ॥५९८॥

तेजो लेस्या मुकी जास्यै। धु उ नीकल्यो मुख थी तिस्यै ॥
सेठ पुत्र वे वीहै घणु। तु निधान प्रगट्यो आपणु ॥५९९॥

म द्यो आल मुनिवर नै तुम्है। कहै पुत्र धन लीधु अम्हे ॥
दीठो धुउ मुनिवर नै मुखै। अति सतोख्यौ वालै रखै ॥६००॥

घणु खमावी लागु पाइ। मै दुहव्या खमो ऋषिराइ ॥
तुम्हे कृपा परसि वृ हु जतु। तु माहतमो हुउ पसात ॥६०१॥

करै सेठि अति पश्चाताप। दीघु आल हुस्यै मुझ पाप ॥
लाज्यो घणु हीया माहे तेह। भव वाधिस्यै नही सदेह ॥६०२॥

थयो वैराग्य सेठि मनि घणु। करिस्यू काज हवै आपणु ॥
घणु महोछव वेटै कीध। ऋषि मुनिपति कर दीक्षा लीध ॥६०३॥

वेउ मुनीस्वर करै विहार। पालै पच महाव्रत भार ॥
ध्यान मौनप तप सोभी देह। देवलोक देव थया वेह ॥६०४॥

तेहनु ध्यान हीया माहे आणि। वेहु एकावतारी जाण ।।
मुगति पथ ते जास्यै वही। सुणु कथा सखेपै कही ।।६०५।।

र का सवत पनरे पचासू जाणि। वदि वैसाख मास मनि आणि ।।
१५५० दिन सप्तमी रच्यौ रविवार। भणै सुणै तेहनै हर्ष अपार ।।६०६।।

पुष्पिका – इति श्री मुनिपति चरित्र सपूर्ण समाप्ता। सवत् १७६५ वर्षे मति कातिक वदि १३ दिने। कृष्णगढ मध्ये लपीकृत्वा।। श्री रस्तु। कोसतूरचदरी ने सगाय।

१६२८ ११०१३ (३३) मेवाड गुण वर्णन

प्रारम्भ :– दूहा

मन धरि माता भारथी, कविया कोतिक काज।
गुण वर्णन् मेवाड का, करिसू कायक आज ।।१।।

छद जाति हाटकी

नही उन्हो खाणो नही दोजांणो, राणा केरे देश।
जव मकी रोटा छोटा खोटा, खारी खायै हमेस ।।
मद मस आहारी सहु नर नारी, कालो पहिरण वेश।
मेवाडै देशै भुलै चूकै, मति करिजो परवेश ।।१।।*

पग पग जिहा माटा काठा भाटा, लागै ठोकर ठेग।
वालक नै वुढा सहु नर मूढा, भण्या नही लवलेश ।।
अध नघ्या जघ्या पहिरण नितका, वतका करै कलेश।
मेवाडै देशै भुलै चूकै, मति करिजौ परवेश ।।२।।

जिहा नर नै मूढै दाढी मोटी, छोटी मुछा केश।
वलि राखै पट्टा जट्टा चट्टा, मोटा पेट विसेस ।।
मुहडा पीलरीया नर विलुरिया, ऊका हीण नरेश।
मेवाडै देशै भूले चूकै, मति करिजौ परवेश ।।३।।

---

* प्रस्तुत वर्णन किसी जैन मुनि को मेवाड के ग्रामों मे हुए व्यक्तिगत कटु अनुभवो की अभिव्यक्ति मात्र है। इसे मेवाड के सामाजिक जीवन के सदभ मे प्रमाण-स्वरूप नहीं मानना चाहिए।

दारुया सेवरीया वलि टेघडीया, एहवा सहिजे बोल ।
सो वरसे सीधा न हुवै, मेघा हीया फूटा ढोल ।।
नीपजै भारवला नही ते भला, नही कावल नही खेस ।
मेवाडै देशै भुलै चूकै, मति करिजौ परवेश ।।४।।

जिहा नर रोगीला वली सोगीला, छिली फीहा पेट ।
नर वाता करता करै लडाई, धम्मा धम्म धमेस ।।
पीवै मदु कोई भागि तिजारा, अमल तमाखू पेस ।
मेवाडै देशै भुलै चूकै, मति करिजौ परवेश ।।५।।

नवि चालै गाडा वहिल न चालै रथ, नवि चालै तेम ।
एक पोठ्या हीडै जो धणी खेडै, पुछ मरोडै तेम ।।
घर वारी जोगी जगम सगम, सगी वलि दरवेस ।
मेवाडै देशै भुले चूकै, मति करिजौ परवेश ।।७।।

जिहा लागै पाणी खोटी खाणी, वाय चोरासी गेह ।
माकण नै माछर चाचण सुरला, वहुला दीसै तेह ।।
जिन धरमी थोडा घणा मिथ्या, ती मानै देव हमेश ।
मेवाडै देशै भुलै चूकै, मति करिजौ परवेश ।।८।।

माथै पाघडीया वाधै जांणे, आरीसा को म्यान ।
मोटी रुदराछा वादी सरिखी, पहिर हलावै कान ।।
नासै पहिला थी फोजा फीटै, डुगर करै परवेश ।
मेवाडै देशै भुलै चूकै, मति करिजौ परवेश ।।८।।

जिहा डायण नै सायण गोगा मोगा, भूत प्रेत असख ।
तसकर पासीगर घणा ठगा राते, वलि खाली खख ।।
गछ नायक साहिव वगर उदैपुर, मति देज्यौ आदेश ।
मेवाडै देशै भुलै चूकै, मति करिजौ परवेश ।।९।।

कवि नाम इण विध ए मेवाड को, कवि जिनेंद्र कृत छद ।
पिण एक उदेपुर है भलो, सो रहिजो चिर नद ।।१०।।

इति मेवाड को छंद सपूर्णम् । छ ।

दूहो

प्यारी लागत भाग मै, शशी वदनी मारी ।
राय अगण ऊभी रभा, जाणे केशर गुल क्यारी ।।१।।

जरर जरर बादल जरर, जाडा नीर जरेह ।
जिण रित कामणि मद वहै, प्रीतम आव घरेह ।।२।।

लि० (लिपिकर्त्ता) सुजाण ।

१६५२. ११००६ ग्रहसयुक्ति

प्रारम्भ – ।। श्री परमात्मने नम । अथ युक्ति लिख्यते । ॐ ।

एक पुरुष द्रव्य की इछा करके घरतै निकला । वन मैं गया । वन मैं एक पुरुष बैठा था । वातै इस्नै प्रार्थना करी कि हे प्रभु एसी कृपा करो कि मेरे को द्रव्य प्राप्त होवै । उस पुरुष नै उस्को एक कुदाला और एक खड्ग दिया और पास एक मन्दर बताया और कहा कि इस मन्दरि मैं जा तुजकू द्रव्य प्राप्त होवैगा । वह पुरुष उसकै अन्दर गया । देखै तौ क्या है, कि च्यार स्त्री उसमैं खडी है । उनेसे पुरुष नै पूछा कि तुम कौन हौ, किस्कुल की हौ, क्या नाम है । स्त्रिया बोली हम स्त्रिया है, ब्राह्मण कै कुल की हैं, जो नाम था, सो बताया । फेर पुरुष नै पूछा कि रहती कहा हौ । एक नै कहा मैं अग्निसाला मैं रहती हूँ, दूसरी नै कहा मैं द्वार मे रहती हूँ, तीसरी नै कहा मैं धर्मशाला मे रहती हूँ, चौथी नै कहा मैं अन्त पुर मे रहती हूँ । यह कह कै स्त्रिया गुप्त हो गई, और च्यार पुरुष निकस आए । फेर उन्से पूछा कि तुम कौन हौ, क्या नाम है, किस कुल के हो । उनानै कहा के हम पुरुष हैं, क्षत्री कुल है और अमुके-अमुके नाम है । फेर पूछा कि रहते कहा हो । एक नै कहा मैं अग्निसाला मे रहता हूँ । पुरुष ने कहा कि वहा तो अमुकी स्त्री रहती है । उस्ने कहा के मेरी स्त्री है । प्रथम तो उसका काम क्या है, और जो रहती है तौ दासी होकै रहै । दूसरे से पूछा कि तू कहा रहता है । उस्ने कहा मैं द्वार मे रहता हूँ । पुरुष नें कहा के वहा अमुकी स्त्री रहती है । उस्ने कहा कि मेरी स्त्री है । प्रथम तो उस्का काम क्या है, और जो रहे तौ दासी होकै रहे । तीसरे तै पूछा कि तू कहा रहै है । उस्ने कहा कि मै धर्मसाला मे रहता हूँ । पुरुष ने कहा कि वहा तौ अमुकी स्त्री रहती

है। उसने कहा कि वह मेरी स्त्री है। प्रथम तो उस्का काम कहा, और जो रहै तो दासी होकै रहै। चौथे से पूछा कि तू कहा रहता है। उस्ने कहा कि मैं अन्त पुर मे रहता हूँ। पुरुष ने कहा कि वहा तौ अमुकी स्त्री रहती है। उस्ने कहा कै मेरी स्त्री है। प्रथम तौ उस्का काम कहा है, और जो रहै तौ दासी होकै रहै। तब पुरुष नैं सुनकै कहा कि तुमनै वडा अनर्थ किया, क्षत्री हो कर्कै ब्राह्मणीया कौ घर मे गेरी, तुमकौं दड देना योग्य है। तव पुरुष नै खड्ग काढि कै पृथक्-पृथक् च्यारो का सिर छेदन किया। तब फेर च्यारो स्त्रिया प्रकट हुई। स्त्रियो ने कहा कै हमारे पुरुष हैं, हम सती होवैगी। तव ये स्त्रिया जलने लगी। तव अन्त पुर मे जो स्त्री रहती थी सो पुरुष नै रख लीनी और कहा कि तू मेरे पास रहा कर। उस्कै रख कै फेर तीनू स्त्रिया कु, च्यारौं पुरुषा सहित दाह दिया।

अन्त –

'हरिं अह इडेति' स-हरि की मैं स्तुति करू हूँ, सो कू न हैं। 'ससार-ध्वात-विनास' ससार का कारण जो अज्ञान, तिस्का नास कर्ने वाला है। काहे तें विषै तपय कर्के इस आकाक्षा विषै कहै है। 'योगाष्टागैरुप्रज्वलितज्ञानमयाग्नौ' योग कहिये, प्रत्यक् चैतन्य और ब्रह्मचैतन्य, दोनौ की एकता, तिस्की प्राप्ती विषै साधन भूत निर्गुण के विषय कर्ने वाले आठो अगा कर्कै निर्गुण योग कै आठो अग, आत्मयोग, ग्रन्थ योग विसेष का तिस विषै कहे हैं। सोई दिखावै है। देह और चक्षु आदिक इन्द्रियो विषै जो विरक्तता, सो यम कहियै। इस योग विषै नियम दिखावै है कि आत्मा तत्व विषै जो प्रीत, सो नियम कहियै। वाह् के विषयौ विषै उदासीनता कू ही आसन कहै हैं, और चितादिक सम्पूर्ण भावौ विषै, ब्रह्म कर्के भाव कर्नै ते सम्पूर्ण वृत्तियो का जो निरोध, तिस्कू प्राणायाम कहियै। अपनी वुद्धि की विषयो तै जो विमुखता, सो प्रत्यहार कहियै। और आत्मा-निष्ठा कूँ धारणा कहियै, ब्रह्म मैं हूँ, तिस्कौं ध्यान कहियै। द्रष्टा तै भिन्न कुछ नही, अज्ञान रहित जो पूर्णा, आत्मा मात्र, सो समाधि कहिये। तिनकाष्ट स्थानी आठो अगौं कर्कै बलता हुवा जो ज्ञानरूप अग्नि, तिस विषै, और जो मन्द मुमुक्षू हैं, साधनौं विषै हैं अन्तर जिसके और नही परिपाक हुवा मन जिस्का, जिस्के प्रति कहै है। पतञ्जलि ने वर्णन किये प्रसिद्ध है, यम नियमादिक आठौ अग हठयोग के। तिन काष्ट-स्थानी आठो अगो कर्कै वलता हुवा जो ज्ञानमय अग्नि, तिस विषै दृष्टान्त 'लोहयुत हेम यथाग्नौ' लोह कर्कै मिले हुये सुवर्ण कू अग्नि विषै तपाय कर्के

लोहे कू त्याग कर्के सुवर्ण कू जैसे ग्रहण करिये है, तिस्की नाई, चिर्काल विषै और अति चिर्काल विषै, मध्यम और मन्द मुमुक्षू दोनू, आत्म पद कू प्राप्त होवै है।

पुष्पिका – इति सिघ्र और चिरकाल विषै ज्ञान होने के निर्णय की युक्ति पूर्ण हुई ।। ३६ ।। सवत् १६२५ रा कातो सुदि १ श्रीरस्तु ।।

१६७१ १२३७६ (५) **राजनीति की रीति**

प्रारम्भ :– ।। अथ राजनित लिक्षते ।।

दुहा

अछर अगम अपार गति, किनहुन पार-न पाय ।
सो मोहि दीजै सकत, जय जय जय जुगराय ।।१।।

छप्पै

वरनी उज्वल वरन, मरन जग असरन सरनी ।
करनि करुना करन, तरन भव तारन तरनी ।।
सिर पर धरनी छत्र, भरनी सूप सपतो भरनी ।
भरनी अमृत कुरन, हरन दुख दालिद्र हरनी ।।
धरनी त्रीसुल खपर भरनि, भव भय हरनी सकल भय ।
जुगदव आदि बरनी जसु जय जगधरनी मात जय ।।२।।

सोरठा

दीजै वृधि अपार, करि प्रनाम प्रारभ करि ।
राजनीति विस्तार, जसु वरनै वानी सुगम ।।३।।

जिन वखतन मे पातसाह, राजत आलमगीर ।
तिनै वखत पैदा कीयो, गुन गनियन गभीर ।।४।।

सोलकी जुगमाल सुत, उदया मीघ अनेक ।
गून दीनै तातै गुनि, वाध्यो ग्रथ विसेख ।।५।।

र का १८१४ — समत नाम अठारसै, वरस चउदत माहि ।
आसो सुदी नामी सुकर, गुन वरन्यौ चित चाहि ।।६।।

राय जदुकुल जीत सुत, नगर अभेपुर नाम ।
महीर-वारा जित मही, वरन वरन वीसराम ।।७

मनोहँ (मनोहर)

जाके जमु कचन की सीख वीराजमान,
जाके भुज भारन को पारहु न लहीयै ।
जाके दान गग से प्रवाह वहै आठौ जाम,
जाके नर देव हु की सेव सब चहियै ।।
जाके रुप अधर उदार पचरूप जेसे,
रायगीरि राय देखी रीझ रीझ रहियै ।
राजनीत की मत नरेसहु को जसुराम,
कहीयें तो मेरहु समान कर कहियै ।।८।।

दुहा

दान जुक्त है दोउ जाहा, गु न हे जहा गभीर ।
एसे राजत हे अमुज, दीपमिहे के वीर ।।६।।

जेसे वेद विरचि को, अपरम दीये उपाय ।
राजनित राजान को, ऐसें दीये वताय ।।१०।।

छप्पै

प्रथम अग भुपाल, राजरानी अग दुजो ।
तीजे राजकुमार, मत्री चोथै गिन लीजै ।।
पंच मुसाहिब अग, अग षट रावत मानो ।
साप्तमा रयत अग, कवि अठ अग वखानो ।।
जुग रीत जीत जानो जुगति, विवेध त्रिवेक विचार वह ।
जप करत सदा समरत जसु, आठ अग वरने मु यह ।।११।।

याको अवै उदाहरन, प्रगट करत परमान ।
राज नीत गुन चातुरी, सुन सुन लेहु मुजान ।।१२।।

अन्त -

छप्पै

सवा भार सोवरण करण, दिन पै दत दीनौ ।
अजहू पै हरक हाय, कोउन कै है दत दीनौ ।

देखू उनपै आय, दाढ काढन कू लागै ।
उनकी तुध रह गई सुनो, मगन पत आगै ।।
यौ कोउ बुरी न कीजियै, ज्यू त्यू ही जस दीजियै ।
जुग बीच कोऊ कविता जसू, दाता अत न लीजियै ।।१३।।

दुहा

राज नीत की रीत जसू, प्रथम अग कियै आठ ।
छन्द संख्या छपय दस छानठ कवित, बने दोहरे साठ ।।१२।।

पुष्पिका – इति श्री राजनीति विस्तार यदुकुल सिंगार कवि अग वरणन नाम अष्टम अग समाप्तम् ।

दुहा

लिपिकाल दिग्गज दुज निध महि लखो, जेठ कृष्ण पख जान ।
१९२८ रामदवारै जोधपुर, विष्णुदास लिखतान ।।१।।

वाचै जिनकू राम राम २ २ २ २ २ २ २ २ श्री र र ।

१७१९ १२००६ रामचरणजी की वाणी
(जिग्यास बोध)

प्रारम्भ –

सिख भिख्यूक दातार गुर, राम नाम दे दान ।
ले आतरि इक तार सै, भजता होइ कल्याण ।।
भजता होइ कल्यान, भरम का बधन बिनासै ।
दया सील सतोष, ग्यान हिरदै परकासै ।।
रामचरण सु रती कहै, कहै कोई सत सुजान ।
सिख भिख्यूक दातार गरू, राम नाम दे दान ।।३७।।*

राम नाम वोषदि अमल, दे सतगुर वैद उदार ।
रोगी रूची ले पचि रहै, तो रहै न रोग बिकार ।।

* प्रारम्भ के ३६ छन्द अप्राप्त हैं ।

तो रहै न रोग विकार, ताम मैं ससै नाही ।
कहै वेद अरू पुरान, सत जन साखि भराही ।।
रामचरण सा धीर कहै, ऐ मन मजन कू सार ।
राम नाम वोषदि अमल, दे सतगुर वैद उदार ।।३८।।

अन्त – ग्रन्थ वौपमा, छन्द पधरी

जग्यास वोध जग तिरन काज, तजि जगत होइ हरि सु समाज ।
ऐह सुध जग्यास वोध, होइ जग्यासी करै सोध ।
तन मन प्रान आनदकार, निस श्वास नाम करि हैं उचार ।
राम उचारै राम लीन, ऐह सो भजानै प्रवीन ।
म्हाराजि उचरे गिरा ग्यान, मुख सरोज वाडक निधान ।
कहे सवद अणभौ अनूप, निति धरम निरणै सरूप ।
सव रीति रैसि भाखी निधान, भिनि भिनि भेद दिसटात जानि ।
ग्यान भगति वैराग गीति, सुनै ताहि उपजै प्रतीति ।
कीऐ खडना काम क्रोध, कह्यौ वरनि जग्यास वोध ।।९३।।

कूडल्या

रामचरण म्हाराजि का, सवद सुधा मई सार ।
सकलन कर्त्ता रामजन ताहि सोधि कै, कीन्हौ ग्रन्थ विचार ।।
कीन्हौ ग्रन्थ विचार, जोडि परकरण वणाया ।
न्यारे न्यारे भेद, देस का देस मिलाया ।।
ग्रन्थ नाम जग्यास ऐ, सुध वोध सुख धाम ।
याहि विचारै दास होइ, सो पावै पद राम ।।९४।।

दुहा

सकलन स्थान सहिपूरै सानदसू, सता सरणि निवास ।
सतगुर किरपा सू वण्यू, ग्रन्थ वोव जग्यास ।।९५।।

सकलन काल अठारा सै सैताल के, समत कातिग मास ।
१८४७ वुदि दोजि सोमार दिन, पुरण ग्रन्थ जग्यास ।।९६।।

ग्रन्थ सख्या कही ऐ है—

छद वेताल दुहा २९ साखी ३६८,
किवत ५५४ पद हैं ६ सवईया ६ ।

छद मनहर २६ कू डल्या १०३७ अर रेखता ८,
फुनि भूनणा ७ जाणू खरा ।।
त्रीभगी १४ अरेल ३७ पधगी २,
चौपई ५ झपताल हैं १२ ।
भुजगो १ भलि सोरठा १४,
छद ऐ वेताल हैं ५ ।।
छद सख्या जानि यामै, सपत दस परमाण है । १७
अमोघ वाइक कहै सतगुर, सबद अणभै वाण हैं ।।
सबद सख्या जोड सारी, सोला सै अकतीस हैं । १६३१
राम जन गुर सरणि, जोडे ऐ परकरण अकीस है ।।६८।।

दुहा

जग्यास बोध उर सोध करि, रामगरू मम सीस ।
जोड वणाई रामजन, ऐ परकरण अकीस ।।६६।।

पुष्पिका – इती श्री जग्यास बोध आतम परमोध गुर सतूति ग्र थ सख्या निरूपण नाम सबद १६३१ रेकवीसमो परकरण । २१ । इती ग्र थ जग्यास बोध सपूरण । ग्र थ १ । *

१७४१. १०६०२ रामचरित्र
(प्रति अत्यन्त अशुद्ध लिखी हुई है)

प्रारम्भ – ।। अथ रामचरत लिखते ।।

दूहा (चौपई)

निमो निमो निर्मिमाकार[1] गुसाई । घट घट व्यापक जल थाल माही ।।
त्रीमा पुत्र दुजो कोइ नही । तेरी काला साकल जुग माही ।।
पार ब्रम पूरण पैदागर । नाराईण नरसिग नटनागर ।।
आलख पुरस आभनासी । सकल माझ तेरी पैदासी ।।
सुर तेतीसा गोरख आठ्यासी । प्रक जौगेसर सिध चोरासी ।।
हुकमि बदार सब ठाढा । करजोडी करण करैह गाढा ।।

* इसके बाद ग्रन्थ 'निश्वास-बोध' प्रारम्भ किया गया है ।
१ लिपिकर्त्ता ने अधिकाशत अकारान्त शब्दो को आकारान्त लिखा है ।

ब्रमा वीसन महादेव दाना। सवही गो रहन लगाना ।।
वडे वडे द्रगपाल कहावै। तेरो दीयो सव कोई पावै ।।
राम सीमर मन मोरा नाई। वारो वार कहू समजाई ।।
गुर उपदेस सुणे नही काना। राम सुमर मन मुढ दीवाना ।।
राम सदा साकडै साही। समरथ राम सदा सुखदाई ।।
राम सव दुख भाजण हारा। राम ही सव सुख के दातारा ।।
रांम ही जीवन राम आधारा। राम ही पीतम राम ही प्यारा ।।
राम ही निरधार के आधारा। राम ही करनी निसतारा ।।
राम ही सीध उतारे पारा। राम ही नरग निवारण हारा ।।
राम ही जीवन साघाती। राम ही सजन राम ही साथी ।।
राम ही पीता राम ही माई। राम ही वन्धु राम ही भाई ।।

अन्त –

राम चिरत कहै दाहीयारा। जाकी प्रवु वात सुधारा ।।
राम रस पीवन पावै। सुदरदास राम जस गावै ।।
राम पुरी म (मे) मेरा वासा। गुर कालु न(ने) सीष सु दरदासा ।।
ऐते रामचिरत पडते गुणते। सो मोख पावते ।।

रामचिरत सपुरण ।

१७७२. १०६७६ रामविनोद-भाषा

प्रारम्भ – ।। श्री गणेशाय नम ।। अथ रामविनोद ग्रथ ।।

दोहा

सिधि वुद्धि दायक सकल हिय, गवरी पुत्र गणेश ।
विघ्न विडारण सुख करण, हरष धरी प्रणमेश ।।१।।
श्री धनुतर चरण युग, प्रणमु धरि आनद ।
रोग नशै जस नाम थी, सव जन कू सुख कद ।।२।।
विविध शास्त्र देखि करि, सुगम करू अधिकार ।
रामविनोद ग्रन्थ यहु, सकल जीव सुख कार ।।३।।

अथ पुरुष लक्ष्यण

चतुर विचक्षण दक्ष नर, सुन्दर रूप सुजान ।
वैद्य वुलावण आवही, मिष्ट वचन प्रमान ।।४।।

फल वस्त्रादिक लेह करि, धरै जु वैद्य हजूरि ।
रिक्त पाणि नहि जाईये, दलगीरी तजि दूरि ।।५।।

दोय पुरुष सग वैद्य कै, तव ले जाय बुलाय ।
एक पुरष सग होइ चलै, तब बैद बुलायो जाय ।।

अथ सुभ सुकन चौपई

कन्या अष्ट वर्ष प्रमान । वृषभ जोड हस्ती परधान ।।
मीन जुगम दधि पक्का धान । विप्र तिलक मुख बोलई बाणि ।।७।।
धूम रहित अग्नि राजान । आमिष वेश्या सुहगान ।।
भर्यो कुभ पदमणि फुलमाला । पुत्र सहित फुनि आवेहि बाला ।।८।।
इत्यादिक सकुनै सुभ भलै । वैद्य सनमुख जो आवई मिलै ।।
तौ वैद्य जाइ तेहनै घरबार । रोगी जीवै सहि निरधार ।।९।।

अथ नाडी शरीर चेष्टा लक्षण दोहा

आदि नसानै देखिये, लक्षण अग निहार ।
मुख दता लोचन नखा, घ्राण श्रोत्र लघु धार ।।१०।।

जिह्वा अधर हस्त फुनि, मडित करो विचार ।
प्रथम ए लक्षण देखिये, करि पीछै उपचार ।।११।।

अन्त – दोहा

सदर्भग्र थ

बैद ग्र थ जे देखिए, किस ही न पायौ पार ।
ओपधादि के गुण घणे, प्रगटे इण ससार ।।८८।।
आत्रे चर्क हारीत हू, जोग चितामणि वृ द ।
वाग्भट्ट श्रुश्रुतात् भृगु, क्षार पाण आनद ।।८९।।
सन्निपात कलि कातही, राज मार्तड बखान ।
रस चितार्माण मतकहू, इत्यादिक मत आण ।।९०।।
बिंदुसार मनोरमा, सारग धरि सुजाणि ।
कह्यौ निदान आतक तै, वहु बिधि रोग निदान ।।९१।।
इति शास्त्र साखि ।

गुण अनेक इनके अछै, तिसका ले लवलेस ।
प्रगट जु भाषा ए रची, बहु प्रकार सुविसेस ।।९२।।

अदभुत ग्रंथ जु गे रच्यौ, रामविनोद ऐ नाम ।
व्याधि निकदन सुख करन, कुसल सदा अभिराम ।।६४।।

अथ फल इसका

परोपकार कहा किण हुवै, कहा किण धरम निमति ।
किहा किण फुनि धन मित्र ही, किहा किण सोभा मति ।।६४।।

करमभ्यास किण सही, किहा किण काम सनेह ।
करै चिकतसा चतुर नर, निफल न हुवै एह ।।६५।।

चौपाई

गच्छ श्री कोटिक गच्छ खरतर प्रधान । श्री जिहिंसिह सूरि राजान ।।
एवम् रजे जिण अकवर साहि सलेम । करामाति दिखलाई जेम ।।६६।।
गुरु
नाम तासु सीस वहु गुण मणि धार । पद्मकीरति जस सयल ससार ।।
तसु पद पंकज विद्या पूर । प्रतियो जा लगि ध्रू ससि सूर ।।६७।।

पडित पद्मरग सु जगीस । नरनारी प्रणमैं निस दीस ।।
कवि तासु शिष्य भाषा करि कही । रामचद्र मुनि जाणौ मही ।।६८।।
नाम

सवत दोहा

रचनाकाल गगन पाणि फुनि दीप ससि, हिमऋतु मगसिर मास ।
१७२० सुकल पक्षि तेरस दीने, बुधवार दिन जास ।।६६।।

मरदानौ अरु महावली, अवरगसाहि नरिंद ।
तास राज- मैं हरप सु, रच्यौ शास्त्र आनंद ।।३००।।

सूरि गुणे साचौ सदा, जगत गुरु जिनचंद ।
प्रवल पट्टूरै परगटौ, दीपै ज्यू रवि चद ।।१।।

रचना-स्थान उतर दिसि खुरसाण मैं, वरनू दिसि प्रधान ।
सजल भूम है सरवदा, सकी सहर सुभ थान ।।२।।

परदुख भजण कै लिऐ, कीयौ ग्रंथ सुख कद ।
चिर लगि रहज्यौ सदा, जा लगि मेरू दिणद ।।३।।

पुष्पिका –

इति श्री पडित पद्मरग शिष्य रामचद्र विरचते श्री रामविनोदे मदन मोदक १, कामेस्वर गुटिका २, कामकतूहल गुटिका ३, पुस्तपुरी थभन गुटिका ४,

वधेज बलवीर नाम गुटिका ५, सिंहवाहनी गुटिका ६, धातुखीण उपाय ७, नामर्द उपाय ८, गतवीरज सवीरज कू गुटिका ६, हस्तकर्म उपाय १०, वीर्ज बवेज लेप ११, मथभ लेप १२, लिग दृढ कर्ण लेप १३ योनि दुरगध १४, लिंग स्थूल कर्ण उपाय १५, लिंग पीड कू लेप १६, भग सकोचन उपाय १७, योनि पाणी करै तिसका उपाय १८, योनि दुरगध उपाय १०, योनि सूल उपाय २०, कुच कठिन प्रफूलित उपाय २१, कछ विलाई थणैला उपाय २०, स्त्री पुष्प आवण का उपाय २३, ऋतु गमावण उपाय २४, स्त्री गरभ धरै छोडि वृध उपाय २५, मृत-वछा उपाय २६, नालि परावर उपाय २७, सतान उपाय २८, पुन शास्त्र साखि-विकार नाम सप्तम समुदेस । सर्व गाथा ३०३ ।

प्रथम समुदेस गाथा २४६

द्वतीय समुदेस गाथा		१४२	तृतीय समुदेस गाथा		२३२
चतुर्थ ,,	,,	३११	पचम ,,	,,	३७६
षष्ठम ,,	,,	३१०	सप्तम ,,	,,	३०३

श्री रामविनोद समाप्त । समत् १८९५ का मीती भाद्रवा सुदि १२ । लिपीकृत साधू गगाराम जिला०

१७७३ १२३६४ **राम विवर-विजय गीत**

प्रारम्भ – ।। श्रीमते रामानुजाय नम ।।

श्लोक

सजलजलदगात्र पंकजाकारनेत्र । शिरसि धवल-छत्र जानकी त्वं कलत्र ।।
सुरपतिकृतमित्र भूतले चैक पात्र । दशरथनृपपुत्र नौमि राम पवित्र ।।१।।

विवर-विजय गीत रामचारित्रपुण्य । रघुपति कृतमुग्र पारमेष्ठ्य पुनीत ।।
प्रकृति-परम-रम्य भाषया भाषयिष्ये । जनितजयमनन्य राघवेश पणम्य ।।२।।

भुवनविमदकीर्ति प्राणिनामाश्रय च । असितासितस्वरूपमूर्विजाराममीश ।।
सुमति-मति-प्रताप अतरगे निधाय । त्रिवर-विजय गीत गीयते गाथयाद्य ।।३।।

प्रणम्यप्लवता नाथ पावन पावनात्मज ।
शिव सौख्यप्रद वक्ष्ये महिरावणमर्द्दन ।।४।।

उल्लघ्य सिधो सलिल सलील जनकात्मजाया कृत शोक वह्निम् ।
आदाय तेनैव ददाह लका, नमामित प्राजलिमाजनेयं ।।५।।

सोरठा

गुरु पद पद्म पराग सन, निज मन मजन कीन्ह ।
मम उर विमल विवेक जिय, हरपि कृपा करि दीन्ह ॥१॥

विवर कथा पावन परम, उमहि कहि वृषकेतु ।
सावधान हरि जान मुन, राम सुजस कर हेतु ॥२॥

चौ० (चौपाई)

श्री रघुवीर उदधि तट आयुउ । रावन समाचार सुनि पायउ ॥
सुकसारन अस कहा वहोरी । सग अनीक नाहि कछु थोरी ॥
तिनहि गोप्य अस पुछन लागा । वरनहु सेनप सहित विभागा ॥
सत्य कहहु चरपति सुभ वानी । चहौ सेन सख्या पहिचानी ॥
मृपा मोहि जिनि कहसि वढाई । भाल कीम प्रभुता अधिकाई ॥
तिन महि कौन मुस्य वलवाना । का प्रभुता कहो प्रगट प्रमाना ॥
इहि विधि कहेउ दसानन जवहि । सुकसारन हसि वोलेउ तवही ॥
नाथ दीख जस कपि समुदाई । भाक भेद तस कहो सुनाई ॥

दो० (दोहा)

सुनहु तमीचरपति प्रवल, तुमहि कहत मद भाइ ।
सकर सपथ प्रमानि पन, वरनन करत वनाइ ॥२॥

चोपई

हम जव गये विभीषन साथा । देखेउ सेन सहित रघुनाथा ॥
मुख्य जूथपति जे हम देखे । वल प्रमान निज हृदय विसेखे ॥
पुनि कछु सुना सेन मह जाई । कहव सत्य कछु नाहि वडाई ॥
प्रथमहि दीख राम रघुनाथा । अनुज सहित कस वरनहि गाथा ॥
राज विभीषन कहु तिन सारा । पुरव तुम्ह सन कहे उदारा ॥
अनुपम वल अतुलित प्रभुताई । नाथ सुनेउ अस कपि कटकाई ॥
भानु विव इव राजत नीके । देखत लघु प्रताप अति-हीके ॥
तापस वेस जुगल वलवीरा । धन्वी गुन समुद्र अति धीरा ॥

अन्त – दोहा

मारे इह मारुति सुवन, दुख दायक सब सोधि ।
तुम निरभय विचरहु अवनि, बहहु न कछू प्रतिबोधि ॥१॥

सकुच न करिय उदार मति, होनहार सोई होय ।
पच्ची कृत सु प्रपच वस, राखहि सुलच्छिनि (लोय) ॥२॥*

ग्रन्थाङ्क ३०२९४, पत्र संख्या ४५-४६ वें

अन्तिमाग – चौपाई

[कथा माहात्म्य एवम् कथा स्रोत]

भूतल सप्त द्वीप नव खंडा। भयउ प्रगट प्रभु सुजस प्रचंडा ॥
तिहिं अनुसार बहुत कवि गाँवहिं। तदपि अपार थाह नहिँ पावहिं ॥१॥

सकल मनहिँ मारुति धरि भावा। लीन्ह जाचि रघुवर तन पावा ॥
जहँ जहँ राम कथा कलि गाँवहि। मन्पदि पवनसुत तहँ चलि आँवहिं ॥२॥

सुनहि राम जस दिन अरु राती। कबहु न अघटत असुर अराती ॥
विदर विजय श्रीपति जो कीन्हीं। बाँटत इन्द्र सुरन्ह कहुँ दीन्हीं ॥३॥

अमरापुर इह कथा अनूपा। गई तिनहिँ गाँवहिँ सुर भूपा ॥
तारपाँन कविवर इक भयउ। इन्द्र तुष्ट मख तिहिँ निरमयउ ॥४॥

दोहा

कीन्हे प्रश्न सुरेस तिन्ह, तबते तहँ चलि आय ।
कहा लेहु इच्छित बरहि, समय मोक बहाय ॥१॥

तारपाँन कर जोरि तब, कहा इन्द्र सन एहु ।
जान पाव भूतल भुवन मोहि कृपा करि देहु ॥२॥

---

* अन्तिम पत्र अप्राप्त होने से इसी कृति की अन्य प्रति, जो प्रतिष्ठान मे रामचरित-मानस के साथ उपलब्ध है, से उसका अन्तिमाश तथा पुष्पिका उद्धृत की जा रही है। ग्रन्थाङ्क ३०२९४, माप ४२x२० में भी

चौपाई

इद्र कहत मुनि कविवर भाई। भूतल सकल वस्तु भल आई ॥
विवर विजय रघुपति गुन गाहा। अहइ न अपर सकल चित चाहा ॥१॥

अस कहि सकल कथा हरि गाई। सुनि सुभ बाँनी लिखेउ तिनि साई ॥
तबते प्रगट भएउ भुव माँही। गाँवहिं ताल प्रबध लखाहीं ॥२॥

ता बरनी कविवर कवि तुलसी। राँम प्रसाद सुमति हिय हुलसी ॥
सज्जन सुनहि राम गुन गाहा। करहिँ न अचरिज लगि उतसाहा ॥३॥

राँम अनत अनत कहाँनी। कलपाँतर जस अति सुख दानी ॥
जिहि विधि जिहिं कवि जो सुनि पाएउ। तिहिँ विधि तस तिन वरनि सुनाएउ ॥४॥

छद

वर्न्यौं सुजस तिहुँ लोक पावन स्याँम-घन श्रीराँम को।
कलि कलुष हारक जलधि तारक मरनप्रद सुख धाँमको ॥
प्रभु जाँनि आपुन दास मो कहुँ भक्ति अविरल भाँवनी।
श्री रमन देहु दयाल स्वाँमिन सदा अविचल पाँवनी ॥१॥

दोहा

सुन्दर श्रीपति सुजस सुभ, गाँवहि नर अरु नारि।
विजय विभूत विवेक वड, तिनहिं देहि त्रिपुरारि ॥१॥

जिय चाहत जुग सपनिहि, तो श्री रघुवर गाय।
आँन भरोस विहाय भजि, दायक सुख समुदाय ॥२॥

कोटि काँम अभिराम छवि, राम लखन सिय राँनि।
कविनाम मगलीक मारुत सुवन, भजि तुलसी सुख साँनि ॥३॥

सत कृपा रघुवीर पद, लगहि सु-मन ललचाय।
तिहिँ ते सत सगति सकल, करहु न आँन उपाय ॥४॥

राँम कृपा हनुमत कृपा, कहेउँ सुजस अतिसार।
तुलसी जे अनुदिन रटहि, वढइ विवेक विचार ॥५॥

क्षेपकस्थल सुन्दरकाड अनतरै, जुद्ध करन की आदि।
विवरविजय गाँवहि सुनहिँ, ते सुख लहहिँ अनादि ॥६॥

जिनकै हरि गुन सो न हित, नहि सतसग विचार ।
तुलसी ते निज अवकर, जोवन हरन कुठार ।।७।।

पुष्पिका – इति श्री रामचरित्र मानसे सकल कलमष विध्वसने विवर-विजय सपादनो नाम पचमो सोपान समाप्त । मिति आश्विन सुक्ला नोवम्या ६ वार वृति बुधवारस्य श्री नृसिंग्रालय ग्रथ समाप्तौ ।।
लिखि जगन्नाथ श्री रामानुजदासोह, स्व पठनार्थ ।
श्रीरस्तु । लेखक मगलाना च पाठकाना च मगल । मगल सर्वभूतानां भूपति भूपति मगल ।१। श्रीरस्तु ।

१७७८. १०६७० **राम-सीता चरित्र**

प्रारम्भ :– ।। ६० ।। ओ३म् नम ।।

दूहा

सुखदायक सासण धणी, तारिक अरिहत देव ।
कर जोडी तेहनै करु, नमस्कार नित मेव ।।१।।
निज गुर चरण कमल नमु, तीन तत्व दातार ।
कीडी थी कुजर कीयौ, ए मुझने उपगार ।।२।।
दान सील तप भावना, सीवपुर मारग च्यार ।
सरिखा छै तो पिण ईहा, सील तणो इधकार ।।३।।
पाप अठारे जीण कह्या, करे मति भव जीव ।
कीया थी दुख पाडुवा, नरका खावै रीव ।।४।।
हिंसा झूट चोरी अवन्त, ममता घणी विसेष ।
क्रोध मान माया लोभ, वले राग ने द्वेष ।।५।।
कलौ वारमौ जाणीयै, तेरमै देवै आल ।
तिण थी कर्म वधै घणा, ए मोटो चडाल ।।३।।
कलक न दीजै केहनै वलि साधनै विसेख ।
पाप करम सहु परिहरो, दुख सीता नो देख ।।७।।
सील रत्न पालो सहु, जिम पामो जसवास ।
सीतानी परै सुख लहो, पामो लील विलास ।।८।।

सीताराम रावण तणी, लछमण वले सवंध ।
सावधांन थइ साभलौ, सील विना सहू धध ।।६।।

अन्त .–

सवध सीता राम नौ, चतुर हुवै ते सुण-ज्यौ रे ।
सुण ने हिया मे धारजो, नित उत मारा नाव थुण-ज्यौ रे ।
भावधरी सुण-ज्यौ सहू, सीता चरित थी मे कह्यौ ए सगलौ विसतारो रे ।
ते साचौ करनै सरद-ज्यौ, पछे ग्यांनी वदे ते सारो रे ।।६।। भा०

सीता रा पाठ सूत्र तणौ, अर्थ मे घणो समासौ रे ।
लोक कह्या थी जाण-ज्यो, पूंछ ज्यो पिंडत पासौ रे ।।१०।।भा०

अविल नीवो एकासणौ, सुणउ वास करो छठ तेलो रे ।
सगत माफग थे धारजो, पाप करम नै पैलो रे ।।११।।भा०

के इ सावर्नै श्रावक तणा, व्रत हिया मे धर-ज्यौ रे ।
ज्युं सुख पामे जीव रा, पर भव सेनी डर-ज्यौ रे ।।१२।।भा०

क्यू ही दीठो क्यू इक वाचीयौ, क्यू सुणीयौ वले सोइ रे ।
इण मै उछौ इध कौ हूवै, तो मिछामि दुक्कड मोइ रे ।।१३।।भा०

विरुध हूवै ते टाल-ज्यौ, राम चरित्र वले जोड रे ।

कविनाम रिप चोथमलजी ईमरी कहे, सध सुणिज्यौ सहू कोइ रे ।।१४।।भा०

रामायण मोटी घणी, जाणै समुद अगादो रे ।

र स्थान जोडी जोधाणै जुगत नु देव गुरा प्रसादो रे ।।१५।।भा०

र काल सवत् १८६२ सिद्ध, जाग आयौ सारा रे ।
काती वद आठम दिनै, मगल मगलीक वारो रे ।।१६।।भा०

पुष्पिका – इति श्री रामसीता चरित्र सपूरण । सवत् अठारै वरस ६७ रा चैत वद चोत लिखतु गुरा मधै माना ।

१७८४. १०६६० रामाश्वमेध भाषा

प्रारम्भ – श्री रामाय नम । श्री गणेशाय नम. ।

दुहा

वंदि प्रथम गुरपद सु-रज, निज सिर धरि सुख पाय ।
त्रिविधि ताप तम दलन कहि, दिनकर सरिस सुभाय ।।१।।

निज देसिक गुर कञ्ज-पद, बदहु करहु स-प्रीति ।
विनु प्रियास जिनकी कृपा, माहा मोह दल जीति ।।२।।

प्रनवि सकल गुर पद कमल पुनि जिति राज क्रिपाल ।
जिनके पद बदन करत, मिटत सकल भव जाल ।।३।।

वादि पाराक सचरन जुग, सुर तरू सरिस सुभाइ ।
सुमरिहु जामुन पद कमल, सरनागत सुखदाय ।।४।।

राम मिश्र पद प्रनवि करि, कमल नयन पद-कञ्ज ।
नाथ मुनीस-हि बदि पुनि, सठ गजन भव भज ।।५।।

अस रघुपति पद कञ्ज-गुन, परिहरि आन उपाय ।
करहु ढिठाई ऐक अब, छिमहु सन्त समुदाइ ।।

चौपई

जिहि विधि जग्य कीन्ह रघुनाथा । बरनन करन चहौं सोई गाथा ।।
ममक चाहि जिमि नभ परकासा । मोर मनोरथ तिम ससारा ।।
जन विचार रघुवस विभूषन । निज दिसि निरख प्रनत रूप पूषन ।।
करिहै पूरन आस निदाना । भजन करि मम दूखन नाना ।।
कवि प्रथम बुझाइ कहौ निज नामा । सबन देस ग्याति पुनि ग्रामा ।।
परिचय मधु-अरिदास नाम यह मोरा । माथुरि बस जनम मति थोरा ।।
भानुसुता सुरसिरिति मझारा । पावन देस विदित ससारा ।।
नगर इष्टिका पुरी सुहावनि । निकट कलिंद सुता बह पावनि ।।

दोहा

रचनाकाल सवत वसु दस सत गुन हूँ, पुनि नवतीस मिलाइ ।
१८३९ विसद मास आषाढ रितु, पावस सुखद बनाइ ।।

चौपाई

सुक्ल पक्ष तिथि द्वैज सुहाई । जीव चार मगल सुखदाई ।।
हरष जोग पुनर्वस. रक्ष्या । प्रकटी हरि जस बरनन इक्ष्या ।।
श्री रामानुज कुटम मझारी । कीन्ह कथा आरम्भ विचारी ।।
जिहि विधि व्यास सून सन गावा । श्री अनन्त मुनिवर-हि सुनावा ।।
तिमि मे निज मति के अनुसारा । बरनहु रघुपति चरित उदारा ।।

कवित विचार न जानहू ऐकू। भेद पगु गुगादि अनेकू ।।
पावन जीह करन हिन भाई। बरनहु प्रभु कीरति सुखदाई ।।
ससि सुरसरि मराल पय फेनू । अमल अनन्त गुनी छवि देनू ।।

दोहा

सूत परासर तनयकर, जिहि बिधि भा सवाद ।
प्रथमहि बरनहू सो कथा, सीताराम प्रसाद ।।४।।

अन्त. – चौपई

तुव प्राद मैं अहिकुल केतू। सुनी कथा विस्तार समेतू ।।
करहु विनय प्रभु कवन प्रकारा। सकल भाति मैं दास तुम्हारा ।।
दुर्लभ राम चरित मुहि दीन्हा। सकल प्रकार कितारथ कीन्हा ।।
इहि विधि करि वहु विनय मुनीसा। प्रेम प्रीति जुत नाऐउ सीसा ।।
सुनहु सूत यह चरित अनूपा। तुमही कहा मै मति अनुरूपा ।।
श्री अनन्त मुनीवर सवादा। अति पावन पुनि समन विषादा ।।
अव तुम कहवूहहु हरखाई। तात कहौ सोई सकल वुझाई ।।
यह सुनि सूत चरन सिरु नावा। परमानन्द हृदय मह छावा ।।

छन्द

उर-छाव परमानन्द पुनि कर जोरि पुनि बिनती करी ।
प्रभु कीन्ह कृपा अपार मो-पर राम कीरति बिस्तरी ।।
अव प्रनत पाल उदार करूना सिन्धु मोहि जन जानिये ।
मैं भयो धन्य वनाइ सकल प्रकार मन अनुमानिये ।।

दोहा

पुलकि गात इहि भाति बदि, कीन्हौ चरन प्रनाम ।
हरखे व्यास उदार तव, पर्म कृपा के धाम ।।
मैं जड मनुज मलाय तन, सतत कुमति निधान ।
बरन्यौ राम प्रसाद यह, ग्रन्य सुमति अनुमान ।।१६।।

सोरठा

छिमहु सन्त समुदाइ, किन्ह ढिठाई विपुल मैं ।
कीजौ कृपा वनाइ, अवुध जानि निजु दिसि निरखि ।।१७।।

पुष्पिका – इती श्री पद्मपुराणे पातालखण्डे सेस वात्सायन सवादे मधुसूदनदास कृते श्री रामा अश्वमेधयौ नाम अष्टषष्टितमोध्याय ॥६६॥
॥ इति श्री रामा अश्वमेध सपूरण ॥

१७६७ १२८४२ (१६) रूपग दवावैत महाराजा अजीतसिंहजी री
(महाजनी लिपि मे)

प्रारम्भ – अथ रूपग दवावैत म्हाराजा अजीतसीगजी री द्वारकादासजी री कही ।

दुहा (दोहा)

मन वुध मील कीधो मतो, सीमरा आद गणेस ।
ज्यु राजा अजमाल नै, सबदा-डबर कहेस ॥१॥
देवा अग वाणी जीतु, सेवा तो सुडाल ।
दवावैत अगीया दीयौ, वीद्या वयण त्रीसाल ॥२॥
प्रथम ही गणपत गुण नीधान, पगल नै ध्याया ।
चोरासी वध रूपग जात जात का कहण जणाया ॥३॥

असा श्री गणेस सी-वुध का राजा ।
उकत का अवार, मुकत का अवार, मुकत का दरवाजा ।
तेतीस कोड देवना का अगवाणी ।
रुद्र-सा पीता, माता भी रुद्राणी ।
मेक ही-मादत हसती का-सा आनन ।
सीदुर-सा टीका, मुसा-सा वाहन ।
भवर-सी नाभी, दरीयाव-सा उद्र ।
रुद्र ही-सा रसाय आर मारुद्र ।
असा श्री गणेस कु प्रथम नमसकार कीजै ।
म्हाराजा अजमाल कु दवावैत कहीजै ।
दुसरा नीमसकार सुरसुती कु करणा ।
सुमत की दाता, कुमत की हरणा ।
हस गमनी हस वाहनी देवी ।
सुर नर नाग गण गध्रव नै सेवी ।
सुकल अवर, सुकल भी वाणी ।
ध्यान धर ध्यायीयै असी वणीयाणी ।

जगत की जणणी, जगत की माता ।
अवीद्या की खडणी, सुवीद्या की दाता ।
जीन की कृपा कटाखि अवलोकण होवै ।
तो सासत्र पुरान व्याकुरण कु जोवै ।
आगै भी वेदव्यास वालमीक जैदेव-सा चीनी ।
तीसकी कृपातै रामायण भारत भागवत अस्टपदी सेसा कायब कीनी ।।*

अथ महाराजा वरनन

ये तो म्हाराजान के राजा, म्हाराज अजमाल ।
खुरासाण कु खाग, हीदुसथान की ढाल ।।
मात लोक कायद, पचीसमा अवतार ।
सैसार सीरोमण, सैसार साधार ।
जीसका प्रवाडु का पार कुण कब पावै ।
असा कुण है सो अगम कु सुगम कह वतावै ।
तीसका दीसटत दरीयाव की लहर, गीगन के तारे ।
रेण के दाणे, गीगन के फुहारे ।
उतर चहो पथ यीस्वर की माया ।
खगेस का वेग, वाराह की काया ।
गीता का अरथ नारद का ख्याला ।
अजमाल का प्रवाडा, कुण कहणे भी वाळा ।
पै जैसा जाणीयै, तैसा वखाणीयो ।
ओर कवेसुर की उक्त देख ओर तान आणीयो ।

अन्त –

दुहो

मेरै मेरा सायीया, अजमल तु आधार ।
जीउ ज्या जपसु सुजस, हो समार सधार ।।
वाधा घर-घर वारणै, मैगल मारु राव ।
कीसन सदामा ज्यु कीया, सेवग जसा सुजाव ।।
जीना-धीन कमायीया, जीना धणी अजीत ।
सोहड सुपाल स-भागीया, चारु वरण नचीत ।।

---

* इसके आगे और स्तुति-परक अंश है, जिसे छोडकर आगे का अंश उद्धृत किया गया है।

जुना सासण पाळीया, दीश्रा नवा श्रपार ।
श्रजमल सु जोड नै-को, हीदु ही दुकार ।।
कर सीर ढोयी लकडी, साभा श्राग सजोय ।
तप श्रजमल भेला तपे, जीके हजुरी जोय ।।
सवही कीधी वदगी, श्रपणो पोहच प्रमाण ।
पायी जा डोढी श्रप, लजे यघ के राजाण ।।
श्रजमल गजमल श्रभनीम, नीजर वीव्योक्र नीराट ।
जोया सामो जोवजे, श्रण जोया श्रोचाट ।।
म्हाराजा श्रजमाल, मुख दीठा रोजी मीलै ।
पग परस्सा श्रछपाल, जीउ-जा जसवतसीगउत ।।
खमा-खमा श्राखै पलक, देव खमा दाखत ।
तवौ खमा हीदु तुरक, जतन श्रजीत जपत ।।
ली श्रजमेर दुभाल, साभर कीधी खालसै ।
श्र-वाना श्रजमाल, जायउ जसवतसीघउत ।।
छतीसै ठकुरायीया, श्रजमल परै न वाय ।
मैगल हदा खोज मै, सव ही खोज समाय ।।
दवावैतडा दम दुहा तीन कवत दोय गाहा ।
सतरसै समत वहोतरै, कव द्वारै कहीण देवैत ।।

रचनाकाल १७७२

पुष्पिका .– सपुरण । समत १८१०० (१६००) रा वसाख वद ४ वार मगल लीखत खीडया हरमुख । वाचै जीणा सु राम राम ।

१८३०. १०६७५ वाक्य-वल्लरी

प्रारम्भ – वाक विलरी लिख्यते ।*

श्रकटक=निरभय, वेखटक । श्रखारा=कुसती-जगह । श्रखिल=सपूर्ण, विल्कुल । श्रखड=पूरण, एकरस । श्रग=स्थावर, श्रचल । श्रगम=कठिन । श्रगवान=श्रागे लेने वाला । श्रगाध=गभीर, गहरा । श्रघ=पाप । श्रघात=

* श्रकारादिनुक्रम से चुनिंदा शब्दों के शब्दार्थ दिए गये हैं ।

चोट, वक्का। अचरी=मसकगी। अचभा=अचरज। अछत=वरनमान रहते। अज=व्रह्मा, वकरा, अजन्मा। अजा=माया। अंजिर=अगन (आगन)। अजिन=मृग चरम। अटपट=कठिन। अटारी=कोटा, छत। अंनिमासिध=आठ प्रकार की। अन(र)का=जो जानने योग नही। अतिथि=अभ्यागत,पाहुनो। अतोवा=वेसुमरा। अथाईसभा=मजुलिश। अद्भुत=जो कभि हुवा नही। अदिन=बुरो दिन। अधम=पापी, नीच, चडाल। अधरवोट=नीचे, अंतरिक्ष। अधर वृद्ध=अल्प बुद्धि, ओठम वुद्धि। अनुग्व=वुराई, द्वेस, वैर। अनिट=अनवट, थल, अचल। अनयास=सहज से, वे-मेहनत। अनल=आग। अनवद्य=निर्दोस, निरुपाय। अनामय=निरपुराध, अरगेग। अनिल=वायु, हवा। अनीकसना=झूठ। अनीह=कर्मरहित, निचेष्ट। अनुचर=सेवक, दास। अनुज=छोटा भाई। अनुदिन=दिन-दिन, रोज-रोज। अनुराग=प्रीत, सनेह, मुवहत (मुहव्वत)। अनुसासन=सिक्षौ, उपदेस। अनुसार=पागलायक?। अनुहार=अनुरुप, मुआफिक। अनुप=उतिम, उपमारहित। अनेस=नकारा, वुरा। अन्यथा=झूठ, उलटा। अन्हाना=स्नान, गुलस(गुसल)। अपगति=दुर्गति, अपनी गति। अपडर=कुमारग, अपना डरि। अपवर्ग=मुक्ति, मोक्ष। अपवाद=निंदा, (च)वदाव, दोस। अपर=दूसरा, अन्य। अपार=वेसुमार, अगम, अपलोक। अपयस=निंदा।

अन्त –

सीमसूर्नी=सुअन, पवित्र वेडा। सुआर=रसोईदार। सुकठ=सुग्रीवदार। सुकेतु-सुना=ताडका। सुगाना=सुवया करना। सुखमा=सोभा। सुंठि=अति। सुनासीर=इद्र। सुगम=सुविहितउ। सुभग=सुदर। सुसेन=कुल। सुर=देवता। सुरतरु=कलपवृक्ष। सुरसरि=गगाजी। सुरगुरु=वृहस्पति। सुरवीथि=न(म)हल मारग। सुकरखेट=वाराह क्षेत्र। सूतना=सोवना। सूरप=सूप। सूप-सासत्र=रसोई की विद्या। सूत्रपरकठ=पुतली नचाने वाला। सेतु=पुल। सेल=साग। सैन=इसारा, सनकारना। सोपान=निसेनी, सिढी। सोहर=सुदर। सोहागनि=अहिवाती। सौमित्रि=लक्ष्मण। सोरभ=गध, आज(म्र) वृक्ष। सोह=सगय, कसम। स्यदन=रथ। सजोउ=सामग्री। सदोह=समूह। सपुट=डव्य। सपेला=साँप का वच्चा, मदारी। ससृति=ससार। साँधा=लगावो। साँडदोधो=खानद्रोही। हतना=मार डालना। हते थे=रहे, मारे गये। हर=महादेव। हरहाइ=हर हठ गो?। हरास=लादगी। हरि=विष्णु, सूर्य वानर, सिह। हरुआ=हलका। हाट=वजार। हाव(ट)क=सोना।

हिम=पाला । हिमकर=चन्द्र । हिमाउपला=वनोरी? । हिय=हृदय । हीन=नीच । हुतर्वाद=तरफ से । हुनना=हाल करना । हुनकना=उछलना । हुलमी=हरखी, तुलसीदासजी की माता । हू ह हू ह=सवद । हेतु=कारण । हेठ=नीचे । हेरना=देखना, ढोढना । हेला=ग्रनाज(द)र । होन=होनी, होनहार । क्षत=घाव । क्षमा=पृथिवी । क्षार=खारा, खाक । क्षुद्र=छोटा, नीचा । क्षेम=कल्याँण । क्षोप(भ)=मोह । सपूर्ण ।

१८५४ १२३५२ **विनय-पत्रिका-सटीक**

प्रारम्भ – ।। श्री मद्रामचरणाय नम । श्री गणेशाय नम ।

अथ विनय-पत्रिका सटीक लिख्यते ।

कवित्त

तुलसी प्रमाद हिय हुलसी श्री राम कृपा,
सोई भव सागर के पुल-सी ह्वै लसी है ।
जाकी कविताई ग्रनरथ तरु-टगा सम,
गगा की-सी धार भक्तजन मन धसी है ।।
परम धरम मारतड उर व्योम उठ्यौ,
काम क्रोध लोभ मोह तम निसि नसी है ।
वाही कै प्रकाश जम-गन मुह मसि लाई,
ग्रति सुख पाई जिय मेरै ग्राइ वसी है ।।१।।

दोहा

नाम माहात्म्य
द्वै तुलसी को गहि रहो, जो चाहत विश्राम ।
वाहर भीतर सहज ही, होत ग्रधिक ग्रभिराम ।।१।।
तुलसी माल धारन किए, वाहिर होत सुवेख ।
तुलसी कृत के गहत ही, ग्रचल भक्ति की रेख ।।२।।
कलि जीव कल्याण हित, भाषा ललित ललाम ।
किये प्रवन्ध वनाय जेहि, तेहि कौ करु प्रनाम ।।३।।

टीका (प्राक्कथन)

प्रथम श्री मद्रामायण ग्रन्थ को सन्दर्भ सतसग विलास नाम कियौ, तहा श्री गोस्वामी तुलसीदास जू के ग्रनुग्रह-हुते उनके किये ग्रन्थन को ग्रर्थ

यथा बुधि यत्किञ्चित् बूझि परचौ : श्री विनय पत्रका श्री गोस्वामी को ग्रन्त-ग्रन्थ है। सर्व सिद्धान्त को निरूपण, यह ग्रन्थ के विचारे ते प्रतीत होत है तहा यद्यपि ग्रन्थ अत्यन्त कठिन है, तथापि श्री गोस्वामी के कृपा को अवलव करि यथा मति कछु अर्थ लिखे है।

मूल—

चौपई

गाइये गणपति जगवन्दन। शकर सुअन भवानी नन्दन॥
सिधि सदन गजवदन विनायक। कृपा सिन्धु सुन्दर सव लायक॥
मोदक प्रिय मुद मगल दाता। विद्या वारिधि बुधि बिधाता॥
मागत तुलसीदास कर जोरे। वसहि राम सिय मानस मोरे॥१॥

टीका—'गणपति' शब्द तै ऐश्वरय सूचित किये, 'जग वदन' पद करि जगत पूज्यत्व जनाए, 'सुअन ओ नन्दन' दौनो पद पुत्र वाचक है, तहा अर्थ की पुनरुक्ति देवे को आशय ऐसो है, कि कोऊ की माता श्रेष्ठ होई है, कोऊ को पिता, इहा माता-पिता दोऊ की श्रष्टता जनायबे के निमत, पुनरुक्ति पद दिये। यदा, 'शिवजी के पुत्र, भवानी के नन्दन' नाम आनन्द करता यह हेतुते, कि श्री गणेशजू को गर्भ ते आविर्भाव नही है। 'सर्व सिद्धिन्ह को गृह' अर्थात् श्रीगणपति कृपा-वितरेक काहू को कोऊ सिद्धि की प्राप्ति नही होती। 'गजवदन पद, ध्यान के अर्थ जानना। 'विनायक' नाम, विघनन्ह के स्वामी, जो कोऊ जीव ध्यान पूजन वितरेक कार्य आरम्भ करे है, ताकौ विघन के हरता, एह भाव है। 'कृपा के समुद्र' अर्थात् शीघ्र दयालु होवे को सुभाव जाको, पूर्व गजवदन' पद दिये, ताते भयानक, कोऊ बूझे, यह निमित्त, सुन्दर कहे, 'सव लाइक' पद को एह भाव है कि केवल इह लोक को सुख ऐश्वर्यादि ही के दाता नही किन्तु योगीन को, परलोक सम्वन्धी सुख के भी दाता, एह भाव है। लड्डू है प्रिय जाको अर्थात् थोडे पूजा मो प्रसन्न होवे को स्वभाव जाको। मुद नाम अन्तरग आनन्द, मगलम् नाम वाह्य उत्सव विवाहादि के दाता। अत (अर्थात्) लेना थोरा, देना अनन्त। सुख विद्या के समुद्र, अर्थात् जो काहू को विद्या होइ है सो इन ही की कृपा कटाक्ष ते, 'बुद्धि के विधाता' नाम ब्रह्मा अर्थात् जाके अनुग्रह वितरेक बुद्धि को प्रकाश नही होत, ऐसे जो श्री गणपति तेहने तुलसीदास अति नम्र होकरि जाचे है, कि श्री जानकी रघुनाथ जू मेरे अन्त कर्ण मो वसे, याको यह भाव भयो कि भगवत् .. को भगवत वितरेक मोक्ष पर्य्यन्त वासना नही होति, यह भाव है॥१॥

अन्त –

मारुति मन रुचि भरत की लखि लखन कही है ।
कलिकाल हूँ नाथ नाम सों प्रतीति प्रीति एक किंकर की निबही है ।।
सकल सभा सुनि लै उठी जानि रीति रही है ।
कृपा गरीब निवाज को देखत गरीब को साहस बांह गही है ।।
बिहसि राम कह्यौ सत्य है सुधि मैं हू लही है ।
मुदित माथ नावत बनी तुलसी अनाथ की परी रघुनाथ सही है ।।२७९।।

टीका

गोसाईं की यह प्रतिज्ञा रही है कि यावत स्वीकार सो-रो न करेंगे तावत विनय न छोडूगो, यह निश्चय को जानि, महावीर जू कृपा करि रघुवर के दरबार की बात गोसाई तै कहत हैं, कि मारुति जो मैं, अरु श्री भरत जू कि रुचि लखि, नाम देखि, श्री लक्ष्मण जू ने कही है कि हे स्वामी, कलिकाल कु ऐसे काल मो, आपके नाम सौ प्रीति-प्रतीति एक कोऊ आप के दास की निबहि गई है। श्री लक्ष्मण जू के कहबे सो यह हेतु है कि जो अति निकट रहत है, सो विशेप तै मुह लगा होत है, तहाँ श्री भरतादि सभा के अधिकारी है, अरु श्री लक्ष्मण जू महल अति एकान्त स्थान भी जुदा नही रहते, तेहते स्वामी सो ढीठ है। सब की रुचि अरु अपनी भी प्रसन्नता बूझि कहे, सकल, जो अयोध्या की सभा, सो श्री लक्ष्मण जू को वचन सुनि लै उठी, साम बोलि उठी, कि जानी रीति रही है। नाम हम सब नी जानत हैं। अर्थात् श्री भरतादि मुख्य स्वामी के अग, ताकी रुचि, अरु श्री लक्ष्मण जू सदृश प्राणप्रिय, सिपारस करने वाले, तेहि बात कौं, को प्रमाण न करे, तेहि मर्मिसो सबके वचन को सुनि, तब श्री भरत जू बोले कि तुम सब सम्यक् नही बूझे वह दीन जीव कथा निवाहेगो, गरीबनिवाज जो स्वामी, ताकी कृपा ने, हम सबके देखते, तेहि गरीब को, साहस नाम हठते बाह पकडी हैं। अर्थात् स्वामी की कृपा तें, नाम-विषें वाकी निष्ठा कौ निवाही है। सब की सुनि, तब स्वामी हसि करि कह्यौ कि यह सत्य है, मैं हू ने सुधि पाई है। तहा केहते सुधि पाई हैं, यह नही कह्यौ। अरु हँसि बोले, याको यह अभिप्राय है कि पहले तो श्री जनक नन्दिनी महारानी को विनय करि गुसाई प्रसन्न किये है। समय पाइकै वाहि महारानी ने सई की है, तेहि हेतु तै नाम नही कहे, यह सब समाचार सभा की अरु स्वामी की प्रसन्नता, श्री महावीर कहि करि, गोसाईं ते कहत है कि हे तुलसी की अनाथ, जो तू, ताकी रघुनाथ के दरबार सो सही परी, नाम गुलामन्ह

मो लिख्यौ गयौ, अब आनन्द ह्वै करि माथ नावत नाम-प्रणाम करत रहू । विनय करवे को कछु प्रयोजन नही वनो, नाम सब प्रकार तें तेरी वनी । यह रीति ते गोसाईं कृतार्थ भये ।।२७०।।

इती श्री तुलसीदास कृता विनय पत्रिका समाप्ता ।

दोहा

टीकाकार

भोज वस अवतम कहि, जै प्रकाश महाराज ।
रजधानी डुमराव मै, है तिन सुभग समाज ।।१।।

तिनके लघु भाई सुहृद, शिवप्रकाश जिहि नाम ।
तिन ने यह टीका करी, सकल शास्त्र को धाम ।।२।।

रचनाकाल १९३५

समत उगणीसै पैंतीस का, भाद्रव विदी प्रमानि ।
तिथि नमी गुरु वार कूँ, ग्रन्थ सम्पूरण जानि ।।३।।

१८९३. १२०६७ (२) वेदान्त अद्वैत-अद्भुत नाटक

प्रारम्भ :– ।। श्री गणेशाय नम ।। अथ श्री ग्रथ वेदात अद्वैता-अद्भुत नाटक, दरजी देवकृष्ण कृत लिख्यते ।

सोरठा

श्री गनपत को नाम, विघन विपन दाहक अनल ।
सब देवन सुख धाम, जगत ताप नासक प्रभो ।।१।।

दुहा

जा अग्यान सु भान ह्वै, यह मिथ्या ससार ।
नस्यो सु ताकै वोधर्तें, सोह सुध अपार ।।२।।

सुख सरुप निज आत्मा, चेतन स्वय प्रकास ।
जा वृत्ति मै भान ह्वै, जाग्रत कहिये जास ।।३।।

अन्य वृत्ति निंद्रा मई, जामैं जगत प्रतीत ।
तामै सुख दुख स्वप्न सो, यह अग्यान की रीत ।।४।।

ता अग्यान के नास हित, कहू वेदात विचार ।
सुनै वचन जागै पुरुष, निंद्रा स्वप्न निवार ।।५।।

अन्त –

सता अघोहागी ले कह्यौ, प्रतीभास को भान।
देवा अद्भुत ग्रंथ मैं, परमारथ पहिचान ॥१३१॥

तातै अद्भुत नाम दिय, है अद्वैतानद।
भाषा सुगम विचार किय, पढै सुनै सुखकद ॥१३२॥

छिनक काली व्यापी सुप्न, ह्वै अनाद को भाव।
तेसे ही जग को जनम आतम माहि लखाव ॥१३३॥

सो आतम के ज्ञान हित, कह्यौ अर्थ सछेप।
भूल चूक मति को धर्म, लखो सुज्ञान अलेप ॥१३४॥

चतुर भात के पुरुष जग, पावर विषई जान।
जज्ञासु अरु मुक्त पुन, मो ये कह्या बखान ॥१३५॥

पावर भोगा शक्त मैं, विषई भोग-रू दान।
जज्ञासु समझ्यौ चहे, मुक्त अकृत निधान ॥१३६॥

जीव ब्रह्म ह्वै वसन सो, वाक्य सुधा गो जान।
कविनाम लक्ष अर्थ कर एकसी, दरजी देव प्रमान ॥१३७॥

पढै पढावै एकचित, सुनै सुनावै ज्ञान।
ब्रह्म लोक सुख भोगवै, अतर मुक्ति निदान ॥१३८॥

सोरठा

हृदैराम महाराज, ता सिख मोतीरामजी।
सो गुर सग समाज, वाल ब्रुद्ध सुध बुद्ध किय ॥१३९॥
अखैपुरी अखैराज, दियो अखै वित ज्ञान सो।
जा मुख सग समाज, गह्यौ सुदृढ सिद्धात मत ॥१४०॥
र. काल रिखी चद पुन पेख, निधि धरा सँवत सबै।
१९१७ आसु सुकल पख पेख, बीज सोम पूरण जबै ॥१४१॥

पुष्पिका – इति सकल सिद्धात-सार परमहस मत दरजी देवकृष्ण कृत भाषा अद्वैत-अद्भुत नाटक ग्रन्थ समाप्त। सवत् १९२६ रा वर्षे मिति पोष सुद ७, सप्तमी अर्क वासरे। लिख्यत वोरा चदलाल श्री जोधनगरे। श्रीरस्तु। शुभ भूयात्।

२००८ १०६२४ (१) संतदासजी की वाणी

प्रारम्भ – अथ स्वामीजी श्री सतदासजी की वाणी लिख्यते ।
अथ साखी गुरुदेव को अंग लिख्यते । सत्त ।

अणभै पद परकास को, दायक सत गुर राम ।
अनत कोट जिन माहि की, ताहि करु परनाम ।।१।।

अंग [गुरुदेव को अंग]
सत गुर का ऐको सबद मन कोई लेवै मान ।
तो सहज होत है संतदास, मुसकल सू आसान ।।१।।
सतगुर कीन्ही संतदास, मुसकल सू आसान ।
राम राम की होइ रही रोम रोम रज ध्यांन ।।२।।
संतदास हमकू कीया सतगुर बड ईसान ।
देह छूटा छूटै नहीं, पारब्रह्म सू ध्यान ।।३।।
संतदास तिहु लोक मैं, गुरु सिरोमणि संत ।
पूरब जनम का बीछड्या, सो ही मिलाया कंत ।।४।।
सतगुर मेल मिलाईया, सुरत सबद का संग ।
अब छूटत नाही संतदास, लगा करारी रंग ।।५।।
सतगुर बड परमार्थी, ग्रैसी देह बणाय ।
बरीया मुलक छुडाय कर, अधर मुलक ले जाइ ।।६।।
चौरासी बरीया मुलक, जामैं सुर नर रहे समाइ ।
अधर मुलक है राम नाम, जाहा जन पहूच्या जाइ ।।७।।
तीन लोक सू अलघ सुख, लावत नाही कोइ ।
सतगुर लाधा संतदास, सुख सू मिलीया सोइ ।।८।।*

अन्त .– अथ आरती लिख्यते
ग्रैसी आरती करौ मेरे मना, राम न विसरु एक छिना ।।टेक।।
देही देवल सुख दरवाजा, बणीया अगम त्रुकटी बाजा ।।१।।
सतगुरजी की मैं बलि जाई, निस दिन जिभ्या अखड ल्यौं लाई ।।२।।

---

* 'अगों' के बाद 'ब्रह्म-ध्यान', 'भरमतोड' शीर्षक से दो ग्रन्थ और लिखे गये हैं । बाद मे आसा राग के तीन पद हैं, अन्त में आरती है ।

दुतीए ध्यान हिरदै भया वासा, प्रम-मुख जाहा होइ परकासा ।।३।।
त्रतीये ध्यान नाभि मधि जाही, सुनमुखि भया सेवग जाहा साई ।।४।।
अब जाइ पहुता चौथी धामा, सब साधन का सरीया कामा ।।५।।
अनहद नाद झालर झुणकारा, प्रम-जोती जाहा होइ उजीयारा ।।६।।
कोई कोई सन्त जुगति एह जाणी, जन सतदास मुकति भए प्राणी ।।७।।

पुष्पिका – इति आरती सपूरण । अथ वाणी का सख्या की ब्यौरो ।
स्तुति की साखी ५०, साखी १३७८, अग ५५, रेखता ४, ग्रन्थ २,
पद ३, आरती १, सरब-सबद १३८८ सपूरण ।

अथ स्वामीजी श्री सतदासजी धाम-प्रापति हुवा जी समै को कुडल्यौ

१८०६ अठारा सै षट ब्रष मैं, सत भए निरकार ।
बुदि फागुण तिथ सपतमी, वार सनीसर वार ।।
वार सनीसर वार डारि, कै अन्यत सरीरा ।
प्रथ मही मिलि रहे जसै घट धरीयो नीरा ।।
पग परै पद लीन था, भिनि दिष्ट रूप आकार ।
अठारा सै षट ब्रप मैं, सन्त भए निरकार ।।१।।

दुहा

सकलन-कर्त्ता दया सत माराराज करि, मम उरि धरचौ हुलास ।
सतगुर अग्या पाईयौ, अग जोडि प्रकास ।।१।।
नवलराम वदन करै, सत चरन सिर नाइ ।
भूलि चूकि सब बकसीयौ, मैं तुम्हरी सरणाइ ।।२।।
स स्थान साहिपुरै सतसग मै, गुर अग्या उरि धारि ।
नवलराम अग बाधीया, बाणी सोधि विचारि ।।३।।
स काल अठारा सै ब्रष तीस कै, बैसाख सुकल पख होइ ।
१८३० तिथ तेरसि बुधवार कू, अग भया सपूरण सोय ।।४।।

इति स्वामीजी श्री सतदासजी की बाणी अणभै सपूरण ।

स्वामीजी श्री कृपारामजी धाम प्रापति हुआ जी समै कौ किवत

१८३२ अठारा सै बतीस ब्रप भादू सुदि होय ।
छठ सुक्र दिन पहर डोढ उदोत जसोई ।।

करत कूच किपाल दरस सब ही कू दीन्है।
झूठी झूगी डारि परम पद बास जु कीन्हा ।।
सरणै सन्त दयाल कै नगर दातडै धाम।
साध सिर्ष सवग मिलै कहत राम ही राम ।।१।।

राम। राम। राम। राम। राम। राम। राम।

२०३५ १२३६४ सत्यार्थ भास्कर वेद

प्रारम्भ – ।। श्री गणेशाय नम ।। अथ सत्यार्थ भास्कर वेद ।।
सन्यासी दयानद सरस्वतीजी के वेद विसे धो-मतौं का खडन ।

सन्यासी दयानद सरस्वती जी के वनाए सत्यार्थप्रकासादि ग्रथ पढकर प्रसन होकर महाराज की वार-वार प्रसंसा करता हूँ। इन ग्रथौं से जाना जाता है कि महाराज की द्रष्टि स्वदेसोन्नति पर विसेष थी, ओर सारे धर्म कर्म भी आपके यही तक थे। भला, देसोपकार ऐसा उद्योग करना क्या साधारण मनुष्य का काम हैं। देखीए, स्वामीजी महाराज का लेख, पूर्ण प्रकास करता है। किस प्रकार आर्य देस वासी पुरूष देस वासियो की समता करें और आनद भोगें। वास्तव मैं इस वैभव के प्राप्त कराने वाले की अल्पायु मृत्यु होना उक्त श्रेयाभिलाखियौं की प्रारब्ध का खोट है, ओर अत्यत सौचनीय हैं। इस वात को सभी विद्वान जानते है कि कारण ही सै कार्य होता है। विना कारण के कभी कोई कार्य नही होता। जैसा कारणभावात्कार्यभाव वै० अ० ४, आ० १, सू० ३। कारण के होने से कार्य होता है। इससे जाना जाता है कि मन्वादि महर्षियो सै आरोपित सत्य सनातन वैदिक धर्म के मेटनें कौ अपनी धागा धीगी करने मैं सन्यासी दयानद सरस्वतीजी का कारण निम्नलिखित कारणो मे भी एक कोई निम्न होगा।

अन्त –
प्रति ग्रह्य तु मे ग्रास गात्रस्त्रैलोक्यमातर ।

इस्से अनतर द्वार पर आए हुवे अतिथियो को आदर सत्कार सें भोजन करावै, यह आर्य ग्रहस्थियौं का सत्य सनातन धर्म है। वैदिक नित्य कर्म सक्षेप मैं लिखे हैं सो अवभी सव धार्मिकों कौं यथाशक्ति अवस्य ही नित्य-प्रति करि कैं पूर्ण कल्याण कौ होना चाहीये।

पुष्पिका – इति श्री सत्यार्थ भास्कर वेद समाप्त, उत्तार्द्ध । इद लिखित वैष्णव गोवर्द्धनदास आयुर्वेदी निरजनी, नागोर मध्ये, कार्तिक कृष्णा दसम्या दिने, सवत १९८७ । स्वय पठनार्थम् इद पुस्(त)कम् ।

२०३९ १०७०२ (१) **सदैवच्छ सार्वलिगा री कथा**

(सचित्र)

प्रारम्भ – ।। र्द० ।। अथ सदेवछ सावलिगा री कथा लिख्यते ।

प्रथम पुरव भव कहे छे ।

दूहा

नाय सुतारा नीर वहृण, सुगणा करि सलाम ।
सावलिगा सु दर सरस, तेण भवर इण नाम ।।१।।

श्लौक

लिखित्वा चित्रगुप्तेन ललाटेक्षर-मालिका ।
न सामार्जियतु सक्या पडिताग्निदेशेरपि ।।१।।
[न सम्मार्जयितु शक्या पडितैस्त्रिदशैरपि]

दुहो

लिखत लेख मु दर लिख्या, सावलिगा सु प्रसात ।
व्याह तणो जे अवर वार, वणि अचभव वात ।।२।।

वारता

पहिले भव, सुगण मातमा रो नाम, सुजाणसिंह पचोली सिकदार हुतो। सदेवछ रो नाम, मनोहर सुत्रधारवी हुतो। सावलिगा रो नाम, रुपमती अस्त्री हुती, मनोहर सूत्रधारवी ने परणाई हुती। एकदा प्रस्तावे मनोहर सूत्रवी परदेश हालीयो। घणा दिवस हुवा। तीवारे रुपमती–ये मुपन लाधी, तीवारे जाण्यो, मारो भर्त्तार कूसले नही, हु तो नवी घर करिस्यु । ति-वरी माधव इसे नाम, उणहीज नगर मे सुत्रधारवी रहे छे। तिण सु (त्र) धारे चारी(चँवरी) सजाई कीवी। तीण समे सुत्रधारवी मनोहर नामे परदेश थी आयो। रुपमती मनोहर रा घर-मा-मु तयार होय ने जावे छे। ती-वारे मनोहर रुपमती नु देख ने, माधव ने कह्यो, आ तो स्त्री मारी छे, तु का लेजावे छे। इयू करता माहो-माहे कलेस उपनो। झगडो करता वेहु जणा रुपमती स्त्री सहित जहा मुजाणसिंह हदफर हुतो, तहा गया ने कह्यो इण वात रो न्याव करो। ती वारे सुजाणसिंह वोल्यो, ए तो रुपमती मनोहर री छे। माधव ने कह्यो तु वड-वेडो ले ने घरे जा। इसो

न्याव कीयो ने वले कह्यो जे रुपमती ने मनोहर गमन करसी तो बीजे भव मनोहर रो नाम सदेवछ कु वर होसी, ने रुपमती रो नाम शार्वलिगा कुवरी हुसी। ऐ वेहु सुख भोगवसी। तीवारे माधव वडवेलो ले ने घरे गयो। इसो न्याव कीयो। ती वारे माधव ने वेराग उपनो। तापस हुवो। कासी करवत ले ने कह्यो, रुपमती मारी स्त्री हुजो। इसो नाम ले ने मरण पाम्यो। पूरव भव रो लेख इण भव मीलसी।

अन्त – वात

सदेवछ अमरावती नगरी आयने डेरा कीया। पछे माहे जाय राजाजी रे पगे लागा। राजाजी वहुत खुसी हुवा। सार्वलिगा, राजा री कुवरी ने सासु रे पगे लागी। पछे तीनु ही रांणीया सु सोख भोगवता च्यार वेटा हुवा। तीनु ही स्त्रीया सु सुख भोगवे छे। इम अनेक प्रस्तावि सदेवछ ने वेराग उपनो। ससार असार जाण पुत्र ने राज्य दे ने आप अतीत व्रत आदरयो। पछे भली गते गयो। शार्वलिगा पीण शील पाल ने भली गत गई।

दूहा

सारद प्रसादि करी, शील तणे अधीकार।
भणे साभले तेह नर सुख पामे ससार ॥१॥
वे-वे धक जे वाचे सुणे, वछित पुजे हाम।
जिम शार्वलिगा सुख लह्यो, सदेवछ सुख ठाम ॥
मीठा मन का भावता, कीया सरस वखाण।
अण-जाण्या मुरख हसे, रीजे चतुर सुजाण ॥३॥
रचनाकाल १६६६ सवत १६ छाछठे, विजया दशमी रविवार।
चतुर चाह चोपी रची, मुनि केसव सु वीचार ॥४॥

इति श्री सदेवछ री वात सपूर्ण।

सचित्र पत्रो का विवरण —

क्रमाङ्क	पत्राङ्क	क्रमाङ्क	पत्राङ्क	क्रमाङ्क	पत्राङ्क
१	१ वी	५	४ ए	९	६ वी
२	२ वी	६	४ वी	१०	७ वी
३	३ ए	७	५ वी	११	८ ए
४	३ वी	८	६ ए	१२	८ वी

क्रमाङ्क	पत्राङ्क	क्रमाङ्क	पत्राङ्क	क्रमाङ्क	पत्राङ्क
१३	६ ए	१९	१३ बी	२५	२३ ए
१४	९ बी	२०	१७ बी	२६	२४ ए
१५	१० ए	२१	१८ बी	२७	२५ ए
१६	१० बी	२२	२० ए	२८	२६ बी
१७	१२ ए	२३.	२१ ए	२९	२७ बी
१८	१२ बी	२४	२२ ए	३०	२८ बी

२२२४. १०८४२ (२) स्फुट-कवित्त-संग्रह

(राठोडा रा)

छाडो राव जालण तणो, जालण कान सुतन ।
ग्रै घर ग्रतरी भोगवै, वेखा न पुगं मन ।।१।।

सेना पग गज वरदायीसेन सेतराम सीहा,
आसथान राव घुहड सुजान है ।
छातराय पाल कन जालण नरेस छाडा,
वीर तीडा राव सलख वीरम वखान है ।।
चुडा रीणमा जोध मुजा वाघ गग चावा,
मालदे उदैसी सुरगा जीसा ग्रमान है ।
जसवत ग्रजीत वखतेस पाट वीजैसीग,
जोधपुर राजे भुप जाहर जीहान है ।।२।।

२२२५. १०८४२ (१३) स्फुट-कवित्त-संग्रह

(छप्पय)

ग्रखौ लखौ ग्रडवील, जगड गोयद वैरागर ।
मडलो काधल मयक, मक जक्त न भाखर सायर ।।
पग्वत डूगर पतो, वाग उदौ हाफौ नर ।
रुपौ चापौ जोध, साड वलु ग्रौ रगजैसर ।।
चौवीस ग्रभग चू डाहरा, खाग त्याग ग्रहीया खरा ।
राठौड नाम रासण रिधू, रेण रूप रिडमल रा ।।१।।

रिडमल राया राव, सतौ हरचद मत ग्रगल ।
गावत गुण रिणधीर, भीम भाराथ भुजाँ वल ।।

कानी अरडक माल, पहम पुजो अरजण।
सह समल वल विजो, लाख दल लूभो भजण॥
सिवराम राम गोपे घरा, वाचीजै जस च्यारु वला।
चवदै राव चूडै तणा, अेक अेक सूं आगला॥२॥

दुहा

मलीनाथ वीरम मुदै, जैतमाल सोभत।
सलखै रा च्यारु सीरे, पथमी सीरै प्रभत॥१॥

सलखो राव तीडा तणो, दुजो कानड देव।
दोनु तीडै रा दुफल, अ-समर खाग अजेय॥२॥

तीडो खोखर सीहमल, वानर हसतो वेख।
छत्रधारी छाडा तणा, पाचु बवव पेख॥३॥

२२२६. १०८४२ (१५) स्फुट-कवित्त-संग्रह
(जीवराज सोलकी लारे सती हुई तिणरो) *

प्रारम्भ .— अथ कवत, जीवराज मोलीखी(सोलकी)रे लारै सती हुयी जिण रा।

छप्पय

सुद वारस भादवी, देह छाडी राव चाळक।
उण समीयै आयनै, येक वोली ग्रह पाळक॥
वीद्री जात कुल वीना, वात कुलवत उचारी।
सुखरी सी रणभत्रीया, वैठ रही सोक वीचारी॥
पल घडी पोहर छेती पडे, सोच घणा दीन खाळसी।
घण दोय धीरे जीण रो धणी, हाय अकेलो हालसी॥१॥

घरीया पद पत धीया, खरै मन मतै सु साली।
साथे चलवा साम, वात हाथा तीण झाली॥

---

* रूपनगर के राजा जीवराज सोलकी के साथ राणी एलन के सती होने का प्रशस्ति-परक वर्णन है।

दासी नै दोय जाव, दीयाम घगी मत धारे ।
जनम पत्री सुण जाव, म्हौ आगम परवारे ।।
कहा जाण वेंण सैंणी वहौ, खरी मती हूं खवर कै ।
येकला कदै न गया अगै, गैकुत जामी अवरकै ।।२।।

येकला जाय अतीत, जती काय येकल जासी ।
घणवी वनी रो धणी, गरढ जासी ग्रह वासी ।।
त्रीय वीण जासी तुरक, नकु कायी रहसी नाजर ।
लुटण वीधना लेख, वाग्हि जाय वीनावर ।।
पोसाख हींण मोसा खीमण, जीतव ध्रम वे काजवी ।
येकलो नोज जावै अली, रुपनगर रो राजवी ।।३।।

जीण नीजरां देखीया, पाय नुपर झमकंता ।
बाजुबध री लुव, सहत चुरै चमकता ।।
रग सुरगा कपड, हाथ महदी रग-रता ।
चख अजन कोरीया, मजन केसर का गना ।।
घण सुख वीलास चालक घरे, सोच अभावा भावसी ।
जीण नीजर साग राझा पणे, दयीव नोंज देखावसी ।।४।।

मजन अजन करे, करे पोसाख सुरगी ।
मेळा छेहा करे, दुनी मन करे दुरंगी ।।
भुखण धारण करे, करे त्यागन घर आगण ।
करे अतर भर कपड अमरपुर करे उमगण ।।
धका छान लारै चलण, आवपुरी जीम आबली ।
जती रीत हुयी परणी जदी, अतरी हुई उतावली ।।५।।

हथलेवा रे हाथ, झळे नारेल हसती ।
सुलज सदा मन समी, वलम घर तणी वसती ।।
हथलेवा रै हाथ, कवो भोजन ले छोडे ।
काया होमण काज, कथ मीलवा मन कोडे ।।
जीवराज तणी कामण ज्युही, सरग उमाहो साथनै ।
वर भला दीयो चवरी (त्रि)चै, हथलेवो जीण हाथनै ।।६।।

तोरण आया तेम, पाळ सरवर दीस जावन ।
वनडा व्याव तणा हा, स्त्रवण कु ण आज सुणावत ।।
त्रय कुण चढ लीलेह, कवण सीणगार करती ।
कुण झलती नारेल, घणी सीर हरख धरती ।।
प(र)णी न हुनी तोनै प्रीया, जीयो अकेलो जावतो ।
तो वीगर काठ चढ्या तणा, गीत कवण गवावतो ।।७।।

हीडा जाणो सहज, सावण तीजा सीवरती ।
वागा जाणो सहल, छोल उपजै त्रय छती ।।
सेझा जाणो सहल, महल प्रीतम रग माणै ।
पीहर जाणो सहल, यचक झुगम कर आणै ।।
साम सु रुस जाणो महल, माण घरे उर मझरी ।
मगल झल कठण धरणो मतो, राणी धीन जीवराज री ।।८।।

व्रह्मा आवण वीस्न, यीस मन सहती उमाजी ।
कलु रजु पण कीयौ, वीसव अत कीयो वीरजी ।।
कीयो प्रजा हकार, सैण मन हुवा उदासी ।
राणावत सत कीयो, वलम प्रीतम सुख वासी ।।
घर घणी मीलण कीय मागध, कीया अगन झल सपडा ।
जीवराज मरण कीधा जदी, कीरत भगवा कपडा ।।६।।

कीत सुणी तुरकान, सुणो कीरती सता रै ।
कव व्रत जाणी कीत, पाण पोतरै पता ।।
चोवीस साख चवाण, जाण जादम जाडेचा ।
कैलपुरा कुरमा, खाग जाणी खेडेचा ।।
पुजती कीत जाणी प्रथी, चेतन वीध-वीध चुपसु ।
रस जीयो जीतै कीरत रही, सारद जोसा सरुप सु ।।१०।।

जग मै जीया जीसा, रया थोडा छत्र वारी ।
सा-धरम सु-दतार, तीख भारथ तरवागी ।।
अभ मन जेती आव, सु-जसवी लीध ससारा ।
तोसु मीलीया तीका, वीया न होय वीसारा ।।

वीर वर सूतन चालक वीमल, नह नरवाण नोखमीयो ।
अैराक पोट हीण अमल, जीवराज जोखमीयो ॥११॥०

२२२७ १०८४२ (११) स्फुट-कवित्त-सग्रह
(सरणै राखिया रा)

कवत

सरण रहो बुधसीग, पाट बूदी वैसारे ।
सरण रहो गोपाल, धणी गमपुर धारे ॥
सरण रहो जैसाह, आय राजा आवेरो ।
रावल सरणै रहो, अखौ पीण जेसलमेरो ॥
सरणै रहीया सैद, कैद असपत नै कीधो ।
जट चुडामीण जीसा, आय जद सरणो लीधो ॥
हेक हेक वार हीदु तुरक, सरण रहता जग साखीयो ।
म्हाराज अजण मडोवरे, कुण कुण सरण न राखीयो ॥१॥

२२२८. १०९५५ (४) स्फुट-कवित्त-सग्रह
(महाराजा मानसिहजी के प्रशस्तिपरक)

कवित

कोप्यो आन सुरपत परलै समाज माझ,
होतो नाह व्रीजेस गिर हात कोन धरतौ ।
करन जो न होतो नीत कचन को दान देत,
विक्रम जो न होतो पर पीर कोन हरतौ ॥
आपस की फूट परी मारू सभा के वीच,
नाथ जो न होतो तौ सहाय कोन करतौ ।
तोसो जो न होतो मान भुप हीदवान भान,
एते गुन वान आन काको जस करतौ ॥१॥

---

० इसके आगे आढा पाहडखान कृत रीया ठाकुर शेरसिहजी परक गीत है । कृपया जिज्ञासु पाठक सूचीपत्र के क्रमाक १९७४ पर शेर्षसिहजी के स्थान पर शेरसिहजी पढने का अनुग्रह करें । इस गुटके मे और भी अनेक ऐतिहासिक गीत एव स्फुट छद हैं ।

डिगेंगे गयंद दल मीलेंगे गीरद,
खलभळेंगे समद वळ चढ हैं जीहान के।
दुर है दीनेस घर घर है फुनेस फेन,
गीर हे उसेस सुर सहत वीवान के॥
कवि- केहत सीवनाथ नीबतो रहत,
नाम तरज गज मानीये अरज-मान नद गुमान के।
घुर्जेगी घराह घुख जेहेगी राह जीत,
पेंनीये मनाह पतसाह हिंदवान के॥२॥

चाकर चकीते ह्वै चढे मद-मते जगी,
आए कलकते मेती घर केता पानकी।
हालाहल ज्वाला छल भाला की तयार जानी,
जांनी अेक भाला वीच ज्वाला अजान की॥
नाथ के प्रताप सदा जाप आप ही को अेक,
गई ताप रही टेक कीरत जवान की।
मयुख तेज भान की उदोत हे भी पान की,
सु-मान भूप राखी तेंनें मुछ हीदवान की॥३॥

आइ हे लीखावट ईउ अकवर लाहोर वीच,
सब ही मीलाय सला मवे राजसथान की।
वाचत ही बोल उठे कहीयो हमारी अेसे,
राठवड कलम हुते ये मुख जवान की॥
सीख रणजीत कहे राज राव रानन मे,
मान भूप राखी तेने मुछ हिंदवान की॥४॥

तिरत हे गहर निर फीरत हे उजारन्मे,
वरत पर निरत करन नट वें नटानी हे।
अवखे अरीले वाज हीडत हीडोरे माझ,
चढते भेभीत थान चढती जवान्नी हे॥
सवलन सो भेरभाव डाव वीन वाहे घाव,
गहत सरप ताप सो तो कवहुक ठगानी हें।

राज नसा खास खेल करत अमेल मेल,
ऐती ठोर गाफल रहे मोत की नीसानी हे ॥५॥*

गीत पहला

प्रारम्भ – चमकै वीजल पळापळ चहु दिस,
नीस सारी जीवन घन सोर।
चात्रक सोर पीव पीव चहकत,
गहकत मोर घटा घन घोर ॥१॥

अन्त – दीना वचन साच सोह दाखा,
लाखा वाता वसत लहा।
हरगज न्ह चुका होली पर,
कुस आखर वदनाम कहा ॥६॥

ईतरा वचन साच ह्वै अबके,
आगा सु करजो इतबार।
जसरा वचन हुवै सो हो झुठा,
नेह-ना वचन मान जो नार ॥१०॥

गीत दूसरा

प्रारम्भ – उठे सेहर घटा घण उमडी,
सरसी लुव रही वरसात।
दामण दीस च्यारु हद चमकै,
दादर मोर दहु दुख दात ॥१॥

घन गरजै लरजै अत गोरी,
पपीयो पीव पीव वांण पढै।
ती–जातीया पीया वीन तरसै,
चित उतरै चीत फेर चढै ॥२॥

---

* उपर्युक्त पाच छन्दो के वाद कुछ शृङ्गारिक गीत लिपिवद्ध किये गये हैं। गीतो की बानगी स्वरूप उनके आद्यन्त भी आगे दिए जा रहे हैं।

अन्त .— दादा पर लुण पपीया देछै,
कोयल केछै नाह कठै ।
अरजी मोय मानसी अवकै,
के मुझ सुणसी महल उठै ।।१२।।

गीत पांचवां

प्रारम्भ .— भर मोत्या थाल अर कळस वदासा,
गासा वोहो लग गीत घणा ।
उछव अनेक ओपसी आया,
तीण मद वेरी छोल तणा ।।१।।

कमरा वाव चढे केकाणा,
मन सोनो कीवो मजवूत ।
तुररा गरट कीलग्या तीखी,
सीर पेचा फावे हद सूत ।।२।।

अन्त – रग री रात सोहनीम वीती,
धण मद वौहद धापा ।
उमग उछाह दीन उगा ओपे,
उगा अमला आया ।।६।।

धण यु वचन कह छै धुररा,
आछी ओलग आणी ।
कागद च्यार दीया कुरसी वद,
तीखी पीव हद ताणी ।।१०।।

नाहजी वचन भलौ नीरवायौ,
अव ओलभीया आखु ।
रग री रात कहण जु नाही,
भल - हल उगा भाखु ।।११

पुष्पिका – सवत् १९०५ रा मृ० वद १ गुरवार दीन । (द०) कु नणराज रा ।

१३५८. ७८६० अलकार कलानिधि

प्रारम्भ – श्री गणेशाय नम । श्री राधावल्लभो जयति ।
अथ अलकार कलानिधि भट्ट श्रीकृष्ण कृत लिख्यते ।

सवैया

कु डल मडि कपोल उमड भुसड लियै अलि मडल मडन ।
मडत तडव सु ड प्रचडहि तु ड महा मद कु ड उमडन ॥
कु डली कौ उपवीत अखड सुधाकर खड धरै तम खडन ।
ध्यावौ वितड अखडल घोर मडिर रहे अघ भु ड विहडन ॥

कविन

बाजत सदा ने विप्र गाजत सवद घोख,
साजत सकल जन मगल विसाल कौं ।
गावत गुनी जे उमगावत उछाह त्यौ,
जगावत महल भाइ भनक रसाल कौं ॥
आरती उतारियत हीरा मोती वारियत,
दलि मलि डारियत दारिद के जाल कौं ।
राजा रामचद राज पाट अभिषेक,
सिंघासन वैठे सुभ देहु कवि लाल कौं ॥२॥

वानी के रसिक गनपति के प्रसन्न भयें,
मूक हू कै मुख मुलकति सुख भारती ।
फुरत तुरत छद ग्यान मय भान रुचि,
मूढता अपार अधकार तैं उधारती ॥
सरसति सुधाकर सुधा सिंधु हू तै,
वर वरन धरनि खल दूखन विदारती ।
मान कवि गज कै समाज सिर ताज,
ताहि कीरत कलानि कै उतारियत आरती ॥३॥

सकल कलानि कै निधान जयसिंह भूप,
धरै प्रभुताई मघवान मद छीनो है ।
कविता के रस पर रीझन रसज्ञ वर,
सव कवि लोकनि प्रमोदि जिन दीनो है ॥

तिन कवि लाल कलानिध सौ सनेह करि,
किये जब कछुक हुकम रस भीनो है।
तब तिन भाषा मैं असेष काविरीति आन,
अलकार कलानिध नाम ग्रन्थ कीनो है ।।४।।

दुहा

सुभ वसत की पचमी, करत अनेक विहार।
हुकम पाय नृप को तहा, भयो ग्रथ अवतार ।।५।।

अन्त –

दुहा

अलकार के दोष एतै, सब दिए दिखाय।
मम्मट मति अनुसार सो, भाषा मे निचाय ।।३४।।
यह विधि यह सब काव्य को, लच्छन कह्यो बनाय।
सब्द अरथ रस गुनि, ध्वनि रु अलकार दरसाय ।।३५।।

कवित्त आसीर्वाद को

मेष बृष सूरज प्रकास चद्र भाल सुर,
मिथुन करक हर मगल वुधि-नि घर।
लोक गुर गावें कवि कठ सनि नील वाए,
सिघ कटि सैल कन्या अग हेम तुला घर ।।
राहु माली मेटै भव वृश्चिक पिनाक धनु,
जारत मकर केतु वरन को कुभ कर।
नैन मीन सुधा सिधु देहु सुभ नद लाल,
सभू तूमैं नवग्रह बारहउ रास खर ।।३७।।

पुष्पिका :– इती श्रीमन्महाराजाधिराज श्री रामचन्द्रदेव विप्र बृत्त श्री भट्ट कवि-कलानिधि कृतौ अलकार कलानिधो तृयोदसी कला ।।१३।। शुभ भवतु। श्री।

आसीर्वादात्मक

जीतत चपक कोयल मालहि, सुन्दर कचन वेल तमालहि।
हेम जरी मनि नील लरी, कहि बीजुरी जोति जलधर जालहि।
पूरन प्रेम स्वभाव रहे रचि है, निधि माधुरी रूप रसालहि।
नायका राधिक नायक कान्ह, करो सुभ सप कलानिधि लालहि ।।१।।

दुहा

पहले रस सिंगार जो, कह्यो सकल रस राज।
तिहि आलबन नायका, अरु नायक व्रजराज ॥२॥

नायक लच्छन कुंडलिया

रागी धनक कुलीन वर, त्यागी जोवन वत।
अरु सकृति सुन्दर चतुर, सुवर तेज निध कत ॥२॥*

प्रारम्भ – अथ प्रवधाध्याय लिख्यते।

(दोहा)

गीत कहै द्वै भात के, प्रथम निबधनि जानि।
दूजै कहि अनिवध को, मन मैं मोद न मान ॥१॥

वागेपक कवि न कह्यौ, लक्षन ग्रथ विचार।
वध गीत तासो कहैं, सु कवि सुमति निरधार ॥२॥

आ न अनिवध हैं, पहिलै कह्यो सुनाय।
कहि प्रवध के अग को, धात सु वेद सुभाय ॥३॥

प्रथम भेद उदग्राह है, मैलापक पुनि होय।
ध्रुव तीजो आभोग है, चोथो जानत लोय ॥४॥

मध्य जु ध्रुव आभोग को, अतर कहत विचार।
सवै गुनी जन के मतै, यह जानो निरधार ॥५॥

सालग सू उ स्वरुप है अतर मिलै जु आय।
ओर ठोर रहै न कहु, मैं यह कह्यो वनाय ॥६॥

तीन भात सु प्रवध है, कहत गुनी जन लोय।
चतुर्धात त्रिधातु अरु, द्वि धातु सु वहु सो होय ॥७॥

होत नाहि कहु दोय मैं, आलापक आभोग।
भेद दोय मैं है कहै, च्यार धातु सजोग ॥८॥

---

* आगे लिखना समाप्त कर दिया गया है।

अलकार-कलानिधि से पूर्व प्रारम्भ मे गीत प्रवधाध्याय नामक कृति के आठ पत्र हैं। उक्त कृति का आद्यन्त भी यहा दिया जा रहा है।

अन्त — दोहा

गज लीला वहुरचो कही, चक्रताल पुन होय ।
वहै क्रोत्र पद कहत हैं, गस ताल मैं सोय ।।७७।।

कहैं वहुर घुनि कुदनी, आर्या गाथा नाम ।
द्रुपद सकल हस कहि, पुन तोटक र र धाम ।।७८।।

षट रु वृत्य कहि मातृका, राग केदवक मीत ।
कहत पंच ताले मुरहि, ताल समुद पुन गीत ।।७९।।

आलि नाम लै मननि को, कहै सकल ।

२३५९ १०६८५ अलकार रत्नाकर

प्रारम्भ — ।। र्द० ।। श्री गणेशायनम. ।। अथ अलकार रत्नाकर लिख्यते ।।

दोहा

नव तसु ए सुर मुकट महि, प्रतिबिवत अलि माल ।
किये रत्न सब नील मनि, सो गनेस रछपाल ।।१।।

अथ देशाधिप वर्णनन

दोहा

उदियापुर सुर पुर मनो, सुरपत श्री जगतेस ।
जिनका छाया छत्र वसि, कीनो ग्रन्थ असेस ।।२।।

कवित्त

सकल महिपन कै राजै सिरताज राज,
पर उपगारी तारी भारी दुख दद के ।
देव जगतेस धीर गुरुता गभीर धरै,
भजन विपछ पछ दछ फोज फद कै ।।
प्रभुता प्रकास अति रूप को निवास सोहै,
प्रगट प्रताप ताप मेटै जन वृन्द के ।
मेघ से समुदर से पारस पुरदर सै,
रति पत सुन्दर समान सूर चद के ।।१।।

दोहा

जदपि नार सुन्दर सुघर, दिपति न भूखन हीन ।
त्यौ न अलकृति तनु लसै, कविता सरस प्रवीन ।।३।।

कीनो रसमय रसज्ञ कवि, सरस वढाय विवेक ।
छाया लहि गिरवोन की, भाषा ग्रन्थ अनेक ।।४।।

तदपि अलकृत ग्रन्थ को, काहू कवि नहि कीन ।
भाषा भूपन है जउ, कहूँ-इक लछन हीन ।।५।।

भाषा भूपन है जउ, सो जसवत नृप कीन ।
वसीधर अव करतु है, अछौ ग्रन्थ नवीन ।।६।।

यातै ताहि सुधारि कै, देखि कुवलियानद ।
अलकार रत्नाकर सु, किय कवि आनद कद ।।७।।

कहू कहू पलि धरै, उदाहरन सरसाइ ।
कहु नये करिके धरे, लछन लछ जिनाई ।।८।।

कवि परिचय

अरथ कुवलियानद को, वाच्यो दलपति राय ।
वसीधर कवि पै लै धरे, कहु कवित वनवाय ।।९।।

मेदपाट श्रीमाल कुल, विप्र महाजन काय ।
वासी ऐमदावाद के, वसी दलपतिराय ।।१०।।

कवि गुलाबराय हि यहै, सोध्यो सुवुधी अपार ।
वासुदेव पडित पढ्यौ, लहि अति मति विसतार ।।११।।

कर कविन सो वीनती, कविता जदपि अनूप ।
जऊ त्रिविक्रम हरि तउ, धरचो सुठावन रूप ।।१२।।

याहि सुधारहु बुधि वल, दोस हमैं जिन देहु ।
धरै सुकवि जन कै कवित, तिनही को गुन लेहु ।।१३।।

कहु सिगार कहु हास रस, कहु वीर कहु भीत ।
कहु साति करुना कहु, वीर सु अदभुत नीत ।।१४।।

इन्है आद(रे) रस सकल, वरनैं कविता अग ।
कहु कहु क्रम विनु धरै, सो सो पाय प्रसग ।।१५।।

अलकार रत्नाकर सु, दियो नाम यह हेत।
च्यार तरग नीको रचै, अलकार सकेत ॥१६॥

प्रथम पीठका दूसरै, अलकार सत जान।
रस प्रमान नीके धरे, चोथे सकर मान ॥१७॥

जेसे नग की जोत मिल, कुन्दन तै अधिकाइ।
अलकार कहि कवित की, त्यौं छवि दई वढाइ ॥१८॥

जेसे रीभ जवाहरी, लेत जवाहर पेखि।
त्यौं कवि कोविदी रीभ है, अति अद्‍भुत स्रम देखि ॥१९॥

गरभ लोभ जस कोन किय, नहि विचार उपगार।
अपनै चित विनोद कौं, कीनो इहै प्रकार ॥२०॥

रचनाकाल १७९८ सतरह सै अठानवा, महापछ सिस सार।
सुभ वसत पाचै भयो, यहै ग्रन्थ अवतार ॥२१॥

अन्त – सवया

केतकी धूर धरे सिर पूरन गु जत मजु सु कू जन मे।
वान जरे मद नीर समीर जजीर सु आवत हे छिन मे ॥
वानयत छुरयौ नव पक जथान ते दर्थ अखड धरे मन मे।
तो? के मोरभ शृखल कौ यह भ्र ग पतिग फिरे वन मे ॥

यहा लाटानुप्रास अरु रूपक सौ शकर हे जहा शब्दकरालकार अरु अर्थालकार जुदे-जुदे होय तहाँ ससृष्टि अरु जहाँ एक पद मे दोय होय, ताहाँ एक याचकानुप्रे(वे)श।

सपूर्ण . .

इति अलकार रत्नाकर सपूर्ण। *

पत्र स ५९— ॥ दं० ॥ श्री गणेशाय नम ॥ अथ भाषा भुषण ग्रन्थ प्रारम्भ।

प्रारम्भ – निज प्रभु को सुमरन किऐ, कहत पाप की रास।
तिनके पद चित धर कहू, अलकार परकास ॥१॥

---

* इस कृति के बाद भाषा-भूषण नाम से पत्र सख्या ५९ से ६८ पर अलकारों के लक्षण तथा उदाहरण दिए गए हैं। उक्त कृति का आद्यन्त भी यहां दिया जा रहा है।

जाकी उपमा दीजिये, ताहि कहै उपमान ।
जाको वरणन कीजीये, सो उपमेई वखान ।।२।।

उपमेय रु उपमान कौ, सो हे धरम समान ।
उपमा वाचक पद मिले, उपमा हौहि प्रमान ।।३।।

(उदाहरन)

भोहे कुटल कवान सी, मर से पेने नेन ।
कविनाम वेधत व्रज-वाला तनहि, व्रमीश्वर दिन रेन ।।३।।

अथ लुप्तोपमा

वाचक धरम रु वरननिय, अरु चौथे उपमान ।
इक विनु ह्वै विनु तीन विनु, लुप्तोपमा प्रमान ।।४।।

उदाहरन

गज गामनि मुख चद सम, कज नयनि इक नार ।
छवि सो रति अजवति भयो, तरल एकत निहार ।।५।।

वाको मिलन इकत कौ, रति सुख लाभ अपार ।
भयौ काकताली यहै, विनु ही नेक विचार ।।६।।

अन्त –

अथ निरुक्ति अलकार

सो निरुक्ति जब जोग सौ, अर्थ कल्पना आन ।
उधव कुवज्या वस भयौ, निर्गुन वहे निधान ।।१६३।।

अथ प्रतिषेदालकार

सो प्रतिखेद निखेद सौ, अर्थ निखेद्यो जाय ।
'तिछन वान विनोद है, नही सुचौ परचाय ।।१६४।।

अथ विधि अलकार

अलकार विधि सिधि जौ, अर्थ साधिये फेर ।
कोय कहे कोयल जवे, रितु मे करि हे टेर ।।१६५।।

अथ हेतु अलकार – द्विविध

हेतु अलकृति दोय हे, कारज कारन सग ।
कारज कारन ए जवे, वस्तु अेक ही अग ।।१६६।।

उदाहरण

उदित भयौ ससि माननी, मान मिटावन मानि ।
मेरे सिधि समृधि यह, तेरी दीठ वखानि ।।[१६७]

पुष्पिका – इति श्री अलंकार रत्नाकर मूल लक्षन सपूर्ण ।।

२३६६. ८२३६ इतिहाससार समुच्चय भाषा

प्रारम्भ – ।। श्री प्रमातम ने नम ।। अथ इतिहास भाषा कृत्य लिखत ।।

नारायण नमस्कृत्य नर चैव नरोत्तमम् ।
देवी सरस्वती चैव ततो जयमुदीरयेत ।।१।।
जयति पराशरसूनु सत्यवतीहृदयनदनो व्यास ।
यस्यास्यकमलगलित वाङमयमृत जगत्पिवति ।।२।।

दोहा

वारवार लवोदराय, अति नैन विशाल ।
फलस पानि सरव गुन भुवल्ल ।।३।।

चौ० (चौपई)

गौरी नद गनेस सिर नाऊ । निरभै कथा कहत सुख पाऊ ।।
नारद ब्रह्मा बीन कर लयौ । आसन प्रगट हस पर कीयौ ।।४।।
चारयौं वेद अरथ ता अग । अष्टादस पुराण सव सग ।।
शिव विरच गुरु करौ प्रनाम । पाऊ विमल वुधि विश्राम ।।५।।
तुम हौ सकल वुधि वर दाता । सबै रूप सब के पित माता ।।
र काल सवत सोला सै तेताला । राज अकबर साहि भूवाला ।।६।।
१६४२ भई कृष्ण पक्षि अति वैशाखा । सातै वुधिवार सुभ जाता ।।
तह कथा कृत मडल भयौ । प्रात जन्म कृष्ण सो लयौ ।।७।।

अन्त – जो इतिहास कथा फल जास । सुनत होइ सब करम कौ नास ।।
सव भगतन की कृपा मनाऊ । वार वार गुरु कौं सिर नाऊ ।।३२।।

कवि-परिचय
लालादास कहै कर जोरि । सुनि कवि गुनी देहु जिनि खोरि ।।
अस्थल नगर आगरो गाव । उधोदास पिता कौ नाव ।।३३।।
जात वांनियौ लालादास । भाषा करि बरन्यौ इतिहास ।।

दोहा

लाला सरस इतिहास कौ, व्याम वचन धरि सीस ।
धर्म वढै अरु ग्यान जसु, सुनि ते कथा वतीम ।।३४।।

चौ०

माहात्म्य जो फल सुनै अठारह पुरान । जो फल गोदावरी गगा स्नान ।।
जो फल होइ केदार पर सत । सो फल इतिहास कथा मुनत ।।

अश्वमेध जग्य सकल तीर्थ स्नान । सो फल सुनत इनिहास पुरान ।।३५।।

पुष्पिका – इति श्री महाभारथें इतिहाससार ममुच्चय त्रयत्रिंमोध्याय ।।३३।। इति श्री महाभारथ के इतिहास, कथा वतीम मपूर्णं समाप्त । सवत १८५५ वरषे, भाद्रपद मासे कृष्न पक्षे तिथि नवमी भोमवारे । श्री मन्नागपुरे वखत तडाक-तीरे पश्चिम दिसे । श्री महादूपथि उत्तराधा वावाजी श्री ठाकुरदासजी तिन सिष्य रामजीदास तिन पुस्तक लिख्यौ, सु पठनारथ । हरि भक्ति रसतु ।

२३६६ ६२६० (१) १२ कवित्त *

(जैंस्यघ जी को)

सतजुग हरिचद त्रेता भये रामचद,
दु(द्वा)आपर प्रिछत मोह हराय हारोहु ।
अवकै समै भयो कुरम कलपतर,
वैरै मेरो चलौनै उपाइ करी चारुहु ।।
कलजुग करत फीरादि कर जुग जोरी,
नुनि हो वोरची तेरो सरन वीचारोहु ।
माहाराज्य जेस्यघ जीग कुड तोपै रोपी,
आवध के गोलन सो अनाथ करी मारोहु ।।[१]

लिखे थे अभागि ते मभागी करे दे दे दान,
दुरद दुजन दुवार गिलम सूधारि है ।

* ऐतिहासिक घटना एव व्यक्ति सवधी कवित्त उद्धृत किये जा रहे हैं ।

जल करे थल थल जल करे दलन सौ,
घरा घरी धुरी घरा खुग्नै वीदारि है ।।
नौने कवि कहत विरची सुनि सीताराम,
राम चरण सरण छत्र धारी है ।
माहाराज्य जैस्यघ जिगन कीजो मनसौ,
ओर ही कि ओर मेरी सिसिटी करि डारि है ।।[२]

२४०१. ६२६० (१) १५ कवित्त

(सूरजमल जी जाट को)

कवित्त (सवैया)

जा दीन तै दल साजि चढो ओप आगै वढौ नग पीछै धरोना ।
मेर है सेर मडौ किरवान लै एक तै दुसीरो अक करोना ।।
कवि केसो श्री वदनेस के नदन तो-सम ओर वरग वरोना ।
घने हाथी टरे अर साथी टरो भान टरे पै सुजान टरोना ।।[१]

कवित्त

इत छपो भान उत भान सो सुजानस्यघ
ऐक वार मडल तमाम तम छै गयो ।
भादो भयो देखिन कौ चाहो सुर लोकहु मै
आयो इद्र आसन विमान धरि लै गयो ।।
केसो कवि आप जीव साचो सुर किरति चलै गयो ।
नरन को नाहा फैरि होइगो उदोत कोउ,
सीनसीनी साह तिलक चढै गयो ।।[२]

लाखन लराइ विचराइ फोजन वैरीन की,
परि सुरज कै पाछै सात्रेसार है समाहरैगो ।
जाहा रोपी हद स्रहद श्री सुजानस्यघ,
दपट दिली के दल तेगन सो झारैगो ।।
केसो कवि भाइ व्रीजमडल सवाइ पै जे पारैगो ।
दरघ की करद करेजा वाही गयो वली,

कीने हे मुकाम घनी लाखन चढहि फोज,
मागी कै नजीवखा दिलि पै दावा धरता।
मान तोनै कैसहि जाहान पै सवायो जस,
दोखी दर्फ होते मुख सोखिन के भरतो॥
केसो कवि सोख दरस दिखाइवे कौ,
दतन तिनुका नेकै पहल पाइ परतौ।
व्रिज के महीप मनमुवान मै सोवि देखो,
नीकौ हो मिलाप तो मुजान क्यो न करतो॥[४]

देखीइत दीरग दतारे मतवारे भुप,
भारे भारे घोरन पै चवर ढरकाये है।
घरहीते सेलन की अनि समगाइ ली,
जग मै जुरे नै भुठे पाय मटकाये है॥
केसो कवि ओरं कि मती काहा लो करु
सुरज कि लाज परि काज नहि आये है।
वडे वडे मोती भोरि दीनै करन पेचन मै,
हाथन के करे खोली काछन दुराये है॥[५]

कैयेक मुसाइव करोरी मग मुवेदार,
रहे सब चाहत अथाहास्यघ थाइ गयो।
करि गयो अनि कै अचानक अचभो ऐक,
घरि गयो ओरं धाक विर रस छाय गयो॥
केसो कवि जग मै जवाहर मो जोती धारि,
भान की किरनि मानु छल सो छीपाइ गयो।
साचो सुर लोक कौ सीपाइ काहु भुपति कौ,
नग्न के नाहा पै हजारन मै वाही गयो॥[६]

२४०२. ६२६० (१) १६ कवित्त

(वरसाना की राडी कौ)

जीतै है तो सुजस प्रकास देस देसन मै,
मरे तै मुकति श्रीजमडल सुवासना।

जग जुरि मुरे तेम जे जम जवृति घटि,
मवहि कै रटि या जग मै कुवासना ।।
केसो कवि वरमानो रज धानि प्रानि,
चुकी गये दाव पै करौरि करो ग्रासना ।
काहा राजा काहा गव सा सीध उमराव,
काहु मै नै निकसी उपासना सा वासना ।।[७]

२४१६. ६२६० (१) १७ कवित्त
(सीखां की लडाइ फते करी, नवलस्यंघ जी जाट)

कोन से मुलक मनमुवे मै भरम भुले,
काहेकु रै सीख ब्रीज भोम पर भटके ।
याहा रखवारो ब्रीज दुलह मुकट वारो,
मुर असुरन के अनेक दल हटके ।।
केसो कवि ग्रोर की मति काहा लो करु,
काठ से कठौर कोस ग्राठ लग पटके ।
चढौ नवलेस माहि सुरज को माहावलि,
ऐकहि चटक मै ग्रटक लो न ग्रटके ।।[१]

वदल से उमडि ग्रह दलह कारे वीर,
थिर न धरत उर उमगे ग्रमाने के ।
केहरि से किल्कि किरवान वाहै,
काल के जजाल येहनि वाह ब्रिद वाना के ।।
केसो कवि ब्रिज की प्रतग्य पर पुरि रही,
तिर तरवार न उडत सिर नावा के ।
मुसे म दति विरचे ते किरचे कीये है सीख
जैसे करगर वै नवाव खान-खाना के ।।[२]

गरवै गोपालस्यघ लाज सवराज की सी,
गाजी धरि करि जग ग्रग उमदेस की ।
केसो कवि कांन सघरे गुमरि भुले,
खोड गयै ग्रापनि सिकल गरु भेख की ।।

व्रीज के महीपन को दीपन भयो है जस,
लोन की पनाहा राखी राजा नवलेस की ।।[३]

(सवैया)

कान मुनि कहु भारथ की कथा कै सुनो रामजी राम नरेखे ।
कै नो मुनी प्रीथीराज के रासे मे जग करि सुलतान समेखे ।।
कवि केसो कौपी चढी जदुवंस तब विर बाहादर आखीन देखे ।
सुरजी के नवलेस वली तैंनै उदल आल्ह प्रमाल विसेखे ।।[४]

मैमत माते मतग चढे निरप जग जुरैं रन सुर सुरझे ।
छुटत बान किरवान करा करि टुटत मु ड मु मु ड लुरझे ।।
कवि केसव घुमत घाइ घने गिक लेत कुलाटन हुल उरझे ।
ऐक परे धर बध्र सो बथन ऐक परे गज मु ड लुरझे ।।[६]

जग जुरे पर रग रहे परी रचक बात हुइ मनि बोरि ।
फेरत नेक अर बेकी चाहि न काटर सुर सबै लगि ढोरि ।।
कवि केसो होनि टरैं न टरि जब दुरजन की महमा चढि दोरि ।
गगाप्रसाद की लाज रही अनेकन की रही पाघ पछौरी ।।[६]

२४२३ १००५६ (४) कलिजुग पच्चीसी

प्रारम्भ – ।। अथ नदराम कृत कलिजुग पचीसी लिखत ।।

दोहा

गनपति कू ज मनाय कै, रिधि सिधि कै हेत ।
वाक वदनी मात तू, सुभ अछिर वहु देत ।।

कछू करयौ हौं चहत हू, तुम्हारे पुन्य प्रताप ।
ताहि सुन्या सुख उपजै, दया करो अब आप ।।२।।

कीयो इह उपगार अब, ईको हुकमज पाय ।
कलि व्योहार कह्यौ अबै, सुनो चतुर चित लाय ।।३।।

गाथा

नीति राज की अैसी हौती दौलित कौं सुख लीज्ये ।
राज सिका अर तोल मोल की वढती दिन दिन कीज्ये ।।

अब पैसे की कमी भई है रुपया है नव मासा ।
नदराम कछू दुनियां माही देख्या अजब तमासा ।।४।।

षट दरसन की पूजा करते दुखी देखि दुख हरते ।
विप्र गऊ कौं देखि साकडै भूप वडे यू लडते ।।
अब घेरैं गऊ विप्र कौ लूटै परतिय भोग विलासा ।
नदराम कछू दुनियां माही देख्या अजब तमासा ।।५।।

फोजदार उमराव आगिले स्वामि काम कू लरते ।
मैवासी को मार तोरते सुख वासी सुख करते ।।
अब जोर तलब सू जोर न पूजै लूटै रैंनि खलासा ।
नदराम कछू दुनिया माही देख्या अजब तमासा ।।६।।

मुनसबदार मुलाजम होई ताकी वोलग जोवै ।
मानस ताके खरे विरगे वै मुहीम मै रोवै ।।
जमीदार जागीर भोगवै खेलै वहरी वासा ।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजब तमासा ।।७।।

ताम हलाली कै मुख लाली खाल खाल मै दीसै ।
निमक हरामी कै दरवाजै हाथी घोडा हीसै ।।
ध्यानतदार धका वहु पावै चौर जरकसी तासा ।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजब तमासा ।।८।।

सैद सेख पठाण तुरमा छौडि चाकरी वैठे ।
जुलहा धुनिया वा धिक मा[illegible] कू फिरै चोहटै अैठे ।।
जग दुन्या सू पीठि दिखावै हौत धनी का हासा ।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजब तमासा ।।९।।

साचौ जाय चौत्रै झगडै साखि वुलावै साची ।
लिख्यो पढ्यौ मुह आगै म्हेलै खरी खुव करि वाची ।।
झूठा कीस वरसौति पहुँचै साचै देहि वकासा ।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजब तमासा ।।१०।।

रामसनेही तो चलि आवै ताकू थोडे ध्यावै ।
रामजनी कू खरची भेजै आदर सू वतलावै ।।

घर नारी कु मारै गाली गनिका तै घर वासा ।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजब तमासा ।।११।।

मात पूत कु आगै हो करि नखरे सूज नचावै ।
वोली ठौलि और खिलकटी छैलन कु ज रीझावै ।।
ताका भरवा गिरवा हौकै वने फिरै दुल्हा-सा ।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजव तमासा ।।१२।।

पडित भीतरि जान न पावै भाड वौलि कै लीज्ये ।
दीन दुखी कु चीन्हत नाही डुम कलावत दीज्ये ।।
धरम नेम की वात सुनै न्हो खौटै चीत हुलासा ।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजव तमासा ।।१३।।

तरनी देखि छिनालि कुहावै दिना वडी कु डायन ।
साध अग की पघडी खोमै पडै ढीठ कै पायन ।।
परमानी कु स्वाच न दीज्ये परपच जू पचासा ।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजव तमासा ।।१४।।

चरनोदिक अर तुलछी दल कौ लेत हेत सू थोडा ।
मदरा आमिष खान पान कु खरचत है धन जोरा ।।
करि मितराई नारि ताकवै दे करि वाह विसासा ।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजव तमासा ।।१५।।

विप्र भागि कु रुचि करि जीवै पीवै तिलक तमाखू ।
च्यारि नौतिया चौदा आवै साथि लीये करमाकु ।।
सध्या तरपन कु है थौडा विषता कु विकतासा ।
नंदराम कछू दुनीया माही देख्या अजव तमासा ।।१६।।

गऊ कुराह चलन अव लागी अविला कडको डारचौ ।
दौडि धीग के घर मे पैसे पति परने कु मारचौ ।।
निरधन देखि सगाई तौडे धन सू करत नतासा ।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजब तमासा ।।१७।।

निरधन दीसै साद जगत मै भेष माहि व्योपारी ।
जोगी नाव धराय जगत मै घरमै चचल नारी ।।

सेली मुदरा छार लगावै घरै जूडवर वासा।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजब तमासा ।।१८।।

खाय लुडखडी खत लिखावै अपनू जाम मडावै।
कर्ज काढि वौहरा सेती गाढी सौगन खावै ।।
दाम लेत है ताही दिन सू ले रहने की आसा।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजब तमासा ।।१९।।

दातार छीन तन अति ही दीसै कृपन पेट वधावै।
वहन भानिजी कु जो कवहु निति छिनालि पहरावै ।।
पतिवरता तन नागी दीसै वैस्या पहरै खासा।
नदराम कछू दूनीया माही देख्या अजब तमासा ।।२०।।

ज्ञानी गुनी भुख अति खोचै मुर्ख कै धन दीसै।
वहु पालिकै मुख सु सोवै सास वापरी पीसै ।।
तापरि वाकु भगरी खान कु पतनी पान पतासा।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजब तमासा ।।२१।।

नाटिक चेटक जामै दीसै ताकी करै जू सेवा।
भूत खेल कु ख्याल दिखावै ताकु मानै देवा ।।
अतरजामी नाही भजियाँ भजीयौ धुलि-धमासा।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजब तमासा ।।२२।।

भाई वध्र पाहनै आवै घर की कलह जु भाडे।
फोडै वासन तौडै सासन भावै जू पति माडै ।।
जरयो वच्यौ सो उन्है खुवावै निज भाई सुखदासा।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजब तमासा ।।२३।।

कवि परिचय र काल १७४४

नदराम खडेलवाल है अवावति को वासी।
सुत वलराम गोत है रावत मत है किसन उपासी ।।
सवत सतरासै चौवारा कातिक चद प्रकासा।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजब तमासा ।।२४।।

कलि व्यौहार पचीसी वरनी यथा जोग मति मेरी।
कलिजुग की जवानी गाई ही है और रासि वहुतेरी ।।

राखो राम माम या कलि मैं नद नद सुख रासा ।
नदराम तुम सरणै आयै गायौ अजव तमासा ।।२५।।

पुष्पिका .- ।। इति सपुरण ।। मिती आसाढ वदि ८ सवत १८११ का दसकत वखतराम गोधा* चाटसू-का लिखी वुपौई मध्ये । देहरेजी ।

२४४२. ६५६४ (६) गङ्गा-शतक

प्रारम्भ :- अथ गङ्गा शतक लिख्यते ।

दोहा

जातैं जग जन्मादि जो, जगपति यह वपु वारि ।
वदौं अघ मल हर अमल, गगा जग हितकारि ।।१।।
तुरत हरत त्रय ताप ज्वर, त्रण अणु परसत अग ।
ज्वर हरिवो नहिँ कठिन, सुमरत गग तरग ।।२।।
अड कटाह कटाह रवि, अनल अनिल नभ पूरि ।
ब्रह्म द्रव गगा भयो, भुवि भव भेखज भूरि ।।३।।
जरे जिवाये तैं जननि, सगरज साठि हजार ।
जरत हृदय शिर उदधि हर, लिय झट तव आधार ।।४।।
गग रग हरि रस अवसि, परत करत इक सग ।
भुव-चर नभ-चर तरुन के, सुभग चतुर्भुज अग ।।५।।
तव जल तन तजि शिव वनत, तुरत उचित यह चाल ।
ताही के विप दोष गल, ताप अनल लगि भाल ।।६।।
किते गग परिहरि वनत, यह अचरिज सी वात ।
सलिल सुधा सम सित लगें, असित होत सव गात ।।७।।
पातक जन्म अनेक के, तू घातक जग मात ।
अनकपुर ऊजर करत, हरि हर नगर वसात ।।८।।
हरि-पद विधि-कर शभु-शिर, वसिवो सो मिम हेतु ।
ब्रह्म रूप तू तीन मैं, प्रकट दिखाई देत ।।९।।

* लिपिकर्ता स्वयम् भी अच्छे विद्वान थे । इनका लिखा हुआ ग्रन्थ 'बुद्धिविलास' प्रतिष्ठान की ग्रन्थमाला मे ग्रन्थाङ्क ७३ पर प्रकाशित किया जा चुका है ।

कलुष जटिल जट दहत पट्ट, गहत जटिल जट जाल ।
कुटिलन के काटत कुहक, गग कुटिल चलि चाल ।।१०।।
मधुर ग्रमल सीतल मलिल, कलित कमल मकरद ।
प्रवल ग्रनल लों गग तउ, दहत ग्रचल ग्रघ वृद ।।११।।

ग्रन्त :- दोहा

रु ड माल हर गिर ग्रमित, हरि पद वहु मन भृ ग ।
तिन तारन तू वसत नित, हे करुणानिधि गग ।।९१।।
शुभ्र स्वच्छ सीतल सुखद, सुन्दर सिंधु समान ।
उदर धपें मन नहिं धपत, करत गग जल पान ।।९२।।
धपे ग्रनधपे ही रहत, सुर तटिनी तट पाय ।
मधुर सुधा तें गग जल, पियत न तृषा बुझाय ।।९३।।
पाप ताप तें तपि हृदय, लगी गग जल प्यास ।
पियत पियत दूनी वढत, कहाँ तृप्ति की ग्रास ।।९४।।
मधुर सुधा तें गग जल, मोहि प्यास दुख देतु ।
भलैं रहो तप ताप को, ह्वै जल पीवन हेतु । ९५।।
कारे तें उजरे भये, वपु परसत जल गग ।
तिन्ह फिरि कारे करन ते, होहि न उजरे ग्रग ।।९६।।
सुरसुरि तव पय पान करि, ग्रक तिहारें सोय ।
फिरि तिनकौं जननी जठर, परि पय पिवन न होय ।।९७।।
पिता मुख्य सव वधु तें, तातैं ग्रधिकी मात ।
पै ह्वै सुरसुरि जल पियत, ग्रमित मात की घात ।।९८।।
जह्नु पिता पति शतनों, भीष्म पुत्र रनजेतु ।
ह्वै कुट्ट विनी गग क्यों, ग्रघ कुट्टव हरि लेतु ।।९९।।
वुवकी लै कढि कैं लख्यो, भो ग्रति हरखो ग्रग ।
साथी पाप देव के, तैं कित काढे गग ।।१००।।
मैं गायो गगा शतक, गावहि सुनि है कोय ।
तन्मन स्व ह्वै तो तुरत, गग न्हान फल होय ।।१०१।।

कवि-परिचय नागर जीवनलाल द्विज, वुन्दीधीश प्रधान ।
निज तिय तन ज्वर हरनहि, किय गगा स्तुति गान ।।१०२।।

रचनाकाल नभ चख वर्ष मयक मित, विक्रम सम गय वीत ।
१६२० मधु सित नवमी भानु दिन, गायो गगा गीत ।।१०३।।*

पुष्पिका – इति गगा शतक सपूर्णम् ।

२४८८ ६२७० छद सुधाधर

प्रारम्भ – ।। र्द० ।। श्री गणेशाय नम । अथ छद सुधाधर लिख्यते ।

दोहा

अखिल अनादि अनत अज, अलख सकल सुखदाय ।
अनघ अजित अद्वैत प्रभु, प्रनवौ पकज पाय ।।१।।

वारन वर भावर वदन, वदन विंदु सुवेस ।
वाक नाथ विधु भाल भवि, त्रिघन त्रिहा त्रिबुधेस ।।२।।

सकर सकर श्रुभ तन, गैल गैल जाईस ।
सुर सरि धर ससि सुल धर, सुखद सरन जगदीस ।।३।।

विघ्न विनाशनि विदु वदनि, विबुध विजय विस्तार ।
वीस भुजी विस्वभरी, विस्व उपावन हार ।।४।।

x x x x x x x

वर वानी वोधव्य वृत, वानी वृत वखानि ।
हुयगे हुवहै है अवै, आश्रयता तिन आनि ।।१२।।

वरनौ छद सुधाधरहि, आभरनौ कवि चद ।
मन हरनौ महि पाल मनि, लहि सरनौ रघुनद ।।१३।।

नृप लछिमन वस वर्नन

महि पति मनि महि जम महा, कुल तिन कहौ वखानि ।
गावत गुन गनपति गीरा, पारान केही प्रमानि ।।१४।।

---

* प्रस्तुत गुटके मे बूंदी के महाराजा रामसिंहजी के मंत्री जीवनलाल नागर तथा उनके पुत्र शभूराम की कृतियो का सग्रह है। सवत् १६१४-१६१५ 'अवतार माला नी गरवी' तथा 'रासपञ्चाध्यायी' का रचनाकाल दिया गया है। लिपि भी २० वीं शताब्दी की ही है अत गुटके मे सकलित कृतियो का अपना विशेष महत्व है।

मो मति के अनुमान तै, वरनौ वस विसेस ।
सुनि रीझै सज्जन सरस, सादर समुझौ कवेस ।।१५।।

आदि पुरुष व्यापक अलख, आदि दस प्रभु आंनि ।
तिनतै प्रगट पिता महै, रचना जगत रचानि ।।१६।।

अज सुत मुनि मारीच, अखि वक्ता वेद प्रवीन ।
हरि भक्ता रक्ता रहसि, कर्ता कुल कृत कौन ।।१७।।

कस्यप जिन नदन कहौ, सृष्टि सजन के मूल ।
सुर असुर नर नाग खग, उद्भव उन अनकूल ।।१८।।

परम प्रकास प्रकास कर, आकर कर करतार ।
तम हर हिम हर गैर हर, हर रचना भय हार ।।१६।।

सविता कस्यप कौ तनय, फविता छविता तेज ।
कविता तिन कुन की कथी, तद विताइ वन मे जेज ।।२०।।

भान वंस के भूप भय, इक तै इक अधिकाय ।
तिन वल प्राक्रम जस, कथित पार कौन कवि पाय ।।२१।।

रघु इख्याकु हरिचद नल मधाता महिपाल ।
प्रथु भागीरथ आदि दै, इक तै एक विसाल ।।२२।।

तिन कुल मै त्रयलोक पति, रामचद्र अवतार ।
सुजस वखानत सेस श्रुन, भूमि उतारयौ भार ।।२३।।
अवनीपति आदित्य कुल, अगनित अजित अभंग ।
इक इक जस नहि कहि सकहि, सहस सेस ह्वै सग ।।२४।।
प्रथीराज अवतार प्रथु, रवि कुल कौ रवि जानि ।
अरि गजन रजन सुजन, तिन जस कहौ वखानि ।।२५।।

छप्पय

प्रथु सरूप प्रथिराज थप्प मरजाद हिंदु थिर ।
दलि दिलीस दल दीह भजि मुगलान जोस भरि ।।
पैमलिय पुहुमि पठान मेटि सैयद सु सेख मद ।
दष्यिन करि इह वाट हेम नग सिंधु पारि हद ।।
विचलाय मात पति साह वल, जिन समान नहि नृप वियो ।
द्वारिकाधीश जगदीस प्रभु, निज पुर तिन दरसाय दियो ।।२६।।

दोहा

प्रथु नृपाल सुत भाल, वड गजन अरि गोपाल ।
सूमसाल कविपाल, करटाल चवद्दह चाल ।।२७।।

गोपालहि नर नाथ कै, हिदुनाथ नृपा नाथ ।
किते अनाथ सनाथ करि, सजस गाथ निधि पाथ ।।२८।।

कवित्त

पुहुमि दरे पय निध मै पग्गरे होत,
सक लक वारे जे बुलद वाहु वर के ।
डारे डर साह सत्तू का दत धारे,
अरि कारे मत्तवारे गज ल्यावत निजर के ।।२६।।

दोहा

नाथ नरेसुर को सुत्रन, महिप मनोहरसीह ।
खाढा खल खगाकरण, अटाहरण अवीह ।।३०।।

सुवन भूप करगेस को सुखसिंघ समर निसंक ।
रजधानी चौमू रची, वेठि दूरग वड वक ।।३२।।

कवित

चौमू च्यार पैठोर कौ दूरग अति राच्यो,
दी है रैनी की रहनता गहनता महादुरी ।
खाई जल पूरीति किलोलै हस सारिसन,
विकट सघन वन डाल डाल तै जुरी ।।
देखि अरि सक मानै जानै जग अजइजो,
असरन सरन सु आनै अति आतुरी ।
पेखि सुखसिंघ की सुवेस रजधानि,
जगमै नवी लखानी तापै वारी अलकापुरी ।।३३।।

दोहा

सुखसिंघ नद सुकद, सुख पुहुमि इद्रकुल चद ।
रघुनाय प रघुनाथ ज्यौं, सोभा सील समद ।।३४।।

श्री रघुनाथ नरेस सुत, मोहनसिंघ महिंद्र ।
नीति रीति राजस निरखि, समता लहै न इंद्र ॥३६॥ *

जोधसिंह मोहन तनय, जोध महा जुध जीत ।
पारण मीत अभीत उर, धारण धरम सुनीत ॥३८॥

कुरम कुलयय निधि प्रसिध, रतन रतन सम जानि ।
मडन माधव भूप को, हर तम अरि असुरान ॥४०॥

रतनसिंघ सुत नीति रत, श्रीपति हृदय प्रतिति ।
कीरति वटवण कूरिमा, रणजीतण रणजीत ॥४२॥

किसनसिंघ रणजीत सुत, किसन रूप नरनाह ।
दावण देस ढुढाहडा, आटण कुल कछवाह ॥४४॥

कस्यप घर दिनकर कहै, वसुवर जेम व्रजेस ।
दसरथ घर रघुनद वस मनि, किसन धरा सु लछेस ॥४७॥

सोभित सभा लछेस की, वहु कोविद कवि चद ।
श्रुति पुरान इतिहास कथ, चरचा छद प्रवध ॥४८॥

आश्रयदाता कृपा सहित कवि चद कही, लछमनसिंह नरेस ।
छद प्रवद विचित्र गति, भाषा रचित सुवेस ॥६६॥

लहित लछमन नर नाह को, हुकम चद चित धारि ।
वानी नरवानी विमल, वृत्ति प्रवद विस्तारि ॥६७॥

रचनाकाल १८९८ सवत वसु निधि वसु ससि, माघ सुक्ल ससि लीन ।
छद सुधाधर वार बुध, प्रगट पहुमी कवि कीन ॥६८॥

कवि वंस वर्नन

कूरम कुल के सुजस कर, जातिज सोधी जान ।
वीरभाण जयसाह दिय, पदवी राव प्रमाण ॥६९॥
जयसिघपुर जयपुर निकट, वाट उदिक मुजह दीन ।
वीरभान जयसाह की, सदा सेव मैं लीन ॥७०॥

---

* विस्तार भय से बीच-बीच के छन्द छोड दिए गये हैं ।

दयाराम तिनके सुवन, माधव मन रिझवार ।
वर वानी कविता विमल, पुहमी सुजस विसतार ।।७१।।

माधव नृप करिकैं महरि, उदिक हिंगालो कीन ।
सहस एक तनखा समांप, सनमुख बैठोक दीन ।।७२।।

तिनके सुत जयदेव कवि, कविता समुझ विसेष ।
अलवर पति मंडन मही, सेवे बखत नरेस ।।७३।।

महाराव बखतेस नै, कीनी कृपा अपार ।
भावापुर दीनौ उदिक, सुख संपति को सार ।।७४।।

बहु आदर बहु प्यार करि, राख्ये निकट बसाय ।
मोदित कवि जयदेव तैं, बखतावर गुन गाय ।।७५।।

तिनको नंद सु चंद कवि, भाषा काव्य प्रबंध ।
जापै अधिक कृपा करि, वैरीसाल महिंद्र ।।७६।।

गांव दियो पहुलादपुर, उदिक अधिक अहुलाद ।
राख्यौ निकट सु चंद को, सतसहित सुनत समाद ।।७७।।

तिनतैं अधिक सुहेत करि, लछमनसिंघ नरेस ।
भूषण धन बहुमोल पट, दीनैं चंद कवेस ।।७८।।

कह्यौ चंद करिकै कृपा, लिछमन सुत कविराज ।
हुकम दियो बरनौ विमल, भाषा छंद समाज ।।७९।।

जय बनमाली ब्रज रमनि, नागर नंदकिसोर ।
[illegible] वृषभानजा, नचो सदा मन मोर ।।८०।।

इति श्री कृष्ण बिहारि चरन सरन श्री नृपति लछमनसिंघ देवाज्ञायां छंद शृंगार देवस्तुति, नृपवंश, कविवंश, ग्रन्थारम्भ, कवि चंद विरचिते नाम प्रथमो मयूख ।

८१.— कवित्त

गन गनराज [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] गुन गाय गाय ।

श्रुत सेस नारद सनत नद सुक छद,
श्रीपति श्री सिद्धि जुत सदा सुख सरसाय ॥
सूर ससि दिग्गज दिसाधिप सरितपति,
जल थल पवन सुत तत तता वटाय ।
पुहुमि सुरिद बिसनेस नद लछ भूप,
रावरो सुजस जग तौ लौ रहौ अविकाय ॥३९॥

दोहा

छद सुधाधर ग्रथ किय, लछमनसिंघ सुहेत ।
छद प्रबधय वचन को, समजो सुद्ध सकेत ॥४०॥

श्री ब्रजराज उदार दिल, दीन बधु सुख दाय ।
देहु मया कर मोहि वर, मन तुम चरन सहाय ॥४१॥

पुष्पिका – इति श्री नृपति लछमनसिंघ देवाज्ञा कवि चद विरचिते छद सुधाधर उप छद, वृते वरण गीत छद, उप छद वरण नाम षोडसो मयूख । मिती वैसाख सुदी २, समत १९११ । लिखीत ब्राह्मण दाहिमा कुशलाल, लिखायतु, रावजी श्रीचदजी श्री

२४९०. १०१८५ जगत विनोद

प्रारम्भ – ॥ श्री गणेशाय नम ॥ अथ जगत वीनोद लिख्यते ॥

दुहा

सिधि सदन सुन्दर वदन, नद नद सुद मूल ।
रसिक सिरोमनि सामरे, सदा रहू अनुकूल ॥१॥

जय ज(य) सकति सिलामयी, जय जय गढ आमेर ।
जय जयपुर सुरपुर सइस, जो जाहिर चहु फेर ॥२॥

आश्रयदाता जय जग जाहिर जगतयवि, जगतसिंह नर नाह ।
श्री प्रताप नदन वली, रवि वसी कछवाह ॥३॥

जगतसिंघ नर नाथ कौं, समुझि सवन की इस ।
कवि पदमाकर देत है, कवित वध आसिस ॥४॥

कवित्त

छत्रिन के छत्र छत्र धारिन के छत्रपति,
छज्जत छटानि छिति छेम के छत्रैया हौ।
कहै पदमाकर प्रभा के प्रभाकर,
दया दरीयाउ हिंदु हद के रखैया हौ ।।
जागते जगतसिंघ साहिब सवाई,
श्री प्रताप नृनद कुल चद रघुरैया हौ।
आछे रहौ राज राज-राजन के माहाराज,
कछ कुल कलस हमारे तो कन्हैया हौ ।।१।।

आप जगदीसर ह्वै जग मै विराजमान,
हौं हू तो कविसुर ह्वै राजतै रहत हौं।
कहै पदमाकर ज्यौ जोरत सु जसु,
आपु हौ हूतो तिहारो जस जोरि उमहत हौ ।।
श्री जगतसिंघ माहाराज मानसिंहावत्,
वात यह साची कछु काची ना कहत हौं।
आपु ज्यौ चहत मेरी कवितादि राज त्यौ मे,
उमरदराज राज राऊरी चहत हौं ।।२।।

दोहा

जगतसिघ नृप जगत हित, हरखि हियै नधि लेहू।
कवि पदमाकर सौ कह्यौ सुरस ग्रन्थ रचि देहू ।।५।।
जगतसिंघ नृप हुकम तै, पाइ माहा मन मोद।
पदमाकर जाहर करत, जग हित जनत विनोद ।।६।।
नव रस मैं जु सिंगार रस, सिरे कहत सब कोइ।
सरस नायका नायकहि, आलवत(न) हु होइ ।।७।।
तातै प्रथमहि नायका, नायक कहत वनाय।
जुगति यथा मति आपनी, सु कविन की सिर नाय ।।८।।

अथ नायका लक्षन

रस सिंगार को भाव उर, उपजत जाहि निहार।
ताहि को कवि नायका, वरनत विवध विचार ।।९।।

अथ नायका कौ उदाहरन

सुदर सुरग नैन सोभित अनग रग,
अग अग फैलत तरंग परिमल के।
वारन के भार सु कुमारि कौ लचत लक,
राजै परजक पर भीत महल के।।
कहै पदमाकर विलोकि जन रीझै जाही,
अवर अमल के सकल जल थल के।
कोमल कमल के गुलावन के दल के,
सु जात गडिया इन विछौंना मुखमल के ।।३।।

अन्त – दोहा

घन वरसत नख पर धर्यौ, गिरि गिरधर निसक।
अजव गोप सुत चरीत लखि, सुरपति भयउ ससक ।।१६।।

अथ सात रस

सु रस सात निरवेद है, जाकौ थाइ भाव।
सत सगति गुरु तपोवन, मृतक समान विभाव ।।१७।।
प्रम रुमचादिक तहा, भाखत कवि अनुभाव।
धृति हरपादिक कहै, सभु संचारी भाव ।।१८।।
सुद्ध सुकल रग देवता, नारायन है जान।
ताकौ कहत उदाहरन, स(सु)नहु समति दे कान ।।१९।।

सात रस कौ उदाहरन

वैठो सदा सतसग ही मैं विख मान विखै रस कीति सदाही।
त्यौं पदमाक(र)भूठि जितौ जग जानि सुज्ञान ही कै अवगाही ।।
नाक की नौक मै डीवि देयै नित चाहै न चीज कहू चित चाही।
सतत सत सिरोमनि हैं धन है धन वै जन वेपरवाही ।।२०।।

दोहा

नभ वितान रवि ससि दिया, फल भख सलिल प्रवाह।
अवनि सेज पखा पवन, अवन कवू परवाह ।।२१।।

अविहित तै विरकत रहत, कछु न दोस के ग्राम ।
विहित करत मुन हित समुझी, सिसुवत जे हरि दास ।।२२।।
इति (अ) नरम निरूपन ।

दोहा

जगतसिंघ नृप हुकम तै, पदमाकर नहि मोद ।
रसिकन के वस करन कौ, कीन्ही जगत विनोद ।।२३।।

पुष्पिका – सिद्धि श्री कूर्मवसावतम श्रीमन्माहाराजाधिराजगजेन्द्र श्री सवाई जगतसिंहाज्ञया मथुरास्थ मोहनलालमदात्मज कवि पदमाकर विरचित जगतविनोद नाम काव्य सपूर्ण । शुभ समत् १९०६ प्रवर्त्तमान्ये मासोत्तमे मासे मार्गसिरमासे शुक्लपक्षे तिथौ १२ भौमवासरे लिखित रत्नावतीमध्ये, नागर भट कुवेर हस्ताक्षर । शुभ भवतु । कल्याणमस्तु । श्रीरस्तु । श्री । श्री ।

२४९६ ८७३६ जलवय शहनशाह इश्क *

प्रारम्भ – ।। श्री नृत्य गोपालो जयति ।। अथ जलवय शहनशाह इस्क लिख्यते ।

राग सारग दोहा
मगलाचरन

हुवा हैं अमल इस्क का, दिल यार की जुदाई ।
हैरत हैं मुझको ए ज्यान, यह क्या कहर हैं खुदाई ।।

---

* कृष्णगढ नरेश महाराजा सांवतसिंह जिन्होंने राज-पाट त्याग कर वैष्णव-भक्ति को अपनाया था, उन्होने अनेक ग्रन्थो की रचना की, जिसमे 'इश्क चमन रा दोहा' भी प्रसिद्ध है । महाराजा के ही वशजो मे कोई १००-१२५ साल बाद महाराजा जवानसिंह द्वारा 'जलवय शहनशाह इश्क' नामक लघु कृति की रचना की गई । इस कृति मे भी कवि ने नागरीदास को 'इश्क-राजा' के भाट की उपमा दी है । ऐसा कर वस्तुत. भगवत्प्रेम मे व्याकुल नागरीदास को बहुत ही उचित एवम् सुन्दर उपमा से अलकृत किया गया है ।

इश्क हकीकी और इश्क मजाजी, दोनो ही अर्थों मे इश्क की अभिव्यक्ति की जाती है । प्रस्तुत कृति मे भी 'इश्क को खुदाई रूप' मान कर उसका शहशाह के

इकताल सोरठा सोरठा

व्रज जन जीवन प्रान, हैं अधीन जिनके सदा ।
कृष्ण करैं जिहिं ध्यान, हैं इलाइ महवुव नित ।।

दोहा

हरि राधा हित रीत मैं, विप्र योग रस सार ।
तहा प्रीत सोइ प्रेम हैं, सोई इस्क निर्धार ।।१।।

इस्क परमानद वर्नन

यामैं भेद न जानियै, इस्क खुदाई रूप ।
विप्र योग मैं प्रगट हैं, परमानन्द स्वरूप ।।२।।
ताही कौ शिर नाय कै, ताही को जस गाउ ।
ताही की रजधानि के, वरनन हित वर पाउ ।।३।।

इस्क शहनशाह वर्नन

इश्क कौं राजा कहत हैं, या विन फीकी वात ।
लौकिक लोक अलौकिकी, याही सौ छवि पात ।।४।।

रानी वर्नन

लगन सु रानी इस्क की, या विन प्रीत न होय ।
या विन प्रेम जु होय तो, अग हीन जग जोय ।।५।।

मन्त्री वर्नन

इस्क कि कौन सला कहैं, कहैं सु जानै भेद ।
मजनू मत्री इस्क का, जहा न पहुचे वेद ।।६।।

नगर वर्नन

वृन्दावन यह नगर हैं, जहा इस्क को राज ।
घर घर डौंडी फिर रही, नागर प्रीत सु काज ।।७।।

सम्पूर्ण सरजामो के साथ रूपक बांधा गया है । लिपिकर्त्ता का नाम 'जयकवि' लिखा है, सभवत. यह जवानसिह का ही लघु नाम हो, यदि ऐसा है तो कृति स्वलिखित होने से और भी अधिक महत्व की है । प्रारम्भ मे एक दोहा और सोरठा हाशिए मे ऊपर तथा बांयी ओर लिखा गया हैं । सभवत उक्त छन्दो को कवि द्वारा ही मूल पाठ मे वाद मे जोडा गया है । ग्रन्थाङ्क २२८६ पर इसी रचना की स्वोपज्ञ टीका की पाण्डु-लिपि भी प्रतिष्ठान मे उपलब्ध है ।

गढ वर्नन

आशिक का दिल दुर्ग हैं, इस्क पनाह् कि ठोर।
ढवकै धावा देत हैं, दिलदारौं की ओर ।।८।।

सिहासन ओ अदालत, ओ अदालत का अध्यक्ष का वर्नन

आशिक शिर के तख्त प, वैठ इस्क सरताज।
जुल्म अदालत का दिया, महवूवी कौं राज ।।६।।

जल्लाद वर्नन

कहर नजर महवूव की, लियै तेग जल्लाद।
इस्क राह चलते जिह्नं, मारै करि आह्लाद ।।१०।।

छत्र वर्नन

रस सिगार सो छत्र है, इस्क नृपति के सीस।
ताकी छाह सु जगत पर, सवको सुखद वरीस ।।११।।

चवर वर्नन

चवर हास्य रस सौ हुवै, इस्क राज को वोध।
प्रीत रंग उज्जल लसै, चित सात्विक कौं शोध ।।१२।।

अगर धूम वर्नन

आशिक स्वास उसास यह, मनहु अगर की धूम।
रस्क राजदरवार मैं, खूव रगमगी धूम ।।१३।।

धनुष वान वर्नन

भौंह धनुष महवूव की, वरुनी नावक तीर।
इस्क हाथ सौं चलत है, ह्वै आशिक चित पीर ।।१४।।

ध्वजा वर्नन

अलक ध्वजा महवूव की, इस्क द्वार फहरान।
मानौं आशिक जीत हित, वैरख खुली निसान ।।१५।।

सदियाने वर्नन

निंदा सदियाने घुरत, इस्क नृपति के द्वार।
कितेक जन डर भजत हैं, सु नि घूमैं रिझवार ।।१६।।

मुसद्दी वर्नन

इस्क दिली हैं दिलरुबा, है जु मुसद्दी मैंन ।
यार जुदाई मेटता, सदा सुघर सुख देन ॥१७॥

कोतवाल वर्नन

दिल को जकड के वस किया, महबूबों के वैन ।
यह कुतवाली कर रहे, इस्क सैन के अैन ॥१८॥

दूत वर्नन

चितवन टेढी वक हैं, यह कुतवाली दूत ।
आशिक मन को गहत है, हुक्मरवा मजबूत ॥१९॥

भाट वर्नन

भाट नागरीदास नृप, इस्क शानशा हेत ।
सब जग मय जाहिर किया, इस्क निमन रस केत ॥२०॥

हस्ती वर्नन

इस्क मदान्नत मत्तता, सोई मत्त गयद ।
लाज अगड सो नहि रुकै, तोडे सकुल फद । २१॥

अश्व वर्नन

मन तुरग हैं इस्क को, पहुचे जाय तुरत ।
महबूबों के नगर में, फिर-फिर जात फिरत ॥२२॥

रथ वर्नन

करै मनोरथ मिलन का, सोई आशिक रत्थ ।
शिर के पावों सों चलै, जब वे पावै पत्थ ॥२३॥

हरोल वर्नन

करै हरोली इस्क की, नैन सैन मधि खूब ।
तीखी चितवनि झाकि कै, फते करै महबूब ॥२४॥

सेना वर्नन

राग रागिणी इस्क की, चतुरगिनि सैनाह ।
घायल सुन मन होत हैं, कर सायल वैनाह ॥२५॥

नकीब वर्नन

आशिक तरफ के बोल यह, मानौं कौन नकीब ।
अहतमाम करि अनख सौं, इस्क अदब तरकीब ॥२६॥

कोश वर्नन

आशिक का सर्वस्व हैं, महबूबौ के चित्त ।
तन-मन कौं पोखै सदा, यह ही याके वित्त ॥२७॥

मेघ वर्नन

इस्कराज के राज मैं, अमुवनि जल को मेह ।
वासो सब वन हरित हैं, या सौं सूकत देह ॥२८॥

पवन वर्नन

बेपरवाई पवन हैं, आशिक दिल झकझोर ।
कहर खुदाई का चला, अजब हवाईतोर ॥२९॥

बाग वर्नन

हुस्न बगीचा इस्क का, छवि पर भवर लुभाय ।
वही तजल्ली ज्यान की, मेरे जिय अति भाय ॥३०॥

कैदी वर्नन

आशिक कैदी इस्क का, पडी जुल्फ जजीर ।
सूता मिजगा तीर पर, ल्याता चित नहिं पीर ॥३१॥

खेमा वर्नन

महबूबौ की कीरति, खेमा तने उतग ।
इस्कराज के रहन के, रगे रग सुरग ॥३२॥

फल स्तुति वर्नन

इस्क शहनशा को जु यह, जलवा कियो बनाय ।
चहत मरातब इस्क सौं, तो पढइहिं चित लाय ॥३३॥

कवि मन-भाव वर्नन

नग धर लखि चित अटकि कै, परचो गिरचो मधि फद ।
ज्यौं बालक लड बावरो, चहत खिलौना चद ॥३४॥

र काल पैताली उगनीस से, प्रथम चैत्र कुजवार ।
१६४५ ऋतु ब्रमत पून्यौ सु तिथि, कीनौं ग्रन्थ उचार ।।३५।।

पुष्पिका – इति श्री महाराज जवानसिंहजी कृत जलवय शहनशाह इस्क संपूर्ण । सवत १६४५, द्वितीय चैत्र शुक्ल ३, शनौ । लि० कवि जयेन, कृष्णगढ मध्ये । श्रीरस्तु । शुभ भूयात् । श्रीरस्तु ।

२५२४. ७६६८ तिल-शतक
(गाल और चिवुक पर लक्षित तिल के विषय मे विविध मनोरम कल्पनाएं)

प्रारम्भ – ।। र्द० ।। अथ तिल सत लिख्यते । श्री जुगतराइ कृत ।

(दोहा)

गोरे मुख परि तिल लसै, ताहि करू परनांम ।
जानौ चद विछाय कै, वैठौ सालिगराम ।।१।।
छत्र तरौंना लट चमर, गाल सिंहासन साज ।
सोहत तिल महाराज ज्यौं, अग सुदेस रसराज ।।२।।
व(वो)यौ वीज सिंगार तिल, तिल कपोल छवि खेत ।
लखि रुमाच अकुर उठे, पिय तन मैं किह हेत ।।३।।
मद हसन दुति दसन की, तिय कपोल छवि लेत ।
मुख बाटै तिल चावरी, नैंन वधाई देत ।।४।।
पानिप भरयो कपोल विधि, तह तिल धरयौ वनाइ ।
मुख लावन नहि पावई, मन चैंटी मडराइ ।।५।।
क्यो न होइ प्रभु जगत के, सपति सुखनि निधान ।
या मुख सैं द्विजराज को, कीनौ है तिल दान ।।६।।
तेरे तिल कौं तनक लखि, पैठि गयौ मन अच ।
डारत बार सिवार करि, परयौ नेह कै सिंधु ।।७।।
देखि रहत आधीन ह्वै, पलक न करत सलाम ।
कारे तिल कौं चाख कै, लोचन भये गुलाम ।।८।।
बरुनी तरकस दुह दसा, भुव धनु लोचन भाल ।
अलक सैल अति लसत है, तिल कपोल परि टाल ।।९।।

और जुवेभी राखिए, वान गडत है जाइ।
तिल वैभी उलटी गडै, नैन वान मैं आइ ॥१०॥

सुमन वसावत तिलन कौ, यह जानत सव कोइ।
तिल जु वसावत सुमन कौ, नेह नवेली होइ ॥११॥

तिल चारौ पानिप सलिल, अलप फंद पग्जार।
मन पखी गहि गहि किते, डारै श्रवन निडार ॥१२॥

चिवुक डिठौना विधि कीयौ, डीठि लागि जिन जाइ।
वह तिल जग मोहन भयौ, डीठिनि लेत लगाय ॥१३॥

क्यौं सकुचत है सुन्दरी, घूघट सौं मुख काढि।
शशि सम तेरौ मुख तुल्यौ, भयौ एक तिल वाढि ॥१४॥

तिय कपोल परि तिल लसै, यह जानौ मति कोइ।
सोम अक मै शीत निशि, रही सकुचि कै सोइ ॥१५॥

ज्यौं निसि दिन शिव कै सदा, शिवा रहत है सग।
त्यौंही मुह परि तिल जु है, शशि कै निशि अरधग ॥१६॥

मुख वनाइ विधि देखि कै, रीझि सु भयौ अचेत।
केस लिखत लेखनी छुटी, छीट चिवुक इह हेत ॥१७॥

द्रिग देखत शशि चादनौं, गयौ जगत अधियार।
या तिल के उदये सुनत, भयौ सकल उजियार ॥१८॥

काम जारि किय भसम शिव, तिन्ही मानत नाहि।
जानत है जीवत रह्यौ, तुख तिल क्वैला माहि ॥१९॥

पून्यौ मुख शशि चादनी तम निशि अरु कहा जाइ।
सिमटि सकुचि तिल ना मिल्यै, सरन रह्यौ है आइ ॥२०॥

अलक छुली लै काम कौं, भई खेल की चाइ।
टारे टरै न गेद तिल, परी चिवुक की गाड ॥२१॥

तिय कपोल कचन तुला, एक पला तिल टारि।
तोलन कौनहि पाईयै, रह्यौ विरचि विचारि ॥२२॥

रूप सिधु मैं वहत है, मत कोऊ तहा जाइ।
या तिल जलाद पथ रहै, गाल कहर दरियाव ॥२३॥

रसना रस अधरन परस, द्रिगन रूप मन शाति ।
स्रवन देत है सब कछू, तिल चिंतामनि काति ।।२४।।

तिय कपोल परि तिल लसै, चमक्त वदन अनूप ।
मानौं दामनि मैं लसै, महादेव कौ रूप ।।२५।।

इद्र धनुषि सोइ आड है, हसनि दामिनी देह ।
लट धुरवा तिल गाल परि, मन मोरन कौ मेह ।।२६।।

मन जोगी आसन कीयौ, चिबुक गुफा मैं जाइ ।
रह्यौ समाधि लगाइ कैं, तिल सिल द्वारैं लाइ ।।२७।।

मुख चदहि निज जानि कै, तिल सिंगार रह्यौ आनि ।
हसनि आपु ही हास रस, वस्यौ निकट हित जानि ।।२८।।

बेसरि मोती मीत मन, कपै दयौ लटकाइ ।
तिल वसी लट ताजनौं, गह्यौ अनत क्यौं जाइ ।।२९।।

सोभित तिल जु कपोल परि, मोपै कह्यौ न जाइ ।
जानत हौं मुख कमल परि, भवर रह्यौ ठहराइ ।।३०।।

अन्य तिलक के खडन कीयै, होइ चीकनी देह ।
अैसो तिल जु कपोल परि, देखे लगै सनेह ।।३१।।

चिबुक कूप रसरी अनिक, तिल सुचि रस द्रग वेलि ।
वारी वार सिंगार की, सीचै मनमथ वैल ।।३२।।

अलग डाभ तिल गाल परि, आसुन की परवाह ।
नीदहि देत तिलाजुरी, नैना तुम्ह विन नाह ।।३३।।

नित तिल सालिगराम को, असुवन न्हावत नैन ।
मागत पलक प्रनाम करि, पै पिय देखन चैन ।।३४।।

मुख शशि घू घट मै दुरै, यो क्यौं मुहि अभिलाखु ।
तिल जु गाठि सिंगार की, चोरि ले रह्यौ काख ।।३५।।

तिल कपोल परि सोहियै, यौं मति जानै जीय ।
तिय हिय लोचन तारिका, देखनि निकसी पीय ।।३६।।

पानिप भर्यौ जु चिबुक यह, सुर सिरज्यौं जगदीस ।
तिल नहि तामैं देखीयै, वूडे मन को सीस ।।३७।।

तेरे मुख को देखि कै, कवल परचौ जुल जाइ।
और जु तिल ही हौंस करि, अलि राख्यौ बैठाइ ॥३८॥

तेरे मुख तिल होड गगि, कालिम लई लगाइ।
नाम कलकी ह्वै गयौ, वढै घटै पछिताइ ॥३९॥

अलक डोरि वन सीस तिल, छवि जल चिवुक सु ताल।
रूप चटोरा मीन दृग, आइ फसै ततकाल ॥४०॥

काजर दृग रजक भरे, अलिक फिरंग वदूक।
तिल गोली मन लच्छि कौं, मारै मदन अचूक ॥४१॥

तिल वैदी लट ए करी, विधि कीनी यह रीति।
गाल पटा मैं लिखि दई, मुख कौं दस दिसि जीति ॥४२॥

मन मैं मन चितई जवै, करौ दसन खत गाल।
तिल न होइ इह स्याम जू, नील परचौ तिह काल ॥४३॥

वैनी तिरवेनी वनी, तिह मनमथ अन्हवाइ।
इक तिल के आहार सौं, सव दिन रैन विहाइ ॥४४॥

तिलनहि मुहर वनाइकै, मुखहि दई विधि आप।
तासौ सवके दृगन परि, करी तारिका छाप ॥४५॥

इह ग्रैसौ वचनन करत, मुहि लाग्यौ वकवाद।
तिल तरुनी के चिवुक मैं, कवि रसना रस स्वाद ॥४६॥

मृग मदनाहिन मगन मैं, ढूढत है दिन राति।
तिल तरुनी के चिवुक मैं, सोई मृगमद जाति ॥४७॥

मुख तिल लख्यो वनाइ विधि, ताहि न जानै कोइ।
एकै अक्षर प्रेम को, पढै सु पडित होइ ॥४८॥

काजर कजरौटिनि मैं, लीजै दृगनि लगाइ।
इह तिल काजरु चिवुक मैं, तह दृग लागै जाइ ॥४९॥

छई रोग मनमैं भयौ, करि देखी सव पूरि।
मोती जरचौ मृगांकु तिल, तासौ ह्वै है दूरि ॥५०॥

होरी खेलै मैन नित, अवर गुलाल सु धारि।
तिल चोवा को यह वचा, देखत मन दयो डारि ॥५१॥

सनमुख नैना कवि सबै, लागन कौं ललचाहि।
जित कित तै अग लोह ज्यू, तिल चुंबक तन जाहि ।।५२।।

तिल तारौ चिवुकहि जड्यौ, को नर सकै उघारि।
मन की तागी जो लगै, तौ खुलै रूप भडार ।।५३।।

मुख शशि कौं गोभा करै, उड मोतिन कहू जोति।
अग दुति दामनि मेघ तुल, ज्योति परमपर होत ।।५४।।

तिल तरुनी के चिवुक मैं, सो आरसी अनूप।
मन मुख देखै आपनौ, रूकै कांम सरूप ।।५५।।

रती स्याम तिल पाइकै, तुली कनक सम जाइ।
देखौ रती कपोल की, अतुल भई तिल पाइ ।।५६।।

विधि कपोल टिकिया करी, तिहि तिल धर्यौ वनाइ।
तौ मन छुधित फकीर ज्यौं, दिकी रह्यौ है लाइ ।।५७।।

और कसोटी परि लगै, कचन रेखा जागि।
तिलक कसोटी रीझि कै, कनक चिवुकि रही लागि ।।५८।।

अग ललाट नासिक तिलग, करनाटक कहू आन।
सहित देस मुख दुरत है, देखति हिम्मति खान ।।५६।।

और अग सब छाडि कै, कान कुठारी ताइ।
तिलक लक परचौ चिवुक मैं, लखे गात विवि लाइ ।।६०।।

और अंग सब छाडि कै, तिल ही सौं करि प्यार।
साधि कियौ विधि चिवुक मैं, ममता कौ अनुस्वार ।।६१।।

तिल गुटिका तिय चिवुक मैं, जित जानै तित जाय।
नैन पैठि तिय पैठि कै, मन मैं पैठै आइ ।।६२।।

तिल सुनु कुजन तिलक पर, जिन अँखियन मैं जाय।
ते अखीया तहई वसै, कोऊ न सकै वताइ ।।६३।।

तेरौ तिल तिरलोत्तमा, तिल तोले स मिलाय।
उह उठि कै सरगहि गया, उह भुवि रह्यौ थिराइ ।।६४।।

सिद्धि पीठ मुख शशि कीयौ, ओड्यौ तिल जगि जाम।
काम जपै जप कामना, शिव सौं करै संग्राम ।।६५।।

तिय को मुख सु दर वन्यो, विधि फेरचो परगार ।
तिल जु बीचि कोविद लहै, गाल गोलइ कढार ।।६६।।

तेरे मुख परि तिल लसै, सु मेटत है दुख द्वद ।
जानौ वेटा भान कौ, गोद ले रह्यो चद ।।६७।।

जिय जु हुतौ सो तिल भगौ, तिल सु ह्वै गयो जीउ ।
पीय कौ तिल तिल जीय कौ, तोही लागै पीव ।।६८।।

वैनी नदी सिंगार की, लट त्रिरहा दुहू ऊर ।
चिवुक खेत तिल वीजवे, सीचै काम किसोर ।।६९।।

जग मोहन कीजै सु तिल, दयौ विधाता तोहि ।
जब जव आखिन मै परे, मोहि लेत है मोहि ।।७०।।

चावर हैं गोहू रहै, कवहू उरद ह्वै आइ ।
कवहू मो द्रिग चित्रुक तिल, सरसो देइ फुलाइ ।।७१।।

या मिसि पीय कपोल को, कहै आगुरी लाइ ।
अधर मिठाई लेन को, चैंटी लागी आइ ।।७२।।

तिलक डरी द्रिग पात है, नासा तिल को फूल ।
तिलक चित्रुक सोई तिल फल्यौ, इहै नेह कौ मूल ।।७३।।

चिवुक सरूप समुद्र मे, मन जान्यो तिल नाव ।
तरन गयो बूड्यौ तहा, नेह कहर दरीयाव ।।७४।।

नाकु ढेकुरी डोल तिल, अलिक ले जकरि मैंन ।
चिवुक रूप की गाड परि, पावत पथी नैन ।।७५।।

तिल तरुनी के चित्रुक पर, का पै बरन्यौ जाइ ।
वचन सुननि को निकट मनो, कोइल वैठी आइ ।।७६।।

तन कचन हीरा दसन, विद्रम अधर वनाय ।
तिल मनि स्याम जरी तहा, विधि जरीयाउ जराइ ।।७७।।

वदन चद मगल अधर, वुधवानी गुरु अग ।
शुक्र दसन शनि तिल लुकै, अवर पिय रवि सग ।।७८।।

च्छाडि च्छाडि कै लेत है, चैंटी तिल मुख माहि ।
मुख तिल मन चैंटी गही, क्यौहू छडै नाहि ।।७९।।

नैना उघरत देखीयै, मुख तिल नेकु विथार।
मूदेउ है तिल पूर के, होत सकल अधीयार ।।८०।।

मो मन मरजी या भयौ, छिनकु दुखी छिनु चैन।
मारति विस तिल चिबुक कौ, ज्यावत अमृत वैन ।।८१।।

विधि तिल कीनौं चिबुक पर, रमन दिठौना दीन।
देखत तिल ज्यौं टरत नहि, सब कौं टोना कीन ।।८२।।

रोमावलि कीनी भृकुटि, अलिक सीम छवि राशि।
तब तै तिल मीरी भयौ, चिबुक गाड वदि पासि ।।८३।।

सैन वैन विभचार है, मुख है थाई भाव।
तिल आपन सिंगार रस, सकल रसनि कौ राव ।।८४।।

बेनी गज नैनी तुरग, लट वैरख फहराइ।
पोति छरा सैना लीयै, तिल सिंगार रस राइ ।।८५।।

घवद एहुँ छोडि कै, मुकट दये लटकाइ।
तिल कलियुग के राज इह, दई अनीति चलाइ ।।८६।।

टटीया अगूर निपौरि भूव, लट छै छगीया काम।
तिल जु चिबुक परि लसत है, सो सिंगार रस धाम ।।८७।।

हास सेत दुति पीत मुख, अधर लाल तिल स्याम।
रग परस्पर छवि बढै, शशि तै मुख अभिराम ।।८८।।
हास सतोगुन रज अधर, तिल तम दुति चित रूप।
मेरे हग जोगी भए, लाइ समाधि अनूप ।।८९।।
मद हसन दुति दामिनी, मेघ तिलक तिल नित्त।
ज्यौ गरजै वरसै नही, तरसै चातक चित्त ।।९०।।
अधर बिंब दारिम दसन, तिल जामनि सरसाइ।
रूप लावणि मा सग कछू, स्वाद न वरन्यौं जाइ ।।९१।।
वदन सरोवर रूप कौ, तिल मन तहा तराइ।
चिबुक गाड के भवर मैं, परयौ न निकस्यौ जाइ ।।९२।।
मोहन काज हकीम कौ, काम दयौ तिल तोहि।
एके तिल के देखतै, मोहि लेत है मोहि ।।९३।।

तिल निरख्यौ तिय वदन परि, इम लाग्यौ जिम सैल ।
अब औपध कौ चाहीए, वाही तिल कौ तेल ।।६४।।

मेरे तिल कौ ध्यान धरि, गयौ गौर महियार ।
पूरिव है तिल ह्वै गयौ, जग्यौ आप अधार ।।६५।।

वरनी तरकस भुव धनुष, तीछन वान सु नैन ।
अलक सैल ढाल ले, शिव सनमुख भयौ मैन ।।६६।।

कुकम षोरस इद्र धनु, हसति दामिनी देह ।
लट धुरवा तिल गाल पर, मनो मोरन कौं मेह ।।६७।।

छवि पानिप सो मुख भरचौ, मग्सि रच्यौ जगदीस ।
तिल नहि तामै देखियै, वूडे मन को सीस ।।६८।।

मुख तरुनी कै तिल लमै, मै देख्यौ इहि भाय ।
मनो लुबध छवि वास सो, कमल भौर विरमाइ ।।६६।।

तिलहि देखि वूडत कमल, तिल सो वहुत रिभाइ ।
जो ते मुख से हम करे, तिल काहे न वसाइ ।।१००।।

करनाटी लागी रहै, नासिक री भी मित्त ।
सबको छाडि तिलग मै, करी छावनी चित्त ।।१०१।।

चिवुक सीप समुद्र मैं, मन जानै तिल थाह ।
गयौ आसरौ नैन कौ, लागि गयो उहा ग्राह ।।१०२।।

तिल सुनाल सो चितवु है, सोभा यह अभिराम ।
चिवुक गाड मै वैठि कै, बन्यौ जुलाहे काम ।।१०३।।

चिवुक गाड गड हाकियौ, तिलह धनी ठहराइ ।
मन कुजर को गाहते, इह विधि मनमथ राइ ।।१०४।।

चिवुक गाड मै रूपनिधि, काम क्रिपन रह्यौ धारि ।
तिल तह वच्चा व्याल को, रह्यौ कौंडरी मारि ।।१०५।।

चिवुक देश मै काम ठग, चख तिल लाइ खारि ।
हासी फासी मेलि कै, देत गाड मै डारि ।।१०६।।

पुष्पिका .— इति चिवुक गाल तिल वर्नन, तिल सत सपूर्ण ।

२७७२. ६३३३ माधवानल कामकंदला कथा चौपई

प्रारम्भ – श्री गणेशाय नम । अथ माधवानल की कथा वार्ता लिख्यते ।

चौपई

प्रथम पारब्रह्म कु परण । पुनि कछु जगत रीति रस वरन ।।
पारब्रह्म पर पूरण स्वामी । घट घट रहै सु अंतरजामी ।।
घट घट रहै लखै नहिं कोई । जल थल माहि सर्व मै सोही ।।
जाकौ आदि अंत नहि ग्यानी । पडित कथा ग्यान सौं मानी ।।
ग्यानी होय-स गुर मुख धावै । खोजी होय-स खोज वतावै ।।

दोहा

मन वच सोवत चलत क्रम, जगत चीतवत नीत ।
सग लग्यौ डोलत फिरत, सो कत धरै जु चित्त ।।१।।

x x x x x x

चौपई

रका सनै नवसै ईक्यानवा आहि । करु कथा अव वोल ताही ।।
९९१ येही वात सुनै सव लोगा । करु कथा शृगार वियोगा ।।
(हिजरी) कछु अपने कछु परके चौरे । जथा सकति करि अक्षर जोरे ।।
कछु करू विरह की रीति । माधौ कामकदला प्रीति ।।

दोहा

माधोनल सव विधि चतुर, कामकदला जोग ।
कर्त्ता करु कथा आलम सुकवि, उतपति विरह सजोग ।।४।।

अन्त – चौपई

कथा चौपई आलम कीनी । पहिले कथा श्रवन सुनि लीनी ।।
कहु कहु वीच दोहरा पारे । कहु कहु आनि सोरठा धरे ।।
सुनत कथा यह सवै सुहाई । अति रसाल पडित मन भाई ।।
प्रीतिवत सुनै जो कोई । वढै प्रीति हियरे सुख होई ।।
कामी रसिक पुरुष जो सुनै । ते यह कथा रैनि दिन गुनै ।।

दोहा

पडित वुधिव्रता गुनी, कविजन अधिर टेक ।
नाम निमत गुन उच्चरे, कहि कहि कथा अनेक ।।६२।।

पुष्पिका :- इति माधौनल की कथा सपूर्ण । लिखित मिश्र पौहौकर, रोसी मध्ये । श्रुभ पठनार्थं । मामानामासोत्तममास पोपमासे कृष्ण-पक्षे, तिथौ ५, रविवासरे । घटि वढि होय तो सोवियो । सवत् १८८१ । श्री । श्री । श्री ।

२७८७. ८०८२ रस प्रवोध

प्रारम्भ :- अथ मध्या धीराधीर लछन *

मध्या धीरा धीर वह, वचन कहै कछु गोय ।
मान करै कौ पीय सो, गए सजल द्रग होय ।।१६।।

अथ प्रोढा धीरा लछन

रति उदास प्रगटै न रिस, प्रोढा धीरा जान ।
मान जनावत है यहै, मुख रूखी मुसकान ।।२०।।

अथ प्रौढा अधीरा लछन

डर दीखाय वर्जित करै, प्रोढ अधीरा धीर ।
सखी सुखदाई पीपती है, देत सुमन की मार ।।२१।।

अन्त - स्थाई सचारी सु औ, विभावादि सव गीत ।
वरनै नहि विस्तार सो, ग्रथ वढन के भीत ।।२११।।

आधारग्रन्थ किये भानु रसमजरी, रसतरगिनी लेख ।
यह प्रवन्ध भाषा कीयो, ताही को मत देख ।।२१२।।

कवि-वश वर्णन कवि कुल मडन वृन्द जिहि, प्रपितामह अभिराम ।
सुपितामह वल्लभ सु कवि, पीता सनेहीराम ।।२१३।।

---

* ग्रन्थ का प्रारम्भिक अश अप्राप्त है । अक्षरों पर स्याही फिर गई है, अत प्रारम्भ के प्राप्त पत्र की लिपि सुवाच्य नहीं है ।

तिहि सुत कवि दोलन कीयौ, लछन लछ समेत ।
रस प्रवोध दीपनाम, कवि सोध लेहु कर हेत ।।२१४।।

६ ६ ८ १
रचनाकाल सवत षठ रसि दिसि (स)सि[1], गुरु असाढ ऊचार ।
१८६६ वद दसमी भो ग्रथ यह, कृष्नदुर्ग अवतार ।।१२५।।

पुष्पिका – इतिश्री कवि दोलत विरचित रस प्रवोधाख्यीय प्रबध । श्री श्री । सवत १८६९ का जेठ सुद १०, सोमवार, लीखी कीसनगढ मै म्होणोत सोभागसीघजी परत सु । द० कीलाणदास कु भट । श्री सुभ भवतुमस्तु ।

२८०५. ९४३१ (३) रसिक-रत्नावली

प्रारम्भ – श्री व्रजमोंहन जयति । अथ महाराजकवार श्री सावतसिंघजी कृत रसिक-रत्नावली लिख्यते ।

दोहा

श्री मोंहन गुरु प्रेम वपु, बदौं पकज पाय ।
मोपे पूरन करि कृपा, दीने सत वताय ।।१।।

तेई हरिजन इष्ट मम, तिनही कौं सिर नाऊ ।
तिनही के जु प्रसाद तै, तिनही कौ जस गाऊ ।।२।।

अथ वैश्नव सहज-स्वरूप वर्नन
कवित्त (सवैया)

माल गरै तुलसी की लखै हिय ते मुकतावलि जाल विसारौ ।
गूदर पै केई कचन के पट टटी को पीन पै काहि उचारौ ।।
जीरन जूती घिसी फिरै पायनि तापै सिंघासन फेरि कै डारौं ।
और वखानौं कहा मू ड माधुरी स्वांमी की चादि पै चदा कौं वारौं ।।३।।

---

१ यहाँ दिशा का अर्थ ८ लिया गया है । लिपिकर्त्ता से 'ससि' का एक 'स' लिखने मे छुट गया है ।

अथ अनुराग सहित स्वरूप वर्नन
कवित्त

लोचन सजल लाल घूमत विसाल छके,
चलनि मराल की-सी ठाडे रोम तन मैं ।
उज्वल रस भीनें ताकें दीनें गर वाही,
रहैं प्यारी पीउ दोउ हीये सुदर सदन मैं ।।
पुलकित गात गिरा गद्‌गद रहन,
नित धारैं छाप कठ औ तिलकनि जपन मैं ।
कहा भयौ कीनें जप तप व्रत दान न्हान,
जो पै रूप माधुरी वसी न असी मन मैं ।।४।।

अन्त - दोहा
रसिक दसा वरनी इहै, अद्‌भुत प्रेम उमग ।
सवनि दुहाई इष्ट की, मुनि कीज्यौ मतसग ।।१७।।
जो वाचै श्रवननि सुनैं, रीझि होय अनुरक्त ।
ते मोकौं कहियै इन्हैं, उपजो अति हरि भक्त ।।१८।।
कही रसिक रतनावली, पूरन प्रेम प्रकास ।
सुरत हिये व्रज वास की, धारि नागरिदास ।।१६।।
रचनाकाल सतरै सै वइयासीयै, भादौं सुदि भृगु वार ।
१७८२ तिथि परिवा कीनी इन्हैं, लीज्यौ सत सुधारि ।।२० ।

कवित्त
केऊ करौ विष्णु सेव केऊ पूजैं देवी देव,
केऊ चाहैं मुक्ति केऊ उदर नि वासना ।
आठौं सिद्ध नव निध चाहत अनत जन,
केऊ चाहै पुत्र केऊ निज घर नासना ।।
मेरें दईव तन उज्वल तिलक कीनें,
भीनें रस उज्वल औ जुगल उपासना ।
ताकी पद रज सौं निहोरि कर जोरि मार्गौं,
देह प्रेम भक्ति औ छुडाय विषै वासना ।।२१।।

पुष्पिका - इति श्री रसिक-रतनावली सपूर्ण ।

२६२२. ७८५६ संग्रामसार

प्रारम्भ – ॥ ई० ॥ श्री गणेशाय नम ॥ श्री ' " नम ॥
अथ ग्र थ सग्रामसार लिख्यते ।

छप्पय छद

दुरद वदन जय सदन विघन वर ठडन खडन ।
शु डा दड प्रचड दनुज हर सिव कुल मडन ॥
अरुन बरन भय भीत हरन सुमिरन तुव जिज्जय ।
भाग्य भाषा करन विबधि वर भारति दिज्जय ॥
उद्दांम रीति पद बर्न गुन, बध छद रचनाँ सुघट ।
हे रब हुकम किज्जे कहौं, जुद्ध कुद्ध सेंनाँ सुभट ॥१॥

x x x x x x

शब्द योग नय शेष न्याय गौतम कणादि मुनि ।
साँख्य कपिल्ल रु व्यास ब्रह्म पथ कर्म नु जैमुनि ॥
वेद अग जुत पढे सील तप रिषि वसिष्ट सम ।
अलकार रस रूप अष्ट भाषा कवित्त छम ॥
तैलग वेड नाटीय द्रिज, जगनाथ तिरशूल वर ।
साहिज्जिहाँन दिल्लीस किय, पडितराय प्रसिद्ध वर ॥४॥

दोहा

उनके पग कौ ध्यांन धरि, इष्टदेव सम जाँनि ।
ऊकति जुकति बहु भेद भरि, ग्र थहि कहौ वखानि ॥५॥

अथ राज प्रससा

छप्पय

पुहमि मध्य ब्रह्मर्षि देस विच मत्स्य देस तहँ ।
अमरावति आवेरि वसै रवि बस भूप जहँ ॥
धर्म सकुचि कलि काल रह्यौ उहि ठौर विगति भय ।
जस प्रताप धन अधिक वसै सब बरन हरख मय ॥
जप जग्य दांन तप भोग बहु, जथा जोग सबही करत ।
भय पाप असूया ईरषा, मद चिंता झुकि न सकत ॥६॥

तहाँ भूप प्रथीराज भयउ कूरम कुल मडन ।
भक्ति जोर हरि रूप खग्ग दुज्जन दल खडन ।।
ताकौ सुत पग्चड भूप भागमल भय घर ।
जित्ति पुहमि मव पाय नाँम किय सिर ढुँढाहर ।।
तिहिं पुत्र भूप भगवत जिन, करि वरवर गुजरात लिय ।
नृप माँन जित्ति सतसठि समर, उदै अस्त लग तेज किय ।।७।।

ताकौ सुन जगतेस भयउ दूजौ आखडल ।
हनि पठाँन दल प्रबल कित्ति किन्नी महि मडल ।।
ताकौ सुन महासिघ जोर जित्ते ति दुग्ग गढ ।
सुरपुर सम अरि नगर ढाहि किन्नै ति तुरत मट ।।
रावाधिराज जयसिंघ भूप, तास पुत्र अवा नगर ।
जिन खग्ग जोर दिल्लीस घर, मेरु मलय किन्नै वगर ।।८।।

अपि च·
जे मित मोरी पाँन वटनु वाजीगर फेरय ।
इमि साहिन जयसाहि थपै उथ्थपै जु हेरय ।।
जिहिं सेवा की धाक कपु सागर गिरवर धर ।
वावन गढ कौ ईस गह्यौ जिन सग वाहु वर ।।
सुजहि भजाय दारहि पकरि, किय अवरँग दिल्लीस जिन ।
जयसिंघ सिंघ परचड भय, ढुँढाहर पति वस इन ।।६।।

तासु तनय अव रामसिंघ नृप सव भूप नु मनि ।
उत्तर पूरव जीति लई काविल पठाँन हनि ।।
तजति गभ्भिनिय गम्भ सुनत जिहि हथ्थ खग्ग जुत ।
सिवा सर्राण रखि तहाँ जगत किन्नउ अति अद्भुत ।।
तिहिं तेज पुज पर जरत पर, विनु पर इक पर गति सगत ।
राजाधिराज कूरम कलस, ढुँढाहर धर जग मगत ।।१०।।

मत्त दुरद वर वाजि साजि कविराजनु दिज्जहिं ।
नहिं अदेय जग वस्तु कछुक अक्षर रस भिज्जहिं ।।
अलकार सगीत कावि नाटिक रु व्याकरण ।
षड दरसन नय धर्म कला चवसठ्ठि वचिक्षण ।।

निज कुल सुभाइ इण अधिक रुचि, रांमसिंघ नृप के सुचित ।
भारथ्थ जुद्ध भाषा करन, हुकम कियउ उन लोक हित ।।११।।

दोहा

हुते तहाँ पंडित वहुत, भाषा कव्यो अनेक ।
दुहू ठौर परवीन नृप, देख्यो कुलपति एक ।।१२।।

तब नृप कुलपति मिश्र को, कियौ बहुत सनमाँन ।
कह्यौ जुद्ध भाषा करौ, दोण परब परमाँन ।।१३।।

राँम हुकम लहि सुधि किये, गुरु पंडित अवतंस ।
ग्रन्थ रीति प्राचीन लखि, कवि निज वरनत वंस ।।१४।।

अथ कवि-वंस वर्नन

छप्पै

माथुर वंस प्रसिद्ध मिश्र कुल अभैराज भय ।
सब विद्या परवीन वेद अध्येन तपोमय ।।
तारापति तिहि पुत्र विप्र कुल जिमि तारापति ।
तास तनय भय लाल ब्रह्म विद्या विचित्र गति ।।
हरिकृष्ण कृष्ण भजि कृष्ण भय तासु तनय भागवत मग ।
भय परसराँम ताको तनय सुर गुरु सम भजि राँम पग ।।१५।।

परसराँम को पुत्र प्रगट कवि पंडित कुलपति ,
अध्यापक व्याकरण न्याय पथ ब्रह्म कर्म तति ।।
रुचि भारत भागवत करत आचरण सु मृत मत ।
सुखमय लखि साहित्य मुख्य किन्नउ वहु समत ।।
नर नाग देव वहु देस की भाषा करि कविता कुसल ।
संग्रामसार तिन ग्रन्थ किय राँमसिंघ नृप हुकम बल ।।१६।।

दोहा

कवि कुलपति को आगरे, गुन आगरे निवास ।
जहँ दौलति दिल्लीस की, विहरति चित्त हुलास ।।१७।।

अथ ग्रन्थ प्रसंसा

छप्प

द्रोण परव की वात रचिय निज जुगति उकति भरि ।
पिंगल मत के छंद नऊ रस अलकार धरि ।।
धरम अरथ अरु काँम मोख साधन पोथी यह ।
कृष्ण कथा सव ठौर बहुत विधि क्षत्र धरम जह ।।
जिहिं पढत सुनत पातक नसै, कातरता आवै न चित ।
संग्रांमसार तिनि ग्रथ किय, कवि कुलपति नृप वस हित ।।१८।।

दोहा

रचनाकाल १७३३

सत्रह सै तेतीस सम, गुण जुत फागुण मास ।
कृष्ण पक्ष तिथि सप्तमी, कियो ग्रन्थ परकास ।।१९।।

छप्पै

जय जय देवकी तनय जयति व्रज मंडल मडन ।
जय गोवर्द्धन धरन जयति आखडल खडन ।।
जय काली अहि दवन जयति केसी हि पछारन ।
जय अघ अजगर हरन जयति विधि गर्व विदारन ।।
महि दुष्ट भूप दाँनव ति सव, मारि दूरि किय भार भुव ।
निज भगति देहु कुलपति कहतु, जय जय जय हरि सरण तुव ।।१३५।।

अन्त –

दोहा

वाद अस्त्र विवि परिहरन, द्रौणि जुद्ध सत रुद्र ।
परिछेद अतिम कह्यौ, कुलपति ग्याँन समुद्र ।।१३६।।

पुष्पिका – इति श्रीमन्महाराजाधिराज महाराजा राँमसिंघ देवाज्ञया कुलपति-मिश्रेण विरचिते द्रोणपरव भाषा सग्रामसार ग्रन्थ नाम षोडसौ परिछेद ।१६। ग्रन्थ सपूरण समाप्त ।

पोथी लिखी सुभ स्थाँन श्री सवाई जैपुर । महाराजाधिराज श्री सवाई जैसिंघजी कै पुस्तकखानै । लिखत कवि पूरण, जाति मागध । मिती जेठ मासे शुक्ल पक्षे ११, रविवासरे, सवत १७९४ का । शुभ भवेत् कल्याँण ।

श्लोक

जादृस पुस्तक दृष्ट्वा तादृस लिखित मया ।
यदि सुद्धमश्रुद्ध वा मम दोषो न दीयते ।।१।।
कल्याणमस्तु । श्री । श्री । श्री । श्री । श्री ।

२९२४. ९८८९ (१) संभरि जुद्ध

प्रारम्भ – ।। ई० ।। श्री गणेशाय नम । अथ सभरि जुद्ध लिख्यते ।

दोहा

गुरु गुविंद गनपति गिरा, गवरि गिरीस मनाय ।
गावत गुन जयसाह कौ, सुकवि कलानिधिराय ।।१।।

हुकम वहादुरसाहि कौ, आयौ सैद हुसैन ।
हुते भूप जयसाह जह, सभरि सर सजि सैन ।।२।।

उत अरि सैद हुसैन अरु, इतै भूप जयसाहि ।
मच्यौ दुहुनि सग्राम जह, आये अमर उमाहि ।।३।।

छद त्रिभगी

सैदनि दल हुके समरनि वके दुदभि डके जोर दियै ।
धर होत धमके सुरगन सके परम अतके लोक हिय ।।

हय टापन टुट्टे गिरि तट फुट्टे फनपति कुट्टे सहस फना ।
धूली भर जुट्टे अवर घुट्टे पावस छुट्टे मनहु घना ।।

जयसाहि सवाई पर दल धाई अरनि अवाई देखि परे ।
चढ्ढे दल साजे सगर काजे रवि ज्यौं राजै तेज धरै ।।

सभरि सर तीरनि के सरि नीरमनि रगे नीरनि चारु ठये ।
दै दुदुभि धीरनि वके वीरनि कूरम भीरनि होत भये ।।

सेखावत सच्चे पन के रच्चे समर विरच्चे रोस लियै ।
वाकावत वाके दल वल हाके जिरह भनाना के जोर कियै ।।

कल्यान पचायन के वहु भाइन कै चित चाइन भट आये ।
रन अहरन हीरा सैमुख नीरा धरत हमीरावत धाये ।।

सिव ब्रह्म नर्न के भट अमन के साथ वर्न के दूल हसे ।
को है कु भानी मन अभिमानी लहि प्रभु वानी रन वहसे ।।

वहु सिपहसिलाररनि के सिरदाररनि सजि कर वाररनि रेर करी ।
पावस घन तूले दल अन कूले सवही पूले निरखि अरी ।।

नाथावत रूरे सगर सूरे पन के पूरे उमगि चढे ।
नर वीर नरूके नेंकु न चूके रोस भभूके लेत वढे ।।

खगरावत खगे खरे उमगे चढि हय चगे खमसि चले ।
कु भावत करर तछिन अररे दल वल दररे देत भले ।।

रजपूत अनेरे ओर घनेरे नृप वर नेरे ह्वै उमडे ।
कूरम कुल जाये मुख्य गनाये घन ज्यो आये ते घुमडे ।।

नवकोटि नाइक तहा सहायक भौ पर घायक अजित वली ।
राठोर समाजा ले रन ताजा किय महाराजा भीर भली ।।

उत घोग्न डारै जोरन धारै सोरन पारै धुकि धाये ।
सैयद मुख नीके अली अलीके सहन जीके पिलि आये ।।

भारी तिहि वेला भौ मुख मेला दुहु दल ठेला ठेल मची ।
कीने भट सेला सेलन खेला भेलक भेला रारि रची ।।

तह तुररी वज्जे दुदभि गज्जे जगनि सज्जें ढोल दये ।
सिंधू सुर छाये मारू गाये वीरनि भाये राग भये ।।

वदी जन कित्तें कहत कवित्तें मुनि भय वित्ते धीर वढे ।
भट अतर मोदै करत विनोदै त्यौ चहु कोदै उकि कढे ।।

तह तोपै रढ्ढै गोला कढ्ढै धु धरि वढ्ढै नभ मढ्ढै ।
हय हाथी फुट्टै पक्खर तुट्टै वीरन फुट्टै रन चढ्ढै ।।

पावक झर जग्गै वान उमग्गै आइ विलग्गै तन दग्गै ।
इक प्राननि मुक्कै इक्कै कुक्कै इक्क जुझुक्के रिस पग्गै ।।

इक लै लै वागै धावत आगै लागै लागै वैन कहैं ।
धरि मसकत पागै खोलत खागै खेलत फागै मन उमहै ।।

इक हथ्थ वरछी वाहन अछी धार तिरछी जोर जई।
सो पर उर गछी लखियन चछी ज्यौ जल मछी गरक भई।।

तह खग्गा खग्गी केलि उमग्गी अग्गा अग्गी वाह भई।
रिस ज्वाला लग्गी जाहर जग्गी मन हुद वग्गी वननि छई।।

हुव कट्टा कट्टी भट्टा भट्टी मुडनि पट्टी पुहमि डटी।
रुडावलि उठी डिठ्ठिय रुठ्ठी अन्तर टुठ्ठी अति ही नटी।।

छूटैं घुर चड्डी ज्वाला वड्डी फौजे डट्टी गोलन सौ।
गरजै हथनालै अतिहि उतालै झपति झालै झोलन सौ।।

तकि लवे पल्लै तुपक्कै चल्लै तडपति भल्लै तडित मनौं।
वारूद पसारी चहु दिसि भागी झुकति अध्यारी धूम घनौं।।

भट पेलि अरावनि तुरी सितावनी दाबि रकावनि वाग लये।
कीने वगमेला कंनिहि वेला भेलक भेला आइ भये।।

कर खग्गनि पारै मुडनि झारै समर अखारै खेल करै।
वड डील विदारै करत दुबारै मनु घन आरै चीग्गि धरै।।

वके कछ्वाहे परम उछाहे इत चित चाहै काम करै।
उत मंद हुमैना की बहु सैना राते नैना जोर लरै।।

तह सुभटनि साजी तीरनदाजी मनमुख वाजी पेलि खरै।
भालन सौं फोरै वखतर कोरै धनु गुन घोरै सरनि झरै।।

पिलि इक हकारै करि ललकारै तेगनि डारै तकि परकै।
इक होत उतारै खजर डारै वजर फारै दरवर कै।।

इक गुप्ती वाहै अत्रनि गाहै डीलनि ढाहे घोग्न सो।
इक सगर कोहै जमधर पोहै प्रान विपोहैं जोरन सो।।

इक लेत दपट्टै आनि लपट्टै करत झपट्टै पट्टन सो।
लै सागि रपट्टै इक अरि डट्टै इक सिमट्टै ठट्टन सौ।।

इक अत गरट्टै होतन हट्टै धरत मरट्टै मूछन मै।
इक घाइ पलट्टै घतत अट्टै दू छन मैं।।

इक तागत गौकै वुगदनि भौकै बकी नौकै इक खुरसै ।
फरसा भर झोकै इक्कध नौकै मनु द्रुम दौकै मधि झुरसै ।।

बाहै इक गाढै गहि जम डाढै सो ठिक ठाढै तन पैठी ।
इक सुभट सम्यानी कोनह खानी कर गहि तानी धर पैठो ।।

यो हथ्था हथ्थी बथ्था वथ्थी सथ्था सथ्थी सुभट भिरै ।
तह गजवर चढ्यौ सैयद वढ्यौ फिर तल वड्यौ रोस निरै ।।

तिहिं तकि किहुँ दग्यौ तेजनि जग्यौ गोला लग्यौ इक खरै ।
तछिन खल धुक्किय हाहा कुक्किय प्रानन मुक्किय खेत परै ।।

तब सब कछवाहनि समर सिपाहनि किय अवगाहनि खेत खरी ।
हत अत्रनि लेतै सैयद केते लाज समेते सहज अरी ।।

सभरि सर माहि किते डुवाही कितअ गिराही खाय हहा ।
जयसाहि सवाई जगमुख दाई इहि बिधि पाई जित्ति महा ।।

तिहि भुव अरि मु डनि औ बहु रु डनि सु ड भुसडनि ढेर परै ।
तै छिपहिन उडनि श्रोनित कु डनि कु जर डु डनि रग झरै ।।

बिकराल कपालनि नाच मच्यौ ।
अत्रनि जालनि गृह नव मालनि सकर ख्यालनि जोर रच्यौ ।।

छप्पै

तह नचत ख्याल लग्गे विसाल पलचरनि जाल सग ।
रचत माल गल चद्र भाल रगि रुहिर ताल अग ।।
पर कपाल विकराल ताल दिय अति उताल गनि ।
लसति लाल पट धरै हाल जुगिगनि निहाल मति ।।
पिय महाकाल की बाल निजि, काली परम खुस्याल तर ।
विसनेस लाल भुवपाल जह, फते लहिय कर वाल कर ।।१।।

पुष्पिका :- इति श्री कवि कलानिधि श्रीकृष्ण भट्ट विरचित सभरि जुद्ध वर्णन सपूर्णम् ।

२६३४. ६७२० (६) सभाभूषण भाषा

प्रारम्भ - ।। ॐ नम श्री गणेशाय नम ।। अथ सभाभूषण लिख्यते ।

छप्पय छद

चद विराजत भाल शिखा निर्मल प्रकास धर ।
श्रेय दशा तिहि अग्र भाग सफुराय मान वर ।।
सहजहि मदन पतग अमित चचल तिहि जारन ।
अतहकरन अपार मोह तम भार निवारन ।।
योगेश्वर चित भुवन मैं, विजयवत आभास घर ।
गगाधर वदत चरन, जय जय ग्यान प्रदाय हर ।।१।।

दोहा

श्री शिव वदन करि प्रथम, चित प्रसन्न धरि ध्यान ।
ग्रन्थ सभाभूषण करौ, सुनि सज्जन सग्यान ।।१।।

अन्त .- कवित्त

चतुर गुनी प्रवीन ज्ञान रस लीन मित,
विनै करि कह्यो सभाभूषन वनाइये ।
नाटक सगीत की रहसि अति कठिन है,
समुझी न परै तातै अरथ पाइये ।।
कर्त्ता तातै गगाराम कवि कोमल कवित्त वध,
भाषा राग रूप इह सव कौं सुहाइये ।
पढत सुनत अति चौप चित चाव होत,
सीखियत सुघर सुवुधि हि वढाइये ।।५६।।

दोहा

कवित वध भाषा करि, श्री सगीत मत देखि ।
नाम सभाभूपन इहै, वधि वल लीनो लेखि ।।६०।।

सवैया

नाटक सगीत नानाय मत रागिनी,
रुचि सौं सुनत निति मुधा रस णीजिये ।
हेत चित चौप सौंप सुनत निति सुधा रस खीजिये ।

हैत चित चौप सौं कवित्त वध भाषा करी,
नाम सभाभूषन गरथ कहि लीजिये ॥
यामैं राग रागिनी की जाति मय रूप हेत,
तान ताल ग्राम सुर गुना मुनि रीझिये ।
गगाराम विनय करत कविजन सुनि,
वरनत भूले तो सुधारि सुध कीजिये ॥६१॥

दोहा (कवित्त)

र काल १७४० सत्रहसत सवत सरव सत्रतुर अधिक चालीस,
कातिग सुदि तिथि अष्टमी वार ग(श)नि प्रजरात है ॥
हिंदोल की अलाप तै हिंदोला आय जो ढाले,
तदी यग के गाय गुनी दीपग जुपात है ॥
श्री मै इह गुन गुनी प्रगट वखानत है,
सूको रूख हर्यो होत फेरि उलहात है ।
गगाराम कहै मेघराग को प्रभाव इहै मेघ वरखात,
घनमाला मजु रस रस रजनीस ॥६२॥

दोहा

सागानयरि सु नग्र मै, रामसिंह नृप राज ।
तह कवि जन सव चयन मै, गजति सभा समाज ॥६३॥
गगाराम तह सरस कवि, कीनो वुद्धि प्रकास ।
श्री भगवत प्रसाद तै, इह सुभ सभा विलास ॥६४॥

पुष्पिका :– इति श्री गगाराम कृत सभाभूषन रागमाला समाप्त ।

२६३६. १०११६ सभाविनोद (रागमाला-भाषा)
(मुखपृष्ठ — पुस्तकमिद भटजी श्री कुसालीरामजीकस्य)

प्रारम्भ :– ॥ श्री गणेशाय नम ॥ अथ सभाविनोद रागमाला पायदावेग कृत भाषा लिख्यते ।

दोहा

गावत नाचत आपु, हीडौरू मैं सव अग ।
नमो नाथ पैदा कहै, सीस गग अरधग ॥१॥

दृष्टि न आवै अगम अति, मनसा की गम नाहि ।
निपट निकट सगही रहै, वोलै घट घट माहि ।।२।।

चौपई

माहिजहा माहिन मन साह । आदिल दाता दीन पनाह ।
दारिद्र जातु लेतही नाउ । धनि सु जनम जे परसै पाउ ।।
गाइ-स्यघ इक घाटै पियै । देखि चरन जन सिगरे जियै ।।३।।

दोहा

साहिजिहा जू अदल वल, परजा करी निहाल ।
दुख भजन गजन अरिनु, मूरति महा रसाल ।।४।।

अथ कवि जाति नाम

मोदक छद

जाति वस कवि को सुनि लेहु ।
कौन भूमि किहिं उपज्यौ गेहु ।।
ख्वाजा खिजरी जाति वखानि ।
अहमदखैल सु गोतहि जानि ।।
मेरवेग को सगीवेग ।
अकवर साह वधाई तेग ।।
ताको सुत कवि पैदा भयौ ।
जनम अकवरावाँद जु लयौ ।।
तिन यह पोथी करी रसाल ।
सव रागनी की गूथी माल ।।६।।

सोरठा छद

सभाविनोदहि नाम, या पोथी को जानियौ ।
पैदा सुख को धाम, जग मोहन दुख हरन यह ।।७।।

दोहा

राग ध्याय मैं कहत हौं, सहँसकृत ते लीन ।
कीनी भाषा जोरिकै, समुझै नर परवीन ।।८।।

सुर विद्या बहु कठिन है, तामैं भेद अनेग ।
हनुमत मत सगीत मथि, कहतु पायदावेग ।।९।।

राग हिंदवी पारसी, पैदा इकठे कीन ।
जो जो तामैं मिलत है, ते सब काढे वीन ।।१०।।

कहौ मिलापी पुत्र जे, कीन्यौ मनहिं विचार ।
नाद रूप सवतै कठनि, अतिहि अगम अपार ।।११।।

अन्त – अथ पाचौ रागिनी कौ सोरठा

रामकलि दे साखि, ललित विगावर जानियो ।
पढ मजरी सु भाखि, ए हिंडोल की रागिनी ।।३।।

देस कमोद विचारी, नट केदारो कान्हरौ ।
पाचु दीपक नारि, पैदा कही सगीत मथ ।।४।।

मालसीरी सुनाव, मारू और धनासरी ।
बसत आसावरी गाव, सीरी राग के सग हैं ।।५।।

टककु वोर मलार, गुजरी भुपाली कहौ ।
पच विदेस जुकार, रास रागिनी मेघ की ।।६।।

पुष्पिका – इति छउ राग को सोरठा सपूरण समाप्ता । श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्रीरस्तु ।

२९३७. ८३६३ समासार नाटक

प्रारम्भ :– ।। र्द० ।। श्री गणे(गाय नम)

(श्रीमान्) सु ड प्रचड रू(प) रुचिरो मदगध गल्लस्थल ।
शुभ्र सोभित शोभि एक दशन चद्र ललाटे (धर) ।।
(सिन्दुरै) परिपूर कु भ सुभगो ऋद्धि सु सिद्धी धर ।
सोय पातु गणेश इ(ई)सतनयो वानीवरदायक ।।१।।

छद मालवी (मालिनी)

कविवर वरदाता माद्रि से नित्य त्राता ।
षट वदन सु भ्रात्रा सर्व कार्या विधाता ।।
सकल गण सुरेश मगलाना महेश ।
विघन तम दिनेश श्री गणेश नमामि ।।२।।

छप्पै

जय गग सह चद जटित नग मुकुट सु भारीय ।
वाघवर अवर नुरीति मु ड मू तीय स्रगधारीय ॥
हलाहल ह्र कठ ललित भृगु हरि ऊर सोहत ।
दहु मु एक ह्वै रहत देखि मुनिजन मन मोहत ॥
करपूर गौर घनस्यॉम तन, सकल भुवन वदित चरण ।
जो रमानाथ ऊमयापति, श्री हरि हर मगल करन ॥३॥

x x x x x

दोहरा

दिसि पश्चिम गुजर सवर, सहर अहमदावाद ।
भू पर के सव नगन सिर, ऊपर मडित वाद ॥७॥

रचना-स्थान ता मधि सारगपुर सुभग, सुख दायक सव धाम ।
नागर विप्र सुनग मति, कवि पद रघु रज राम ॥८॥

चोपी (चौपई)

सकल सभा पहिले सिर नाउ । कर वीनती कर जोरि सुनाउ ॥
मात पिता यु वालक वानी । एसी विध सुनि हे सुख मानि ॥
छमि हे मम औगन सव साधु । जिन के मति अति भरे अगाधू ॥
जिन ही सुहाय नही यह वॉनी । सो पुनि छमि हे सेवग जानी ॥९॥

दोहरा

कवि वासी ग्रह कूप को, सभा अपार समद ।
तेसोहि कछु कहत हो, मति हे जेसी मद ॥१०॥

जानित हु हसि हे जगत, सुनि कविता को सूल ।
अपने मुख ते आपनी, हासी करत कवूल ॥११॥

भले वुरे सव प्रणमि के, वोहरि कहु परि पाय ।
नीको वूरो निवाहीये, सो सेवग चहत सहाय ॥१२॥

रचनाकाल सनरे से सतावने, चैत्र तीज गुरु वार ।
१७५७ पक्षि ऊजल ऊजल सुमति, कवि किय ग्रन्थ विचार ॥१३॥

अन्त - छप्पै

यह नाटिक जो सुनें ताहि होय फाटिक गुनें ।
यह नाटिक जो सुने बुद्धि बल कमल प्रफुले ।।
यह नाटिक जो सुने ग्यान पूरन मन आवे ।
यह नाटिक जो सुने ताहि मन वंछित पावे ।।३२८।।
विग्यान जान निरवाण कें, जोग्य ध्यान धर चन लहैं ।
पावत परम पुरुष गति, मति प्रमाण कवि रघु कहैं ।।३२९।।

पुष्पिका .- इति श्री नाटिक सभासार कवि रघुराम विरचित सम्पूर्णम्, सवत् १८४३, माह सुद ५ दिने, प० छजमल लिपी कृत ।

२६४५ १०८६४ समै सु-प्यार सतसई

प्रारम्भ .- ।। दं० ।। श्री गणेशायनम । अथ समै सु-प्यार सतसई वसनराय कृत लिख्यते ।

दूहा

श्री गनपत अमृत चर्न, कठ भूमि परवार ।
बुध को वर-के बीज ज्यों, होत बहुत बिस्तार ।।१।।

सुमुख विनायक गज करन, भाल चद्र इक दत ।
हरन विघन सुख करन है, जुग जुग आद अनत ।।२।।

लबोदर हिये ध्यान धर, होत [बुद्धि[परकास ।
जैसें जग मिट जाय तम, दिनकर करत उजास ।।३।।

रचें वृध भूपत मिलन, करिये गमन विदेस ।
पढीये प्रगटै ग्रन्थ तव, भजीयें आद गनेस ।।४।।

यह प्रास्ताविक दूहरा, कीना कवि विचार ।
समयें पर पढ हैं सुघर, सब कू लगै सु-प्यार ।।५।।

नीत जथारथ ग्यान रस, भुक्त जुक्त चित धार ।
सुगम अरथ कविता करी, कवि मत के अनुसार ।।६।।

निबुध पढै बुध बधत है, मूरख सुथरा होय ।
निस मदर हु रहै तिमर, रखीये दीपक जोय ।।७।।

कीया सातसो दूहरा, उक्त जुक्त दृष्टत ।
कहु मासनर मन उकत, भाषा करी वसंत ॥८॥
चलै कहु प्रस्ताव पर, कहीयै दुहो विचार ।
सब ही कुँ नीको लगै, याते समैं सु-प्यार ॥९॥

अन्त – दोहा

मुरधर मझ मुर मेदनी, कासीपुर सम जान ।
घर [घर कोविद] पढत है, गीता वेद पुरान ॥६९४॥
तहाँ चतुरभुज राय को, [दरसन] अदभुत जोय ।
मन सुध कर भेटे चरन, नरक न जैहै कोय ॥६९५॥
[नर] रिध धारी नगर मैं, पडत बहु बुधवत ।
सतवादी हरि भक्त रत, सिध जोगेसुर सत ॥६९६॥
निकट तिहा पुस्कर भरचो, वहै सरस्वती नीर ।
नाग पहार जोगी जती, हरै दीन की पीर ॥६९७॥
विप्र ग्यात तिन नगर मैं, पुसकरणा रिपमत ।
प्रोहि[त कुल] नरसिंघ के, कीनो ग्रन्थ वसत ॥६९८॥
कवि कोविद यौं जोड कर, इतनी अरज करत ।
चूक छिमा करीयो हमै, सव सौ कहत वसत ॥६९९॥
पढ्यौ नही कछु ससक्रत, भाषा मत्र न जाप ।
कछुक कविता करत हू, गनपत के परताप ॥७००॥

र काल १८३३ आ[द चन्द वसु राम] गुण, कृष्ण जनम पक्ष मास ।
गनपति तिथ हनुमान दिन, निपज्यो गन्थ विलास ॥७०१॥

पुष्पिका – इति श्री समै सु-प्यार सतसई सपूरणम् । सवत् १८४१ रा शाके १७००६, चैत्र दुतीक . पक्षे ६ नौम्या तिथौ रववारे ।
लिपीकृत वैष्णव जुग [नगर] जोधपुर मध्ये लिखित्वा । श्री किल्याणमस्तु ।

✿ इसकी एक प्रति 'राजस्थानी शोध-संस्थान' चौपासनी, जोधपुर में भी ग्रन्थाङ्क ४८७१ पर उपलब्ध है। उक्त प्रति का लिपि समय संवत् १९३५ है। कोष्ठक में दीमकग्रस्त स्थल का पाठ उक्त प्रति से दिया गया है।

२६७७. ६२५२ (३) सुन्दर-शृङ्गार

प्रारम्भ – ॥ ई० ॥ श्री गुरुभ्यो नम. । श्री गणेशाय नम । लिखत पोथी सुन्दर-शृङ्गार की ।

दोहरा

देवी पूजो सरसती, पूजो हर के पाय ।
नमसकार कर जोर कें, कहै माहाकविराय ॥१॥

आश्रयदाता वर्णन (शाहजहा)

नगर आगरो वसत है, जमुना तट सुभ थान ।
तहा पातसाही करै, बैठो साहिजिहान ॥२॥

साह वडो कवि मुख तनक, क्यु गुन वरणे जाय ।
ज्युं तारे सब गगन के, मूठी मै न समाय ॥३॥

जिन पुरुषन के वंस मे, उपज्यो साहजिहान ।
ताह साहन के नाम कौ, अब कवि करे वखान ॥४॥

छप्पय

नृप-वंश वर्णन

प्रथम मीर तिमूर लीयो साह किरान पद ।
ताको मीरासाह बहुरि सुलतान महम्मद ॥
अबुसैद फुनि उमरसेख बबर जु हमाउ ।
साह अकबर जान साह जिहागीर गिनाउ ॥
तिहा वस अंस कविराज, भनि साहिजीहा उढिम वखत ।
धरि छत्र बैठो अटल भुवि, पातस्याह दिली तखत ॥५॥

छंद तृभंगी

नृप-प्रशस्ति

जब लगि भवानी मित्र सेनानी रवी समाणी पथन मे ।
जब लग सुरगै नग गन उडगन शशि वरन अरु गुन ग्रथन मे ॥
जब लग पुरदर हिम गिर मदिर सुन्दर वानिन भनै सुखदा ।
तब लगि रहो चिर भू ध्रूव ज्यु साहिजिहा शिर छत्र सदा ॥६॥

दोहा

इक छिन के गुनह के, वरनै सकल ससार ।
जीभ थकै वीतै वरष, तौउ नावै पार ॥७॥

तीन पेहर लो रवि चलै, जाकै देसनि माहि ।
जीत लई जगती इत्ती, साहजिहा नरनाहि ।।८।।

कुल दरीया ग्या ऐ कीयो, कोट तीर कौ ठाम ।
आठो दिश यो वसि करी ज्यो कीज्यै इक गाम ।।९।।

साहिजिहा सब गुनिन कू , दीन्हे अगनित दान ।
कवि-परिचय तिन मे सुन्दर सुकवि कौ, कीयौ बहुत सनमान ।।१०।।

नग भूषन मनि सब दए, हय हाथी सिरपाउ ।
प्रथम दीयौ कविराय पद, बहुरि महा कविराउ ।।११।।

तव कवि कौ मन यौं बढ्यौ, जब यह कीयौ विचार ।
वरनी नायक नायका, कीयौ ग्रन्थ विस्तार ।।१२।।

विप्र ग्वालिअर नगर कौ, वासी है कवि राज ।
तामौं साह मया करै, सदा गरीब निवाज ।।१३।।

ग्रन्थ-माहात्म्य सुन्दर कृत शृंगार है, सकल रसन कौ सार ।
नाम धर्यौ या ग्रन्थ कौ, यह सुन्दर शृंगार ।।१४।।

ज्यौं सुन्दर शृंगार कौ, पढै गुनै रस ग्यान ।
मानो तिन ससार मे, कीयौ सुधा रस पान ।।१५।।

र काल १६८८ सवत सोरह सें वरस, वीते अठ्यासीति ।
कातीं सुदि षष्टी गुरु, रच्यो ग्रन्थ करि प्रीति ।।१६।।

विषयारम्भ नौ रस मे सीगार रस, सबतें नीको आहि ।
तामे नीकी नायका, वरणत है कवि ताहि ।।१७।।

सो फुनि सुन्दर कवि कहै, तीन भाति की नार ।
स्वकीया परकीया अवर, सामान्या सु विचार ।।१८।।

अन्त .- पुन सवैया २३

रूपे की भोम के पारौ परयौ,
सिगरो जग चदन सो लपटानौं ।
यो कहि तोन्ह महा कविराय,
कहै उपमा इक याहि तें आनौं ।।

चद की असुनि को करि मून,
बुन्यौ बिधुना मित अवर जानौं।
उजल कै फुनि ज्योत बनाय,
दशो दिश ए मढि राखी है मानौं ॥४७॥

दोहरा

सुरवानी यातें करी, नरवानी मे लाय।
जैसे मग रसु रीत कौ, सव पे समझ्यो जाय ॥४८॥

यह सुन्दर सीगार की, पोथी रची विचारि।
चूक्यो होइ कह्यौ कछू, लीज्यौ सुकवि सुधारि ॥४६॥ [३४६]

पुष्पिका – इति चकत्ता चक्रवर्त्ति पातिसाह साहिजिहा आदेशात् महाकविराज कृत सुन्दर-शृङ्गार भाषामयौ ग्रन्थ सपूरणम्। सवत् १७७४ वर्षे, शाके १६४० प्रवर्त्तमाने, माह फाल्गुन विदि ११, भृगुवासरे। लिखित राणा सग्रामसीह विजैराज्ये।

३०१७. ६४३२ (१) हमीर-रासो*

प्रारम्भ – ॥ श्री गणेशाय नम ॥ श्री सरस्वती नम ॥ श्री गुरुभ्यो नम ॥
अथ हमीर-रासो लिक्षते।

दोहा

श्री गनेस गुरु सरस्वती, बुधि बानी के दानि।
कविनाम कवि महेस बरनन करत, हठ हमीर को जानि ॥१॥

पहिलै साहि(ब) सुमरियै, सब को सिरजनहार।
आदि भवानी अबिका, वरदै सुरसति म्हार ॥२॥

सरनाई भयो सिवर न्रप, दयो मास तन ताहि।
कै अब राव हमीर हूव, सरन राखि महिमाहि ॥३॥

---

* इस कृति की प्रतिष्ठान मे और भी प्रतियाँ हैं। कुछ प्रतियो के प्रारम्भ मे 'चौहान वश-वर्णन' दिया गया है, जो इस प्रति मे कुछ छन्दो के बाद उपलब्ध है। प्रारम्भ मे वश-वर्णन वाली प्रतियाँ पाठालोचन की दृष्टि से अन्य परम्परा की द्योतक हैं।

कित अलावदी कित हुरन, कित महिमा जु पठान।
किते मीर बहु गाभरू कित हमीर चौवान ॥४॥

रासे के पासे परे, होनहार आरभ।
माखो राव हमीर को, वाको गढ रनथभ ॥५॥

छद

अमरपुरी ब्रह्मलोक बचन सा पुरस कराये।
रिषि सू छत्री भये सोम के बस कहाये ॥
जननि उदरन ओतर सकट परे न च्यारि।
अनल कु ड उतपन भये च्यार भुजा पर च्यार ॥६॥

दोहा

च्यारि भूजा अयु सीरि, तेज पु ज परचड।
सूर हरखि कपे असुर, ईते हुवे नवखड ॥७॥

छद

मारि असुर सुरन के मान बढाये।
राछस कटक दुष्ट अवनि पै रहन नि पाये ॥
मडलीक चार ईक चकवै इतै हूये चहुवान।
सूरन अति उद्योत लौ फिरै चहु दिस आन ॥८॥

रथ भारन कौ चलै जहा लौ चक्र चलाये।
कर रावन प लीये जग्य तिनि केमु कराये ॥
जिते नृपति नवखड के लगे पाय कर जोरि।
राज जोग दोऊ करै अजपाल अजमेर ॥९॥

वीसल बीस करोरि जोरि जल माझ धराये।
आना तीस करोर विलस खरचे अरु खाये ॥
को को नयेन मडली आय आपनी ठोर।
आना बीसल दे भये मडलीक सिर मोर ॥१०॥

दोहा

जिती धरा सिर सेस के, खग वल लई पै जाये।
छुटी मानिक राव कौ, सकति सम्हरा माय ॥११॥

अन्त –

छंद

मिले राव रनधीर खानु वालनसी भाई ।
महमामाहि हमीर मिले हजरति सिर नाई ।।
पाछा मिले हमीर कों अलादीन पतिसाहि ।
हजरत राव हमीर के गहे कदम दोउ जाई ।।३९१।।

धनि हमीर चोहानु आदि ए चलि आई ।
यह साहिव की राह राव हम तुम सौं पाई ।।
भरतखण्ड चहु देस मै देखो सब जग जो(य) ।
तुम वन राव हमीर सिख मिलाव कोई ।।३९२।।

दोहा

बदा खुदा काल जुर, झपै जहा न कोई ।
पहुचे राव हमीर जहा, वहुरि न आना होई ।।३९३।।

आसा देवल और सब, महमामाहि हमीर ।
मिले सबै सुर लोक मै हजरत हूरम समीर ।।३९४।।

छंद

मिल्लै राव पतिसाहि छीर ज्यौं नीर वहाये ।
जो पारस कौ मिलत लोहो कंचन हो आये ।।
अलादीन हमीर से हूये न अब कोई होय ।
कवि महेस ईम ऊचरे वे वसे सुरग सब कोय ।।३९५।।

दोहा

कवि महेस वरनैन कीयो, रासो राव हमीर ।
भूल चूक ज्यौ होय तो माफ करो तकसीर ।।३९६।।

पुष्पिका :– इती श्री राव हमीर को रासो सपूर्ण । लीखीत नाजर नैणसुख, न(नै) वाच(चै) व(वि)च्यार(रै) ज्या सु राम राम वंचज्यो जी ।। श्री ।।



परिशिष्ट २

ग्रन्थ-कर्त्तानुक्रमणिका

* नामसाम्य वाले चिह्नित कवि अभिन्न भी हो सकते हैं।

राजस्थान–सरकार

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हिन्दी-राजस्थानी ग्रन्थों की प्रकाशन-सूची

क्रमाङ्क	ग्रन्थ-नाम	सम्पादक	मूल्य
१	कान्हडदे प्रबन्ध	कान्तिलाल बलदेवराम व्यास	१२ २५
२	क्यामखा रासा	डॉ दशरथ शर्मा, अगरचन्द भँवरलाल नाहटा	४ ७५
३	बांकीदास री ख्यात	नरोत्तमदास स्वामी	५ ५०
४	राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग १	नरोत्तमदास स्वामी	२ २५
५	,, ,, भाग २	पुरुषोत्तमलाल मेनारिया	२ ७५
६	,, ,, भाग ३	लक्ष्मीनारायण गोस्वामी	५ ५०
७	राजस्थान मे सस्कृत-साहित्य की खोज	प० ब्रह्मदत्त त्रिवेदी	३ ००
८	जुगलविलास	रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत	१ ७५
९	वीरवाण	,,	४ ५०
१०	गोरा-बादल-पद्मिणी चउपई	डॉ० उदयसिंह भटनागर	५ ००
११	गोरा-बादिल-चरित्र	मुनि जिनविजय	४ ००
१२	हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग १	गोपालनारायण बहुरा	७ ५०
१३	,, ,, भाग २	,,	१२ ००
१४	राजस्थानी-हिन्दी ह लि ग्रन्थ-सूची, भाग १	पुरुषोत्तमलाल मेनारिया	४ ५०
१५	,, ,, भाग २	,,	२ ७५
१६	विद्याभूषण ग्रन्थ-सग्रह-सूची (जयपुर शाखा)	गोपालनारायण बहुरा एवं लक्ष्मीनारायण गोस्वामी	६.२५
१७	भगतमाल	उदयराज उज्जवल	१.७५
१८	भक्तमाल	अगरचन्द नाहटा	६ ७५
१९	मुहता नैणसी री ख्यात, भाग १	बद्रीप्रसाद साकरिया	८ ५०
२०	,, ,, भाग २	,,	९.५०
२१	,, ,, भाग ३	,,	८ ००
२२	,, भाग ४	,,	८ ७५

क्रमाङ्क	ग्रन्थ-नाम	सम्पादक	मूल्य
२३	रघुवरजस प्रकाश	सीताराम लालस	८ ७५
२४	सूरजप्रकाश, भाग १	सीताराम लालस	८ ००
२५	सूरजप्रकाश, भाग २	,,	९.५०
२६	सूरजप्रकाश, भाग ३	,,	९ ७५
२७	नेहतरग	रामप्रसाद दाधीच	४ ००
२८	मत्स्य-प्रदेश की हिन्दी साहित्य को देन	डॉ० मोतीलाल गुप्त	७ ००
२९	समदर्शी आचार्य हरिभद्र	अनु शान्तिलाल जैन	३ ००
३०	बुद्धिविलास	पद्मधर पाठक	३ ७५
३१	रुक्मणीहरण	डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया	३ ५०
३२	प्रतापरासो	डॉ० मोतीलाल गुप्त	६ ७५
३३	सत कवि रज्जब	डॉ० व्रजलाल वर्मा	७ २५
३४	पश्चिमी भारत की यात्रा	अनु० गोपालनारायण बहुरा	२१.००
३५	विन्हैरासो	सौभाग्यसिंह शेखावत	६ ७५
३६	सोढायण	शक्तिदान कविया	७ ००
३७	राठौडाँ री वंशावली एवं राठौड-वंश री विगत	डॉ० फतहसिंह	२ १५
३८	मीरा बृहत्पदावली, प्रथम भाग	हरिनारायण पुरोहित	७ ५०
३९	स्थूलिभद्रकाकादि	डॉ० आत्माराम जाजोदिया	१ ७५
४०.	राजस्थानी वीर-गीत-सग्रह, भाग १	सौभाग्यसिंह शेखावत	६ ५०
४१	,, ,, भाग २	,,	६ २५
४२	,, ,, भाग ३	,,	९ ७५
४३	गजगुण-रूपक बन्ध	सीताराम लालस	९ ००
४४	वैताल-पच्चीसी	डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया	३ ५०
४५	मारवाड रा परगना री विगत, भाग १	डॉ० नारायणसिंह भाटी	१५.५०
४६	,, ,, भाग २	,,	१२ ५०
४७	देवीचरित, प्रथम भाग	हुकमचन्द चतुर्वेदी	१३ २५
४८	,, द्वितीय भाग	,,	२१ ००
४९	राजनीति रा कवित्त	डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली	५ ००
५०.	नरसीजी रो मायरो	प्रो० जेठालाल नारायण त्रिवेदी	१० २५
५१	मधुमालती सचित्र कथा	डॉ० फतहसिंह	१८ ७५